NO3

A. no. 358

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vedika Bharata Initiative

Sans. MS.
8531
5115
358-MS.

समाप्रकाशसूचि
भिन्नपत्रक॥ ले० अ० १४ पं० प्र० पृ०

ह० ले०

Hindi Ms.

-111
-111
-111
-111
-111
-111

=1
=1
=1
=1
=1
=1
=1

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri Vaidika Bharata Initiative

ओम

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जन्मपत्र ताई ग्रहफल पंडत रघुनाथदास रहने वाले जगन्नाथपुरी के पंड्या लिखा ... मगारी

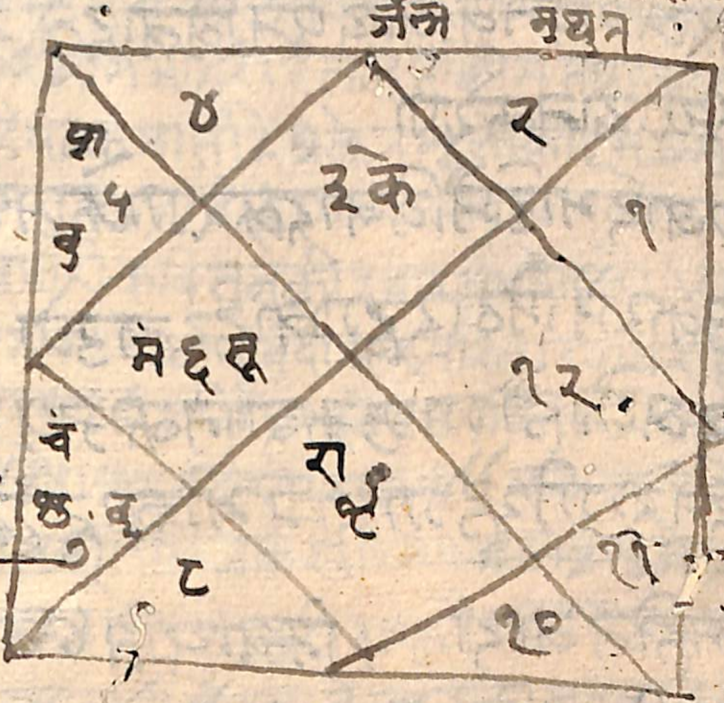

A.W. 358

१ मिथुन लग्न का फल कारीगर काम सीखेगा कुछ
२ केतका विद्या पुरी नाहोगी सदा दुरवल रहेगा
३ शा. वृ. का तीह वरस ताई वाल सुभाव रहेगा २१ वरस ते वा स्त्रीय रहेगा ॥ वृहस्पति राम होने ह १९ । ३८ ताई वृध के होया है भाई पुत्र का सुख का सुख होगी ३८ तो रहेगा
स्त्र म का कौघ रहेगा मन मे म कुछ जमीन खरीदेगा नई पंडे तेमले दा

चंद्र शुक्र पुत्र दो रहेंगे ७ गमि होंगे । कन्या
बुध ४३ ३ पर नं पिता का सुख नहीं होगा । ति ...
वर मन होगी ११ वरस पर अंत आयु ह
भूमि राहू दसा मत कोग है नहीं चंद्र योग
२३ वरस ५ मे होने से राहू भूमि एक न होने
पुत्र योग जा पारी २ योग होगा
२१ वरस मे २८ ताई कन्या होगी पीछे फेर पुत्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri Vedika Bharata Initiative

३२ वरष ते वरस ३ मास दस ला लो गो गी २ वार ष

२ राज पावेगा पुत्र धन धान्य होगा पकड़ी

४३ वरष २ दिन के बाद पुत्र विवाह करेगा

कन्या दान करेगा

४७ बाद भाई से विवाद करेगा केतु शनि फल

अंत हकार मे मिठार हुगवा हरला उगे

५१ वरष जो होगा छक पानिका जप ३ महीना

२५ दिन रोगी रहैगा दान भी चाहये

३५ ०७ महीने बाद नेत्र विधाय ४ वरष तार

पति या कमादि हानी होगा

तुला दान मृत्युजप ४ वरष पिता जप करे

वा पुवति का विकार शरीर मे रहेगा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छवि तां गुनी अनकी रस नावा सनाघु लनकी है लेकिन वो स
तो के फौकर जी नीर ॥ मुजलस भा मा लूकन की वैठ तहै सो लु
लो के गुनी लगुवार वाले तेपछ्छा नीर ॥ मो ती सम रासतरंग भाल
भाये आव यामे जोहरी वै ला उलाकी म तपह चाहनी दो ॥
सो हानी है पटक माती दवके नभू लोका इन्द्र छीमु नको कि
घे का मन हीं आतीहुए ॥ २ ॥ वेद पढ जानो पुरान वर्षो
वद को न्वातरी कवि तनकी उच्चार सम होकरो ॥ हछा कुछो गा
यो आवाग फउदो ना उ नंदी आर नारे तार वावरी हो मैत मैं
राजन को रजाई जानो वाचवेठ सभा के सूर को आगे जवादे
हो मै लरो । कहत के पे दास चार कुट फर आये कर मयो
देत नहीत को मै किया करे ॥ २ ॥ ब्रह्म के पुजो आरै उपर प्रास
न होत ब्रह्म केउ जै लघ संपति सुहात है ॥ ब्रह्मन की मर
मा कट दघा चारो वेद जाने ब्रह्म को मनमान काल जा मै
कोन जांतहै ॥ ~~ब्रह्मन की महत्मा~~ कट ब्राह्मन की लात
नंदलाल जू के आगा तलगी ब्रह्मन की परवो पार ब्रह्म
को सुहात है ॥ कहत कविरा म मन मै विचारके
ब्रह्म दुखायो जड हल उडु जात है ॥ ३ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीगणेशायनमः अथ मकोंमालके कवित

कविनजात्योविदते तोवदविदावदत ॥ कवितज

जानवरकेनामपरकवित ॥

ककुउकवुतरकागकुहीकोलकूजंकीलककूयाकपोतकर
तूराहै ॥ सुमरावरसूसुभीगूड गीध घुगी घुगोलाघनीया
नघुराहै ॥ तीलीयर तुरमतीतमोलातूतीतीतर तनहोहूं
तोताश्रासातिहीकदाराहै ॥ १ ॥ औरजुररा जरकाउटोकाकट
ठिठरटटोलाटीडाटाउडूजनेराहै ॥ २ ॥ चुरचरावंडग
चकवाचमगीदडचुकीचुहेमारवेपुचंवुलाहै ॥ ...
चउकचामचकीराहाचतचकोरखरकचालीपरतूर
वैहरीवहीनवापावगुलावाजवैजूवटोरीवटेर
चतकवागवकोहीवालकटारावठूंवहग जाकीके
वेहतोरहै ॥ २ ॥ अमरतधनिदुगी ॥
करकरउतपतजयतकोपोषमपरमपरतछोनिज
अतिसुंदरी हैअमषषषेलअलष ॥ हैअमममषषषेलअलषष
षिमापरतषषषिमगीत ॥ जोहजजनमहजजेति
समजनधिगतपागगगहगहगगगतलै जगगकेसरकक
करनजलकंककरनतवककरकर ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri/Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पद कमल के कवित्त ॥

कवित ॥ जिन जांन्यो वदत तो वेद वद वदत रहे है । जिन जान्यो लोक लोकन पर लउ मरे ॥ जिन जान्यो तपती तो तापन में तपते । पंचअगिन मगाले समाध धर घर मरे ॥ जिन जान्यो योग तेतो योगी युगजीये । जिन जान्यो ज्ञान तेतो ज्ञान मे मरे ॥ हुतो देवनंद के कुमार व्रज मे या मेरा उन दास कउ कोटन करमरे ॥ २ ॥ माथे पे मुकट देख चंद्रा चक देख छव की लकट देख रूपरस पीजीये ॥ लोचन विशाल देख गरे गज माल देख अधर रसाल देख चित्त चोप कीजीये ॥ कुंडल हलन देख अलकें वलन देख पलके चलन देख सरवस दीजीये ॥ पीताम्बर छोर देख मुरली की घोर देख सांवरे की ओर देख देख वारी कीजिये ॥ ३ ॥ स्याम घन तन पर विजे दसन पर मा धरी हसन पर कंचन खगीर है घुरवाले भाल पर लोचन विशाल पर अरु वन माल पर जुगन जोती रहे । जंघ जुगन तन पर भुजन मधान पर औपति सु ज्ञान मति प्रेम लपटी रहे नूपर तगन पर कंज से पगन पर आनंद मगन मति लागी रहे ॥ ४ ॥ मोर पखा सिर ऊपर राजत कंठ रहे उर देख रवि भाल हि ॥ अंजन से दाउ छ जन की ते सुख जन कंज ते नैन विशाल हि ॥ लोल कपोलन पै कलीकुंडल रूप अनूप प्रताप रसाल हि ॥ रसतम आनंद का कंद तू ध्यान भजे नरनंद गोपाल हि ॥ ४ ॥ [श्री जी सत्य] ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्री श्री गणेशाय नमः ॥ कलरकाठे तकदे पैसे कसो हेत
कुसा वसवास भरी कसी ही पतियाये ॥ होयाहाव...ट
कै जगालेए जगदासा गावनो कसैही जगमा ॥ मो
नेको लागके घसोटी पर देखले रारंग को रुपये कोक
सेही तारा ॥ काठ की तलवार बांधकै से रन जीत
गावे यषषरकी मूरत कसे ही समझाये ॥ १ ॥ दा ॥
कवहु मन रग तुरंग चड़े कवहु मन लोचन है हयन
को ॥ कवहु मन तरया देखा वित चल कवहु
मन गहाय चलू वनको ॥ कवहु मन कहे
सिध वनू नार लाघ गार लडूतन को ॥
तुलसीदास मन डोर नही वाजे का कर
कपटी मन को ॥ २ ॥ [illegible] केते नदनाले भरदे
समन्द्र भार हंस को हेत मासरवर सो ॥ वनउप
वन कते गनती नामे जोते काम ना की प्रीति तर
वरसो ॥ क्रष्यार तसीत काल भरेकउ झील
झाल चात कनिहार हो तस्वातवूदवरसो
नरज मरज को जीन तहा रसी ललाल
अर जहे गरीव परवर सो ॥ ३ ॥ एक समे
साज हाथ वाज ते निगारे सो ४ ॥ एक समे
पाउ प्याद सीस वोज सरे ॥ एक सम ०
याई पक पात की रवित नही ॥ एक ल...
पनो ग्राम गलरो ॥ एक समे डूरत पम यार
ने की भीर हैत एक समे पर दुवार आपजा
वरो ॥ हरि [illegible] ता विसारना द रजा
ने विचरा घर मे त...

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6 — दं 6

कवत दंगा का ॥ सदा विमाना ताहनी सन तुअरेला मू
पाचरला करे बह्मा वहा महेप्रा ॥ कवितं ॥ नल जो याव
सब सपोमा ॥ मानंद पावे दालोद विघ्न कलेस या कि कुलनेना
हा ईहै ॥ आठ भुजा नारी देव दाने दाहलाय ताते म
कदन समूल धार तम हरे समाई है ॥ चार बेद गावे
मद जा लाका बपावे ती न लाक चादा भवन
फटीक सवाई है ॥ नाथुराम भक्ष्याण कर जोर
कहे वार वार मरी वेरसद विभानी कहा साई है ॥ भ
क्तीका ॥ सुधा मा न तहे रखो सुरभ हूत राहु कया
वदर तन हेरयो सो राज कयो चेरे तें कुबरीन हेरयो
ते मूकरस्व दियो द्रोपद तन हेरयो सो चीर बारयो
दरते ॥ कहे कुंज माल मनाद का प्रतिज्ञा राखी
हर ना कुसकाते मारयो नजर के फेरते ॥ वेद मी के
प्रमानी गोर गामा कहे होत कहां नामी नर
हो तं गमता सी नरहेरे तो ॥ २ ॥ नारयो नो भलर
नाते नातं कोनमा सो देखो नारयो तो
छवतानेवाल पन गारयो है ॥ मार घज
नारयो ना लवे छन सम रारो है
नारये हरिच्च दतन सन द्रून हारयो है ॥ भक्त
के हो तिकिलो भवी घन कालकदेलूघन
स न हो प्रसन्न यो हो गुन नारयो है

8

॥ संवत्सी श्रीगणेशाय नमः अथ प्रश्न लघु लिख्यते ॥ १ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ स्वस्ती श्री गणेशाय नमः
सं० १८३० मा प्र ८ लाव

कवित्त वे प्रथ कौ प्रात का ॥ काय से काम जात गांठी से दाम जात नार संग सने हाथी त रूप जात रंग से ॥
उत्तम सब काम जात कुल के संबध मे जात गुरजन की प्रमी जात वदन की उमंगा से ॥ गुण रंग रीत जात
वेद से प्रीत जात रामजी से प्रीत जात आपनी मत भंगा से ॥ जपतप कीन्हा सजात भूषन का वलास जात
परको वास जात वेश्य संगसे ॥ कवित्त ॥ कामला मे कमल नेनं मो ती या मे मदन मोहन निरगास
मे मिरोतम गुलघराव मे वही री है ॥ चंपा मे चतुरभुज गुलदाउदी दामोदर जाफरानमे जगनाथ
तु रार मे मुरारी है ॥ सेवती मी ता राम कदम्ब मे कृष्ण लाल ... घा वि ते री है ॥ कहत नंद कि
शोर लाल गुलाब मे गुपाल चवेली मे वराज गीरधारी है ॥ २ ॥ धन

कवित्त ॥ साधु की संगत
संसार से सरस बढ़ घटे चं
ना चिंता पाली ॥ द्रव घटे
नृ पान गमे सेल त मान
रोग घटे कु कुपौ षद
खायो ॥ ज्ञान घटे विन
दीरज पायो ॥ सरघ्या
न घटे निर्भ्रम्द की संगा
त जाय यो ॥ मान घटे
कुकम अत माग त मुख
प्रति घटे नित मित्र के
जाये ॥ विद्या घटे
अनु विरला सकि ये ॥ अर
दर घटे विलाप उपजा
यो ॥ दीनदयाल दी
नदू घटे नित गो वर्द्ध
कोउत गोपे ॥ ३ ॥

8

सा बिहार करै जो ॥ कवित्त कागदे सो सीस मारी जदा देखे जो भी

चल फटा देखे घार लखे तन में ॥ मुनि मन देखे देखे सब गात

करत कलो देखे बिन खेद वन में ॥ वीर देख सुर देख सब नाहर

माया के भरम भूरि देख भूल रहे ध्यान ॥ नारि पति सुखी जन सके दुखी

परवेत नहीं तन के लोभ ना ही मत में ॥ १ ॥ स ॥ जब दांत न थे तब

जब दांत दीये तब खान न देय ॥ जो जल में थल में पंछी पसु को

सुध लेत सो तेरी भी लये ॥ काहे को सोच करे मन मूरख सोच करे

कुछ हाथ न आवे ॥ जान को देत अजान को देत जहान को देत सो तो

की गीरे है ये ॥ २ ॥ कवित्त ॥ रा ॥ केसरी पिय जी भामा सो कंज

गुलाबी लाल सो मुनवंती तो बदामी रेहा जाय के

गहमती स्याम सेत गुला नारी तन सोहे तन तुम मन तूं रंजी

कुलफी के केरि विनायक ॥ कुमैची नी पुसा की है

मदन सखी श्याम गो कुसुरी मन माती है तन लायके

अमरो दो तो सार ना फर बानी कर जोर सुमेरू का

त कीनी ता अंगुरी सारद सकाय के ॥ का ला का ॥

आन बने जब आन न को तब मानु नैनन सुलाय

चक्र पति कहा पति उरंतर सी अंतर सही मा

आन बने जब आन को तब आन बने न सान पलाये ॥

चक्र पति कहा चक्र पति उर अंतर सो अंतर ही अब लाये ॥

मान सकोन गमान सके कर काली बलसर बंक रसे

ताये ॥ सिद्ध किये सब सद्ध प्रसिद्ध उतार उतार धरा पर

राये ॥

8

दे... व लतो... को दबके दि धा ... वीरा दे
है पाटे के बीच मे सावत... को

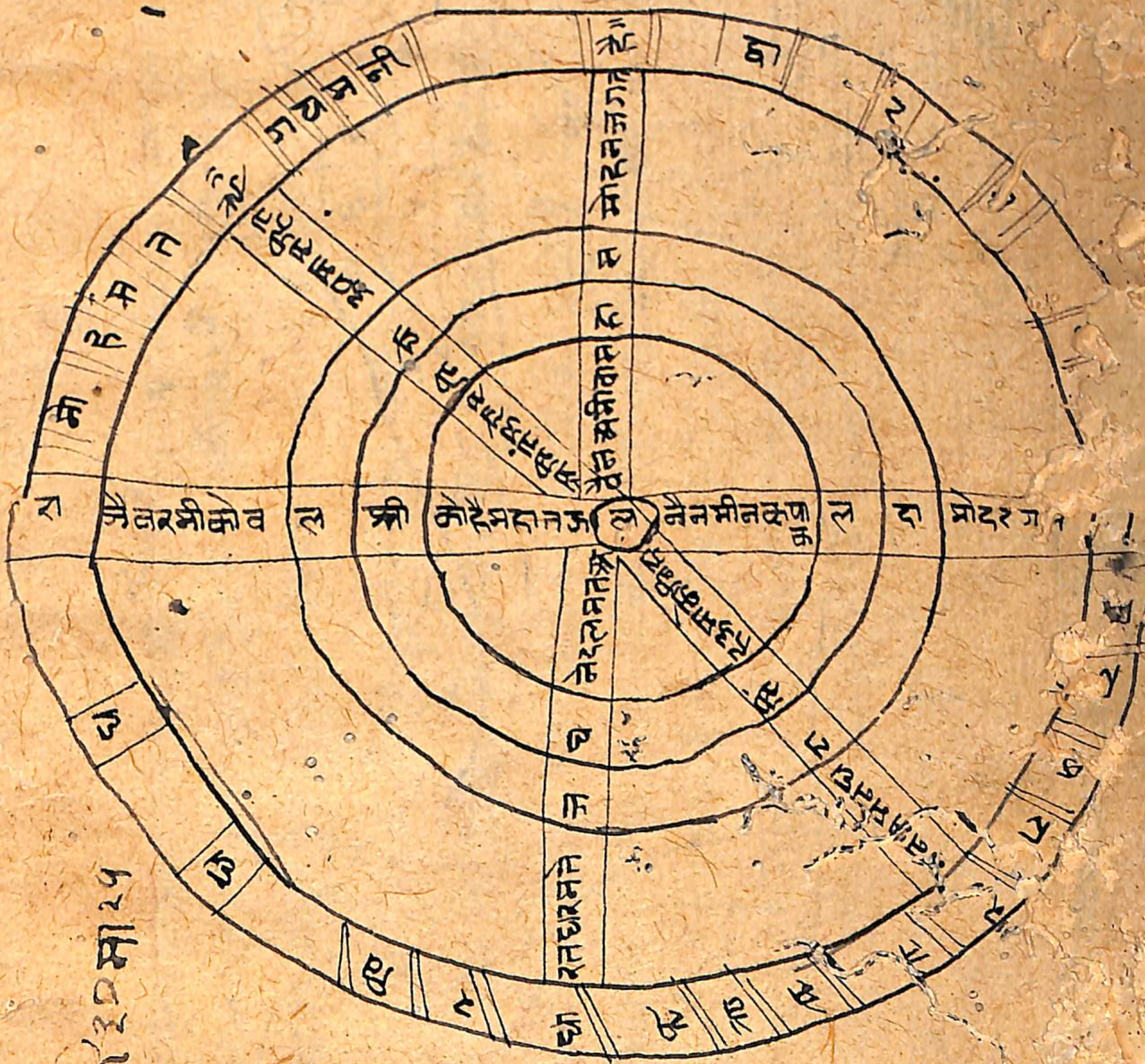

गमाकि व तसा ११२० मा २५
क वलम ... १५
... क्रविरवले
क: १२ ... [illegible]
क ५ राज ५
क ... ८
क वीर ८

मोर
क ... २५
क तरकोरे ८
क हतना ...
क ... २

12 8

हास्यवर्न	कं	प०	वरनन	कं	प०	वरनन०	कं	प०	वरनन०	कं	प०
हास्यवर्न	४	४४	गर्व०	१	४५	शिक्षा०	५	५७	सतरंज०	१	६१
राजनीत	७०	४५ ४७	कोसुरी०	७	४५	धैर्य०	३	५७	कजमोभा	१	६१
प्रेमवर्न०	७	४४ ४६	सख्यभा०	११	५०	शान्तिप्रकि०	[illegible]	५८	[illegible]		
वीररस०	१६	४४ ४५	विंदाव०	१	५१	दानव०	१	५८			
षटरुत	५	४५	उत्साह०	१	५१	अस्त्र०	३	५८			
[illegible]कवि	६	४६	सरव्यर०	३	५१	शालभक्ति	८	५९			
खानखाना	[illegible]	४७	रामजी	२२	५४ ५४	भक्तिव०	५	६०			
मनफर०	१	४७	शिवजी	४	५४	कवीव०	१	६०			
जेसमोहर्मी	२	४८	गंगाजी	४	५५	नायका छत्रपती	३	६०			
बालशील	२	४८	जमुना०	६	५५ ५६	हिंडोरमा	२	६१			
दीपमाल	२	४५ ६०	विजयप्रि०	१	५५	चौपट०	१	६१			
गोवर्द्धन०	३	४५	तर्की०	८	५६	गंजफा	१	६१			

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमद्रामचंद्राय नमः ॥ श्रीहनुमते नमः ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ मुखवरनन ॥ दंत ॥
दंतनन पर हीरा मो तिनकी जोति वारों सम होत दाडिम के बीजन विचारें हैं ॥ रामकवि खंजन लंकंजन की आभा हरि राधा के
दृगन पर मीन मृग वारें हैं ॥ लांबी वेनी पायन लौं सी सफल परन गवारों वेउरग सब जेते मन वारें हैं ॥ मुख ससि पर सरास
री की किनारी मानो कच राहु उर तारा [illegible] वारें हैं ॥ १ ॥ तिलवरनन ॥ आरसी औ गुरनो क सिंगार की बीच रहीं पर का
रनि सानी ॥ वीज के वंद मैं है तन मच्छ दक लिंद जा विंदु लै चंद मैं आनी ॥ कै विरहीन की हाय को दाग है हीरा मैं नील कली
उनमानी ॥ नेहमये तिल ठोडी को गार के पेलद ये मन प्रेम की घानी ॥ २ ॥ जिह्वावर्णन ॥ देखीन पर तदेव देखवे की परीवा
नरे बदे बदे बदूनी [illegible] उपजत हैं ॥ तरद उदत रंदु विंदु सोल गत लखे मुदित मृ आरविंद रंद राल जत हैं ॥ अदभुत उख सी पियूख
सी मधुर वानी सुन सुन आवनन मूख सी भजति है ॥ मंत्री कीयो मैन पर तंत्री कियो वैन तुके विना तार तंत्री जीभ जंत्री सी
वजत है ॥ ३ ॥ अधरवर्णन ॥ किधो अलपंकज पै पाखनपसार वैठे मेरे जान सोहै सिंगार किधौं लाल को ॥ किधौं निसअंक मे
कोस्राव मयंक मुंजवेल लसे मान के उठावें किधौं वाल को ॥ किधौं विघजंत्र हल लिख्यो है वसकरवे को सोतन के सालउर सालत विसा
ल को ॥ नरमी सुकवि नवीर सको सुभाव किधौं प्यारी तेरी भौंह मनमोहन नंदलाल को ॥ ४ ॥ नेत्रवर्णन ॥ मीन मान गंज
न है मैन वान गंजन है अंजन सुधारे दोउ खंजन सौं लखिये ॥ वरछी सी तीछन [illegible] देखटे दीचितवन वारों मृग छौना के
हिरन के संक हिये ॥ रहत है न्यारे सदा भूमे मतवारे [illegible] वडे वडवारे [illegible] चारु सी सौं लखिये ॥ कहे [illegible] विना [illegible] पवती येन गर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैंतो मैंना ।। कदारतैं बवरदाररहियै ।। ५ ।। बंधुविंदआेदचकोराकोसो जोरवै उयौ किंधौ मैंन ऋगबालपोषदैवढायोहै ।। किंधौ
मैंनकामके चपलमीनगंजनरे किंधौ बंजरीटराकपिंजरपढायेहै ।। अलतन्निवायबेकौं विछुरतमारिबेकौं पोय३षकेबानविष
बोरकेगढायेहै ।। किंधौ विप्रकनमयंकमुषरजा करी अलिनरूमेतमानौनलिचढायेहै ।। ६ ।। कटाछवर्णनं ।। कान्ह
केवाकी चितौनचुभी चितमालरू ऊंकी रीग्वालगवाछन ।। देषी मैं तीषीसी चोषी कोरहू उठे बिपरीउघरी
जितजाछिन ।। मारेही जातनिहारेमुमारबहैसजेकजरारेमृगाछन ।। अंजनदेहनदेहरीसहा गन ओगुरीतेरीक
रैगीकटाछन ।। ७ ।। कुलकवर्णनं ।। किंधौ राहूउरतेघरीहै चंदढालविवकिंधौ रसहूघेरयौं चंद्रमाको आइकै ।। किंधौ
तनमूरमैं मलूकप्रेमकीकसौटीकिंधौ विचपटवेकी पाटीकारीचारकै ।। किंधौ रतआदेकीवनाईदोऊ ग्यारीनलीकि
धौ मैंचपटारहीचंद्रमापैछाइकै ।। हंदरहहावनीहै चितकीचुरावनीहैतहांपारीपाटीप्यारी वैढीहैवनाइकै ।। ८ ।। लषीर
नहराविंदुलीरदैभालमैंनैकनमोमनतैंटहलै ।। जनुरंड केबीचमैंकी चमीअलिवालिकआयपरयो चहलै ।। कवि
ब्रह्मनेघुघरीअलकेंअलिसोहतकाटनकौं अलकैं ।। मुखवैठमयंकवेफूलदुहूंदिसकोऊनपैठसकैपहलै ।। ९ ।। ६ ।।
नैतीचषचाहनलगतउरमारकहोतोसोविधवाहनविनजतविंजेद्योहै ।। जेसेंमृकुटीकोचाटतैमाईलसैलला
टतैंसोईविलोकवेकोलालमनपैद्योहै ।। कहैनीलकंठयामैंसी अरनाई आईजोवननृपतितोंफिरतअैंदयो नै
अमढयौहै ।। घुटीलटभालपैविराजैगोरेगालहूपैहमानौरूप मालपैविपालसौंठवैढयोहै ।। १० ।।

अजनसिंगार सरूप विद्युविद्युमंदकियो रतिकी दुतिलाजै॥ देवत हीरहीरा रसबोनम औरकहा विधनाउपराजै॥
तिनजु तासु आनन रोन समीपर हीलटबौं छविराजै॥ नागमनतासुलसै बेलल वीकनजो सन बाटबकाजै॥ ११॥ जो
वर्नेको जोवनसिंगारको सिंगारजो सरूपही को रूपरोतो अंगदेषीयत है॥ तेरे अघरन की ललाई लील षलालनके लो
जी४ चनसुंदरसुधा सोंसीचीयत है॥ चीरपदुरेते कोंघरें धीरमेरी वीरमांगही की चीरतवे ही एचीरीयत है॥ ज्यों ज्यों
त५ करका कहीलै वारनसवारहै सोंतन केसी सन करोत फेरीयत है॥ १२॥ रसमरसमससमतिरोरूह सुंदरी के सघनघनमें
स्यामतार्ईसरसातहै॥ तापै दुहुओरनते सरसस धारीपाटी पियमन पारवे कौं अरुरातहै॥ उरथतदुजनन कलमोतिनवना पाटी६
यमांगताकी लखी उपमाको मेरीमति ललचातहै॥ तमकिचमकित मपुंजको चमकोचीरमानो चारचंद्रमांकी चौंकी चली
जातिहै॥ १३॥ कुचवर्णन॥ कामचोगानकी हालमनौ करकंटककेकिधौं नागिहिबिलौना॥ कंचनके घटश्रीफलकेकिधौं
संभुके वेचलसैजुगबौना॥ प्रीतमके मनको मदुकी किकिधौं गजकुंभकिचक्रकेछौना॥ केडलटैकैनिगारे घरे किधौं
केचकली किलसे जगटौना॥ १४॥ खेलतसंगकुमारनकेलकमारे कघर सकुचीजियमाहीं॥ कामकलाप्रगटीअंगर
विलोकससीअपनी वरछांही॥ वद्धमनेन रहेउर अंचलतं छिनहीं छिनतां पतिकाहीं॥ डारतिहो सिवकेतिर अं
वरएतो दिगंवरराषतनाहीं॥ १५॥ पारदकेगुरकामद्वारेका अमिहजूने धातचघवेको कहा गातवे धजातहै॥
नैवहूंहुपशातेकां गअंगरंगओरहोतदोऊजन रतनसरूप सरसातहै॥ मरमीकवि कोउधनतुरमानीहै जाकेउर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२

॥ कवित्त ॥

कंचन के खंभ ... उरग रंग ... परत ... सौ जाल ... जरी ॥ ... संगार कीए ... है चं ... बीच ... रहे

... बरी ... अरमा ... ताहू ... घरी घरी ... को है नायका प्रवीन ... ॥ मानो

2 विद्याफल रंग दरसात है ॥ तेरे कुच देख कै चमोहन कै बाढत है मेरे जान आली ते कनाल है ॥ १६ ॥ नख घात वर्णन ॥

कुच उपर मोती की माल ... गिरिराज ... गिर तें ज्यों ठरे ॥ कबदुक्त स्याम ... लीला ... वली जमुना ... संगम कोटि पाप

हरै ॥ तिय के हिय के नख की उपमा ... माल चुभी नटरै ॥ मानो कलि ... रजनी पत मज्जन तीरथ मध्य करै

... मैं आलवेली ... याज ... जो ... दीया अपने घर लावे ॥ ... वहै ... तत ... निज ... मैं ... देव दुरावे ॥ देखउ टोन

नकी दुतदी पक आप नेही मन मैं ललचावे ॥ कीजे कहा ... कौन ... कर ... ते मानो ... दुरावे ॥ १८ ॥ रोमावली ॥

आगे लाल चौकी मैं विराजे हर स्याम कहि रोमावली दंड मकाश दिया काम कौ कि धौं जल धार एक धार सौ विराजत

है कैधौ कवरी की पर ... राई ... को ॥ कैधौं ... नाभिकुंड जल पान करे कैधौ कामदेव लिखि ... और रति नाम को ॥ कैधौं

कुच ... बाढ लीनी ... अध के धौं ... पिपीलाका की पांत चली ध्यान को ॥ १९ ॥ वेनी वर्नन ॥ पीठ तन ताक

त ही ... लेत आली विरह ... विख ... रोस रोम धावते ॥ छिन ही मैं केतन के ऐसे हाल होय जाते होते का ... गार

... होते ... लावते ॥ ... जब हो तो याकी वेनी रासी काली केन थैया काहू का हे को कहावते ॥ मंत्र

... कान जो पै जानत नराधत ... वेनी की ... पावते ॥ २० ॥ कटी वर्नन ॥ कारी ... कारी वर ...

... विचित्र ... है नौ है मन मोहै ... कहा लो ... हीए ॥ कहै कवि ... याकी आषिन आगे आली कमं ...

लागै मीन ... ॥ ... गिया ... करत तन ने कुच ... की नी कार्ई देख ... सो नोद ... ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेत्र॥ रूपउनमद उनमद नैहतेहन रेख लवल आगुरीव टवा चातुरी पढ़ै॥ फूँमन तपुरतन्म विलीले नै मुरतनै कुशलन

ग१ सौंधे लैम्रलवे तेला उकेवढ़ै॥ भीं न कंजनकुरै मां अभंग कीनैं तीचैं घनआनंद छ ते हां को चमैं न ढ़ै॥ यै नैं नैं न तेरे

सेनहे हेरे मैं अनेरेक हूं षातीव ड़काती लीयैं घाती यैरहैं चढ़ै॥ ॥ औसेक हा है री वालमृग केरसाल हूग जैसे

है कघ्र कवा कुटिल करवा सके॥ देषत रसीले वाध ववारत भंजरे ह गउमान नगेजके जठेजरी वटरसके॥

हृधके से घोए करमो येनसमात जिहूं जोयेविन जीरहेन धीरधरकसके॥ वीजे जो नकाम वीरको येभं

रिभरिदेतरीते हों नपाव तनतोरतर कसके॥ ॥ अचराम॥ चूनरी चारुचू ईसी पैरै चहकारी हरी अंगगि

घातलचावै॥ जोवनभार सो जातनई सनई छिरकी मैं नई घविघ्रांवै॥ ऊचे अद चटि वंद मृषीकि व्रश

भकेहे हमपीक चलावै॥ दे विधु बीच मनौं विघ्घि सौं विधनारे गे वा कसें अचु चावै॥ ॥ तिल॥

वदन सरोरुह के संग हीजन मजाको अंजनसु रंगसमतोन परसत है॥ महारूप मुनि हूको मन चि

केनाय जाय सेनापति जागि हिजवनै कदरसत है॥ रूपगि चढ़ावे सवरति कन भावे नयो नेह उपजावै पै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

3

नश्राव विलसत है॥ आली वनमाली मन मलमैं वसायो ते रे तिल है कपोल पै अमोल विलसत है॥ ॥विंदु ठोडी
राधे की ठोडी विंदु दिने सखि कैधौं विसराम गउविंद के जी कौ॥ चारु चुभ्यो कनि कामनि नील कौ कैधौं नगमाव
नाभ्यो रजनी को॥ कैधौं अनंग सिंगार की वेलि लख्यौ वर वीज वसी करि पीर कौ॥ फूले सरोज मैं भौंरी वसी
किंधौं फूलसती मैं लग्यो पाऊर सी को॥ ॥तिलदंत॥ को वरनै उपमा कवि गंग म तो हिय मैं गुन औरवसी कै
नाहिन ते दरसी मनकौं नम काहू मये वलते री हसी के॥ चंद से आनन मै तिल राजत तैसे विराजत
दांत मसी के॥ फूलन की फुलवारि मैं मनौं खेलत है लगि काहू वसी के॥ ॥चांदनी॥ धाइ छिया दि
नज्यों दरसी मिलि कैं चकवान वियोग विसारयौ॥ मैं गुनै लौ वाट गमका सदि से नमै चौं गुनो चावन जात उचारौ॥ कैसी थि
लौ है मलेलि कि कचांदनी नागरता को विचारयौ॥ राधे जन्हू च भरलच गि कै कहू आज नीला वर घूघट टारयौ॥ ॥रास॥
सरद उज्यारी वनै रसिक विहारी प्यारी आछ नीम के सीतारी चमकति नारी मैं॥ रच्यो रास मंडल विलास मरि भुजनि वसीं वतनै
गति गान तान मह नैवारी मै॥ मखन वसन ईदु किरन परस होत जोत तंब धतारा की उपमां विचारी मैं॥ उतरयो चद्रत चंद सिठी रवि मंडन को॥

नि

स्यनि॥अंगुरीमैलोजायभलायपरह्यौफिरआवलभायरहेतरवां॥चपिचापनचूरचूरह्वैराउिनछूघपिधांकर
कौघविघापघवां॥घनआनंदयोंरसरीसैभीजकहूंविसरामविसोकौघवां॥अलवेलीसुजानकेपांरयांनि
परयोनटकयोमनमेरौऊवां॥ ॥घविघीरसमुदफसोफफिकैनकतोमोतीअमोलवललनमै॥अस
कातसमैठहरातमनकरिदेतघदानकीभ्रलिनमै॥कविंसउपायचलैनयकोअधरानरुधारसमल
नमै॥निसवासरकूमैगुकैंरुजकेमनफैलैवुलाबकीजलनमै॥ ॥हूती॥कांहकोचेलावनायकेसंभुगईव
षभानकेभोंनगुसायनप्रभावतहीउठआदरकैगहिडारीसहेलनरांचेकोपांयन॥अकलगाहलईहसिकैरुक
सौरचिहैंअवहेतउपायन॥याहिहरकेंतलैमेत्रजपोंजिहिहोयवेडेवजकीठकुरायन॥ ॥गुनकथन॥
चारुचामीकरचंदचपलाचंपकचोखीकेसगिरचटककौनलेखै॥लेखियतदेउपामोविचारीनविचारीजोहि
जानिप्यारीरूपकीनिकाईऔरैअवरेखियतहै॥सरससनेहसोंनीराजतिरवानिदसातरुनाईतेजअरुना
ईयेखियतहै॥मंहितेउअछेडघनआनंदउजासलीरातेरेतनदीपतिगिरवारीदेषयतहै॥ ॥हीरासीहस
निपायमोतीहरसनपायविमलवसनपायपानिपछिजतिहै॥विद्रुमअधरपायरोचनसचरपायनीलकंठहाय
भायकोरिकसजतिहै॥मेरसेउरोजमरवातनकेसपाययातैतेरेपासआयहितसवरजतिहै॥रातोरूपपायतनतोरातोरै

॥सिसा॥जादिनतैवहतेरीगलीनिकस्यौमनमोहनगोधनगावत॥तादिनतैंव्रजकीजुवतीउपहासकैंत्रासनैंन
नचावत॥वेरक्यौनिजोरीगैहैतोसौंतौतौकिनजायवनायरिझावत॥वावरीजोपैकलंकलग्यौतौनिसंकह्वैक्यो
नअंकलगावत॥ ॥काहेकोजतनसजौंमतिकेगरहपोचमलीघरतेरेदईहै॥मानसकौउहिवौंहसिवौय
हवातउहाउनईहै॥वैरनकेहगकौरनमैंरसचोगिज्यौवातभईवभईहै॥मोबनसौंमनलेइक्योउहमो
चनचौरकीओरगईहै॥ ॥नितकासमुझावतकोसमुझैगेवदनोमकेवीजनवोचुकीरी॥हननौंइवि
चारकरोचितमैंइहिलाजपरेकहाकोचुकीरी॥कहिठाकुरकोअवरीततरंगेकरैप्रीतिपतिवतषोचुकीरी
अपनेकीवदीजुवदीऊतीभालमैंहोनीऊतीसतोहोचुकीरी॥ ॥लछ॥आईहौपायदिवायमहावरकुंज
नतैकरकैसुखसेनी॥सांवरेआजसवार्योहैअंजननैननकोलषिलाजतऐनी॥वातकेवूझतहीमतिरामक
रियैयहभौंहननैनी॥मदीनदावतभीतनरवदयहगैदीगपातकेहाथवीवेनी॥ ॥जीतीरीत
जीतीअवनीगतिवैकौराष्यौकौनजैतवारउपजीतुमागहरीतरुनकी॥कातीवनमालीतेविलो
कतहीवसिकीनैकौनकगेहतकैसोभाष्यारीतेरेतनकी॥राजीरामपायसांभरीपैंयेहीवसीतवामरीजीतत
ईधविघनसांमस्यामघनकी॥सिंधुमथकाढ्योचंदचंदमथकाढ्योमैनमैनमथिकाढीतमपिनहारीमनकी॥

आपनेर

वति ५

मध्यासुरतांत ॥ नवनागरनागरिगोकुलचंदरचीरतिसंपतिताकरकी ॥ छुटिगेटूनमुतियमारकहूँउरहारकहूँक
हूँवलयाकरकी ॥ मुखचुंमनतचोंपकपोलवडीछविअंगनचोंपकेआकरकी ॥ चढिथेतमनोलगिरेलेतसरोज
सुधासवलूटिसुधाधरकी ॥ ॥सुरतांत॥ इंदिराकेमंदरमेंसुंदरवदनवेमंदनमेंदेविहसेरदनछविछ
निछांनि ॥ उरनमेंउरउरउरनिउरोजमीजेछांतनमेंगातअंगरातिभुजिभांतिभांति ॥ दूरिहीतेंदूरिदुरिदौरिर
पौरिहीतेमुरिमुरिजातदेवदासीसचिमांतिमानि ॥ पीतमुहमयेंपियापीतमरजनजागेविरसतजातमान
पीतपटतांनितांनि ॥ ॥मध्या॥ वैठीरसोईनईदुलहीमुसकायउतेसजनीसेंचावत ॥ वैठरहेअंधिजेयेंल
लावहदेयकघरजवतौकोउचावत ॥ संभ्रहसीघरकीसगरीघहकौंतकदेखतहीवनिआवत ॥ वेनगेहंमांग
नो० ३ नलाजननैतेंवहलाजनलेकछुल्यावत ॥ ॥सुरतांत॥ छकिछकिदोउलुकिछुकिमुहचूमेघूमेजैसे
लगैवातजलजातजुरिजुरिजात ॥ वेनीकविरसिकरसीलेरसमसेदोउदैदैगरवांहीहसिहसिमुरिमु
रिजात ॥ छूटेवारटूटेकंठसरीतैसधारमोतीजैसेलोलदोउकुचकीदुरिदुरिजात ॥ मानौतमतमकोचिया
रहागिरतारादोउगिरकीदरीमैंदौरिदौरिदुरिदुरिजात ॥ ॥वांहदुहूकीदुहूकेउसीसेदोउहियमैंलगि
पगाढेगहेहैं ॥ हूसरीवांहदुहूनकिदुहूंपरदोउलिवाजतनेहननेहेहै ॥ सोहैदुहूकैंमिलमुखचंददुहूनकेहेरकेरंद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वहेहैं॥ ओपरेकोऊमनोजविथासवअंग॥ समोयकैसोयरहेहैं॥ ॥ औरदसरतांत॥ स्यांमासौंस्यामसौंरसजैसेके
तमिलायरयोकरिमैनऊकीलहैं॥ दोऊदपकेरतिकेलिनैज्योंग्योतरुसौंनेकीवेलिसौंनीलहैं॥ लेतसरोजससी
नैसुधाकिसरोजहीतैमकरंदससीलैं॥ यौंललितसकौंछुलीसजितसोरमैंचौगिरमैंज्यौंजदीजागतजीलहैं॥ ॥
॥ अनुराग॥ सखिनकीसाधनहौंमाधौंकेमदनकौंसमयाहीसिधारतहीराधाठकुरानीके॥ कहैंकवितभ
मिभागनजगीसीअनुरागनरंगीसीदुरादेतसुखदानीके॥ ईगुरसीराडीअंगुरीनकेचपतपगच्यागिरक
लौंलालमारहृतम्मगवानीके॥ पावधरैधरनीअगावडेअगाडउपरतमनौंपाउडेवनीतसलतानीके॥ ॥
॥ दृढानुराग॥ मोझिलअलीनकेछरीहौनैंदीयवगरमैआयद्वोंअचानकसुकविसंभकसिगो॥ लटमैंअटकि
लटकलटपटआराणफूलनतैगौरभुजमूलनिमैंघसिगो॥ कोलपवुरीनसींसंरगअखउरैनसौंसलौनीकेसरस
लौनीगांठदेतगसिगो॥ कसनकीलीककीलनाईमैंलवगिमनअंगीयाकसतमैंननीकेतरेकसिगो॥ ॥
मदननसैनीचढवैनीरोनीनैंनीकेललाटपटलेटसंभमोहनरूपगिगो॥ चलचखवितवनिऊपरउरकिज
किजकिझूमिझूमिचीकनेकपोनरपगिगो॥ वोडीगाडगिरगोरैंगरेतरेधिरधिरफिरफिरपेगिरछिन
घतीआंउघरिगो॥ मनकरिनिकटनिघहृच्योंमनकैंकुचतटनतैंघरिलगिसोटनिलपटगो॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाक्यविदग्धा ॥ तेरेउरलागवेकोलालततरसतमहारूपगुनबांध्योहूनतासौंउमहतहै ॥ पहसनिवारयौसौंउतर

१२ कौदेयतौलौम्प्रारगईसाकबातकैसेनिरहतहै ॥ रूषीजोकहततौंतौंमीतनरहतेमामनेरकौंहैतौसार ७

रोसनगहतहै ॥ सेनापतियातेंचतुराईसौकहतवलिकारकरोजाग्रहलालतकेहतहै ॥ ॥:॥

षेलतहीसजनीनमिलीसंगचौपरेचारमहारसलैवो ॥ नेदनकोकुलचंदजूकौंकहूंदुंदपरसो

लरचायचितेवो ॥ नागरिनारकसौपरगोटसौंकीजतहैकतम्प्रापुनऐवो ॥ जोवरैरईसतोवी

सवेसैकघूदाउपरेम्प्रवकेमिलिजैवो ॥ ॥कृष्णाभिसारिका॥ कारीघटादेखकारीसारीम्प्रोटप्यारीसैं

नचलीमगनैनीकुंहूगहरीनप्याहवी ॥ कविमकरंदम्प्रोकुहारतीचुरैलैवालैचमकैम्प्रकेलीवीजज्योंगचिरा

कचाहवी ॥ दसहूंदिसौंघनेघोरनिसांनउठबोलतमसानहारमारकीनीवाग्रहवी ॥ मनिवारेनागपरेपांवडे

विछायकैसीसोहतहैतोहम्प्रविसारहूमैसाहवी ॥ ॥उत्कंठा॥ जमुनाकेतीरवहैसीतलसमीरजहांमधु

कारनिककरतमंदसोरहै ॥ कविमततरामजतोपविसौंकवीलीवैठीम्प्रेगनतेफैलतसुगंधकीऊकोर

८ रहै ॥ प्रीतमविहारीकीनिहारिवकोवांकैसीचहरिसदीर्घदुगनिकरीदौरिहै ॥ एकम्प्रोरमीनमानो

[illegible] एकम्प्रोरकंजपुंजएकम्प्रोरचंजानचकोरएकम्प्रोरहै ॥ ॥ ॥ ॥

६ 6

॥मानवरनन॥लोचनलहेकोपलसफलहमोरौकरिप्यारीप्रानपतिकोसनेहरसलीनकरि॥हरिवरनेकौं
हौ[illegible]॥जैहीपाईपरमानिकाईकीअवधिवधभानकीकुंवरिअवगतीअरवी
नकरि॥हरिपदधूंघटकोहाहाहेउधारिहगनजतनपानपमैपीकेहगमीनकरि॥केजछविघीनकरिससिही
मलीनकरिसौतिनकोदीनकरि॥प्यारेकौअधीनकरि॥ ॥मानकीजोवातहैजमोंतेवारहैवेहहैमानवदाकोह
हेकेंपदीजियतहै॥रसअनरसनीलकंठपलछिनककोतनकोअधिकहोततनछीजियतहै॥तानिवैनभोहै
मधगनिधैनसोंहेरारीमानपैनगोहैजोहेहुचभीजियतहै॥पीठदैदैवठनहैपीठपरवेनीहेरीवैनीवीचदेकर
विरसकीजियतहै॥ ॥हमसनहारीघनेरीलखीपैवहाकहेरावरीकौजैवडाई॥रोसहमैअपनेपीयकीतिय
काहूनपाविधिपीरहीपाई॥हावलितेरीपाकूनउपरतेरीसोंतेवडतेंहोंगिनाई॥भावतीतेरीहोमोरकोमू
वोभलीकीवीतेलसोतोषवाई॥ ॥हर॥वोलतनडोलतनषोलनपलककौंहराते मानवुरमरा हेनेहेन
जेंते॥नंदनदकविमनहास्योकरिरारीनारनरूषनयनकेतीदीनताअंगेजेतैं॥तामदामदंडभेदभिद्योनही
प्यारौप्यारीकियोनपौउपचारगईगांठिराजेतैं॥गाठगहिउरनउतंगपीठपोठीमानौतूवीलापकाठी
मानककरेजेंतैं॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोयोहैसोमद्भुतकहिवेकोनाहकेसुकविराकेदेषेसीकवानातचाहिये॥२१॥तमोलवर्ननन॥वैठीहीप्रवीनप्या
रीफटकमहलगोरे आरसीसेअंगजलचंदनकोछटक्यौ॥दीनीसषीतासमैवनायबेरीलीनीं काय मंदमुषबोल बी
नतमोलगयोगलको॥ग्रीवतेउदरलगधारवंधीअंतरहीवाहरदिषाईडोपदेषमनललक्यो॥कामरं
गरेजननेवनायरैनीकाढधरयोमानोसेतसीसीमैकलसंभरेरगललक्यौ॥२२॥वैससंध॥गोरेअंगभोरीभांतिदे
षीसोनेकीसीकांतउठीकचूरोमवरवेनीकीसोभाईहै॥हितरघुनाथनाथयाकीनततनईभांततेनैननकी
कोरकौनत्वोरलगआईहै॥कमलकलीसेकुचअलीकोनिवललाकत्रिवलीकीतीनरेषासरलसु
हाईहै॥सिलताउरवेकोजोवनवेचढवेकोमानोकामकारीगरसीढीसीवनाईहै॥२३॥दोहा॥वाला
नैसंधरूपजनदीपजग्योहैएन॥उउरपरतपतंगगजिमननरनारनकेनैन॥२४॥मानवर्नन॥अनरस
डौसरमैजाकीउौरआवेकोउ तासोकहुदुरावेडीठऐसोकोकठोरहै॥साथहूंधरेगेअंकमालहूंभरेगेह
मभावेसोकरैगेपामैतुमेकामनरोरहै॥जैनहीमहंमदरूपीठहैतितसारीजोपै शषोवाहीडोरतोचलेनक हसनि र
चरजोरहै॥पीठहोतिसारीपैहमारीहैहमारेजानकाहेतेजोत्रुठेतेतेहमारीहोतओरहै॥२५॥वोलत
नडोला॥नषोलतनकलचकोहूराते मानतिउरभयेहैतैहतेजेते॥नंदनमुकविमनहरयौंकरहारी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाग्रिसंभ्रमथनकेतीदीनताभगेजेतैं॥रामदामदंडभेदमिश्योनतोप्यारोरीकियोउपचारगईगांठराजेतैं॥
गाढेगहइउरजेउतंगपीठपौढीमानौतैवीलायकाढीमानकरवावरेजेतैं॥२६॥रूपगर्विता॥मेरोमुखचारु
एकविनगीचुगतिआगैधावैएकपाछेवेनीगहनकेदावरी॥एकनवेसातनउसासलैनपायतगंउजेआ
सपासहौंनजानोकिहचावरी॥ततोपरीगोहनकेवेगचमोहनपेमानमेरीवांतराटीअधिकउतावरी
वावरेचकोरनकोमंदमतिमोरनकोदईमारेभौहनकोदूरकरआवरी॥२७॥प्रेषितपतिका॥साहन
तीनेकलमकंनमैंजानतहांसोतलफतलफदुखपातहैंअतनुसों॥आवैसुनगोंनकह्योललनविदेस
तीकोकंपउडगौउरसौंजियविरहहतनसौं॥कीनैहूँअंनेतसुखविछुरेनराकछिनकैसंविछुरैगेआ
वजनकेरतनसों॥निरहचेंचलेगंसंगरावरेकेमेरप्राणमेरप्राणप्यारेहनेराषियौंजतनसौं॥२८॥
॥विरहकवित्त॥मलमलेयजकोसमूलमिटजैधोअरुउनजैयौंभूतलतैकेतकीकमलहूत्रियोकात (कुल) यासुगंधासह राईको॥ कटाजैयो
लअलिकुलहुबदाईको॥मोतीरामहकविमनोजमालतीवेहूजोपजोजिनआसविरहीजनहसाई
को॥राजवंसहंसनकोवसनिरवंसजैयोअंसमिटजैयोयाकुलानिधकसाईको॥२९॥चाहवडेचाति
कनिवेदतहैवेदनकोझूलालरआवादिव्यदामनिकोऔरदै॥वदतसकलकेकीकोकिलाअखंडको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

डीमोतीलम जग मग्योजऊजुन्न कोकामहै ॥ कहदीजो उधोप्राणपतिहसंदेस रहदीलनहीकीजाने कौद
वा॰ ष्योंजामहै ॥ गोपीहोत आइत विरह कुंड या वक मैं आइहो सदनस्याम मदनको होमहै ॥ २० ॥ = ॥ = ॥
हतोनिसवासर वसत प्राण मोमें याते विनिती करत सोनकौं हूं विसराइवी ॥ हौं तो जरजै हौं माल नलपेटी मो फल
पैकैसै सही जै है विरहा गनवलाइवी ॥ कहै कवि चिंतामणी हतोवयारि रूपपाछ सनेह मोहतहां लै उडा
इवी ॥ कोजीये उपाय सोई प्यारो घरैं जहां याइ षेह नये देह मेरी तहां पऊचायवी ॥ २१ ॥ सकाइ सरीर
आधीनकरे द्रगवृंदके नीरकी मालाफिरावै ॥ नेहकी सैली वियोग वियोग जटा आद्ह किसी गोरु
धूरनजावै ॥ प्रेमकी आगमें ठाढे जके लघ आरालै आपनी देह चरावै ॥ लज्जानकहै कलाको टिकरी
पैवियोगीको भेदको योगीनपावै ॥ २२ ॥ वैठीहुती सषीनमैं पीयको गमनसुन्यो सुषके समूहमैं वियोग
आगभरकी ॥ गंगक है विविधसुगंध है समीरवह्यो सीतलहू लागैतन वियावा निज्वरकी ॥ प्यारीको
परसपौनपरयोमानसरपरपरसेपौनगति पौरै भई सरकी ॥ जरगराजलओसैर वार वर घारन ये जी
वजरवर गए कीचसूकी सरकी ॥ २३ ॥ मेलगरे म उवेलसी वाहनकौन सीं छांह निओ लिहो ॥ का चाहनि र
सौंसहा विलास मुमारष हे बेऊलागन दोंहसबोलहै ॥ ओतनप्याइहै कौनसुधारसकासौंविथा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८ 8

कीकथा॥८घ्योलिहैं॥ यारे।विनाहोकहं।लषिहौंसषियांदुषियां अंषियांजबषोलहौं॥३४॥भलीकीनी मान

मानप्यारेकीछबीलीछबिदेषछक्योतं औरतोविनायोकोछके॥ अबतोवियोगदीनोवैरीह्वैविरंच

ताहसोईसुलषयैहै जोईसमैकुसमैंतकैं॥नंदनन्दजानकाह्गोकुलकेचंदविनजीवोनभलोतेरेजीवेगोतो

कोवकै॥हांसीह्वैहैनेहकीसनेहीन्हकहावतहै औरमैंलोहै जुभलाईकिछूलेसकैं॥३५॥वियाकेमरमभ सं

मभमसूमहिसहिनीठडीठघरागहैरूपकेउजागरकी॥दरसकीस्वतहितऊहूंमनबवासकरैरूडेंवहीतेरेवं

धीआसउनआगरकी उगलतम्है अंसुदीपदीयवाढेमोलआवैंविरहीनकीहैसीडूंवसरकी॥३६॥लाजके

लेपवदाइपचीसवसीछविसेषकोमंत्रलनाके॥गाररूह्वैब्रजलोकथक्योकरीऔषधिवांसकीमोंहदिवौंके॥३

धोसोकोरसषानकहैजिननेमधरयौकररातोउपायके॥कारेविसारेकैचाहेउतायौअरेविषवावरेराषल

गाइके॥३७॥आवघिरकावदेउलावकेजकेवरामेंचंदनचंवलीचंपाचांदनीनिवारीमैं॥जुहीसोनजु

हीजाइजंवुककदंवअंवसेवतीसमेतवेलामालतीपियारीमै॥सिवनावागकोविलोकवोलभावोमोहकेत

विनआयोरीवसंतपुलवारीमें॥भगचलोभीतरअनारकचिनारिनमेंआगलगीवावरीगुलांकीक्यारी

मै॥३८॥परकाजेंहदेहकोधारफिरोपरजनायथारथह्वैदरसो॥निधनीरसधाकीसमानकरोसवही

विरह॥ जो मैं दीयो कीयो मैं न जानी यै कहां धौं देखी री नदेह मेरी दसा दूनन साई है॥ वरैं वैन वरैं और सम को भकास करै मोही कौन कहै कछु कछु कहा कथा ई है॥ नंदनन्द चवै और गोकुल के चंद सोउ ताही मैं लगा यौं सो तो निपट ठबा ई है॥ एरी मेरी वीर काहे मो हू जा है तो जहां को तहां डारि आउ ताव री कहां त नेह लगाई है॥ ॥न ब कहां लागे वन वेदरन लाए औ बट चष कहां पाते दप से ते मालभुज को वंदन लगायो कहां हूजे है विचन हरन वंदन लगा यो कहां हू जे शिवपान को॥ ॥रैन कहां जागे नट नागर निरत कीनो धीरैं बोलो अमलागे मोरे प्रानु को॥ विगरी सो वि गरी उराहौं जिन आगे आयो विगरी कहां लौ दीजै पाट आसमान को॥ ॥कंचन मैं आगि लगी दुनी चिनगारी भई दूबन लगे री अंग भूषन उतार ले॥ वालम विदेस चले जोवन आगल गी को द्रुडी विरह ववाल लै॥ कहै कवि काल दास काहू पर चर जात चाहै तो चार अंगार देही मैं ते कार ले हाऊ भई संगम शन वाती कौन वारैं धाती सो दुवाइनै कवाती को न वार लै॥ ॥आती नगर मगर दुति दूनी केलि मंदिर मैं गवर गवर आगर वगार्यो तै॥ कहै पदमाकर त्यो चंदते चट केदार च्यवन मैं चारु मुख चंद अनुसार्यो तै॥ तेरे तन मैं वैन न मै सबी और सैन न मैं न हा देषो तहा प्रेम पूरन पसार्यो तै॥ ॥छिपत प पारा त उपलिन छवीली अव गहवे की वार हार न उतार्यो तै॥ ७

८ १

रकतिहैंनरातीहबाकलीऊमतातीजातीहैतातलविआरताती बानहूनबातीहै॥वालरनभः
तीकाहग्नतहूनहातीरैनरूतसीवि हातीकमघनैपापरुभातीहै॥दारकाकेनापी रूदोत्रा
एहोहिजातीतमजोवनकीजातीभईभोरहिनरातीहै॥वातीनहहातीविरतातीपरजाती
आतीपातीदेबघातीवातीवातीवरजातीहै॥ ॥मूलीगमितनकीहैऔरैदसामनकीहैपीरी
पीरीपानकीललकीरीकौसौंगातहै॥घरतनस्पामधारकहतनकाहूपीरनैननतैतौरज्योंवहीचली २
जातहै॥कौकरिस्योहैजीअचलोप्रवीनपियमूईजैसीमूरतसौमुयेमेकहातहै॥सांचीजोनमानो
वातआयदेखोआपनापसोऊहाथहूथकीआंगूठीमैसमातहै॥ ॥ चूरीलो
लोचारबोलोकाननकीबीरबोलौबोलौबगवारोंसमघरीकौंघरायोहै॥अबन हॅलबोलो व
महामलगायडोलोआगैकौनरहसोकहाअसमलनापोहै॥जिवनिहमारीचिरजीवोचनके
विहारीजिनकेसमीपरहैसदालबकपोहै॥वैरुनाहिंवाढनाहिंवसौवसूगाटनाहिंदूधौ
रहनुमैंजैसकैसेवारुआयोहै॥ ॥अंगविभजिलगाऐमहारसबसींकरियैजोईप्रेमहीपागे॥
स्यामकोहेतलियेहमैसेवतनाथकौनामसदाअनुरागै॥जो-जलिपेजोमिलेहरीप्यारोतोका
नकरोपैनरीदुखलागैं॥मोहनकेमनमानीयहैतौंवहोरीकहासबगोरबजागैं॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न

वियोग॥ मानकैमुरीनदसाउससहूउरीनछिनराकोंविधुरीनऋद्धिहठनठांकुंगी॥ पीपोठैदैहोजिहीकोनपीकोंपीठदूडूउ ३८
नैकनीठपरदेसचलेडीठनवांकुंगी॥ प्रीतिमकीप्रीतिकीप्रतीतिमेरैंओरकीनप्रेमपीठभोहसोंगेवनडहांकुंगी॥
प्रानपतिप्रातगेहियचांनदियोचाहेंदेवसेकरवेकोंसंगप्राननपठांकुंगी॥ ॥पोदरिलोगोनकीपोपरदे
संगचेतगोरीअलिआयसुनाई॥ आयउगयलईडरलायहेचेतेंउराहूविरहनआई॥ वेगेहीआवनदैअ
कसैोसभलैंअभलैंइतीवारलगाई॥ पोहुनिनाहगेहियेंहहलोवडलोचलिवेकोनवातचलाई॥ ॥
॥हघुन्योनिजनअंतगुन्योंजोसुन्योचलिवोनंदनंदजूको॥ कैमिसिआवतजातअटाचगेहुकांकिउरोधेन
लावतदूकोसैनवकेरेंगेहवेकोवकूरकवितावविते विषकेचितधूकैं॥ जोअंपटकोकनिरदेगेहरदेतकि
हातभटूकोघटूकै॥ ॥हेगरसोसबसंगलसोंसभयोपलतेंपलिकोनगेहन्यारे॥ घगेडकैंतागेहच
लोसबुचाहतेकेसंरहेतेहैहोधोविचारे॥ माननकीअसप्रीतमकीहठथोदेखिवेहेअवहोतसवारे॥ को
चलिहैचोआगउमटयहदेसतैप्रानकिगेहतेंप्यारे॥ मारतेउमेडवतलअचेउमुखरोषसेखदावानलने
नेजिनजारीमिमनहरी॥ विकटवघूरगालजरखचढीहैचारसेघीनकेचेडवानकरैंकामकहरी॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नीरनकेगौंनमैंजुसीरनकेभौंनतहांधीरेसीरवौनमनिमंत्रनपरहरी॥घरघररंखनकेधुंसलवांनिघिरीहनभौंनिसो
गहनसीजेठकोदुपहरी॥ ॥जिनवोलनवोलअमोलसवैअगकेलिकलोलनमोलिलियै॥जिनकोंचितलाल
चरनपैअनरूपयिपूखसोपीयजियै॥जिनकेवदपंकजपांनिघियेहठभांगनिसवैउवहूरिकियै॥तिनकोंलगफट
तहींफिरिकोटिकदूवानयेनगहै॥ ॥जाकीछविछटाचाहिचक्रतचकोरमोरहूरविदूरिठरोमरोम
रोमरसपीवतै॥राजारामऐसेघनस्यांमविनराकोछिनजीवोअनजीवोनलोकहाकैसेजीयेतै॥हूनी
नारदेहगेहमधुराकीवोरिआलीलगयोलगायप्रांननाथप्रांनहीयेतैं॥रहिगईतनमेंतनकसास
वासनासीज्यौंकपूरदांनीकोंकपूरकाढलीयेतै॥ ॥वैरीवियोगकीअकनजारतक्रविाउठैअचकांअ
घरातक॥वेघतप्रांनविनाहीकमानलवांनमसेवोलनसोंकानहूघातकसोचनहीयचितैवचियेकित
ओलमोलमोतनतायैमहातक॥वेघनआनंदजोनछयेउतपैडपरौंइतघातकीवातक॥ ॥
नैनमहावलसाजचढ्योरतलदादुरदेहमचायोहैदंदं॥डालघराचपलांचमकैअगिपोनतरंगतैं
मारकैहंदं॥मोरजरेभटसोरकरैकविरापककेहंमडबनेकननंदं॥सालभालहमानदिहैयपहवादर
सीअसाढकीवंदे॥ ॥काहेकौंहतौकउवसहतेविचारेप्रांननवकीनिकसेजातेछिनहूनछीवते॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उमगउमाउहूकैरंगचाउहूकैरंगमैरचाउहै।तेरावपैंडपाछैरहैपानीहूनपीवते॥प्रीतमपियारेरसिराति
कौहिचारेसुनिनाथहीसिचारेतेनवैगोहूथिरथीवते॥कहाकेदोवैठमैतेविसकीसीछूटहायनिकसन
लागीनतोनेहीसदाजीवते॥ ॥सबीसबहगरिसपहरितचरितघेरीगुरजनगवारतेनडरतसरसतहै॥
रयोनलहूचीतेनधिरतलाजबरकमेउरउरगतिरति [illegible] तैं।दारी
नटरितहै॥वेदनकेबंधनतेंपरतहरतहियकुरतवुरतनेदउरतमरगतिहै॥जगतकौघासनचरतर
गैन्याईज्योंषेमषीफरफरैंतउलंघनकरतहै॥ ॥लालकैवियोगतैंगउलालहूतैंलालसाईअनराव
वसनज्योगठिजोगअभिलाख्योहै॥सैनसषतज्योंसज्योंरैनगैदनजागरनमूलिहूनज्योहूज्योरपरस
चाख्योहै॥प्यारीवेनयनज्योंसवानवरसततासौंभीजतउरोजदेषिभावमनमाख्योहै॥सेनापतिमानौं
प्रानपतिकेदरसरसविसकौजुगलजलसाईकरराख्योहै॥ ॥बालबुधीनेंदलालविदेसभईविरहान
लकी॥अधिकाईकासीकहैंघनसारसारसपीरपठीरघटीनततांई॥सीतलजांभिवियोगनकेउर
तेमलरमेतिनकीपगिहराई॥पोचदवैंपरकेमुकतासलज्वागिमटमसैसानौंभारभुजाई॥ ॥निर
नोहीनानसलुवघमघुपुरीचायेविसारीहसैकीसधिकवेचितआयहै॥घीरनाघीआघिनआग॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्धियै बिथा नविच अराधी अतन कहा लौं तनताप दहैं ।। श्याम सो छबीली छबि छिन हीमै छीजै बरी कहौ बहा कोकीजै
अब कौन सौं उपाय है ।। गात सखी गोविंद मैं गारे मैं आन मान रहो नैनन मैं प्यारो रसना मैं रहो नाम है ।। ।।
बिषाद ।। बहुत दिनोंन पहचानें की है बानि यातें बोलियत तुम सों वचन अमित दीन है ।। हरकै बिरह सब देह जर
बरहै है हैं तुम पंच भूत जिन जाइ छीन छीन है ।। वाके पर केज के पंथन की हो उभूमि हो उजल वा ही के सरोवर
मैं लीन है ।। वाकी आरसी मैं तेज वा के बिजन नामैं पौन वाके अंगना को ब्योम हो उतौ मती लीन है ।। ।।रारे बीर
पौन तेरा चहै ओर गोन ताकौं तो सौं और कौन मन हुरकौ ही बान है ।। गजत केहौं न ओठै बडे सौं समान घन आनं
द बिधान डुबिषान हब दीन है ।। बांहडु जघारे बजमोहन है प्यारे वैसे अब है रूमो ही वैठे बाठ पहिचान है ।। आ
बिन मैरा बो हरे बिरह बिथा की मूरि छगे उन पाय उ वो हा हा नैव आन है ।। ।।स्मृति।। साहस कै रस कै मुसका
य कैं मांगी बिदेस बिदा मृदु बानन सौं ।। सौ तन वालर हीम हुरगुरे आय दहीवन वेल ज्यौं देह वहा न सौं ।। नैन गहे
हियरे मन गेर आयो पै बाल तआयो कपवारु जान सौं ।। हालैं अजौं हिय मैं रगडी बच डी जागी यो उमडी अँसुवान सौं ।।
।।आगम।। चाउ करि के रैफिर काउ सौ बदन चंद मंद हास वरष अनंद आमी रस सें ।। दग न गुविंद सौं चितौन की चटक
कुवलय के दलन सजे तोरन सुहद ससे ।। देखि खिखि आगमन अंगना के अंगन ही रलये का मन सवेसवक भवसे ।। घा रपी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सेदेसवर्नन॥घर्यौघटआयअंतरायकेनिपटपटतामधिघनजारेप्यारेपांनसकेदीपहैं॥लोचनपतंग
संगतउनंतजैसजांनप्रांनदेसराखिवकौंभरेध्यानसीपहैं॥ऐसेकहूकैसेघनआनंदवताऔंतूरिम
नसिंघासनवैठेसछयतिमहीपहैं॥डीठआगैऔलौंजोनवोलौतौकहाहैवसमोहितौवियोगहूहीसतस
मीपहैं॥ ॥पीरीपीरीदेहछीनीराजतसनेहभीनीकीनीहै॥अनंगअंगअंगरंगवोरीसीनैनपिच
कारीज्यौचल्यौईकरैंदिनरैननरैननवगराएवारनफिरतझकझोरीसी॥कहांलौंवखानौंघनआनंदहुहे
लौदसाफागमईजोंनप्यारेवहूभोरीसी॥तिहारेजिहारेनिहारेविनप्रानकरतहोरीविरहअगारन
मगारहीयहोरीसी॥ ॥विकलविवादभरेताहीकीतरफितविदामनिलहकलहकवविजास्यौं
करै॥जीवनअधारपुनिपूरितपुकारसुनआगितपुपीहानितकूकनकरयौकरै॥अपिरडदेग॥
तिदेखिदेखिआनंदघनपौनविडस्यौसौव्रजवीथिनकरयौकरै॥दूदैनपरतमेरेमानजोनप्यारेते
रेविरहीकोहेरघनआसनरुरयौकरै॥ ॥नैनकहैंसुनरेमनकानदैक्यौरततोगुनमेटदयोहै॥
हदरप्यारेसुजानकोमेदरवावरेलूहमहीसेभयोहै॥लोभीतिनैतनचोनदखावतऐसेमहामदप्याकिगवोहै॥

पत्रीलिखवै॥नाथनंनंदसेअभिलाखलाखभांतिनकेहियमेंबढतजातसुधिकेकरतहो॥कागदओरनकहूकौंबत्त
नहाथमनकहूंमदनकेलागतसरतहो॥व्याकुलरहतकछुकाहूसौंकहतनाहिंजहांतहांविरहाग्निदेखियंवर
तहो॥गीतमकोंपतियांकोंलिखवोकठिनभयोअखिआंसरआवैलेखनभरतहो॥ ॥आयनीऔरतैवाहेलि
खौलिखजातहकीगतमोहनओरकी॥प्यारीमयाकरिमोहिमिलोसहीजातविथानहिमैनमरोरकीरकी॥
मायहीवोविलगावतछातीकहीकिनआनीचिठीचितचोरकी॥राधेकौंदाघलगीजकभोरतैकैरहीअवित
नेदाकिसोरकी॥ ॥गोपीगीतदूधौआगनपाती॥कागदलपेटलायेवातनकीनकीनदीडूधोपोलातहीके
लैयानीरसुधिकोहरतहै॥मथमहमाजलथतेईजलजतुभयेचितआयेचतरांजियराजरतहै॥कारथगंभीरता
मैवूडिवूडिजातमनधीरयहोफैनआलीताहिकोंधरतहै॥पतियापवाहतामेंआखरनमरभराकतैंनिकस
मनराकमैंपरतहै॥ ॥जोईसरचीरहोईप्रेमकोनिवाहकरैकहाकैरकारप्रीतरीतकछुन्यारीहै॥तवहोलि
गमराकेप्रेमकोंआगमपंथकहवनिगमग्रंथवातअतिभारीहै॥वैसैंभीतसायरकौंकापरसौवैरिसकैसौं
चओसकोचग्राहमहाभयकारीहै॥करीहरगिरधारीडूधोतामैंअतिचारीभईहमकौंतौतारीआवह
वरदीकीवारीहै॥ ॥चंपाचौंचंवेलीरायवेलिऔगुलाबनितेचेकरहौंकौंनसीचतविचारीहूवहूवरी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हमैहै रुकमिनि नागरि जदुके कुमार हरि कौ सी राजकन्या सौं तौ भाग न तैं कुंवरी ॥ हंस तें हंस रचै स्मरु काग सें ग काग
न चै पावत है सो भाजै सें सामर्म संग लुवरी ॥ जैसें स्मापदु ते अवतै होई विना तन्यो नृपति त्रिभंगी भरा दोनी भई
कुंवरी ॥ ॥ हंसि हंसि दिहसि विहसि व्रजनारी कहै जात है निकट जहां उनके लके तहै ॥ कौंन भांति दंपति
विराजत है द्वारका के सदा ही निज रानी सोर रसिक रसि देत है ॥ तुम तौ सभा हौ सांची कहौ किन दूधो पधारो
काम के उमाहै राम के संग रहलेत है ॥ कौंन भांति कुबजा कौ पोठिवो बचन तस्मा पगाउ है बनत कि धावा नका
टेटे तहै ॥ ॥ वीन के संत्तव राविराजैं काधे कुबजा के कारहू है गवीन ताते ताही कौ चरहत है ॥ आगे कुच
पाछै कुच कै लैने उपजै रुचि आगै पाछै गहैं कछु कुच ही गहत है ॥ अल तिमै रैं दा हमस कुच करतु नेही
जगहै ठठोल सनौं कहा धौं कहत है ॥ औरदेह कुच घुभि होइ नके मन माहि चोगर की नजर मे ज्यों वुकचार तहै ॥ ॥
चेली सहेली विभंगि हैं चेदन ली ठउ रोज सौं जे त्रवजा वे ॥ कानन की घर है मदराकर कैं कनचूर के दार लहै
वे ॥ जोग की दी तिजि ती विधि आसन कौरकौं घर मै सम झावै ॥ ऊधा न्ह सो हम अैसें सुनी ऊहां कुवरी दौरव नायक है वे ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कांनछोरे द्वैहै कहा मांनछे देयद लेह्री कांन्ह जकी वांसुरी में सकें सरला यो है ॥ आंखिन में चपरि देवै लगयो अकूर क्रूर हिए
मैं वसत ताग्हि लहूलेन आयो है ॥ चोरि लेत आलि ज्यों सुगंधता सुमन में तें स्यांमकों सुमन में तें चाहत चुरायो है ॥ ये
री ... यों ॥ डारि है न सेती अस लीलत कहत का हेजू ॥ चोतै हमारो व्रज सूचो करि पायो है ॥ ॥ आयो तेव धा
यो नंदराय के द्वारे डारौं जो ह्न जन सुमति जकी पति जिन जायो है ॥ पेरो व्रज वैनी जो घरै नों न यों मथुरा में कंस मारि गीति
ये है बडो घन पायो है ॥ अलि जैहै है दुख विचारै कोऊ चोतौ तो गुह मिले यहै एक आनंद वडो सुनायो है ॥ आव भए दूल हदुल
हनी भई कुवजा सी जोग पायो रायजो सुजो गोकल पठायो है ॥ ॥ धिक कोंनन जे आनन की वात सुनें ईहीं एक ही
रंगर स्यो रंग्गि डोरे ॥ दूसरो नाम कदाचि कटैतो हलाहलसों रसना गरि वोरे ॥ चाहि ठाकुर एक ही टेक पही
व्रजवाल कोन सुभाय है भोरे ॥ ऊधौ जु वे अखियां जरि जाउ जो सांवरो छोडि तकैं कोउ गोरे ॥ ॥ मोहन रूप
मनोहर सूरति देखत नैं ननि में छबि गायों ॥ ताहि निहारनि कों अब ऊधव चाहत लोचन ध्यान धरायो ॥
वांन कहै तुम ऊव हीं वान न तैं रूठे संदेसहै काहू पठायो ॥ नैंन हमारे को अंजन स्याम निरंजन नाम
कहौ किन पायो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विधसजनतातरसौं॥ मनआनंजीवनदायकहोकछुनेरपयीरहैपैपरसैं॥ कवहूंविसासीसुजानकेआंगनमोंअसुवा
नहूंलेवरसैं॥३९॥ घिनरषीनभईकलनहीललनाकोकहेकवसेषपरकलपविसेषोर॥ जातोकहेवाततताकोतातोहोतगा
तअतवालकेकलेवरकीज्वालकहालेषीर॥ सुधहूंनलईनिरदईकहाजानेपीरसोसीगतभईप्यारीसूतरीसीदेषीर॥
कागजकीपीठपरआंकज्योंहूदीठपरेवेनीमगनेनीजकीछतीयांमेदेषीर॥४०॥ पियकोपियानभयोप्यारीकोरके
लीजानविरहावधकहूंअंगारअंगछयोहै॥ अतहीविकलवालचंदनओघनसारघसरसषनउरोजनमेदरोंहे॥
जानकैसवासहितआनकेंभनरवैठ्योजरवेकोउरतातैउठवेकोभरोहै॥ कामलैकमानवानमारयौहैकुचनवीच॥
परहेकुपरनिकसेसरतायोहै॥४१॥ तनमेनसुधवुधवदनीविरहमईकहूंनधुसूदनविधुरदिनद्वैगयो॥ अगरू
कीआगतेअंगीठीदीठफीकीवेरेकहूंरवकिरनकिरेरौद्वैकछुगयो॥ ननदकेडरगईगोरसजमायवेकोआरलागवर
उठीरईघनतनैगयो॥ जोलाडुधकरसौंकराहीमेकरमैकरनलागीतोदूधदोहनीमैडोटषोवाद्वैगयो॥४२॥ सरसेवरसे
तसामनकीसगरीमुवहिंघुसमानभई॥ सजहीरदेषिदृष्टपसारततहींदेषीनीरमई॥ गहतेअंगनाउठठाढीभईललना
विरहानलतेजतई॥ फिरवौनगयोउनकौअंगनावर्षाअघवीचहिसुकगई॥४३॥ दो॰ नैनवैनमनगर्येमनमनजायरह
तपियपास॥ तनकमानघटैरहतदेफिरआवनकीआस॥४४॥ चौ॰ मदनजालगोलकसेमौरफिरगएऊपरठौरहीठोर॥
४५॥ इहविधवलवैसाषयहवीसोसुषदुषलाग॥ सडसीभईलहारकीविनपानीविनआग॥ अवउमडीदेषीरघनमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

14

माला॥ मनुमैमंदमदनकीहाला॥ छुटेजुवंधनतोरमरोर॥ धनुषनमेमनुपंचरंगडोर॥ षंजनमृगाटकीरगुषदैना॥ ऐसे
जोगनतीयकमनुनैना॥४६॥ उडीउडीछ्वदेतअतअसवाघुवनरस्यौवाल॥ देषनआरादेवमनुचढरविमलविमान॥४७॥
तवतेविकलभईसमन्उठीसूकगईवालमविदेसचलवेकोनामहैलयो॥ हूवदधस्रीफलसपैयाघरथालीमाहटीकोमातसूतहू
कोभालरोराकोगयो॥ तेउलविसरगईवघूलोंकह्यौलैआवषोरेसोपसीनोगातपानीतनतेतयो॥ जोलौरल्याइमठीआनमो
आईवघूहाथजोपसारेतोलैभानहाथमैमयो॥४८॥ करपोथीलीएइकपंथचलोदसष्छनतहैतमजातकितैहो॥ वैदउतो
मेरीवांहगहोविरहागतवेदनमोहवतैहो॥ पंडतहौतुचलोघरपीयकेमिलवेकीघरीलवतैहो॥ आलमआगपनीघनमेघन
केचुमउतेघनोडषवैहें॥४९॥ षंडिता॥ जाकेनिसवासरवसेहोवासघनस्यामहमेमासपायमेंदरसलहियतहै॥ लाजनलग
तवाहघरककेछ्वोमोहकालिदासरातोअपराचमहीयतहै॥ जाउजाउकलजोउवाहीकेवसोहोपासवाहीमेंरावरेलहाग
चहियतहै॥ कुचवुलटावेजिनकरवाहस्यामतिनकरनतेहाथमेरेपारगहियतुहै॥५०॥ आयेमेरमयाकरमोहनसोहत
मूरतिमैनमईहै॥ आरससोरससोंअनुरागसोंरूपसोंरीझसोंडीठछईहै॥ रावरेउठनअंजननदेषतमीरनमोमनतेहतईहै॥ जानि
लहोउहभांतिडोरसोवोलनकीमृदुघांपदईहै॥५१॥ दो॰॥ तुमआराएनंदलालजुसंगलाएनदलाल॥ मोलकोनविधिकोजीरावितगुन
मुकतामाल॥५२॥ कृष्णाभिसारका॥ सौधिकरमंजनलघारकेसपासहपअगरघुपायगोरोअंगछविघरहयो॥ चंदमुषहासीचंद
कासीचांदनीसीआवचारपोडोरचारकेचकोरोचितचोरहो॥ तेरेवलआजअभिसारकेसमाजपटपाजउपमानकीउगनरगेहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रह्यौ॥छत्रपतिछत्रलैचढ्योहैमनमथमानिनिरखनछत्रपतिछत्रछविहैरह्यौ॥५३॥स्वयंदूतीवर्नन॥चूमोकरकमलर
ञ्जमलअनूपतेरेरूपकेनिदाननैकमोतिननिहारदै॥कालदासकहेमेरेपासहरदेहेरधरमाथेधरमुकटलकुटगहडारदै॥कुंव
रकहेयामुखचंदकीजुन्हैयानैकमेरीओरलोचनचकोरनविहारदै॥मेरेकरमहदीलगीहैनंदलालमेरीलटउरझीहैनैकवेसरस
धारदै॥५४॥चंद्रमारतडकीमदछैजारैजीवनकोजेठकीउलाबापरेकाधाकलनमैं॥देखकेदुपरीथोदहहरीसीभईमतहारेछ
हुचंदनविरपचहलनमैं॥फूलेसोभकमलजमुनजलसीरेनीरेबोलतविहंगमनिहारसहलनमैं॥लहलहीमाधुरीलतान
केदहलबीचबसीओवटोहीमालतीनकेमहलनमैं॥५५॥अभिसारका॥कज्जलसोनिसतज्जलसेघनतज्जलमेचलसंगनसःथी
कुंजअधारीप्यारेढुसेनविहारीपैजातिसलहिमेनःथी॥कंचलसचंपतसर्पलग्योपगज्यैसेघसीटनिराकपगःथी॥जोर
नजीरजरयौजकरयोमनोघरटचलेमनमंथकाहःथी॥५६॥संध्यावर्नन॥किधौंरदउसरमदनरंगरेजनिविलासनीके
वसनसुखायेहै॥किधौंलालमननजमनोरथकलपलताताहीकेसरंरंगफूलफूलआयेहै॥किधौंनंगअलाचलसंगन
नैगैकांधानुरवरथचक्रचक्रनउडायेहै॥कैधौंविमधुनिलनफलीसोअनुरागकेधौंकामभूपकेवितावनभषाये
है॥५७॥द्वितीयाचंद्रमावर्नन॥सांझसमैकोपछांहदेताकोउधोरहैसोऐसीललाईनिहारी॥चंदनकोनगउलालकितेकरता
रनतोयसुहकीनिहारी॥तारेनकेढिगचंदकलाकविसुंदरसोछविऐसेंविचारी॥मैनमनोगठगोलागिलोलकेख
लकोखेलगिलोलसवारी॥५८॥चंद्रवर्नन॥निरमलआकासभूमिदिधिहाथवननायकचिह्नसरदसमैकियोमनभा

योहै॥मंत्रमंत्रतालागनऋच्यरनवी चबच्योनच्यौवलवायरजसनसुबधायोहै॥स।चीसुबकारीअवदुरेनरहैगेफेलनेहदेसवढो
अतिनीतिरीतल्यायोहै॥चंद्रमानहोयवितचोरनयेआजहेलीमंत्रकोकटोरायहमैनकौचलयोहै॥४९॥याललनेआइकैस ५२
अघतनदएत्रमेलसोहैसुधानेहसौंसनेहकविचारीहै॥सोलैकलावातीसांऊचेदनसुहातीसिचाचद्रकात्योंकाजरक
लेकउनहारीहै॥उदैकोअरअसताचलसोईदुहूंओरकरसखीसापजोरीसोचकोरीपरवारीहै॥राधसुनरावरेवदनप
रवारवारआरतीनेचंदमयआरतीउतारीहै॥६०॥सूर्योदयवर्नन॥पियदेबनकेचोरमाउऊकीसुबकुंकममंडितआजि
तहै॥निसतीउरकोअनुरागसुहागछियावधकोकिधौराजतहै॥किधौंदसुचंदउदोतमुकंदसवैघविधाजित
तहै॥किधौप्राचीदिसानववालकेभालसुलावकोविंदुविराजितहै॥वसंतरितुवर्नन॥फूलनकीपागसीसचंद्रकलूं.
कानन फूलनकीफूलनकेकानफूलकैरह्यौ॥फूलकीकंठमालवनमालफूलनकीघटीसौंदफूलनकीलैरह्यो॥फूलेरसराम
अंगअंगनितफूलभरेफूलेदृगकंजनतैंहसिकवितरह्योफूलरआरईचजवलालावसंतरवैकेफूलरगोहनवर..
तरूपहैरह्यो॥६२॥चउकैतरंगयौनचल्योहैविवाहकाजपातननगारेवाजेधमदैमहामची॥फूलीफुलवारीरची
कामबागबानवारीवंदउजेनोहिरेफराविचित्रकरनारची॥आघेसुरकेरागकोकलाकुहकवागकोतकभयोहैआनोर
इकीसभामची॥वसोलैविरातगेतराजब्रजआसपासफूलेनपालसकिधौंराउदुहूंसालची॥६३॥पलवअध
रअरूसमनविकासहासउरतपरागवरवारजवदनमै॥मतमतनैनकुचफलपिकवैनस्वासमुबदैनजानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिविध पवन मैं ॥ रूप गुन जोबन सोहाग भाग अनुराग नाम मौर मंजरी ए जोबन के बन मैं ॥ कौंचव सकंत डल
संत हरसत आली सरूप नवसंत सी लसंत तेरे तन मैं ॥ ६४ ॥

इग मूंदि कैं आंचर सौं करति पिचकारि हमारी सखी गहियो ॥ फिरि बोल कंतौ खिसियाइ हो
कुसज नौ फिरि रीझ कैं कछू कहियो ॥ करतु कुरकी जफिराद कहा यह दांईं हमारी तुमो लहियो
मेरी आंखिन बीच गुलाल गई अब लाल है हार रहियो रहियो ॥ ॥ लाल गुलाल की
धूम मचाय कै धूंधरि धाम अंधारो करो है ॥ ता मधि आवत हौं कबिलौकति सो
कछू औरै ढार ढरो ॥ नेक ताली वाकी लाज घटी जियनांहि डरो बरजोरी हरो है ॥ हार
गरे पहराव तमें तुम आप परायें गरें ही परे ही परे है ॥ ॥ गोरी बाल थोरी वैस लाल
पैं गुलाल मूठि डारि जच चपल चली आनंद उमंग सों ॥ वाये फनंद छबि [को] दंगनि चंदन
औट चोटन करति अति तीखे नैनन कनसों ॥ कोरि दामनी नके रहति नद लमलि पाय पजी गिआ
पहूं मिली है सपानसौं ॥ मीड वे के लै कै कर मीड वो ई हा पल स्याम सो मांगी हाथ रहे सकुच सखान सें ॥ ॥

२

वसंत ॥ खेलत हैं कर ... लाल ललन गुलाल लीने फागुन मैं मन अनुराग मैं भीने हैं ॥ मिलन चाहि गोरी
मिल गोरी भर झोरी रोरी रंग रंग संग आवहु कीनो है ॥ कोमल अमल कर कमल कुमकुमा लै नागर नवलन
पीय हीय दीनो है ॥ मन ललना के लाल सनेह मिलत मानो कुमकुमा मिस कै नरत लाल लीनो है ॥
घोर घुमसार घने घन गुलाल बनी रहौ रंक़ीने छर का वर समाने हैं ॥ वरत फुहार चारु सरस फुहा
रन ते सीतल बयार ह्वां हवी जनास हाने हैं ॥ चांदनी लो भलो रस तेज कहा जालन है मैं नेठ कीत
पत को उडके सेहू न जाने हैं ॥ रस सरसाने हुलसाने दोउ सांझें आज सिरसां का नेलपटाने बलखा
ने हैं ॥ सावन सतावसमै स्याम मन भावन घन दामन ज्यों कामिनि विहारे हैं ॥ ॥ प्यारी जरतारी १
जारतारी
की किनारी हैं जम्आई का ग बेलन लैहै मपि चकारी को ॥ इत ते हि हारी कस कर पर आरा तब ठाढे
भए देव जि दै पाछे भोर भारी को ॥ कुंकमा जु कुंकुम जे वाडव रबन लाग्यो गावै सब गोपी जो वदै
दै करतारी को ॥ लाल दीनो चंदन गुलाल निज गाल नई का ढन का होचा रु लाल रुचि त प्यारी को ॥
॥ ॥ दोहा ॥ दरसन मैं बाधा करी का ढो चहि तगुलाल पुन या ते काढत नही निज कर डाल गो
लाल ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हजारेकेक वितवसंतवर्णन॥ केसरसुगंधहीकेरंगसौंरंगेहीहमओरगुरलोगनकीलाजहूपदेलवो॥ गायवोवजाय
वोनुहसगोहसायवोजूरसवसदूंकेसवसघहूकोरेलवो॥ ठाकुरकहनलालहोनीतोकरैगीसवराकओनलेनीकहांको 2
नविधरेलवो॥ करकुचयेलवोगलेभुजमेलवोजूओसीहोरीखेलवोतोहमतोनखेलवो॥ ॥कवित॥ मदनमहीपके
विचछननजरिवाजपघलगेआवतछपटकरेसोरहै॥ सुकवधुरंतरिभजनअरविंदवनचौकीभरेचंपकमैंलीचहै॥
औरहै॥ सवहीकेस्वारथकेसकलसुगंधहियराईसरवसकेहरैयाचरयोरहै॥ कहांकसमीरएलकेजनलगाय
चलेजातमलपाचलतेचंदनकेचोरहै॥ ॥विंदावनचंदखेलेफागअनुरागभरेसुरगतिअधिकछवघा 1
नैकाटिमीरते॥ आईरजगोरीजोरीभरिगुलालअतिप्रेमरसभरीमानोटोरीराकडारतें॥ दोरैमिजवनलाउ
लीकोतवआपलालकहांकरोहालभयोकौतिकनिहारतें॥ पिचकारीरंगप्यारीभीजननपाईतोलोभीज
गएसांमरेकटाछरसधौंतें॥ ॥सखीहारकेखेलमैंगोरीकिसोरीकीआनुअनूपभरीगैलहीपहलेपिय
कोरंगवारगातहांछविसामरीसुरतिओरेभई॥ पुनपाछैगुलालसौंधारगुपालसोप्यारीनेयोंहसवा
तकही॥ अवलोतमलालहनेकविवेकोपैलालभएअवहीहोंसही॥ ॥घरेरहेघरआयचनीफिर
वीनेनपागकछकहियायगी॥ लालगुलालकीयूंघरमैंभुषचंदकीजातकहूलहजायगी॥ ८॥ ९॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रेमपगीवतीयानतेरीछतीयानकीलाजसवैवहजायगी॥जोनमिलीमनमोहनतोमनकीमनहीमनमेंरहजायगी॥ ॥गोकुलगलीलै
एवातपछ्यायपैईसुवानगौरुपैगईपैहोलिया॥गेदेवहानेचलीवैचलायपैसुष्यैगुलालउडारपैजोलिया॥लोगधुरेचतुरेलखपामें
गेदावेरहोदिलप्रीतलौंलीया॥पायपरोंजीउनेकुटनागररहायकरोजिनवोलिपाठोलिया॥ ॥देवनकीओटमायन
कीडुंडूंचामनकीवेदनकीनीवडाई॥संखरुचकोगदापुनियपुन्यसरूपचतुरभुजकोअपचाकाई॥अमंतपानविमान
नमैवैठिवोनागरयहरीतिनभाई॥स्वरगवैकुंठसोंहोरीजोनाहितोकोरीलैकरैठकुराई॥ ॥जोवनउनंगअनंगन
रीगोरीएकहोरीखेलेंसामरेसोंचाहितनीवरकी॥भरनिगुलालगरेदेतफूलमालवालदोऊगालललालकेमरोरआप २
सरकी॥दौरगईमोहनमयंकमुषीमहलादिअकमेभरतकरककरकचूरीकरकी॥चारयोतनीतरकीमसकआंगीद
रकीहसतसारीसरकीरहीनहुघघरकी॥ ॥फागुषेलठाढेअनुरागभरेवागमांहिसामासामरूपकेपर्योविन
थ्यांगहें॥वोरीदेतओठनकोपरसैछवीलोफलसरसतनेहीहींरावरतेमहागहैं॥प्यारीकेवदनकोगुलालमें
सपुंजयोछेपीतपटमोपियारोवडभागहै॥आनंदसरोवरमैंफूलयोलषिमेनमानोसोनेकेसरोजकोऊतार
परागहै॥ ॥देषचौआरसीलैवलनेकैसोहैगुराईमैकैसीललाईमानोउदोनदिवाकरकीदुतिफरणचे
दरुमेटनआई॥फूलनकेजकमोदलषैघनआनंदरूपअनूपनिकाई॥तोमुषलालगुलालहिलायकेसोतनकेहिय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लभगतमं हवीनमलितानभरंगुंजतविसालछविमोहितसवायोहै॥केकीपिककोलाहल गतभैवरनकवीपंचमसुरन
रहसानीतानकायोहै॥बोलतिकपोलकैसोरसखीसुरदेवतोहिजानरिउवाररागसरसजमायोहै॥करीसनमानराधेमा
न नघंटीनेरतिकंतकोवसंतवनआयोहै॥ ॥वसंतबेला॥वरनवरनकेवसनसोहैपवत्रवसेमसकतिमंदकुदकलीवि
वसंततसी॥कलीअगअंगनअनंगकलीवसैगावैगारओधसारकोकिलावसंततसी॥पुहुपपरागसोनउडावतअनीर २
आछैअलवैरलिकअलिमालादरसंतही॥रसरासप्यारेवनवारीकेविनादकोवसंतलैकैआईव्रजवनितावसंतसी॥
गोकलकोवंदहोरीषेलतअनंदभरनवनिअघिवाच्छविछाजेकोटिमारतै॥आईव्रजगोरीभोरीथोरीथोरीवेसन १
कीप्रेमरंगवोरीमनोतोरीराकडारतैं॥रंगलेकैदोरैलाललाडिलीकोभिजवनराहीकहाकहौंभयोकोनकनहारतै॥
प्यारीपिचकारीरंगभीजननपाईतौलोभीजगएसामरेकटाछिरसधारतैं॥ ॥रंगभरयोतननेहोंनसोधोर उकति
योभईहोनकवानी॥नैनगुलालभरेकिचगेमिसमोहिगआवतभरयानी॥अैनपरचिनुनसीचिपरेपियमोहिकौ
पगुलीलषदानी॥आनंदकेघनहोरीनईयहमांचीनतैहतराचनिठानी॥ ॥बालअरोबानिचाहिनिहगुलाल
लेलालनकेपटडारे॥राकनिरोजलछोउघरयोपियताकदईपिचकारीकीधारे॥रीउघकीसगरीसजतीउपमा
कविलालउपालविचारे॥मानहुमैननुघागिरदयोनिचुआषिरहयोअनुरागपुहारे॥ ॥फागुनकेदिनगा
वरेरनमैनसयानपतायनवहैहै॥कामनुहाईरहीफिरकेअवकोनतेंकाहैकीकुकलहैहै॥जायकेरंगनसोंभरिहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नह्निनागनसाचीकहेहै॥चोरनहीवरजोनगहियगृह्होरीमैकौनंहोकोररहैहै॥ ॥कविप्रियाकवित्त॥विरहवसंत॥ ८ ॥
उलाप फूलेफलासविलासथलीवहुकेलवंदासनथोरे॥सेषऋसेषमुषानलकीजनज्वालविसालचलीदिवस्रोरे॥किंसुकश्री
सुकतुंडनकीरुचराचैरसातलमैचितचोरै॥चंचनिचाषचहूंदिसडोलतचारुचकोरनभौरै॥ ॥आयोवसंतहसंत
सषीस्रनआयोनकंतनयायोसंदेसो॥कूजतकोकलचातरदिसाग्रूयहूकपरीजीयकंकसतेसो॥याग्हिचितेउरपेमघ
हूरनयातनहीवनयाहीसंदेसो॥फूलरहेपतिंडारसौंकिंसुकलोहूभरेनषंदिरकेसे॥ ॥लालविनाहूविहाल
महासषीआइयोवसंतनआयोसंदेसन॥आरसवेघरकोहरिरामरहिउनहीकोईविदेसीविदेसन॥आवनते
अतऔनिचुरैलवरैकुचऊपरयाहीसंदेसन॥मानोमयंकसरोजनतेमुकताहललैलैचढावैमहेसन॥ ॥
चैतमईचिंताअतिमतिगईमाघवमैजेठहूमेकांशीरामरहेविरमारहै॥गाढमैअताढभयोसामनसमीपधा
योभांदोजादोंअत्वनविदेसरहेघ्यारहै॥कातकऔमारगपुनीतपोषघटीअतिमाघकेमहीनामादहनाहिजो
नआइहै॥ऐसेकहेगोरीघरषेलहोनहोरीजौतोलगवहुरहोरीसीकितोरीआइपाइहौ॥ ॥गवनि
वेघरीहेघरीतोग्हिचटपटपरीनरीउरभरीकानुंधषतनलाइहै॥कहैकविचित्तनतेरहितहैवसंतआलीदेष
होतमातोयहिकहाचौवटाइहैहै॥मंजरीनरंजैमोपिकवोलैठौरठौरजैसेंअमरोईजापेआगेतोन
जाइहौ॥आगसीलगीहैवनदेषिअकुलैहैमनकोमकतेआलीवनमालीफिरआयोहै॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के

रातेपलासविलासविहंगमभारतहीवरजायवनै॥भनिवसंतविनावजनाथवियोगीविनावाढ्यौहैअंगअनंगअनो॥का
मजस्योतहकैलासीकीनुहकोईधौंइलकेवरनो॥ऊकहूकैरेकामिनीकंठकटैकलकंठकोकंठकुठारमनो॥ ॥
केसुदेवकोपैतनजहीसोंढरातमनचोकेचितचंपेतेवियोगतापतायोहै॥मारतहैमरतपछ्यारतितिनिगोडीवैसका
मकरआपसनचापलैचढायोहै॥चंचरीकचाटतवपोतननसौंतफोरैंकानरोतेपरवालमविदेसजाइछायोहै॥
कहैकविनाथअवतुहूतौविचारआलीअंतलेनआयोयहतिवसंतआयोहै॥ ॥पवनफूलेतेनफुलतराकरति
केपरंऊजाऊकहूकेरोनमूरछाकरतहै॥मोनहोयरहीकोसोजायकैपुकारेअववाहीतिरमोहीविनपीरकोहरतहै॥
ठकीकिकिसोरजुसयनहेनवरषतस्यामकोसमरसषकरुणाकरतहै॥मेरेजानआलीआलीवनमालीकोविरहव्यापी
वनहूकीवेलनतेअलवाऊरतहै॥ ॥फागनलग्योरीकामजागनतग्योरीपीरपीगनलग्योरीअंगरंगनकिसोरीमै॥
चोरीगयोचैतिरोरीरैजतरहोहैनैनआरनवहितदिनरैनऊकिऊोरीमै॥योरियोरीष्फालसुलवेलितहैगोरी
स्योन्यौविरहमरोरीदैयाअधिकऊजोरीमै॥जोरीनिनजानैकहूकासोलनेकेरीविस्थावालमेविनामेहकोरीरही
होरीसै॥ ॥वैरीवसंतकेआगममेवनवीचदवागनिसीपजरैगी॥जोगीनिसीवनहैवनमालवियोगनदे
वकोधीरधरैगी॥हैकैकरेजनकीविरचैजवकोकिलाकोइलकूककरेगी॥फूलपलासकडारनकीडरिआवे
उरावनीडीठिपरैगी॥ ॥क्योवचिहैरीवेरीवैंसंततपैआवतजोवनआगलगावत॥मोरतहीकरडारतदो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रीमरेविषकोरलकुकलनावत॥सोतिकरेंजनकीकिरचेंकविदेवजूकोकिलाकुकमचावत॥वीरकीसौंवलवीरवि
नाउठजागिहैगेप्रानअवीरउडावत॥ ॥आवचिरकावदैगुलावकंजकेवरामैचंदनचवेलीचंपाचांदनीनिवा वाग
रीमै॥जुहीहोनजुहीजायजंबुकवदेवओवसेवतीसमेतवेलामालतीपियारीमे॥शिवनाथकोविलोकचोनभावेमोहिकंतविनआ
मोरीवसंतफुलवारीमे॥आगचलोभीतरअनारिकचनारिमेंआगिलागीवावरीगुलाबकीछ्यारीमे॥ ॥सोधाकीवा
सतुसासनदोकतचंदनदाहकगाहकजीको॥नैननिवैरीहोहूरीगुलालअवीरउडावतधीरजहीको॥रागविरागधमा
रितौधारिसीलोरिपरयोठगयोसवहीको॥रंगरचावनजानविनाघनआनदलागतफागुनकीको॥ ॥उर
घतुहासउंजावैनपतिजारकीनौउलदीवि कीकोपदुसरसायोहै॥आवैनासदेतफूलेअंगनउदेगकेलचंच
रीकवितक्रमचौचंदनचायोहै॥हूकेहीकेकूकेकुलकेलियानउकेकरेआवतअचूकेअैसोउघमडठायोहै॥वनध
नतनमेजतनकरिकेसदैंकोकंतविनविरहवसंतवनआयोहै॥ ॥ज्योंज्योंरसोआवतोजियतुआवआयोवसंतक
घनदेखतहै॥संगुसंगधतसीतलमंदसमीरतेपीरगंभीरउठैहै॥कौउठैरहैकरैहैकहाजककोकिलाकोरलक
कमचैहै॥औरनतेरोककेगोकछवलसंगकुहूकेनहूकदजैहै॥ ॥हितहेतअछितघरीहूघरीमरीजातम
नोजघरहैनकानसीं॥कहिहिंमकहूनवचेसजनीएवघागिअचुककेकुकतितीं॥उडिपंछासोकनतियाजो
हियाभिहहूगयोकोकिलकूकतसौं॥तिसवासरसेजपरीकरहैंवरहैविरहागिमभरसनसौं॥ ॥१९॥१३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिविधपवनमै॥नूपगुनजोबनरुहागभागअनुरागनारामोरमंजरीराजोवनकेवनमै॥कीनवसंकंतऊलसंत
सरसतआलीसहजवसंतसीलसंततेरेतनमै॥६४॥विरहवसंत॥लालविनाहूविंहालमहासखीअयोवसंतनआयोस २
देसन॥अधिमवेघरकौहमिरामरह्योनहीकोऊविदेसीविदेसन॥आछिनतेअसुलानिचुरेउपरेकुचऊपरयाहीसंदेसन॥मा
नोमयंकसरोजननतैमकताहललैलैचढावैमहेसन॥६५॥मईपतझारनाहलईरीहमारीसारऊोरकहूआमनकीओरलषपा
वते॥कोकलाभ्रमरवोलेउनकेविदेसविध वारघकेपारतेपरेहूकैधावते॥फूलेद्रुमदेकेसमूलनचेमेरीरंठराकंतानको
उतोहहोलकीसुनावते॥आजकालवाहूदेसऊोरैपिछुहातआलीहोतीजोवसंततौहमारेकंतआवते॥६६॥आरुनअकास
ज्ञामैवारनवसंतस्यायोधमसोतिमरओघगारीअरुनाई॥विरहउनाथतिपसरराकुठारीपरसीकोउहागादेसमीरसा
शताईहै।नैननकेनीरसेजसरस्हीताराकवताकेमधछांईजैसैनरतकुजाईहै॥पीयविनारीउजयारीनिसआगमानो
तारेसारेगारचांदचारीसीवनाईहै॥६७॥जानतहौसखीऊोधलौजीओंजीऊास्यतेआवतमीचअगौडी॥तेकस्यो
जमचूकहैकौजवकूककैकोइलकामकीडौंडी॥श्रीरघुनाथवसंतसमैविनकंतजीऊौगी।तौप्रेमकनोडी॥नारसकोव
श्रैवेकीआसअसाढलौवीचमैकालपलासकीडोडी॥६८॥ग्रीष्मरितुवर्णन॥दसोदिसतचैअवलोकैअतिग्री
षमैजलथलविकलअवनिसमधहरी॥अमतंपुजदोऊअैंचकामनरैकुंजद्रुमवलीनोकीतकघांहघविग
हरी॥राधेहरिसौलपंलछकेसाषीसुथरसरसकेसमुद्रवदीअनुरागलहरी॥चंद्रमासौंलाग्योभानचांदनीसीला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गीषमरद की रात भई जेठ की दुपहरी ॥ ६९ ॥ मारतंड मंडल प्रचंड करवरो बदावानल नैन जिन जारी भूमि दहरी ॥ बिकट बदूरा ज्वा
ल जोर बढ़ती है ताहू पै घनन के चंडवान करै काम कहरी ॥ नीरन के गौनमें न हीरन के मेरत हा धीरें सीरें पौन मनि मंत्र
प्रदहरी ॥ घर घर हुवन कै चैस वां नधि पीरे भाइन सो जार रन सी जेठ की दुपहरी ॥ ७० ॥ चंदन की षोर गोरे गात आधी
बन रही चौसर चुपेरे हार सो हत गरे तरे ॥ किधौ द्विजराज आम जल में हिलोर लेत किधौ सुरसरी धारी जात लहरें घ
रे ॥ आंसु जल बुंद से बकिधौ मुकताहल की जामन को जो हरी दिषाई लेरैं लरैं ॥ सेत दुरीया की सारी देषत लहर का दीमा
नो पौन पानी परगमन दहरै हरैं ॥ ७१ ॥ चंडकर मंडल ते मंडके अषंड धार वरषत पावक प्रचंड किधौ यहरी ॥ कहा प्रान
प्यारे की दुहाई कैधौ आई चढ़ि बानल की ललवैं ताते तचत दुपहरी ॥ चंडकर मंडल ते पावक नवरषत लवैं न चलतिति
नै देषमत दहरी ॥ मेरे जाने प्रीतम वसंत के वियोग भए ग्रीषम विरहनी उसासलेत गहरी ॥ ७२ ॥ ललल का ननल
चरम कुलातथल जीव जंत सकल उठत वरवर के । कहै कवि घां घौन आवरमन लसजै पावक दीहोत कौन दरे धीर धरके ॥ ग्रीषम के आतप को भीषम प्रताप
लषदिंक तस वात कहू डोली डोल डर के ॥ सघन दिपन तरु पानें कूप कुंजन में घाम होत आतप तक हूघा मरकार के ॥ ७३ ॥ होनी वरहीन वरहीन हेरे अह
न का अहकरी मेंडने के रंघन बसत है ॥ करिर रिलुके उदर में नहर आय सो वत तपो वन की रीत नि बहत है ॥ विरहग्रीषम ॥ आयो आसाढ
हरि नकी घान तीपर लै रूत फिरन आय पंथा उवित चापन विरोध विसरत है ॥ देषी तनग्रीषम को तीषन पताप सम कहला ने दहूला को एकत लसत है ॥ ७४ ॥
गई भई आत पाद स भरेन पहार ढाढे ॥ कोकिला की रफि गार करै सुषि रोमन लेत करें जोई काढे ॥ कौन लहै दुष का सोक
हो चहूघौर रते मारत राम निवाढे ॥ कामिन केरु तदेषो मनो चमकी जमकी जमकी जम डाढै ॥ ७५ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्णरितुवर्णन॥पावससदरोगाअरूपवनमहावतहैंकारेंकारेअमतरागजयनपढायेहै॥वगयेतदेतगारजानघनवाद
घटाघुरवासलेंदिजलसिंधुचिरकायेहैं॥इंद्रकेधनुषरंगेचित्रदामिनीकेजोअंवरजरीकेडोढडोढचमकायेहैं॥
वेंदावनस्यामआजस्यामास्यामसषीरुषमदनकेगजराजमजराकौआयेहैं॥७५॥सघनअषंडरूपकजपरागप
त्रअसरमधुमशावचंटाघननातहै॥विरगीचलतफूलीवेलीनकेवासरसमुषकेदसेसेलेतसवरहातहैं॥सेषक
हेसीरेतरवरनकेतीरतीरपिवतननीयरसेतेंसिरातहैं॥आवतवसंतमनभावनमतेजततनपवनपरेवामानोपा
तीलीयेजातहैं॥७६॥गामेगीतकोकिलावजामैंतमरदंगमेघदामिनीदिषावैदिव्यदीपजियजोहये॥मोरनृत्तकारी
चकचात्रकआलापचारीदाउरकीहूनश्रीगुविंदहियमोहिये॥हरीहरीभूमिकेविछौनौविछेललतलतानके
वितानआनंटोहिये॥प्यारेकेविहारीकेरिझामनकेकाजसषीसामनकौसमाजआजसोहिये॥७७॥घनकीपाटीग्व
गपतिनकीमोतीमालाघटाकौचंदमषसोअभिरामकी॥दादुरकोसोरसोईनूपरकोघोरजुनूकीमनिमालके
कीवोलनहैवामकी॥इंदुघनभौहैधुरवाहैकेसकोरजारीसारीदामनीकीतारेसोभाउरदामकी॥मनतगुपाल
ओटैअंवरकेअंवरनस्यामनकीजामिनीकिकामिनीहैकामकी॥७८॥विरहवरषा॥किधौंमोरसुनसोरअंतहीकोभाज
गएकिधौंउत्तदादुरनवोलतसराइई॥किधौंपिकचात्रकचकोरनकाहूमारडारेकिधौंवकपंततछवअंतलीजुवो
छईं॥आलमकहतआलीवालमनआवतहैकिधौंमेरेजानेविपरीतरीतहैगई॥मदनमहीकौदुहाँफिरवेतेरही

CC-0.Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

झूलगये मेघ वहूवी जूरी सती मई ॥७९॥ नीरज लानो को पोवत पी रन बूंद विसारे हैं वानये ॥ धूम वियोगन कैं घट कौ घु
म झूमये झूमर सौं धुरवा नये ॥ जो जरते न रहे गे तो नै न दीन द नारे भरेगे निदा नये ॥ पी व कहु पीय व कहु पापी पपीहरा
पी गराज्ञा न के पीग रआन रा ॥ ८० ॥ सामन आमन हेर सखी मन भामन आमन चौं विसेखी ॥ छाडो कहां घन आनंद जा
न सम्हार की ठौर लै भूलन लेखी ॥ बूंद लगै सब अंग दगै उलटी गत आपने पापन पेखी ॥ पौन सौं जागत आग सुनी
पै पानी तें लागत आंखन देखी ॥ ८१ ॥ बारहमित्र वरनन ॥ है जल जंत्र कै मोहनी मंत्र वसीकर सीकर की अवली सो ॥ कै ससि केहि
त मोद भरयो जल जात अकास महिं भूमि थली सौं ॥ कै मुकता हल के विरवा वैर चे हू थ फूल जले सरली सौं ॥ कैज सनाल तें कैं
मकरंद चल्यौ तरराय के भांति भली सौं ॥ ॥ सीतल समीर उरतें लगत बरी हरी हरी वेलनै पावक प चार दे ॥ दादुर नदूर
कर पिकन परे करटी वागन के वा हूर मधुप मोर भार दे ॥ पावस मैं पत विन तपत तु आवै कौन जीव जा इके कोउ पचार न विचार दे ॥
दादुर दुवाय राख वारैन विदा कर बूंदन रज बीरगै वन विडार दे ॥ ॥ सीतल सुगंध मंद पवन वहन लाग्यो दहन लाग्यो रूप लस
त लतान को ॥ तैसी राचमक चपला की चहूं ओरन तें मोर की सोर दुखदेत अवलान को ॥ कैसे धरैं धीर अवला लजु वीरवि
न तीर सम लागत है नीर ये बूंदलान को ॥ अजवगजव है री है रत सवजन भजे वो नंद नंदन को रावि व ध्यान को ॥
॥ ॥ सावन तन गारे मेघ ताल देत न दी नारे झींगुर न झांझ भेर विहंगन वजाई है ॥ कोकिल अलाप चारी नीलग्रीव
नृत्य कारी पौन बीन धारी चाटी चातक लगाई है ॥ मन मालज गन मुआर व तिमर थार चौमुखी विराकचार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चपलाचढ़ाईहै॥ बालमबिदेसनदुषकोंनभयोपावसरूमानेसाईबिरहबधाईहै॥ ॥बरुवोईकरोकिनबिज्जघटाधु
सीतल रवांवदरादरवोईकरो॥ चलवोईकरोंकिनपौनकिधौंपवारवोईकरो॥ लरवोईकरोंकामममहाभटआनंदमैंमखो
ईकरो॥ हमसोंवतहेंपियकेकुरवामुरवासरवाकरवोईकरो॥ ॥फूलतपाटकीडोरीगहेंपटलीपरवैठनत्यौंढुकारू
की॥ पेटीपदेउचटेतिटचोटीचमोटीलगे॥ पायनदेडुमचीमचकैलचकैकटकिंकनगोलउरूकी। सोबवेकोबिपरी
तमानोरितसामनकीचटसारसरूकी॥ चोटीपदेउचटेतिटचोटीचमोटीलगेमानोकामगुरूकी॥ ॥शरदरितुवर्णने
सषीसुषदाचंदसोकह्यागुपालऐसेंआजकीसरदकीनौंजगतउज्यारोहै॥ नाजकवनकवन्योनवलचवलऐसैंराजै
नुकेवितानसोसभारयोहै॥ जमुनापुलिनमाहवारूकीविमलजोतजगमगहोततताकौरूपकविच्यारोहै॥ मानदूचतुर
तुमचरनघरनकाजाकाकौचूरचूरकरडारयोहै॥ ॥मालिनआकरमैंकमलालियेआगेबढीचौसरचंवेलीकेरचि
रहविलाईहै॥ जोहरीजुवतीज्यौंतेजभरेतारागनहीरनकीहारावलिप्रगटदिषाईहै॥ पश्चिमकेडोरकीप्रवीनमृग
नैनीअंगओढेचारुचादरचांदनीसुहाईहै॥ लाललषलीजैयहरिझावनषवासिज्योंशरदचंदआरसीलैआईहै॥
घनघेराघुटगयोअंधियारोमिटगयोविसदप्रतापजगमगयोछवछाईहै॥ केहूकवकाष्यउरहर्षनिरषचलेयपयकचहू
धामरमयविहरायकै॥ फूल्योगीयकमलमराजलषलिघटेआपचलनउघायुउमगायके॥ सरदसमटनरनारू
कीनिकाईनीतदेषोसभजगतसुचैनोकीनोआयकै॥ ॥सोहतअरुणसरसीरुहुँकरजिनहजगतप्रियमरनग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नावली॥ कलाधरस्वरूप सुधानिधि वदन लसै जाकी अदभुत छवि करत नखावली॥ देखीयत खंजन तरल कजरारे नैन
के के कुवलय मद देवे जीव लचपावली॥ सुमै सुखपुंजनी सरद सरद आय कौन केन उरमै आनंद सरसावली॥ ॥बिरह शरस्तु
लीले ली लेत निसा रसौ लखशवी दिसा कि घिसा चदारा॥ पीव पथ्य यौं त कि मोरा पयान यिका यिकरो र कृपान की धारा॥ मं
ग वसे त कि अंत कसी तस मीर कि तीर तरुन्न कितारा॥ जोद्यु की ज्वाला मंतालकि व्याल सखी वन सार की सार
को आरा॥ ॥शिसरऋतुवर्णन॥ सिसर समीत भीत जात कैं अजीत भए सोहैं सेज तत्र तसनेह सरसाई मैं॥ असकै चे
वरस्याम चौक नैचलु तचारु सीस फूल सोभा घात्र घ विचराई मैं॥ भूषन झलनक सोर नौ व तर सीली धौंरन छर
रस न हूलै हैं विविध चवधाई मैं॥ देवो री सबी समाज जीवनफल आज दहू नर जाई पाई एकही ए माई मैं॥ ॥
सिसर मैं ससि को सरूप सविता उपातै घाम हू सैं चांदनी दुतलु मकत है॥ सेना पति होत सीतल ता है सहस गनी र
जनी की जाई दिन हू मैं झमकत है॥ चाहत चकोर सूर ओर द्रग छोर करि चकवा की छाती तजि धीर धसकात
है॥ चंद कै भरम होत मोद हू कि मोदन के ससि संक पंक जहू फूलि न सकत है॥ ॥सिसर मैं आयो जोर सीत को प्र
बल आत जाके त्रास सभही कंपत हहराय के॥ ता हूं लख घर मई घरमते निकसत जीसरम गरम चली हीय हहराय के
मेंवरस्म वनयौं न पानी जजतूल ततकी रिकनत हो हू सकी मभी मकराय के॥ ऊंचे ऊंचे अचल उरोज न वनागरी
केबिगटम वासजाय रही उहराय कै॥ ॥ ॥=॥ ॥=॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ चैत्र छंद ॥ फूलिंललितिकाललितितरुनतनफूलेतरवरफूलिसरितासरसरसफूलेकुलसरवर॥ फूली
कामनिकामरूपकरिकंतनपूजहिं॥ सुकसारोकुलिकेलफूलीकोकिलकलकूजहिं॥ कहिकेसवराती
फूलमहिंफूलहिंफूलननलगाइहरा॥ पियआपचलनकीकौंचलैचितनचैतचलाइरा॥ ॥वैसाष॥ के
सवदासआकासअवनवासततसुवासकरि॥ वहतिपवनगतमंदगातमकरंदविंदुधर॥ दिसविदिसनछ
५ विलागभागपूरितिपरागवर॥ होतगंधहीअधवधिरभौराविदेसवर॥ सनिसबदसषदसिषसीष
पतिरतिसिषईसबसाषमैं॥ वरविरहनिवढउविसेषकरिकामविसिषवैसाषमैं॥ ॥एकजेठमेंहोत
भूतमजिपंचभूतभ्रम॥ अनिलअवआकासअवनिहैजातअगिसम॥ पंथथकितमदमकितसकत
सरसिंधुरजोवत॥ काकोदरकरकोसउदरतरकेहरसोवत॥ पियप्रवलजीवइहिविधिअवलसकलवि
कलजलथलरहत॥ तजिकेसवदासउदासमतिजेठमासजेठेकहत॥ ॥आसाढ॥ भवनभावनितज
तभवनमानरूतिनकीमति॥ सन्यासीएमासहोततरकआसनवासी॥ पुरषनकीकोकहैभएपछिपोनिवासी॥ रह
समेसेजसोवनलियोश्रीसाथअपनोनथहंकहिकेसवदासअसाढचलमैंनसुन्योस्रुतिगापहूं॥ ॥सावन॥ केसव
सरितासकिलमिलतसागरमनमोहैं॥ ललितलतालपटातततरुनतनतरवरसोहैं॥ रुचिचपलामिलमेघचपल
चमकतचहूंउरतै॥ मनभावनकहंभेटभूलिकंजततसैसमोरन॥ रहरीतिरमनरमनीनिसवरमनअरलगेरमावन
पियगमनवारनेकोकहेंरामनठनिरानदीसावन॥ ॥भादो॥ घोरतघनचहुंउरघोषनिरघोषनमंडहिं॥ धारा
धरगिधरनिमसलधारिविजलछडहिं॥ झिलीगनझंकारपवनछुवैकरकोरतवाघसिंहगुंजारतपुंजकुंजनरतरतनोरत॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नितहि दिन बिसेष निसेष मिटै जात तम उलीउ ड़िरा॥ पिय बिदेस पिय बिदेस बिष भादौं भौन न चलो डिरा॥ ॥आस्वनि
प्रथम पिंड हित प्रगट पावन घर आवै॥ नव दुरगनि नव रूप न स्वर बास पवर गहियावै॥ छत्र नि दै छिति पति लेत भुव
लै संग पैरत॥ केसोदास अकास अमल जल जल जनि मंडल॥ रमनी य रजनी रजनी सरुचि रमा रमन हूं रामरति॥ कलि कै
सकल पतर कुआरि मगि कंत न करहु बिदेस मति॥ ॥कारतक॥ बन उपबन नै अकास दीसंत दीपदान॥ कुबती सब
दिविराति जुवा खेलत दंपति जन॥ देव चरित्र बिचित्र चित्र चित्रित आगन घर॥ जगत जगत अगदीस जोत जग
मगत नारि नर॥ दिन दान न्हान गुन गान हरि जनम सफल कर लीजिये॥ कहि केसवदास बिदेस मन कंत न कातक कीजिये॥
स्निग्ध सिर॥ मासिन मे हरि अंस कहि तयो अगहन मकोऊ॥ स्वारथ परमारथ देत भारस्य मै दोऊ॥ केसव सरिता सर न फूल फले
सुगंध गउत॥ कूंजत कल कल हंस कलि तं हसनि के सुरु॥ दिनि पर मन रमनि तन गरम करत्य हि हिला प गत॥ करप्रानन नाथ
परदेस कर्न मार गसिर मारगं चित॥ ॥पूस॥ सीतल जल थल बसन असन सीतल असमोचक॥ केसवदास अकास
अवनी सीतल असमोचक॥ तेल तूल ताम्रोर तपन तापन नव नारी॥ राजरंक सब छोड करत इन ही अधिकारी॥ लघु द्यो
स दीह रजनी रमन होत दुसै हदुष रूषमै॥ इह मन न क्रम बचन बिचार पियपंथन बूझैरो पूस मे॥ ॥माघ॥ बन उपबन केकीक
पोत कोकिल कलबोलत॥ केसव भूले भवर भरे बहु भाइ न डोलित॥ मिंगमद मलय कपूर धूसर तिदसोदिस॥ ताल मृदंग उपंग सु
तसंगीत गीत नित॥ षेलत बसंत संत तहुं घर संत अनंत रंग ति॥ घरि नाहि न चलो दिय माह मैजो मन मानिहि तनेहमति॥ ॥फागु
नमास॥ कोकिला सत जरा जरंक निरसंक बिराजात॥ जो हि भावित सो हि कि तवरत मुनि तिहास न लाजत॥ घर घर
जुवती जुवतिनि जोर गहि गांठ निजोर हि॥ बसन छीन मुख मांड आंज लोचन तिन तोरहि॥ पट बात तव
होआ कास उड़िम्ह ज मैंड लस भमंडरा॥ कहि केसवदास बिलाल निधि फागुन फागुन चलो डिरा॥ ॥रामजी॥

मालती कुंज फूली मलतानि कुंज कूल कालिंदी के कूल घूमै समीर सुषकारी है॥ कोमल विमल सेज सीतल परसपर जरमप
टी घन सार सौं संभारी है॥ [illegible] ॥ग्रीषम के विलास सौं विलास विलसत रीझ मोती दाम स्याम संग स्यामा प्रानप्या
री है॥ अंगराग भीनी सारी छिरकी सुगंध न्यारी ग्रीषम हरत करत ऊरी ग्रीषम निकारी है॥ ॥दसों दिस चंचल अवालों अति
ग्रीषम में जल थल विकल अवनी सम घहरी॥ अनंत के पुंज दो द्रुमौं चका सलें है कुंजन तिद्रुम वेलिन की छवि घा
हराई री॥ राधा हरि मलवल रूप छके हर्षी सुष रस के समुद्र बढी अनुराग लहरी॥ चंद्रमा हो लग्यो भान चांदिनी
सी लागि धूप सरद की रैन भई जेठ की दुपहरी॥ ॥ग्रीषम रचे ऐसे सैं सें समेर तिया मन मोहन यों ते कहा वै॥
ग्रीषम सीतल तरंग न सौं जल जंत्र न द्वै व द्रुतताप मिटावै॥ चैन अनूठे सषी सुष कुंज मैं जाके रहै एक कुं मिलान न
आवै॥ देषि निदाघ के दाघन कों महि तें उलटी वरषा वरषावै॥ ॥नव कुंज न पुंन माधुरी रंजन भौंर न गुं
जन फूल मिलै॥ जहां फूली सषी हरषाजे दुहरी रस सौं जल जंत्र ने मारु पिलै॥ उमगे नव छवि छिन यों कन कै क
न राध के माधव देखि षिलै॥ मनो मंडल सों अति मंडत कै सुषमा यमदी सुकला उगलै॥ ॥रितु ग्रीषम
की अंगी आ. विनहुँ सदिर सो वन मंदर सेज अली॥ रतना भिउ तो कुच वीच विराजत रोम पै स्वेद की बूंद थली
कवि नायक पिया विलोकत है यें पपील कपों सुलताति मली॥ अपने गहते हिव पूजन को मनो मद चामर
चाप चली॥ ॥ताकस में व षभान सुता उठ आत भरो जमुना गई बोरन॥ मेजुल नुर आतूपदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आनन का कललना अहृतमै ॥ ॥ संदरसीरी उसीरकी रावरी सा चंदलावके सो सरसात है ॥ सीतलपाटी विछौत हां वं
दन पंक मैं चांदनी की मनोरात है ॥ जाय जहां ते बुले वे की बात कहौं सब ते सिवं कौ कही जाति है ॥ आतप की चरचा करे
को उ तो चंदन उसीरन के कहिलात है ॥ ॥ सीरे तहखाने तामे बामे खसखाने सो चंदन तरंग लावकी बयार दपटत है ॥
लचरसधारे हो दघुटत कुहारे उनि भारे भारे बात दान छपट पटत है ॥ चंदन किवार चंदन सार के पगार तामे त
उ आनन ग्रीषम की गांउ पटत है ॥ ॥ जेठ के जवर जाम के से के भरीजै आ मल नीसे जरे गधाम धाय र आय
गी ॥ कहै कवी गंग वीर विरहीन वचै को उ व्याध वि पावै दुपहरै छि सर कायगी ॥ सरस हि जाद चंदन सार मैं
तमार मेलि कोरि कसाम विनछाती न जुदायगी ॥ कहां दिन आरा विन जमगैह जनारा विन जाति तहौं
आज की जु नैया न्यौं लै जायगी ॥ ॥ कोरि पति के वरे के जारकगारक चीर त्यौ त्यौं उठै फरक पासी ज्यौं मी
नसी ॥ सोर महगैह तसीरी हे जसर सी करयै उचवै अवकन की जंत्र जल धारसी ॥ चरचे गुलाब मिलै गागरि
घनसार फूल बीजन नयार तरफे वे करार सी ॥ आवासो आगार औ अंगार सो सिंगार लगै ग्रीषम को रागे विनमी
समद्विवारसी ॥ ॥ पावस दरेषा ॥ उमड़ी है घटा कारी देषत सहात भारी नेह की सी कं दच्छति नेह वर बायोगी ॥
मिटी सभ पीर आली धरी यै मैं धीर को किलपपीहा के कीनवरसहायोगी ॥ भौन कहे मौन उठ जै मैं चलवे गवा
लि पिय प्यारी दोउ की जै मन भायोगी ॥ हिय मे हुलास के विछौना की जै हो जपर स्याम नहू आयो मन भावन लआयोगी ॥

वसंतके ॥ मदनमहीपके विचार ॥ ॥सीतसीवारनमांरउमरेजाघोयेतिनकोमैलपाछिलेलैसवहीवहायो
है ॥ मधुमाधौभाजनमैभांतिभांतिरंगघोरिरंगरंगरंगे ब्रजरूपमनभायोहै ॥ कोउलालकोउपीतकोउसेतको
उसांमसखीसुखजगेवारदैदैरिझायोहै ॥ मदनगुपालजूकेआगैब्रजराजदौवाबदेषरीवसंतरंगरेजवनिआ-
योहै ॥ ॥होरीरंगरातेअंगजोवनउमंगमातोसांवरौसौछैलगैलनागरिकैडोलपरिगौ ॥ मैंतोकेतोकीनोआ
लीवचिकैनिकरवेकोंऐयैआतिनिडरऔरलआनअरिगो ॥ कोरिकठगोरीरचिठाढ़ौकैसवारिऐसीमु
सिकनिहारमनमैसुधिसवहरगौ ॥ चेटकसौहाथमैकिधौगुलालसौनजानौताकेसाथकहामेरी
आंषिनमैरीआंषिनमैंभरिगौ ॥ ॥पहरकैउज्जलवसनतनचांदनीसेब्रजवधूवनिवनिजूथपजु
रचाईहै ॥ चोवाअरचंदनकीस्यामसेतघोटलेपवीलेछैलछिरकतरंगरसवाटीहै ॥ सखीसुष
नषसिषअरंगउलालभरीरंगमगीरूपनकीचौंपचुभीगाटीहै ॥ मानौलालमनैयायेवेलन
कोषिलवारपांतिनकीपांतिपिंजरनमैतकाठीहै ॥ ॥ ॥ ॥

६८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रीष्म॥ तापसौं समेत अति आनंद को देत उहै वसुधा को रैनन वसुधा रसमई है॥ गौरीपति राजवे को मिस गुरु लोग
घरै कै रि आभ सारि उहि कुंज मग गई है॥ जेठ की दुपैरी दुसैं दिस कर दुति आजनि हूं सरद की चांदनी सी
भई है॥ ॥वर्षा॥ दसौं दिस घोर घोरि कीनो है घटान घेरो कुहकत मोर महा आनंद अति हसौं॥ झुकि गी
ललित लतारु किगी डगर रुव भई जलमई भूमि वरसत मेहसौं॥ ऐसे समै ठौर दाऊ लगी के कंदवम
ल नागरी या नागर है विवस विदेहसौं॥ रस भीजे वेनत हां नैन रूप रीझ भीजे तन भीजे बुंदन सौं मन भीजे
नेहसौं॥ ॥भादो की कारी अंधियारी निसा झुकि आई वादर मंद फुही वरसावैं॥ स्यामजू आपनी ऊंची
अटा पै छके मदन मन मल्लार हूं गावैं॥ ता समै मोहन के दृग हू गिरि तैं आतुर रूप की भीख अपो पावैं॥ पौन मया कर
घुंघट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै॥ ॥हेमंत॥ रत तजि भागी वात कातिक मैं ज वलनी हिम की हि
माचल तें चमकु उतरत है॥ आये अगहन कि योग हन दहन हू को तितहूं तें चली कहू चीरन घ
रत है॥ हिये मान परी हूल दोरि गरि ज तजौन्नत आव निज मूल हे ना पति मरत है॥ यो समै॥
तिया के ऊंचे कुच वान का चलयै गर्व गरम भई सीत सौं लरत है॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥हिमरितुवर्णन॥हिमरितुआईभई सीतसरसाईदिषआजुउठीगरमीउरोजनअचलमैं॥वासरकीलघुताविलोकअमलीत
कौलसलघमैहर्षझ्योतेजतयनकेतनमैं॥कैरैकवरुलुअजयौंज्यौंरजनीबढतत्यौंत्यौंमोदउमगातमनुरौंदेमनमैं॥

हेमंतजुषारकेवुषारसेउपारतहैमहामासहोसनहाथपांवटरके॥दिनकीघुटईकीवडाईवरनीनजाततेनापति
हूसोजौयहसोचकेंमरनकै॥सीततेसहसकरसहसचरणहैकेंऐसेजातभाजतमआवतहेथिरकै॥जौलैकोककोक
कीसोमिलनकहेतौलोरातकोअघवीचहीतेआवतहैफिरकै॥ ॥रावेचारोकोरसाजैनूपरनिसानवा
जैसाजेचवकरकुचभरभिरवोकरै॥सिंहासनसेजसोहैंसीसफूलछत्रअलकअनोबचारचोरढरवोकरै
मैनमंत्रीमंत्रदेतआइनवढतमरद वेंदीजनभूषनविरदररवोकरै॥हिमकीहिमाईसबदाईश्रीगुविंदहोउ
एकहीरजाईमैरजाईकरवोकरै॥ ॥राबरूपाहूनिहालनमैतनपावकउजअंगीठीसेजोउ॥मोल
विसालकीकोरहूसालदिदनेसकोतेजइनेपरहोउ॥माहकोसीतविहातनकैसेहूकोरउपाउकरो
किनकोउ॥जौलगपीयपियालषपायरहेलिपटाइनराकहूकोउ॥ ॥ = ॥एकहीतलपहोउ
राजतरूचरअंगएकहीरजाईमैरजाईवितरतहैं॥एककरवटमिलसोवतसकलरैनएकहीउपघानमी
मजुगलघानहैं॥पोषमासदंपतिमिलतअतहेतहीयसीतभीतअमितननैककविघुरतहैं॥एकमनए
कप्रानएकाजीनमीतजानहीलमीतआनएकतनसेकरतहैं॥ ॥हीपरदिपतअमीपरियाती

ऋ

अथ लगन कवित ॥ क्यों सखसों दिन बीतत है तब जौ लग लोचन रूप चखे न थे ॥ तो ही लौं दीठ पने मन यो य ग
प्रेम के पंथ पिधो न लखे न थे ॥ वे ब्रजचाव कौं सगरे ब्रजचंद ज्यों गुरु लोग लखे न थे ॥ जे दुख रावरी प्रीत की राभये
ते दुख काहू के बैरलखै न थे ॥ ॥ क्यों कर के घर जैयत है अब काह सनै यह बीती मयी ॥ कब मंडन मो मनटीक
ठगोरी लिलाट लिखी सुभई सुभई ॥ अब और भई सुभलें ही भई पर राकथी बात बिती ती नई ॥ रति हू सों गई ज
ति हू ते गई पत हू ते गई पति हू ते गई ॥ ॥ रूप की रीत ते प्रेम पग्यो किधौं प्रेम की रीझ ना रूप सौं पागी ॥ म
न साव समैं न के ज्ञागी ॥ लाज हू ते कुलकान भगी सो किधौं कुलकान को लाज लै भागी ॥ नैन लगै वह
मूरत सों री किधौं वह मूरत नैनन लागी ॥ ॥ राखो न हीरु ब सांची कहौं दुख दै हो तो स्याम कहा सु
ख पैहो ॥ जै हौं हमे विरहानल ताप तौ पाछै गोपाल भलै पछतैं हो ॥ पै हौं न रादिल बैर बिसैहौ तौ जोर
कहा पर जीत न जैहौ ॥ ऐसे हो जो पै तो आपुन आप ही प्रीत मप्राण पातक पैहो ॥ ॥ आंखिन आंब लगी
जब ते अखीयान लौं आंब रहे अनुरागै ॥ रादिल बां अखीयान के ध्यान मे ... आंखन को नित्य जात है जा
गे ॥ आंख वे आंखिन आंब है की अखीयान के आंखिन सूझत आगे ॥ आंखिन के बस आंब परी छिन आंख
लगे न ही आंखि के आगे ॥ ॥ जोत हुती सुहको उगरी उत बाठो कान्ह ऊहां मत केरो ॥ जदपि पन्न प्रण चली
सिर नाय पै गौलतैं घैलउतो अन्तरे नेरो ॥ हौं अरुची गिरधारी के रूप कांते कमै नैन की कोर निहोरो ॥

मनसाराम ... कवित

चलाररही पैचलैनकान्हमनलीषको मन हूँगयोमेरो॥ ॥हमकोतुमएकअनेकतुमैंउनहूकोवि
वेकवनाइवहो॥रतआसजिहारीजिहारीउतैविभचारननेमसदानिवहौ॥मनभावेतुमारबसोईकरोअ
रागलताजिनलताजिवोरदहौ॥घनस्यामसुषीरहोआनंदसोरहौउनीकौरहोउनहीकेरहौ॥ ॥
चैनकाहाजवनैनलगेअरुनेमकहाजवप्रेमपरयोहै॥बुद्धिकहाजवबुद्धिनहीसबहेतकहाजहाप्रेतघ
रयोहै॥धीरकहाजहापीरअपारबलाजकहाजहालोभभरयोहै॥पूरितयैगोजवजानेयैगोंअवतोमन
हाथपरायेपरयोहै॥ ॥वतीअरुचैहैविलसोहैसेनयनजुगचलनिदचोहैअवलोहैक्षितघरीजो॥
देषतमनोहरमूरतिजितिहाहारीहरिआंषिनकेआगेआएआकसोउघरिगो॥आयेसबवैदेसबहस
तपरसलसबसबभरयोसबदेषहियेसबभरगो॥नैसकविहारीजूतिहारीसिरधाजडीकेपेचननिरषमन
पेचमेपरगो॥ ॥जमकीसीजाईजीवलेलहैजठानीओदुरानीदुषदेतदेषदेवरजरयोमरै॥नंदननि
कनौ गोडीसौडीभौंहकरदेषैसासकौसुभारझूठीसांचीजानकैलरै॥कहेदयादेवअवकैसेकुलकानहोत
लाग्योमनलालचीसौंऐसेकैसेकैटरै॥समकोउकहैयाकोटूकटूककरोमैतौटूकटूककैरहीकेटू
कटूककोकरै॥ ॥छिनतेजबतौसिवलोनिरषैछिनआपुउरोजनमाहवसै॥छिनदोरकेजारग
रेलटकेछिनगोलकपोलनपैविहसै॥छिनमैअधरामृतपानकरैछिनआननरूपतहाउलसै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनपगैं लजबुमाव मैं ज्यौं अटक्यो सुरही मन्ह को मन ज्यो निकसै ॥ ॥ कालहू कहूं जो स्याम नदेषे हूं नर
स्यो जाय गहियो अकुलाइ कपूरके टकसौं वरिगो ॥ नील कंठ रुचिर सुहाई चेतवनवा की षाती साहस
न मेरी षाती परधरजौ ॥ पौन हू मैं चानी हू मैं चांदनी मैं चंदन मैं फूलन दुकूल मैं वियोग निसी भरि गो ॥
कहा तेहूं स्याई दुबदाई पनि घट मांही कहांते कहाई मेरी आंषिन मे परिजो ॥ ॥ ऐसी पनहारी तहनि
हारी कहौ नागरी के बेउ पनहारी सकी हारी सषी प्रेम मैं ॥ गागर भरै नाह गगरै ध्यान अकभरै ऐसे दिन
भरै उनि देषी है अनूपमै ॥ नीलकंठ षाती छुटी सकुच सकुच छुटी सुघर विसारी गौरी सुघसुघर केर
पमै ॥ घर घर सौ हाथ घट हाथ भयो हाथ डोर ही के वाधी रसरी ती रसरी ताडारी कूपमैं ॥ ॥ गंगके
नीरसौं धोइ वनाइ पौ चंदन मूष के ताग न तागै ॥ चंदन औ मन धाम मे राष घनंतर हूं निवास रजागै
सींच लघा सुरधेनु के हूंध मंजीवनी बीज सुदास सपागै ॥ आंवन के वित्र घाउ लगे लक हां तिन मे
तन औषध लागै ॥ ॥ सोहत रेसमी प्रेम को यांय रौ गौरी धरो सिर नीलनि चोलै ॥ चौगुनी चार
वटी चित मैं परमे सुभए ऐसु बतेन हीवोलै ॥ प्यारे तिहारे निहार बेको उकंठ मकरो षनके पटलै ॥
भवन विनु घटा सी अटा चढ भौं वेनी कौं वटा भई डोलै ॥ ॥ प्रीत करी मृगनाद हो सौं सह तो वानरि आ
हा कहा हरिजैं है ॥ चातक स्वात सौं प्रीत करी सहतौ औरन के डर वैठ भरै हूं ॥ परमे सहजा सौं जो प्रीत भई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दुखहीसबहीऊदहोरवैहै॥कोटगुलाबकेसगमयेतोकहाउहमेंसुगंधलेहै॥ ॥वतियानसुनायकैमोतिनकीघ
तीयानमैमालसलाइलैरी॥सपनेहूनकीजोयेमानमहोअपनैउवनाकीवलायलैरी॥परमेसजूरूपतदं
गिनसौंरतिहीरसरंगलाइलैरी॥दिनद्वैकमटूपियप्यारेकेप्यारसौंचामकेदामचलाइलैरी॥ ॥आइवो
घाउइनकोउतजाइवोमेरोउतैकोअरुझायो॥पायवौहोसबसोनलखौदुखयायवौहौसोस मैमरयायो॥
रावरोनेहवधाहीगयोरसखानभयोनकघूमनभायो॥अगनलाग्योललाकवहूनकलिकिनमोहकलै
कलगायो॥ ॥तेरीगलीनमैजादिनतैंनिकस्यामनमोहनगोधनगावत॥वेब्रजलोकसौंकोनसीवाततवना
इकैजेतहिनैननचावत॥वेरसखानजौरीझेहैनैकतरीउकैक्योनवनायरिझावत॥बावरीजोपैकलंकलग्योतो
निसंककैकाहेनअंकलगावत॥ ॥अलीलोककीलाजसौंमोहीकोंघेरिकैराखीघ्यकीवड़ेसकटसो॥पल
मैकुलकोनकीमेंडनधीरुरहीनरुकीपलकैपटसो॥रसखानसचेतउचाय्याहीउचटीसुसकीचोटसो॥सबी वध
अरकी४ कोटकीयोअरकीनरहीअखियालटकीलटसो॥ ॥उतकोउडातीरतवेचौंतरफरातीपीयपासजातीक परी४
रआतिचितचाहेको॥वकसवखानेमरीअलुधनअकुलातीरातीरातीमईअनुरागकेउमाहेको॥पातीह
नआईवीरवेसंधरिराखीधीरपीरवढीअधिकविकगतिकेदाहेको॥प्यारेदेखकेमीकिरेअनमाकीपेरी
वेकोभरीलाखअभिलाखनमैपाखनविनाकीविचआवेकरीकहेको॥ ॥ ९२ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आंखिहीमेरीपैचेरीभईलखफेरीफिरैनसुजानकीघेरी॥रूपछकीतितहीमनथकीअबऐसीअनेरीपत्या
तननेरी॥प्राणनसाथपरीपरहायविकानकीमिपैकानपबेरी॥पाइनपाइलईघनआनंदचायनबा
त वरीप्रीकीवेरी॥ ॥हीनभयेजलमीनअधीनकहाकछुमोअकुलानीसमानै॥नीरसनेहकोलाइक
लंकनिरासह्वैकाँइसागतभानै॥प्रीतिकीरीतिसुक्यौंसमझैजडमीतकौप्राणपरेकोसमाने॥यामन
कीदुसहायघनआनंदजीवकीजीवनिजाननिजानै॥ ॥देखेंआरसीलैवलनैकखरीहैगुराईमैके घौ
सीललाई॥मानोउदोतदिवाकरकीदुतपूरनचंदहिभेटनआई॥फूलनकेजनमोदलपैघनआनं
दरूपअनूपनिकाई॥तोसुबलालगुलालछिलाइकैसौतनकेहीएहोरीलगाई॥ ॥क्यौंहसिहेरह
र्योहियराअरुक्योंहितकेचितचाहवढाई॥काहेकौंलैसघासमवैननचैननमैननसैनवटाई॥सो
सुधमोहहहीयेघनआनंदसालतक्योंहूकढैकढाई॥मीतसुजानअनीतकीपाटीइतैपैनजानियेकौ
नपढाई॥ ॥प्रीतमसुजानमेरेहितकेनिधानमसुनोकैसेरहैंप्रानजोअनखिसरसायहौ॥तुमतोउ
दारदीनहीअवलोकोअधारसुनियेपुकारयारकौलौतरसायहौ॥चातकहोरावरोअनोखोमोह
आवरोसुजानरूपबावरेंदरसायहै॥विरहनसायदयाहियमेवसायआयहायकवआनंदकौघन

वदन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तरसत बरसत मान जान मन दरसको उमहि उमहि आन आंखिन बसति है॥ बिषम बिरह कै बिसिख हिये घाय
ल है आह बर घूंम घूम सोचिन तसति है॥ निसदिन लालसा लपेटे ई रहत लोभी मरिग आनोखी उरझिन मै
फसत है॥ समिर समिर घनआनंद मिलन सखकौं न सौ आसापटु कारहौं कसति है॥ ॥रूपनिध्या
रलगीत वतो अवलागत नाहि सभाय नै मेबै॥ ज्यौ रसरंग अभंग रहस्यो स्रहया नरूपो थबधै लाबन लेषै॥ हे घन
आनंद हो सुजान रुरा दहै दुख दाई परषै॥ आंखिन आपनी आंखिन दै षैं कियो अपनो सपनो उन दैबै॥ ॥
२८ रूपसरूपसज्योरद लदेष भज्योतत जरे सहदीमि वासी॥ नैन मिले उरके पुरबेठत लाज लटी न घुटी ति
नकासी॥ प्रेम दुहाई फिरी घनआनंद बांधलिये कुलनेम बिसासी॥ रीझ सुजान सजी पटरानी ब
चीबुधबावरी ह्वै करदासी॥ ॥घनआनंद जीवनमूल सुजानकी कौंधन हून कहूं दरसैं॥ सुनि
जानपै धौ कित प्यारस्है रत चातक प्राण तपै दरसैं॥ बिन पावस तैं न थ्यावस हौं न सम्यो करियै
मे३ अबसो परसैं॥ बरबावरसैं गिरिठौ घिरकैं नित ही अषीयां उघरी बरसैं॥ ॥सांवरी रूप की रिजिन
ईयहू जो न रहराब तलैत जगौ हन॥ ज्ञान न देत कहूं कब हूं तिन लेत हैं हो करि डीठकी टोहन॥ सु
जसु बैसु टरे घनआनंद षंजपरै नमहामति मोहन॥ देषै कहा जो न दीसै इतै परहा हा सुजान तिहारी है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२४२१

फूलहोतहीपैसमकैंअधिकैवरनैंकविकोविदयोंसबही॥विपरीतलखीछहरीतअहोपरतीतिगहींअतिमो
हमहीउतकोंघनआनंदगोहैयहीरतकीसलजानचनीलसही॥दुबदैसबभावतहौलमतौंचितकेंउरयेह
मचिंतालही॥ ॥नैनकहैंसुनिरेमनकानदैंक्यौंरततोगुनमेटदयोहै॥सुंदरप्यारेसुजानकेमंदरबावरे
सुरूमहीतेभयोहै॥लोभीतितैंतनकौनदिखावतऐसोमहामदछाकिगयोहै॥कीजियेरूघनआनंद
आयकेपायपस्योहरूप्यायनयोहै॥ ॥मदुमूरतिलाडउलारभरीअंगअंगविराजत[illegible]रंगभई॥
घनआनंदजोवनमातीदसाछविताकतहीमतिछाकछई॥वसिप्राणलौंनीसुजानहितचितचैंहित
हेरनछापदई॥उहरूपकीरासलखीतवतेंसखीआंखिनकेरूवतारेभई॥ ॥दोहरा॥जानराय
जानतसबैअंतरगतकीबात॥क्यौंअजानलौंकिरफिरमोघायलपरघात॥ ॥लैहीरहेहोसदा
मनऔरकौदेवोनजानजानतजानदुवारे॥देख्योनहैसपनेंहूंकहूंदुखत्यागेसकोचअकोचसभा
रे॥कैसेसंयोगवियोगवियोगधौंआहिफिरेघनआनंदकेमतवारे॥मोगततरूगतपरैतवहीत
वहोउघरीकहूंआपतेप्यारे॥ ॥मोहीमोहरूजनायकेअहेअमोहीजोरू॥सोहीमोहीताकठिनको
करमोहीतोहू॥ ॥आतसीघोलनेहकोमारगहैजहांनेसयानपरूबांकनही॥सांचेचलेतज

आपनपौ कपटी झिझकैं जिसाँकनहीं ॥ घनआनंद प्यारे सुजान सुनो इहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं ॥ त
म कौन सी पाटी पढ़ै हौ लला मन लेत पै देत छटाँक नहीं ॥ ॥ घनै प्यारे सुजान सुनो यह भाँति न हौ दुख म
ल महौ ॥ नहिं आवन औघन रावरी आस इते पर एक ही बात चहौ ॥ यह देख अकारण मेरी दसा कोउ बू
झै तो ऊतर कौन कहौ ॥ जिय नेकु विचार कै देहु बताँ हहा पिय दूर तें पाय गहौ ॥ ॥ घनआनंद रस ऐ
न कहौ कृपानिधि कौन हितू ॥ मरत पपीहा नैन वरसौ पै दरसौ न हीं ॥ ॥ देव मैं सीस बसायो सनेह
कर कैं भाल मृगंमद विंद कै भाष्यौ ॥ कंचुकी मैं चुपर्यो कर चोवा मिलाय लियो उर सौं अभिलाष्यौ ॥ लै
म यतूल गुहै गहनै करि मूरति वंत सिंगार कै चाष्यौ ॥ साँवरे लाल कौं साँवरो रूप लै नैनन को कजरा
करि राष्यौ ॥ ॥ लाल अनूपम रूप निहार तरी उर कै आँगन लगैं परेष्यौ ॥ प्रेम प्रतीत न दै निसवा
नैननि सर बीच उहात नें मैं ष्यौ ॥ कासौ कहौ अब कौन सुनै गे यह है कछू प्रेम को न्यारोई लेष्यौ ॥ कातक हैत
म मोसो सुधे मिलमो मन में नेक पैठ कै देख्यौ ॥ 'इत के सुल देस न है चल के भृकुटी त्रिकुटी पैं खि
स्यौ पै खिस्यौ ॥ रघुनाथ उरयो मकराक्ष छिन तें तिय नैन सौं जाय भिर्यो पै भिर्यो ॥ अत ची कैं नेचा रु
कपोल तें रपट्यौ न निसंक फिर्यो पै फिर्यो ॥ लष कोट ही ओट उपाय किये मन हों ही के गाढ गिर्यो पै गिर्यो ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्यौं वचहैंमनगनैनीमगीव्रजमैंउतपातवढ्योहैंअचरुकरी॥ तानकीवारुणीरागकीगोलीभरीनिस
द्यौंसनचूकेंअचरुकरी॥ दावतलेअंगुरीसोकलानसुजानकहेंपधरीकरीफूकरी॥ हेरीअहेरी
अहीरकोहाथलीएकरवंसीफिरगवंदूकरी॥ ॥अंगुरीनमैलौंजायभरह्मायरह्योफिरआपल
भायरहैंतरवो॥ धपिचापनचूरचूरहूएदिनचौधपिचापचक्योछविचापछवो॥ घनआन
दषौरसरीगनिभीजिचकूविसरामविलोक्योनवो॥ अबवेलीसुजानकेपायमपानपरयोनरयोम
नमेरोऊवो॥ ॥सुनकैपुरानराषैपूरनकैदोऊकानविमलनिदानमतज्ञानकोधरतहैं॥ सदाअ
पमानसनमानविनमानसभमानतसमानअभमानतेविरतहैं॥ सोईहैपरनसालासहेघामघन
मालापैचगानज्वालाजोमासेंयुतलरतहैं॥ लीनीसोकमालापरेउंगुरीनधालाजपऊोढीसग
धालापैनवालाविसरतहैं॥ ॥उनकीकिवारलागदीठपरीवेंदीभौहतीसकोसोउंकसो
मावसभमानीजू॥ लेंदरवदनसोमवारहींसोजानीयतवेनीपिकवेलीकीत्रिवेनीसीपधानी
जू॥ अवनतरैनामामोअवननैनधनरवकेउलअलकरहतप्रसननिसानीजू॥ जाहीसमें
वाहीतौरएसोईसेयोगपाइसदूवसदैउकेहमारेदृगदानीजू॥ ॥ ॥१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥जिनकेरददेषनहीकीसदास्परसेरीभईहनपायनकी॥निरमोहीतिहूंतरसावतवैां
जिनकेसंधिनागहिचवायनकी॥रसैराजिहमैपरिवानैांकहातुमजानतहैगतपाय
नकी॥रसिमैरसरीतिरहायनकीजुकरीतुमरीतकसायनकी॥ ॥पलप
टावदनविलोकहौवलेयालेहौंरुकरसरैहौंदजिराग्निदेरहौसीमे॥पापसह
नायहौहवीजनाउराहौंनकौंहूंअरसायहौंनआयहौंउदासीमैं॥कहा
जानोमोहकपूलगीहेउगोरीभईवौरीफिरैदौरीयौंउरजिहकलासीमे॥
मोहनकहापवेकोमोहनीजोडारीहैतोमोहनरंगीलेमोहराषिवेकोवा
सीमे॥ ॥सीतकहैपरपोपरहौभजयैांकरकैकैतजानननदीजै॥

नैंन कहैं निरखौ ईश्वरै न्ह्यौं यौं कहैं उसमायकैं लीजैं ॥ वैन कहैं वतीयां ह्री
कहलोक री प्रान कहैं उनहीं की सुनीजैं ॥ कान पै है चैन न ही मन भावतौ रा
का का हा कहा कीजै ॥ ॥ घरट्यौ ऐवो जैवो प्रेम पाती कौ पठैवो घरट्यौ
घरट्यो दूरि दूरि हीते देखिवो दृगन तैं ॥ जितै मध्य पाती है तेतिन सौं मिला
प घरट्यो कहिवो हूं देस हू कौ घरट्यौ सकुच न तैं ॥ राती सवबा
तै तेना पति लोकलाज कानै दुरजन लाज घरटी जतन जतन तैं ॥
उरझ गिरह ही चित चुभि रही देवौरा क मीत की लगन कौ हू घरटति न मन तैं ॥ ॥

कवित॥ जसञ्चपजसजागेकुलमैकलंकलागेभागेमननजनकेकोद्वौनदुषपायहैं॥ हासीकरोपुरवासीकहेकै

वका सीराम नयोनयोनेहतौमेरामहीसोलायहौं॥ रूपलतचानीसैविकातीरघुनाथहाथसाथउवचलहैारी

भौनछिटकायहौं॥ टूटोयानटूटोचापजानिकीकहत आपलालादशरथकोमैमालापहरायहौं॥ ॥

कथासुनवेकोपतसंगवैठीगाठजोरनीयञ्चौरगाठलोकलीकठठवोकरे॥ कालिदासवैठेपासतासमैगुवि

दमुख रूचमधुपानसोंपयारीकवोकरे॥ आरञौतियाकोचितनवलसुजानजूतौवापुरोएरोहतपुरा

नवकवोकरै॥ ॥सपनवर्णन॥ कोकिकेविचारपटसकलसिंगारसाजेलगेसपनेमैलाललिपसंगसषी

यां॥ मेरेनेरेआइकरआलिंगनरीतिकीनीगंगारामतेउसषीनाहीजातलषीयां॥ अंगियाकेवंदतोरकुच

नमरोरगाढेनाभिकोपरसकीनीवीषोलनलिगयां॥ जवलगपियगलवाहीदैसुरतिकरैतवहीउघारदई

दई मेरीअषीयां॥ ॥सोवतभागजगेसजनीदिनकोरकयारजनीपरवारे॥ नेहनिधानसुजानसजीवने

अचकहीउविवीचपधारे॥ सौतिनसपियपायकोसभरभजसोचसकोचनवारे॥ वैरनडीठजरेघ

नआनंदयोंइनलेपलपाटउधारे॥ ॥प्रानप्यारोमिलैसोसुपनेमेपरीजवनैकनींदनिहोरें॥ कैतकोआइ

वोत्योंहीजगायगहोतषिवोलपियूमानिचोरें॥ यौंमतिरामवढायहीयमेसुषवालवेवालसोंदगजोरें॥ जेसेमिहीपटमेंचह

संयोगवर्णन॥ औरहीभानउँतसमेतियमंदरतेनिकसीआरसाँनी॥ दो॰ २ सोहतहैरस्दकेछदआननदेषसषीनंदलालवषानी
रूपछातहैयहहैरीकहाउसकायकहीमधुरीतियवानी॥ आयोधिरूषपीयोमेरेपीतमवाकीवच्योतापैकीनीनि
साजी॥ ॥आजमनभावनकरीहैप्रीतपावनसौंक्यौंहूंआवनभयोहैचितचैनीसौं॥ लीयेकठलायजिहैंवि
रहबलाइअगवंतसबभापवदैआदरकीलेनीसौ॥ कंचुकीउतारउरअंचलउघारडारसवातसगंधछाँदेहै २४
रसदैनीसौं॥ प्यारकरप्यारोजोलौंउरसौंविहारकरैतौलौं २२ हारसविहारकरवेनीसौं॥ ॥ ॥रातहरी
विपरीतकरीरतिप्रीतिमप्रेमप्रियासचुपावै॥ वहमनेकटविंकनीवंकनरूपरनादतेकामजगावै॥ मोती
कीमालकपोलनघूरकेलरकीमनमैयहआवै॥ मानउचंदचकोरनकेमुषधारजोदुधारनआवै
कामकलाधिकराधकाआधिकरातलौंकामकीवातवनाई॥ कामसौंकाहूरदैकचदाकरसोईरं
सौरतिकामकीनाई॥ वलजराकीमढिकाढ्वैलसषिलषकोटकभातनभाई॥ देषनकोपियकोतिय
केहियकीअषीयामनोवाहरआई॥ ॥उठसेजतसुंदरीसेकिसकुचिवेमोलहमलठगी॥ पुनपीक
पोलनकेठनषछुतअंगअंगनदागदगी॥ मुकताहलमांगकेवेनीकेपेडेगिरेछुटकेछविहस्यल
गी॥ कहवहसहसौंहरिको मनकोमनपौजिमघोउतअंडनकोभजगी॥ ॥रातरतरनमे
रहीरीपतिसनमषतिनैवकसीसरीउदीनीहैवकसकै॥ करनकीकंकनडरोजनकोवनमालकटि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहूं चिंकनी रही है अंतगसकैं॥ सेषकहे आननकौं आनंदकोपानदिनै नैननमैं अंजनविराजैम नवमकैं॥ वैटीवरवारतेरहेटीथकपाछेपातैवाररवांधौ आलीवारनारकसकैं॥ ॥प्रीतमके अंगअंगपरसरसरसआलीकैंसेकैंवषानोवातरातकेविलासकी॥ अधरसुधाकोरसपीव तपरसपरकहेहरिनामरुचउमगकुलासकी॥ सुबहीमैं चारजामवीतनलागीवारउोचकविसाहीधुन सुनीमैंविभासकी॥ अतअकुलानीमुरझानीपधुतानीलनहाहानिसमौनभईपहरपचासकी॥ दंपतएकहीसेजपरेपगादावदुहूनदुहूनरिझावैं॥ भौहैं अमैंठरहैठकुरायनठाकुरकेउरकामजगा वैं॥ आपनेआपछेउठेहैंउजोजदोऊगहलालकीपीडीसौंलावे॥ देवजूलौंडीअनोषीलडारतिपाय पलोटकिचोटैंचलावैं॥ ॥विपरीतवर्णन॥ सजलजलदकैंधौंदामनजलदपरकामनीकोरू पजउपतिमिलतहैं॥ वदनसुरतपियमुषसौंजुरतकिधौंकमकेफूलपैकलानिचलिवेंतहैं॥ नंद नसुकविजैसेअमेमेसललहोतदेहमैंतेप्रगटपसेवपिघिलतहैं॥ टूटटूटमोतीसीसफलतेपरत आलीमेरेजानेतरुणतरैयाउगलतहैं॥ ॥दंपतिसुरतिविपरीतिकोरमतमतिकोकककेकला नकेअषिलअवधारेहैं॥ भनतकविंदविहसतवतरातसतरातअंगअंगजेअनंगरगवारेहैं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विपुरेलिलारतेंसमेंटवैंनामांगमोतीधरेकेसपासपरधरेकरडारेहैं॥वदननछ्वपतिछत्रपतिऊकुमतेकूदैमनोत
मयेकत्तारेवांधतारेहैं॥ ॥अथस्वेदवर्णनाकवित॥रंगमगीसेजपरपौढीरसलूटप्यारीसोंधेस
रसानेकेसुखपियसानेननके॥सेतदुपटामैलपटानेअंगकहूंसरदघटामेंपौंघटानगिननके॥स्वेदक
नघनेसनैतलितसलौंनिदुतवरणातरुकविअपारतिरननवे॥मानोहेमवेलीमैननत्रपतिकोरनक
रोरनहीटूटीपरेटूककिरननके॥ ॥उरतांतवरणन॥भोरभयेउठनारचलीमनरंजनप्रीतमचीरगह्यो
प्रगट्योरविकाह्नविहानभयौमुखमोरकैयोंमृगनैनीकह्यौ॥उनवेनीदुहूंकुचवीचविराजतसोउपमा
कविवृजकह्यौ॥जानमेजपमानउपजसमैदुरितघकमेरकीसंचरस्यो॥ ॥भोरभएतकीयासौ
लगीतियकुंजलपुंजरहैवगरायके॥पंकजसेकरकेतलऊपरगोलकपोलधर्योअलसायके॥आ
ननयेविलसैरदकेछदश्रीपतिरूपरह्योछविछाइकै॥मानऊराढुसोधाइलहैविधुपाटयोहैपंक
जकेदलआइकै॥ ॥स्यामासोंस्यामसोंरूनेसकेतमिलाइदयोकरमैनरकीलहै॥दोरूछकेरति
केलसमैंज्योंलस्योंतरसौंनेकीवेलसोंनीलहै॥लेतसरोजलसी तेरुधाकिसरोजहींतेमकरंदस
सीलहै॥योंसिसकीधुलीसंत्रितसोरमैंघोरमैज्योंजदीजागतजीलहै॥ ॥प्रेमजगाजगेजगाजगे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जागे जामन के भोर ते भरे हूं अतनीद उमगात है॥ मदन के मातेमत वारे पाने अमजा है मुकत रूप र उघरत है
आलमन बलबल हारी रूप नैन ननपै पंकज दलन पर भौंर फरकत है॥ चाहत है उडवे को मानत मयंक कों
बजानत है ताते फिर ताही मैं रहत है॥ ॥जलक्रीडा॥ आज राकल ललनान्हात मैं निहारी लाल पीन पयो
के धर बीन बैनी छीनलंक है॥ जमुना के जल के ऊपर मानपै ठपोघत लिलाट लाग्यो मृगमद बंक है॥ अज
अरु पान को परस होत भरि राम ऐसी सोभा लहै मानो परम अंस कहै॥ वार धको नातो मान धौल करवे
को मानो कमल कलानिध को धोवत कलंक है॥ ॥जलकेलि कै जब देपत पर मचारु मानस
रूप रस अनेक सुबदरा है॥ सीतल भराते तब कूप तलग्यो है तन दोनो राकवार आपने सदन गरा है॥
कोमल नवीन पर प्रफुलत परम चारु चहूं ओर ते सरोज संपुत भरा है॥ भानजू के आयराते सोम को म
कान जान अनुजकी कानक मलाक पाट दरा है॥ ॥एक समै वृषभान सुता उठ प्रात समै जमुना गई
बोरन॥ मंजुल न्हाय अन्हाय के सुंदर वेंठी है वा हूर वार निचोरन॥ उपमा मनमो जकिनी किसगो जलवे
कनका गिरि के सवी कोरन॥ मानहु चंद को चूसत नाग अमीनि कास्रोवत के सकी कोरन॥ ॥
जमुना मैं केलि सषी मेल मे करन लागी छूही अलकन देषमोर मलकत है॥ कवि बलदेव अंग वासन सों भौंर भवे
मृगछचंद पै चकोर ललकत है॥ री झिरी झनंदलाल चकित थकित भए ओठ न्हाय रहे नतरागत मसलकत है॥ कंचन के उप्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२४ 34

॥हास्यरसवर्णन॥ह्वांतहीमातजोघातकरेनितपारपरोसनिसौंकलगाढी॥हाथनचावतमूंडथुजावतपौरभरी
विसकोटकवाढी॥कैसीवनीलखतेसिखलौंव्रजचंदजूकोपसमुद्रतैकाढी॥लियेपीयकोमुखजोवतभूत
सीभामनीभौनमैंगाढी॥ ॥राहोगुनगाहककउमाहककविनप्रियदाहकदुवनखलद्रोहीदहलानेहै
तेरीनेगदेगकोसुजसफैल्यौजगमाहूजैसरैनचांदनीकेउजरेसमानेहै॥कौंककविरामचितचावके
सुभावजाकेसांचेहीकहतकैंधोंगूढेहीवखानेहै॥मैतोमरदानेजाननजसकेकवितकहेद्वारदरवारक
हैंसांहवजनानेहै॥ ॥आयोपरदेसतेकितेकदिनवीतेकंतवैठ्योचित्रसारीसोसवारीवडूभाय
के॥लेखककेसाजकोसिंगारमिसरानीजाननमसमहलाईज्योंपुतलेलचितचायके॥हंसपावअंजनदैति
लकसौंहरताललीपककोसाजचलीमदरसुभायके॥देषमयमेसुकांहूपौनकोप्रवेसजाननकूदपरेमि
भजूम्रातेभकुलायके॥ ॥विप्रभांग्योनेगउपरैनाग्यथर्वचनकोलोकेकपालीकरव्यालपकरायोहै॥ ८२
हाथउरगारहैडिग्यारउठ्योव्रह्मतोहहत्रिपुरारमनहारकैमनायोहै॥पायनपरतपायलोचनकीला
गीभ्रागिज्योंज्योंदुजनाचेत्यौंत्यौंपाचैमनभायोहै॥नेउायोगमांगवोतोविप्रकोविलरग्योपायपरपाय
परवोईवकसायोहै॥ ॥

॥ अथ राजनीति वर्णन ॥ रात द्यौस हाजर रहु कमहू न लोपै तापै कोपै छिन कामँ तौ गुन गह्यो करै ॥ रीझ श्री र १
कह्यौ पै वो ता पै कठिन वितै वो दिन सबको मलेस है कलेस न कह्यो करै ॥ चाकरी नैसु सुझै बात बैवे की स
कूलै सेन रोज गार मांगै रोजगारी ह्यौ रह्यो करै ॥ ह्याकर न जाने एक नाकर पढै है नाम ऐसे ठग ठाकुर पै ग्राक
र कह्यो करै ॥ ॥ ता दिन तें हम कौं महाराज ने छोडै तबै हम हूं यह जानी ॥ छोडदीए जग के महाराज सबै
बडी तज दीनी रजधानी ॥ ऐसेन के परसंग को पाय के को दरसै एव बडे अभिमानी ॥ छीर के सागर के लमराल मैकरि ५
छुवै कौ गलीन को पानी ॥ ॥ हूनो भलो लपथ कुपथ पै हूनो भलो घर पैन बल साथ करीए ॥ अनल
कीलपट ऊपर भली ना हर की कपटी के कपट सों हूर हीं ते डरीए ॥ यह जग जीवन पर्म पुरुषारथ है यर घर जा
य पुन रस सौ निकरीए ॥ हांरि मान लीजे पैन वाद कीजै नीचन सौं हर वस दीजै पैन पर वस परिए ॥ ॥
वैदी होत कहर कलप वर घर घूहूर पर मैंह सचूर की होत पर पाटी को ॥ भूपति मगैया होत ठाठ का मगैया
होत गैपर चूवत मद चेरो होत चाटी को ॥ कहै कवि दत्त पुन पुन्य कीये पाप होत वैरी निज बाप हो तांप
होय माटी को ॥ वेर होत प्यार सम मेर होत दिनन को फेर होत मेर होत माटी को ॥ ॥ अगन करन जा
ज्ञो रे चंदन बढित आर पैन कहू सीतल ता वासन घटात है ॥ छीर मथे माषन वढ्यो दिया वे रा दिल हो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुरमलिन मोजें मूरति दिषात हैं॥ तोरेहू सर सरसमोरेहू सरसरसघोले घांटे औंटे तातें अधिक मठा
त है॥ रववे की कहा कहूं विरचे सहस गुन सज्जन सनेही कहूं वात न मिठात है॥ ए दिल दिल के भावते ते
दिल दिल ही मांही॥ जा दिल दिल ते वाहरे ते दिल दिल न समाहि॥ ॥नरक जो देहु तौ न निंदरिवे मषर
हू सुरग जौ देहु तौ न हरष सराहिये॥ दरद करतारै तौ तौन कौ जपे दरेउ दिल वारैं जौं कतूल तौ न फूल के उमा
दोहा ५ हिये॥ जा ही रंग राचै ता ही रंग हूं जै राग दिल सनेह नेह तिन के हूजै दाहिये॥ चित कौ न चाह मरौं आप चाह
दोहा ६ चहूं है परौ प्रीतम जो चाहै चाही चाही चाहिये॥ ॥दास न नीर पिये कहूं औरहू ही वतरा कहिये हम धा
रे॥ आवत जान वे पावस कौ गिरि ऊंचे चितैके कासनि हारै॥ मोरन कोज सोरलने तव आस सो इवका सार
पुकारै॥ चातक वा पुटे केसी करै औरन के घन औरन मारै॥ ॥सूरन कौं सुरताई कौ नैषिष लाई पुन
कौ नैसिष लायौ सतीन तन जारवौ॥ दाता दान दैवौ कवपदेच दसार वैठिवा जरान कौ नैसिष लाये
षग मारिवौ॥ कहैं कवि पूषी जा कौ जैसो ई सुभाव जो हि होय अंग संग पहुंच न हूचै विचारवौ॥ चंद
दो॰ ७ पै कौन जाय सी चंदन गंधन कौं न सिंहन सिषावै जैवा कुंभन विदारवौ॥ ॥धूप के निवारन न धरत
राजा छत सिर कहे जप देव नर आरी भारी मालकौ॥ जल ही तो होत गुड़ सी लो कतै विगारत वकौं नै आ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुनगरीवज्जनजालके॥जालन्हीजनेंपनमरवोधमेपरमरमरवोहैं सवालवनिरवालकें॥वचेनंदुकोसेर
सकोसेंकविनकेकोसजेपरोसेमनोकालके॥ ॥वडेनकोजानपहचाहनतोरहीमकहाजोपेकरताहह
नहधलेनहारहै॥सीतहरसूरयसोंप्रीतकरीपंकजनेंवोमारततुसारहै॥उदधिकीवीचघसोहैवारवे
सीसहसोतद्धनकलंकनसोसहिमेसदारहै॥वडेरिजवारकाहाभयोकियेंप्यारहनौसप्याघरवारपार
देषीचुनतअंगारहै॥ ॥काहैरहीमगतदीपककीकुलकपूतकीसोय॥वारैउजयारोकरैवडेअं
धयारोहोय॥ ॥जिहमंचानचरहयकघरजगहजसनहिलीनो॥जिहमंचानधरहयकघरप
रकाजनकीनो॥जिहमंचानधरहथदीनलषदयानआनी॥जिहमंचानधरहथकघरपरपी
रनजानी॥मुंचहनाहदएपुक्कसमकविभरमीउरआनीए॥नहिवचनलाजनहिदानषगतिह
मुषमुंचानाजानीए॥ ॥समैमेचवरषंतसमेसिंहोसमेफल॥तरुणायनहैसमैसमेहंजातिदेहं
वल॥समैसिद्धसैलेसमैपंडितहूचूकैं॥कोईद्वारजआवसमैसिरसमैपाईरिवरहिगीर॥गोविंदअ
द्दलकविनेदमनजोकीजेसोसमैसिर॥ ॥समैपायसमकीजीए॥गोविंदअटलअचूक॥चतरनवि
नकरवसोकरैसमैचूककीचूक॥ ॥हनियेविरवप्रभुउपतिहारेहमराबिहोहमैतोसो
भारावरीवडाईहै॥तजहोहरबकेतोविलगुअमानेकघरजहांजहांजेहैतहांहूनोजसगाइहै॥=॥

प्रेमेन्त कौसे
तउवनंगम जोहन २
समैप्रीतचित्तघटे समैप्राइरहेसवै

२६ 36

सरनचढेगेनरसीसनमढेगेकहिसुकविअनीतहाथहाथनविकायहैं॥देसमैरहेगेपरदेसमैंरहैगेबाह्रनेसमैरहैंगेपररा

रमेस्वर वरेकहायहैं॥ ॥कैदुमलाइडारेतेरेआगेंनितनिभरेघ्रबाजलमिठोसीतलगीवाईमै॥गोवरकोंडारया

नराषतसधारितेरैवैठवैठवद्धवारमावनउडाईमै॥जानीपैपानकोउहैपायोहूहनवैनोदयानिधकहैक

रनाहूनदुहाईमै॥रारीगाइराते हूयेदूधजिनदेरतौलालाजिनमारैसेवासभभरपाईमै॥ ॥लिख्योहैलि

लाटसोनकहूकोभिटयामिटेहानिठौरहानिलाभओरलाभआवेगो॥उदैनाथकहैमाराधारीकोउसजनको

याहीभांतसदासभहींकोसमझावैगो॥वसीराजहांहीतहांदिनदिनवढैमानमानविनवढेतेवडाईकौनपावेगो॥

घटननदीजेमानघनकौंघटेनाउमानघटगराधनकौनकाजआवेगो॥ ॥ ७ ॥छत्रीकीविकाततरवारि

रिसुदेषेषेतराजनकीराजगतिभवनलहातहै॥वनकसयानअरविप्रनकीवेदधुनिविविधपुरानकीवातरस न

रसातहै॥चत्रभुजचारकीचातुरीत्रतत्रीतानतियकीसरेषरेषशीलकुलजातहै॥हयकीततार्ईअर

गयकीगरूरताईअटपटीभावनकीरोडकहीविकातविकातहै॥ ॥मालीकेसलतमोसीकेपानवका

लकोलौंगसमारीसजोहा॥विप्रकोचंदनजैतलसीदलनाउकोदर्पनलेसषजोहा॥हूनरहेनरमेटच दारकौर

उर्भजछत्रनकोरनतोहा॥आगहीआगमभ्रजिरमावतभाटकीभेटकवित्तकेदोहा॥ ॥जपकरतपकरवात

करतीर्थकोकोटिकजतनकरैपचपचमरिरे॥जोगकरजपकरसुरकोदानकरकांशीमैकरौतलेपवरमाह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जरेरे ॥ सुकवि निहाल कहे अवसर भै आवै कपट बहुरूपा वे सो विविध वेष धरिरे ॥ भावी को करणहार सो ईस
रयो दास वास भावी नटरत भेया भावै सोई करिरे ॥ ॥ कौन हद देस कौन काल कौन वैरी मेरो कौन मेरो हितू सो
हू दिग तेन टारिवो ॥ केती आयु पद केतो षरच किते दल तें उनमान मो हू सब ते निकारिवो ॥ संपति के आवको को म
न मेरो अवरोध कौ को उपाय यह वात उरधारिवो ॥ राजनीत राजन को दिन प्रति देवीदास चार घरी रात रहें रत
नौ विचारिवौ ॥ छोटे छोटे खलन कौं सरन की वारि करें पातरे से पौधा पानी पोष कर पारिवो ॥ फूली फूल वारिन के फूल
मोर लैने बरे घने दरष तराकठो रतें उपारवौं ॥ नैने परै पाइ नते टेक बैटैरें ऊचे करों ऊचे वढ गए तें जरूर काट डारिवो ॥ राजा मा
त मालिन कौं दिन प्रति देवीदास चारि घरी रात रहे रन नौ विचारिवो ॥ ॥ रसे परहां पर राषे सांप पर मोर राषे वैल पर सिंह रा
षे ताकौ कहा भीत है ॥ रतन को मृत राषे मृत को विभूत राषे छायम सब को गजमब घर वढी रीत है ॥ काम पर वाम राषे विष पै अमृत
राषे आग पर पानी राषे सोई जगजीत है ॥ देवीदास देषो ज्ञानी संकर की सावधानी सब वात लायक पै राषी राजनीति है ॥ ॥
देषो तीन लोक मैं धकाय अंधकार पीठ दूर की नो रहो भान करको उदोत है ॥ कारुनी मगन देषो रवि के बहुर ही के पल मै बहुर जंग ज
धारउ तो न पोत है ॥ कबहू प्रकाश या आकास को दवाय लेत कबहू गगन गाजै तिमर कौ गोत है ॥ हारि मान तिमर तें वैठ रह्यो तिमरा री
वैर वार है न कवहू आस आवधान होत है ॥ ॥ मूढ नृप जौ अजा प्रजा गृह मारि षावो चाहे ताको एक बार ही तो नृपति नि दा
न है ॥ बुद्धिमान हू कौं अमान को विचारै चित अजा प्रजा वीच अंते कष्ट न पान है ॥ देवीदास कहे अप पाल त है पोष दे के अजा प्रजा विर
ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दैमन॰

रघेतें जानत सुजान है ॥ आमिष सोंदुख सों आच्छादि वें कें उन बारता तें दान न को पार बों अनाप जाइ मान है ॥ ॥ उत्तल सहूप
त्रिकन सं दरचं चिल हो इन ही फुन भवर ॥ बोझिल डोर भले पल कों सब ही की सदै टै सं भचर ॥ आयव रैन भती न बुरी सो ई तै दै
चढाय सवै सिरहूर ॥ एक कविजन कहै देवी दास विचार दूब मन ध्यान उहूपर ॥ ॥ भले बुरे मान सकौं पर्ट तर्टे देवी दास देर जी
की सुर्ई कहै के लिये देत है ॥ बार आपकौं घिलाइ वंड वंडहै मिला पमार बायपर तुनाम रस कों तह्ले ॥ त्रवल नो संचनों फुलिफा	तिक॰
लिहूहि कटैं जरतें कटाध गिरयो पानी मैं अचेत है ॥ आपकौं सतापडुनि सौं को सदाय निज चाय उपच टायपर वंधान
सेवा रहे तहै ॥ ॥ पायौ वन्यौ मरू वन्यौ मंघवनी लाघव वन्यो है समवाघ समतूलकौ ॥ रूपो वंग्यो सांग वन्यौ ला	कुंघणिवनी॰
कवन्यौं क्रमुमटी समरू हसिं हती के मूलकौ ॥ गंजवे की वेर मौन गिरि दैवयो देवी दास वेसो ही सु भाव कुफंद फाल फूल	वर्जवस्यो॰
फूलकौ ॥ कुंजर के कुंभ हूविदा वे की वेर कैसे तूल करपै निवहै स्वांग सर्दि हूलकौ ॥ ॥ उपज्यो अलाउ मैल दूल हानो सावन मैं भो
दो मैं वुरंग घाई पता की भरभरी ॥ फ्राट कैं गात मैं फूल फाल मल भयो वरसो चलाई दूस गाई की बदाबरी ॥ बर कौ हू चार है तितहा ते	कना॰
मोथे मया करी अघ हन आसदै हैं जैसी है पतपरी ॥ देवी दास देव उ ठे दंत काढ रयो कहू भोउ भ घोपिं डा करवरसौं वलवरी ॥
॥ विनक है सबज्ञा नैं हाजन कों सिर आनैं हानि वकी पीर आनै मन आई पत है ॥ बुवल सत्रीन आनें घोरे हूर है अथा
नैं घनौ कानें फान देत ते ई गाय त है ॥ निडर मे उरत बेडर मे निडर है लाज सों उपटै है छव घाय पत है ॥ घरी घरी अर
~~जी~~ ~~वनक~~ ~~अंकरे~~ ~~वे~~ ~~जो~~ ~~न~~ ~~जानवेते~~ ~~मौते~~ हरे पुन्यपापत है ॥ ॥ गितकारीहे के बहै दास निज साहब सों गितकीन
~~कोइजरजीनकरेचाकरतोजेसे~~

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहै तो हित रूप नेम षामी है ॥ वेहे सभासद की लघुबुद्धि न के हृदय की जौं लैं नै न लीं देवीदास जो तौ सठ स्वामी है ॥ मंत्री होय हित को कहै या अ
नराजा होय मार कै गहै याते तो राजा बदनामी है ॥ नात कन्त पत देखि पति कौं गामी मंत्री वहनि हचै नरक कौ गामी है ॥ ॥ लोक कौ
घूं विधाता लिख्यो कर्म लिलाट पर ताही पर आपनो अमल आयकर लै ॥ होने के ह मेरे भावै प्रार बारि माह जाय घटै बढै नाहि
ह हनि हचे मैं घर लै ॥ देवीदास कहै जो ई होनी हार होहै सोई मन मै हते बैरे न दिन आनंद भरि लै ॥ वापी सर सरिता भरे है सात सागर पै त
तौ तेरे ताल सब समान पानी भर लै ॥ ॥ रारो ज्यों गुन पाइ चातुरी तिपुन पाइ की जीरान मैं लो सन काहू जो कछू करी ॥ बीर न बिद
ने घर गए को सवाद पल्ही मान अप काहू करी किन्तु करी ॥ और कवि शबद तो जात है सभा वे मध्य तो कौं तो ह टोक देवीदास पल
हू करी ॥ हूक करी सभा मैं वै ठी हु रे ठाढे गज रान ल करी स्तुति करी औ हूक करी ह हूक करी ॥ ॥ केते दिन चातक को जात वे बिछा
त भए गात भये सिथल त्रिषा सौं जोर तसैं ॥ तरफै तिलविलाय निबलै बिलबलाय ऐसे लघु लछ बाली बारद को दरसै ॥ देवीदा
स कही हौं पनि दई निरदई काहू पधिक तो हूपि ते रे पाब न रसै ॥ जाचक मैं आसन की जितनी जोरै है गिरउ तनीय वेद जो वारिद
न बरसै ॥ ॥ करतार मारे जग आय कै जनम हारै कौन परै है धिक उन के समाज कौं ॥ पीर पर पूरण स्वार्थ परायन है पेट ही
के चेरे जे तु वामै लीजन कौं ॥ ऐसो कोऊ बिरलो बिरंच नै बनायो है ज्यौ पवे टहूं मरा ये का जै लैत नीर नाज कौं ॥ आपने उदर का
जैसी वै बसु जग जो ईयां नै पीव तप यो दपर काज कौं ॥ ॥ लोभ सो न रोग न विसु न ता सौं पातिक न सोच सो न तप न ही इ
गी सो दह नो ॥ सवि सौं न तीरथ सजा न ता सो सेवग काहू सो न रोग तीन लोक मांऊ रहनो ॥ धरम सो मीत न दुसीत जीव घात सौं
काम सो प्रबल ना ह तव सौं लहनो ॥ बिता सो न साल देवीदास चार ओ लोग मांऊ संतोष सो सुख न ही की रत सो न गहनो ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२८ 38

कुंडलीया॥साईंरावनैविरुद्धीरामउरूंपडतकवियार॥वेरावनितापोरीयाजगकरावनहार॥जपवहावनहाररावजमत्रीजोहोई
सचिवपरोसीतीवेदस्रापकोतपैरसोई॥कहगिरधरकविरायचतुरकीयहचतुराई॥रनतेतरहिसोतहियेवनस्रा
वेसाई॥ साईंहिरनिरेवेटामैघकेचनकोभयोअकाज॥हरनाकसम्मरकंसकोगयोउहनकोराज॥गयोदुहनैराजवापवेपादे को
विगरै॥दुसमनदावादारहसेमहिमंडलसगरै॥कहगिरधरकविरायउनैकछूनवताई॥पिताएत्रकीहान
नफाकैसेहैसाई॥ ॥रहीनरानीकेकरईअमररहीयहवात॥काहूहरवपापतेवनैउराजगतात॥वनपछ्वेजगतात १५
केतजबहरगसिघारे॥विनलसहकेकाजकैयनहावदननिहारे॥कहगिरधरकविरायरहीमरअजसकहा
नी॥अपकीरितरहगईकेकईरहीनरानी॥ ॥फुट्योबुरोजुहोतहैजानतसकलजहान॥मंदोदिरईज
तगईरावनकेगराभान॥रावनकेगराभानभेदजेविभीषनदीनो॥समकुटंवपरवारनासअपनेकोकीनो॥कहगि
रधरकविरायलंकगढकैसेटूट्यो॥लग्योसत्रुकोदावबंधुजवघरकोफूट्यो॥ ॥साईंघोरनकेमरेगयह
नआयोराज॥कौवालीजतहाथमैछोडदीजयबाज॥छोडदीजियबाजराजऐसीआये॥सिंहकीजीयतवेदस्रा
गजराजघुडारा॥कहगिरधरकविरायजहाराकरवडाई॥तहांनकीजेभौरसांउउठचलीयेसाई॥ ॥
भ्रो॥ साईंजिहूंनरोकियेयेवडहुतनकेपा॥कहामपोजोवलेआयसिंहकोस्पार॥आयसिहघकेस्पारयार
वडहुतनकेहोई॥कीजेकाजअनंततजहांचलीयेअपगोई॥कहगिरधरकविरायवातयहलीजै
पाई॥वाकीपज्ञअनेकअपनमेवडहुतकमोई॥ ॥साईंएकत्रालापरीआसमानते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आइ॥ अंध अंध गन खाउ के पुरजन नगर बराय॥ पुरजन नगर बराय अंध मिलमतो मतायो॥ पंग कंध धर लीयो दृष्ट वांकी पग धायो॥ क
हि गिरधर कविराय राव बूढ़े चले गुसांई॥ मंत्र सहित वच गरा वडे दुसमन ते सांई॥ ॥सांई ताकै गिरधरयो गिरधर गिरधर होय॥ हनूमा
न है गिरधरे गिरधरे गिरधर कहे न कोइ॥ गिरधर कहे न कोय हनूमान द्रोणा गिर ल्यायो॥ ताको किनका गिरयो सो ईश कंध उठायो॥ कहि
गिरधर कविराय बड़िन की बड़ी बड़ाई॥ थोरे ही जस होत जन ती पुरषन को सांई॥ ॥सांई सो हन मानिये बेल सत्रु सों सार॥ अपनो दु
मत जानके तरत डारी मोदु॥ तरत डारी रामार नरदल कचीक डुलै॥ कचीम ईस भई जीत जगमें जस लीजे॥ कहि गिरधर कविराय बदायों
ही वन आई॥ सो सौं ... य सार दुसमन को सांई॥ ॥प्रीत परेवा की भली चितदे चढ़े आकास॥ गिरदवे ते उरपै न ही चित परै पास॥
चितपरेई पास मित्रता ऐसी कीजे॥ दिन दिन वाधै प्रीति लषीत न आपनो दीजे॥ कहि गिर प्रीत को इह है भेवा॥ देषौ परगट
प्रीत रुग को चल्त परेवा॥ ॥सांई या संसार में मतलब को व्यौहार॥ जब लग पैसा गांठ मै तब लग ताको यार॥ त
ब लग ताको यार संग लाग्यो ही डोलै॥ जब नही पैसा गांठ यार मुष सो नही बोलै॥ कहि गिर सब स्वार्थ के लेष॥
बिना स्वार्थ के सार यार कोई बिरले देषे॥ ॥भोंरा दिन कठन है सहु आपने सरीर॥ जब लग फूले केत
की तब लग विलम करील॥ तब लग विलम करी रहु अब ए को नही कीजै॥ जैसी वहै बयार पीठ तब तैसी
दीजे॥ कहि गि॰ सुन ऊ मन मूरख बौरा॥ परै दुष अरु सुष सहु आपने सिर भौरा॥ ॥आयो चातक दू
र ते घन छाया को देष॥ मन मै जानी सजल ता कादर स्याम विशेष॥ कादर स्याम विशेष बहुत ऐसो धायो॥
आपनी रचौं पवौंन का केच रआयो॥ कहि गिरधर पाकोय फल आयो॥ या जतको यह रूप यो सोई जस आछिर आ पौं

३९
39

बगुला उपदंत वाम कौवा नर हृदो सिर नाय॥ कहुँ हैं दीनी पगन दै बोटै अरु फहराय॥ बोटैं अरु फहराय कर पो जो मनभा
वै॥ विपत माह वस भयो चनी रिन कौन छुड़ावै॥ कहि गिरधर कविराय सत्नु पंछी निगुला॥ हमें पत टयो आ
यबा ज को उपदंत बगुला॥ मुकुँ आनि तप्रति दाबसो करत मित तै आय॥ हम तम मसखरा कसे हम तम है रसराय॥
हम तुम है रसराय विलग जिन जा को मानो॥ मधु रस स्वाद तुम आधिक कपूर मति जियमै जानो॥ कहि गिरधर
कविराय कहै साहिब सों हुया॥ तुम कत नी वी वेलवत हम ऊचे मडुया॥ ॥करना को सो फूल है या जग को
व्योहार॥ कर अंजली के नीर लौ निघरत लगै न वार॥ निघटत लगै न वार सकल संपति है यो ही॥ गढ मट
कोट हत आन मिल हैं सब मांही॥ कहि गिरधर परै सिर ऊपर मरना॥ काहू करन मतक करै आज करते
सो करना॥ ॥दास्यो कैं चौबे सु आगयो नागर परबान॥ चौबाई पाई सु वै जात बलाग्यो पछता
न॥ तब लाग्यो पछतान कहुँ अपनी को रोयो॥ निगुँ लै पनि के संग वै उगुन अपनो खोयो॥ कहि गिरध
र वै जैसे कहि रोबै॥ चौबि दुद्दै गई रहवा दा होके धोबै॥ ॥जाकी धन धरती लई ताइन लीजै
संग॥ जो समता बेहीन है करता खिये अपंग॥ करि ता बीये अपंग पेट भर क बूनदीजै॥ कपट रूप पहचा
नति भलि परतीत न कीजै॥ कहि गिरधर कविराय बुद्धि ने है नहि ताकी॥ कोट दलाशा करो लई धन धर ती ताकी

चुक्केलपकहस्यारखानवरछीअरु गिल्ला॥चुक्केमजलसदारखदयोवडितअरुमल्ला॥कहिगीरकविरा ५२

यकलारहूकीचुक्केसौसौजतीबायचुगलविरचोदनचुक्के॥ ॥लैपरोसनिकोपरानितउठकरती

रार॥नितउठकरतीरारजारहूभावैताहदीजै॥रहघरआगजद्वारकुमीआवैसोकीजै॥नकटीनिलजसुभाउ

दोऊवातनडबदाई॥रीझैफोरैनैनषिजैअपमानकराई॥अगरकहैनवडौडलीहरिकेद्वारउतारा॥लैउप

ति रोसिकौंपरानितउठकरतीरार॥ ॥घरकीदाधीवनगईवनहूलागीआग॥वनमैलागीआगआग

३ अतरनवुकावै॥मनजीतैंनाहकहूसितलतापावै॥ताकोमलवलसायजरऔरजरावै॥

अगरसहरजनहूवरैंतरनसरनडरैभागि॥घरकीदाधीवनगईवनहूलागीआग॥ ॥चोरहूकुतीया

मिलगईपहराकोकरदेह॥पहराकोकरदेहजीव जामिस्याअविद्या॥कामक्रोधमदलोभलगेलाट

नपरविद्या॥इतोवलकोक्रोसकमतिनीचनसंगकीनो॥लोलपरद्रैनस्वदतमदनसनोकरषीनो॥अ

गरकहैसनसोनगतिनरहरिहठकरलेह॥चोरहकुतीमिलगईपहराकोकरदेह॥ ॥मागरमैल

गउनआगरउआगरअपारजलमैपकवहनउम्मतहै॥तातेकछुजलघरभरवरसावैगरजतरजाद

मकैकै मचलत है॥ भवक्रोरहावैवडह्नपरूपदरसावैवज्रपातघातकरेयातेहियराहलतहै॥ सौंही
उलैमानसतसंचनपाइकैगुविंदगरवाइतैंरायकैचलतहै॥ ॥सज्जननाहकरैत्रसकारकरैतौगुविंद
महासुषदानी॥ नीचकरैअतआदरकौजियपष्प यहै दुषहीकीनिसानी॥ ठोकरदेरतु रंगललाइमैंत
इपीकीरतिकीनिसानी॥ जौषरकौउपैलेरचदारतउजगमैउपहासकहानी॥ ॥रेसठनसौंघुगुविंद
कहैंतूवडोजगमैकिंहभांतकहावै॥ तोहितआपवडोहितवापुरोप्यासनप्रानतजैदुषपावै॥ रत्नअनेक
भरेपरदैकरिदीननकोनाहदरिद्रमिटावै॥ राजेपैमूढमहागरजैसकहाकहिरातोहलाजनआवे॥ ॥
वागिरवारभरयोगरजैकहाघोउदैवारभरैअभिमानी॥ कैतकधौंसकौंसोपपीहरापीवहपीपीवरटैलठ प्या
दानी॥ अैसोसमैनमिलैकवहूसनलैवाविगोविंदकीयोकहानी॥ पौनप्रचंडचलैघिनमैतौंकहांलंकहाय
पिहाकहांपानी॥ ॥लोगमसांपेगलोगलीघाघरहीघरसौंउरकारदैवाई॥ मातदवायजनाजनकेहि
हाभीषडूंगोविंदपैमननाई॥ वाटहूघाटमैचोहटमैंजचवाकीदुंदुभीतैवजवाई॥ अैसीकरीगतिपाजगमैह
हेतिसवातौहैलाजनआई॥ ॥भागजेमतीजेचेलाचेलीसौंसगावैतागजोरकोविवेकभांतभांतिक
वाद रसमझायोहै॥ वहनोमतीजीभानजीकोनमामौमैकटनीरीठरानदेतनकुघातहै॥ ईसरकेहेतनकवी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरकोदेतकचरकचनीकेकाजैकाटकरजमगायोहै॥कीजियेसहायजूकृपालश्रीगुविंदलालकठिनकराल
कलकालचलआयोहै॥ ॥सहजमिलनसहजविछुरसहजसकलव्योहार॥सहजरवैसोईववैव्यापचैसे
सार॥ ॥सबसंदेसकोराजलैभयेअमरअनीत॥कृपाकृपानिधकीसदाछत्रहमारेसीस॥ ॥चढ
हूनचलवेकेदलहूनदलवेकेपैंउहूनमलवेकेनरकीनलाजके॥दारदनटरवेकेगरजनकरवेकेअरजनकर
वेकेघनसीनगाजके॥दानकेनमानकेनसाहसनमानवेनअपमजानसनदेषवेकेसाजके॥गुनकेनगा
थीहूबीरहैसेकेनसाथीहूजेचिकेसेहाथीकाहूकामकेनकाजके॥ ॥राबकोनदरसनपरसनकेलकोनसर
सनआवजहांचितरंजहाकरै॥श्रीपतआमारकोनैकनपसारनहैछूकारहजारनकोपारनालहाकरै॥हेरर
फेररहैरतबहेरनपेछुघातेविकलभयोघरजैवैकोकरै॥तरकैयकूरनकोबोलओघतूरनकोठलैवअंर
नकोकोकलकहाकरै॥ ॥वउनसोंजानपहचानतोरहीनाहू॥ ॥राकदैसराकरूपराकसीभवंत
अवगुनकीकथानकेमतानगहनेपरे॥पछोरकाहेपटसंपतकीएहेतवकचपनहीकेबोलजसहरेपरे॥
ऊचेनेकरतकेरलोभकेकलपतरुताहूकीसभाहैमच्याचुपरहनेपरे॥कहेकविराजदेओलछमीतिहारे
कोतवडेरचतीचतरकारलेपरे॥ ॥सेवरासरुगोनजोनतोईसरसरीकहातरसभईओरनदीनारसी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोतनके हार देखे भील नीकि धा॥ सिंगार वहा मोती वा तमर अोरकै तआरसी॥ कानके विहीन जो ताकरनी वेदीम
कवव कहा तान ग्रान भरै जग मैं असार सी॥ कविके कवित रतन अपनन री कुपो कहा ओघरेन दे षी तो मै घरी भरै आ
रसी॥ ॥ बुरा नित पंच बुरा जंगलका वासा॥ बुरा कुमति का संग बुरा मस्षरका हासा॥ बुरा अर्थ विनं वाद
बुरा भला बन जाते॥ बुरा लछ विन पुरुष बुरा सो आपव षाने॥ बुरा जो लछमा हीन नर बुरा जुरस मैं भाग रा
कवव कहे गदर रैगन जन नो समत्ते बुरा कुमांग रा॥ ॥ वचन छलै सो वलराय वचन कौरव दल षोये॥ व
चन का जदुगिर चंदनी व चरनी रज टोये॥ वचन काज जगदेव सीसकं काली अप्पो॥ वचन काज श्री राम
लेक विभीषन थप्पो॥ सो वचन वैताल कह जी भ करम्रह के हीरा॥ जरजात लछ विक्रम सनो सकल के
वचनपल हीरा॥ ॥ सो विरले संसार ने हु निरधन सौं पाले॥ सो विरले संसार त्रिया वाछ तन त्र से भा
लै॥ सो विरले संसार जगत सो वोले मिठा॥ सो विरले संसार देष कें करे अदिठा॥ तभाजु मांडें रन च ठें वंच चलेप
रनार॥ कवव कहे गदरैग एन जनो सो विरले संसार॥ ॥ वैरी वहु आवा निज्ञां ज्वारी चोर लवार॥ विभ चारी रोगी ५६
सी नगर नार को यार॥ नगर नारि को यार महल पर तीत न कीजे॥ सो सो सौंह चितरा को न ह्री दीजे॥ कहि गिरध
रकव राय वरै आवे अनुहेरी॥ इतकी कहे व नाय जाति भे हरी वैरी॥ ॥ विन विचारे जो करै सो पाछे पछि ताय॥

तनवर्णन॥दाताघरजातीतौकदरहून पातीनैकम्राईभलीमईतरवदाईवाटवावरी॥पानेदरषानेतहषानेवीचवा २
सदेहौहैहैनाउदासमेरेराहोचितचाउरी॥षहौनाश्ववेहोमरजेहोतोसिषायनेहोप्रतअरजातिनकोआपनोसुभाउरी॥
घाउसतवंधपुनदमडीनदेहौकादूसौमसमकहेसंपतसौवेठीगातगावरी॥ ॥मायाकेमसानतिसानअपकीरतकेजा
नतजिनकहेकहेउसरनहौ॥कुजसीकुराहीअंगमैचीगुमराईगुरुसीदेषमानघातपरोपापभ्रकुरबसौ॥दूरनकेव
कहेवचनअमोनकेजातकुरवातिनवस्यातमलरनसौ॥मांगतरनामकरतारपैपुकाकहूपरोजिनकामऐसेतसमस
तरवहौ॥ ॥आपकहादेहैजोवदेतयैनदेषसकेअमषधैषेतेमहापापकेनिकेतहै॥ तनवचित सवचेरन
केसवनलोभहीकेमित्रअघवित्रताकेषेतहे॥वीरधीरवतसंतऐसेनसौंहूरहैंस्यागहनमानसमहीदगादेतहै॥
चूकेमतचूकेऐसेकलिकेनरनकेजोगतकेदूकामेतेदूकावांटलेतहैं॥ ॥जानेकहावहूरोरसरागकोपीनसव
रोसगंधनजानै॥जानेनअघरोरूपकरूपकोभोजनस्वादकरीकहाजानै॥जानैसवैविचप्यारोसजानपेंमर
षमित्रनचातरैजानै॥जानैकहागिरजरारतिकौरसअवरकोरसकावरजानै॥ ॥मानदतलाषदीअदे
होहरिनाथकेदारनावहस्तिनाथदेकलेककविंतेहै कोअवीरवलदेषकोटकेतोकविनपरसेवाहाथीवामन
देमतनजायेहैदे॥थवंतईसनलाषमाना बनादीनेतारैदनहूनोदानरेमुरमैअैहैसे॥श्रीगभीरसिंह
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

४२ 42

राजा चंद्रष्वेचर कै बेर गायें हुई है वदामें दर्शन काहू दे हैं बो॥ ॥संवति पचायवे को राग रंग अनकोर विपतपचा

यवे को ज्ञान निधि अरु है॥ जय के पचायवे को बड़ै दल साथ रहै है पाप के पचायवे को वा सरत सार है॥ हेमरस चूरन के

पचायवे को गु ठना रु अन्न के पचायवे को औषद अपार है॥ बीज के पचायवे को साथ जोर सो भो होत री

ठ के पचायवे को बाबा काठ कारे है॥ ॥पचे न ही भांत दार मूंग हू की पचै ना हू पचे न ही मीसी रोटी पेट

अहूटात है॥ लवा के पखे बहू सौं फूल आवै वृक्ष लक में फुल कप को टीप चैना हू पहूंमात है॥ कचौ हू के चाटे

दो दिन चढी है नदी समान षेम कावक कहे बीं लउ दर समात है॥ ऐसी में दमूष माहदे हराव को राक भंड की रु

आसौं भारी रीझ पच जात है॥ ॥हूनो नाज तोल कै पिसा मै पीस ऊठती पै मीत सौं बनाय आप भुं नाजा

र लेत है॥ तिनकी पकाई रोटी छोटी माटी बांट कै पोरो बाय ता पर बहुत पानी पैत है॥ सो मनाथ मिश्र के

आये पै हवाल कहै पंचन के बीच कारे होत महूसेत है॥ लोभ को निकेत भाजजात पाउ बेत कहो ऐसे सूम मैं

ठ कहा कविन को देत है॥ ॥चूनो चना व विचारत डोठ चूराय धरै चपरी तो लतो रन॥ रूषन के फुलका

चोल चूसत देषत मत परोत की डोरन॥ औसेन सौ मिलै सोमनाथ जे जोर मरै व डूला फकरोरन पोरन डो

र को बाहर वतै कुल बोरन सूमते मा बीमा बीनि चोरन॥ ॥राजा महाराजा बादिसाहन वजीरन के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्यारे सों अनाथ दिन दिन भाई यत है ॥ सांचे हे बसै पद ओं रूग लपठान राता काय [illegible]थ कलपतरु सम गायत है ॥
१ ॥ देस परदेस मैं जलाब न करो रन की पालकी गये द पत माह पाढ्यत है ॥ रूम को सब कवि पंडत देवे वर
आपनी जरूर नीय जरूर गायत है ॥ ॥३ ऊरे म हल ना ह पाल की ब्रह्ल ना हू च हल प हल ना ह होम २
की रहन सी ॥ माते गजराज ना ह मांगने हू ला ज ना ह कविन को समाज ना ह दीसे अरव न सी ॥ देस ना ह बाप
ना ह जोरत अधाय ना ह देवीदास कहै वह वस है वव न सी ॥ घने दुबजो रीघ ने दुबसो राबत है पर जो पैसे
पदा तो विपदा कव न सी ॥ ॥ रूम कहे घन तै घरा मै घररा जो ये लका म आवे जब हो विपत आप रूर १
है ॥ ४ ॥ रानी कहे काहे को विपत आवे धनिन को देवीदास हरन सपुरष हूरहै ॥ रूम कहे वह तरो
हरन पुरष जो कुपित हो संचन विहान तल गिहूर है ॥ रान कहे म.ढ परमे हर कुपित भये घरती मै माड्यो
ते स बात कहा हू रहै ॥ ॥ हनहू न मै जैमर ज्याद क घूर जीवत नागे मूरख अखानना है ना न गै तपर
पौर की ॥ दिबरे ग्राम का ढं का गुजवि चार व टैस्वास कजा है जैसे ल करी करीर की ॥ बाजै त ल वा [illegible] प
आवत म हीन [illegible] त क म सो है अवस ल [illegible] र ही [illegible] सरीर की ॥ कहै भग वत स मै करत अनीत
वात हान देत [illegible] जा जो [illegible] त वजीर की ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३३ 43

दानीकहै समझलनिज लघु देहनबारकहा मतिवायो ॥ तम कहै घमंडे उनबार लडाई के उरवायो ॥ लघु लघु
वतनैनग देनाथ रदानिकहो किनिस्वदवड्या ॥ देवी कहै धनदे तहै याही ते मोहतौ ताहि रेंदेको उदस यौ ॥
॥ वेदवी सठ सम धंम चलपिये घूमि वो कहै मरोर नागिरपीठ देन उठि जोर रहस के ॥ आज्योगउनजोर जाय
जोम लमन भामै बैठि वाके नानि वेसे वाक भी सवादही ववे ॥ हैरर सरूव मदु मरदु लोहनी तत तन लती
दुराक दा त तन ता नि वान तान कौं तके ॥ लेती मन सम केस हस को उ औरहै देव वी दास को गिरि ज
यस कैहल निद्रस के ॥ ॥ लोभ कौ लौन कलक कौ काठौ रगा केदे राम हला जलै आवे ॥ आउ
नके अमरा है अनेक विद्या द्वव हेर कुदारमिलावे ॥ हरि हरी जिकी पाप गुत तसो मना यलै वे दलि
दानव ता वे ॥ बायो कजी रत कौ त्रिफला अवचूतिया लम जो रीज उपचावे ॥ ॥ आगमे म्रप
नवास सवा सके पास सवे गउर लोग बुलावे ॥ आदर भाव कारे मुष सों लहनि आ घ्रा का वित्त न रंतलि
आवे ॥ तीर चरै रूप पाव रतेरे हसे तो मना थमलो हमउ जावे ॥ ता मोंग उनीं जन नपावे कहों उह चूतिया
लसजो गिरि उपचावे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ वीररस वर्णन ॥ कवित्त ॥ वीरैं बाय रहीं जातै सो हतरकत भरी नागी हैं न चीहैं संकत जम्भर भीरकी ॥ निरवारै कारणत्रि सारै पुनहा
रनको आपन भूलावैं नवसिव भरी नीरकी ॥ सेनापति वारनको राखैं सावधान घर आगेको चलावैं पाउ जानि पे सरीरकी
ताकस्पर तताहलाल करउगिरतदै पेलत समरफाग तेगरघुवीरकी ॥ ॥ ॥ दादीकै रवैयनकी गाढो सीरहत घातीवा
ढीमरजाद किंधोहद हिंदवानेकी ॥ मनितनिवाज दिल्लीपलैं दहलात मन सनघाक घन्न सालमरदानेकी ॥ मिटगई रैयतेम
नकी कसक घटगई ठसकतमामतुरकानेकी ॥ मोटी भई चंडी विन चोटी के दलन बाय खोटी भई संपति चकत्ताके घरानेकी ॥
॥ नवलनवाव षान षाना जूतिहारे उरभाजे देसपति धुनि सुन वे निसानकी ॥ गंगकहै याकी रानीसुकमार सोऊ
फिरै विललानी सुध भूली षानपानकी ॥ वन वन गिरगुहाहा पिनहिरनवाघ वानरते रघाम ई तिनहुके प्राणकी ॥ स
चीजानीगज नम्रगनु जानी काल निघजानी देवी जानी केहरक पिन जानी जानकी ॥ ॥ दोहा ॥ उनम्र षसै गंगा कसोउ
नका ढीजमधार ॥ जावा कहूननपाई यो जमघर हो गई पार ॥ ॥ हिंदुनकी हद सद राषीतै अमरसिंह राय की वडाई
कैव डाईजमघाकी ॥ आइकै सलावत षां जोरकी जनाई वात तो घरपिंजर करे जेंजायकर की ॥ दिल्लीपत साहकेचर ४
भए चलवे को ग[...]यो गज सिंहजू के [...]नो वात वर[...]ो ॥ कहै वनवारी पात साहके तषत मा उफरिक फरि[...]यल[...]धन
सोंअरकी ॥ [...]हकडही हूरनके हीरामै लग्गि जात यह सो [...]पत्यो सारीपातसा ही कअवाह मैं ॥ षान सलतानहू रातन
तिनका देत ओतन बरैरमौर मा[...]एकसास मै ॥ राजा गजसिंह तैसवाई कनी अमरेस राषीर जपूता[...]भ नाई के विलास मै ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षरीअकासमैतमासेआ तासमैनिकारीवीघ्रासमैकट रोअमरबातमै॥ ॥वोलतहीं केवोकदयोसदई
जमडाढषुलीउततारी॥सोरभयेआमघासकेपासहूनादोअदीनकीकोजअन्याअन्यारी॥कोगवैअमराराजतिंहमा
रचिरसतिचरा सीजारी॥चनानकेभोरेचवीगिरत्राअमराकिरिवेकिरचेकरडारी॥ ॥मतिरज वसां र
हासंगंघसनीसदजसरीरकीसवासविसरातीहै॥पलभगरेपलंघतैपाउंघरतीनभिपिरैवनवनपानीविललातीहै
मषनिभनितशिवराजतेरीघाकसनडारेहारिभारचंपचीनमनलातीहै॥परमनखवरेहरमवारसाहनकीनासपती
षातीसोवनासपातीषातीहै॥ ॥घौसाकीघुकारैमानूरागललकारैजोरजोघाकिलकारैभलैकालमेघ
वान॥लहूकीअलैलैलैतकालकागलैलैभजतभेरवचुरैलैलयनुघतररकान॥जहांषगबलवहेटूटैघउरलिरव
हैलागीषूनबलनकीषोपरीचवान॥तहांपघमतिपघलघलघनहपघतहांजगतेजसुकमारीकिरवान॥
॥ ॥घुकतघराघरसमुकतउतंगमघमकतमतंगनहकुकतअमान॥कटतसभटभरहरतनमुकग
रहरतअमरनसरटतअमान॥जहांरुचरवहरपरइमकरजघकरसमुदवहतवलभइसमान॥प्रवलमचेउ ॥ शिकिरदान ॥
वलीवाहसेवासिंहजीनेदपटदलनमुकमारीकिरपान॥ ॥तडतनडाकेतेगतेगनषडाकेहोतठा ५
लनसोंटालसागीनरररज्वान॥जहाहुमलमहुमसपरचान्योनपरतब्रहअपनोपरान॥जहांवाउसोचप
लचिनघादएकदारनकेवीरनकीरावनसोंफिररज्वान॥तहांजादवामचंडभजदंडनउमेडरिपुउंडमडकुंडनमें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जहांकायरथरानेउत्तमरलपटानेतहांवीररसमानेरषीलाजहिंदवान॥जहांपाषरेमरद्दपितेसमुंदेहुंरद्दलागे
तरनगरद्दऔरदैधांसाघहरानेहै॥जहांतीरगोलीभारषत्तदेषहरउरषत्तपरोफरफरकषतमुगलपठान॥॥
जहांषिचीकुलचंदहरकेसकफरजंदवीरभजभगवंतजोरकारीकिरवान॥ ॥कादीजवम्यानतेउसा
नगरासाहजूकेकेहरकोनृपकिधौंउठ्यौनरनाहजू॥मारेकैहजारीकेतेहिगेघचधारीसेनासगरीपैजराषी
हिंदकाहजू॥लहूकीलहरषीचरक्तकतच्छमसिंहराकएकघाउदीनोसगरीसिपाहजू॥दालकीपनाहना
हद्दालकीपनाहवाहलानपनाहलच्यौआलमपनाहजू॥ ॥कहरकीकटारीकोपवेकुमुषमारीभभ
भभकलोहूचलतउजागरो॥कटेकुंउमुंउकेतेमुंडकाटदीनेदेषभाग्योशाहदेषरशीतहूंतेआगरो॥रा
शीमारदीनीचाकजसिंदकाछमरसिंहकहतकविरायजसभयोहैउजागरो॥पावभरतोहैसोहिलाय
दीनीपातसाहीदौतीसमसेरतौछिडायलेतोआगरो॥ ॥वरषीछचसालकी॥भुजिभुजिकेस
कीहैसबनीभुजंगनीसीषेदषेदषातिजवदुअनदलनके॥वषतरपाषरनभिदिभिदिजातिमहामीतज्योंप्र
वाहपारहोतहैजलनके॥रयोरावचंपतकेछत्रिसालभूमिपालभषनवषानकरैनरोलौवलनके॥

४५ 45

ऐसेपरेपरछीनेपरेपरछी। मकीरतेरीवरछीनेवरछीनेंदेबलनवे। ॥रंदीपदहाडामैंलाजभरयौवर्दे

गाडाउगमेरूप भानपीछेपगकोधरे॥राकलाजआवनीतहूजेरावरतजूकीतीजेशाहजदांजूकीलाराखेत

मैलरे॥भनतकविंदगोपीनाथवजायोमारमारमारकरतवरंगनामसोरलै॥रावचलैराणावलेषानखुलता

नचलेचलेशाहजादापुनघनमालकौचलै॥ ॥चलैचंदवानकुतकवानघरतकमानजेमीआस

मानवाननसोछेरहयो॥चलेतरवारछुरीजमधरसांगलहूकीलहरवीचलालधामछैरहयो॥ऐसोवीर

जाहकेकमंदरायतरूनकचलेपाइवीररसछैरहयो॥हयचलेहाथीचलेहाथीचलेहाथीघोडहाथी

चलेरासीचलाचलीमैअचलहाडोछैरहयो॥ ॥मीरांजूकहोरसायसनहोजगतहिंहर्वर्वतमेघछ्योजा

इपर्वतउडाउगा॥वैठगापतालसेसनागमौडबारडारसागरमैजोंदजालमेलकेमगाउगा॥कहेकविरामहमदेशवा

वशाहकजेवडीमेवांधहीसशाहकोनमाउंगा॥षानखुलताननमेंपेजगहिषानजहातारागठकाढेतासमेंउलसेंलेंउगा

॥ ॥मीरमारमारकेमेषानमारूषेतवांधतेरेहीपठानमारूतौमेंनातीराणाको॥कावलीकेचारदसलाषकौ

जुआयोतौतोचारोसहजादाकौनआरावनवानाको॥कहेकवमार्ददासराजीजोसिपाहमेंजीआयकौनआयोवाद

शाहतरकानाको॥कभूकभूलशाकरमैहुयहोतीशाहजूकेजगतानआरमानेकाहूमरदानाको॥ ॥६

कहा सी॥ एक कटारी चढी उमराउ नैन एक कटारी कटि वाम छको॥ ठाढ़े दयो सिर को सिर ताज हू पंकउ
के जिमी सौं पर को॥ या के टका के दैवा के टईत वजू सैं लंक में हनुमान मर को॥ गिरधारी मन गज
सिंह के नैंदन भीर परई वादसाह हू सर को॥ ॥अमरसिंह अमराम यो जानै सकल जहान॥ सा
हजहां की गोद में हन्यो सलावत खान॥ ॥हूउठी उरमै तीये में ॥ ॥क्रोध मये जव राज
कुमार सु जलई हाथ न ना गनि कारी॥ युद्ध मिच्यौं दरवार के अंदर मार लीए तहां वारां हजारी
तब चंद मनैं उपमा वरनैं तव चूरण ईशिव सन्मुख कों तारी॥ लोहे की पीर सरीर सहै हैं गवार चोक
हिन मंडार उतारी॥ ॥हूत लोनी म्यान ते उसा हन गरशा हन के सर कतर कसमा उपरके
हरकी॥ हनन रंकारे जै से हनुमान उरत रद्दरपति मानो उरकी॥ मरकर मनमारत ओ वीर
न के तउ कतउ कत तहां वीजुरी सी तउ की॥ के हवन वारी सा हजहां के तखत मांऊ फर कपार
कलो पच्छो पन सो अरकी॥ ॥हिंदुन की॥ ॥दोहा॥ वादशाह ऐसे कहे कैसो कपरी
म्यान॥ तो हक समर छुवी रकी वस को मेरी जान॥ ॥घडी कंधार सार आनी गुजरात हूं ते ढं
के कार गर्ज सव सो सवारी॥ आरही नीजे वमै विहारी नाहर एक चरी कमर माहत सकौ कर जान हूं
तें प्यारी थी॥ क्रोध मये जव राज सुत सैं च के निकारि मानो मेघ डंवर मैं चपला चमकारी थी॥ वृ... सकतं

नत

दोहा॥ लालाकिसेनै जगायो महीहद पाराठौर॥ रजपूती रजपूतकी अमरसिंह राठौर॥
रजकोरजी लारजपूत अरोअमरसिंह गयो दरवार तनवुलवत हैं षो रीसी॥ षानकेस
लावत षानवादकीयो कुंवरसौं मुख बसे दकवात काढी षोरी मुकें षोरी सी॥ कटतक
टारी कुस्ततीनी दामीतवषाडचलेरवकर भवव मोरीसी॥ कहैं कवि सुजान चारच
कं नै चल्यो वषान औन आम षासवीचि कै स्यो फाग होरीसी॥ ॥ साहकोसला
मकरी मारयौ हैं सलावषान कौ अमरेसजो घुडायो ठोर ठोर नागरौ॥ केते उमरावपा
रे जिने नपरततहो बेलत सकारजैसें मृगनको नागरौ॥ मनेरजन गजसिंह के अम
रसिंह की रीत रजपूती तैं नवलनागरौ॥ पाउ भरसों देसौं हहलायउ अरी पातसाही होती स
मसेरतो ध्यिउ ललेतो आगरौ॥ ॥ वादसाहसौं अैसे के हकटारी म्यान॥ तो
हि कस मरदषु वीरकी ठस कोमेरी जान॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

खानखाना॥ कैतीकम्प्रहीरीपरीखायकैजुम्रहीरीवातजात नकहीरीनरहीरीगतमतकी॥गमदनदहीरी
दथागिरहदहीरीनदीजैननवहीनरहीरीजप्पतपकी॥ व्याकुलभईरीसभगोपीसोहनीरीमहावानमोहनीरी
जाहनीरीजोजगतकी॥ जातीजातचीरीघसमलनतमचीरीकोऊनाहनवचीरीतेजदुपतकी॥ ॥मैगाउ
फिरचोम्रमरावनकेगुनढूँढफिरचोसगरीसिरहदन॥ घोढेकोबीठसदांचढ्योमनहीसरह्योचढ्योनदूर
दून॥ खानखानांकेनरमयाकरसोपैमैमांग्योंनहीकोईऔरमरदून॥ मोजभलीमिलजायनकिदारदखा
रकिमारनादूहून॥ ॥कश्यपकेतरुनतरुनकोकरणकरणकोउदत्तउदत्तकोविचजाचरागचित्रभा
नाको॥ दशरथकेरामचंद्र~~केरुच~~स्यामाकेसिमरजैसेईसकेगनेसजैसेकमलसरमानाके॥ सिंघकेसरज
रूपपवनकहनूमानचंद्रकेबुधम्रनरुचपेचवानाके॥ जैसेखानखानाखनहैजुवैरमकोतैसोरहमानखा
सखूनखानखानाको॥ ॥जेरीवेरतेतमदमातेकोगयंदध्यायोएसेमरदानेवीरकहोकोसभारता॥
गरज्यौंगईदसिंचसावकऔरंगजेवरोसकरतातौकैकोसगहउारिता॥ तागतहीपारुविहरायगजा
गधाफेरउठतांतौतौदोरदसनेउपारता॥ जाप्यपरीवरचीवडाईवरचीकीफीनीवरचींनहातीतो
तमाचामारभारता॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जाता जात सों अधकरउ नेह नीगात यह कान॥ रघुबर बाध्यो बार धे है तामारयो भानो॥ ॥ ...
राकूब धें कै हर कै हरि नाथ॥ ३ नवधवन कूचो कियो उन बध कीनो हाथ॥ ॥ ...
नरद घन संग हसंग चहूं दिसं धारयो॥ काहू सहीप सों मारो मरयो नही तीर थ लै कर्ई वे दउ वारयो॥
केसव दास के भाल को अंक सो दूरि विधना नै निसंक सवारयो॥ दीन कौ दास न गीरह लिउ हैं सो बल
वीर के वीरा ही मारयो॥ ॥ बालता मै तह कुरबान को सैन समेत अभो॥ पो भाई॥ ज्यानी के रूप
में श्री ची जोत भनवर की कहू पार न पाई॥ वैस कुटेपे मै भबटी जवबंग बसंती समेती चवाई॥ बा
रामरे घन के दम्यु करा पै तहू कुकरा को उकारना आई॥ ॥ विनती राय मवीन की सुनी राज
न वरबान॥ झूठी पातर हैके कहू आ के स्थान॥ ॥ हे कत पसी लै तिहु लोकन की ही लै बरर
कहं दरी लै पंचवटी कुटी गहि॥ रावन ही पो॥ यह रावन ही यो असे मेरे मुख म्यान ते बपान सी जुगा
वही॥ कानीस न ज्ञान की नीतें रीहून कान कीनी कान कर यों कही॥ रारे कूत का गहतरा बनब
साकते रे हूर पन बाक यह हूरव न बाकही॥ ॥ हीयां मुख्यो हीय ते पी याते न आवे चित नै
न मुखो दरसन ते ज देषत लेजात है॥ अधर न मुख का न मुरी मा पे ते सलाम मुरी मुजा मुरी मोटते
ज अंग लव तात है॥ पान मुख बे उग तेज दौरत फिर त आगे सरसर सनामुरी गुरणाते यों की मोटी मीठी

मोटे विसनका
न कौनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जनमाष्टमी॥ प्रगटभयो है व्रजचंद नंद के घर जलसुधा की सेज सावी दिसा छवि छै रही॥ सज्जन चकोरन के परम विनोद भयो
मोद कहूं कोरमें पियूष जोति छै रही॥ वाही ओर सत रासवंस आनित अस देख कविन की मति मनि चंद्रकांत ह्वै रही॥ भादव
की आठैं अंधियारी आधी रात ही तें सुन्यो ही प्रत छती नैं लोकन मैं छै रही॥ ॥राधाष्टमी॥ गोकुल उजया
री लडुलारी लली कीरति की जाके जन्म समैया मोद नगिहानी है॥ राधा नाम मनी को घन आनंद अमी को सोत तरव
केउ चारे रसमनी होत बानी है॥ सबै जग मंगल निकेत भयो याही आपे महा प्रेम संपति विलास बकुरानी है॥ गोकु
ल प्रकास्यो व्रजचंद केउदोत आली आज देखो भांति भांति रावल रवानी है॥ ॥बाललीला॥ विजै दसमी की क
था कहै रसरासि मिश्र सनत जसोदा साम पलना में पायो यो है॥ कस्यो आज दुष्ट दसहीस ताके दसौं सीस छेदवे कारा
न कपि कटक पठायो है॥ काल्ह कस्यो लछमन्या वो चतुरभूमे रो कहा है निबगवै दहसरस दिव्य आयो है॥ चौक उठी मात उ
रग हूंस टपटात कैसी कही बात तात गरे सो लगायो है॥ ॥जाकी वानी च्यारि वेद भेदन लहत कोऊ जाहि व्रज
राज कहि कालवो वतावही॥ सूरत सुकवि जपतप ध्यान किये हूं तेमन मैंन आवे ताहि गोद लै षिलावही॥
चौदह भवन कहो जो बोषत है पिनमें पिन तामें कर आंगुरी लै माखन चटावही॥ जाही कच लाए चले थिरच
र जीव ताको ब्रज की अहीरी देखौ चलन सिखावही॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दीपमालिका॥ जगमगजोतिदिपैंपीपकघन्ननीकैचक्रवेतौ॥ महताव जातिससिकी छटा ई है॥ जगि व्रजराय भीतसोइ
तविवुधसमाते सौंपंमनरूपंरंभा नृत्यतहवाई है॥ नगरवगरवनवीथीपुरपौरिपौरि जहांतहां वदीपतिदिवारीछ
कछाई है॥ मनोरसरामयारंगीलेव्रजमंडलमेंइंद्रकी अकसअमरावती वसाई है॥ ॥गोवर्द्धन॥ गोवर्द्धनव
रुधरैंवा घठाटेनंदलाल चहूंओरवाल रुवसमैसरहै॥ राधेजू चितौन भरत अंक मोहन को मोहन चितौन अंगअं
गरसतहै॥ हरिहीतेउहनके स्वेदकेपरो महोतनागरनिहारनेंहदसाअरसतहै॥ उतइंद्रकोपकोपिवरसतहैंमेहअ
तिइत गिरधारीप्यारीरंगवरसतहै॥ ॥कोउ कहा कोउ तरोतो हिकहा परी हैरे औरन गही ज्यौं तुहूगहि
नरुराई है॥ गोपनकेटोटा हैनि वलमेरो ईसवलमेरेघरपै अनीतसवको सहाई है॥ मेरो ज्ञानवलवारेलाडि
लोनथांमे काई ऐसा जानि कमन माहि गरवाई है॥ सखीलवअकुलानी कहै ऐसे व्रजरानी गरगीरला
लातुतौ वडो ओटपाई है॥ ॥मेरेललाहुनितेरीवलायलौंतैं इतनो वलकौन पैपायो॥ चंपिककली
जसधाकरकोमलक्यौं गरवोगिरराज उठायो॥ गोधनधारी कह्योलुनमात तुमैंनउठावत तौ श्रम
पायो॥ तेरीसौं तेरीसौं तेरे हीपुन्यतैंनैकयुपौ उठि आपहिं आयो॥ ॥ . ॥ . ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोके

गवी॥वामकरहीसौंकुचमनताकेध्यानसोषेवामकरहीसौघुंटयौंत्रगावतगलहै॥वामकरहीसोकेसकेपरसनओरे
रिपुदलनीवेकोवामकरवलहै॥दारिद्रनेहीहाथगिरराजकौनचरयौनाथजानतहौदारिद्रभोहीपरसवोई
घरहै॥स्यामवामअंगमेंवृषभाननंदनीकौघरजाहीकेप्रतापतुहैवामकरवलहै॥ ॥वासुरीकवित॥
औसोवदनारविंदमरपोमकरंदतामेंअघरमधुरवानीदेवमेदच्यागिरैहै॥तहांवरमुरलीछरनअवलीन
हैवैवदतविकारयहकौनउपच्यागिरैहै॥एकोवजवद्भूतेतोमुरिरउघरनिपसीएकैमरीपरीतिहेरुघनस
भारहै॥व्यापैजडजंगमनिसेंकाहितमेरेजानपूतनापयोधरकेविषकीवयागिरैहै॥ ॥पिरकीलोंफिर
वोकरतरावरजवनएकरहौपांसुरीनमोरामएघ्यानहै॥एकअहीकाचुंकीलोदेषियतसखीसरराजो
हुज्वालाकहेहैयेंमयभीनेहै॥एकमिलिमईहेरुभाइकेभाइनसौंघोडमईजेलेरीउआपुनपेदीनेहै॥
फूलकेरुनेहैलरीयासिनमैंपंचवानकाहूकीवंसरीयोनेफूंकनकेकीनेहै॥ ॥वांसुरीफूकीगईहै
तयाहीतेफूवाकेमैनजगावत।ज्यौंवडेवांसतेघटीहै॥औरकछमातकछेदीगईहियछेदतघातेदयान
नहीआवत॥आपगईओरषेदनऔरेदईयहजाहरकेकहनावत॥जैसावडेवांसतेंघटीहै,त्यौंवडेवंस
तेऔरनहूकौंघुडावत॥ ॥एकौसुवघजुवनितागनसौंघोदेघातीजोघानिकेआगेहुइघाइश

= कि ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जिनहूं ते तरस सु अमृत पंच सर्न कों घाव भयेसि वरे समाध में सो जाउं है॥ सोऊ मन जी सों नैन बान दसों मेटनी
नतनहू के हीय वां सुरी सों पीर पाग है॥ अब कमनैं तौ सब ही घ काय कास रनै फूक नमें हें तोरी घर टन तीर ला
गे हैं॥ ॥ आगि जिन राग भरयो है यह वांसुरी मैं तर कीतानै सि षा सम गोप का त्यचत हैं। कोन मन वांधि लल दिये
दिये जैसे वा तीवरेंना गहि न उपाय कछु वारिहिं पचत हैं॥ वन के पवे रु ऊद आंषन कपष्मा करे कों कुलवीकुल वध
कैसे कै बचत हैं॥ जरि गई अगि तातीताने तकने ही का फूंकि फूंकि विरगहैं तऊ अंगुरीन चत हैं॥ ॥
पात की न पत्रावल फूलन मधूप मो है पालहू के काज काह करे नाजतन कों॥ दया निधि आप समे मि
लि उपजाय लाय वन वेलीनी जजंत जारत सतन कों॥ ऐसे गरा वे सतें जो जो भयौ सोई दुख दाई जग मैं ज
नम जा को पर के पतन कौं॥ घन भयो तौं दीन म्रगन के मारि वे कौं वासुरी भई तौ यह अवला हतन
कौं॥ ॥ मेरे निस वासर घर के री घव ही सों मान वे सी लुर तांन वाकी कानन रौं नाटरै॥ पीरी ती पिछौरी पेंव
रे गया गमा थे पर होव के पष्मौवन की चिं कांचि ते रहै॥ पासी राम स्याम हा व ज्ञा मध्य टकै री उर मटकै चला
य नट नागर सौं करै॥ जा सौं सँचो री सो तो मेरा तो नैन निवसत मेरे पालि घालि पेंघट हा है ली लाज कों करै॥ ॥

कु

भावसब्बपधामांक॥ ८॥ लैहरदार सिरपेचासजि वरस्फ़ै पेच मैडाराहैं॥ जुलफोंवीचवांधमुजदिल
कोनैंनवानहैंमाराहै॥ यारस्नगरहसारनकरदामाहवाउजरचलांदाहैं॥ कहरजनहैरंरासिईस्कदी
पटागलेविचपांदाहै॥ ॥आबरनेदमहरदावेलगायोदारखवालाहै॥ दिलदाचोरचोरमाव
एदाइसीसचवसेकालाहै॥ हरखडामुसकांदावेखनेउअक्यों नहीआंदाहै॥ कहरजहररासिईस्कदा
तसीविरहदरियावभौरविचमुआगरीवदावेडाहै॥ औरकिसीदाजोरनचलदासुजदसोसैनेडाहै॥
सच्चेयारसांमरेमहरबानकीदेरलगांदाहै॥ कहरजहररासि॥ ॥सावलेडेधजदाअरेतमुजा
रीदीवस्तीहै॥ तैंउनूरजहूरस्नजांनैकदिलोदीमस्तीहैं॥ वेखणदीवदनामीदेवरस्तकीरवडाजांदा
है॥ कहर०॥ ॥वाहवाहमनमोहनप्यारेघुपघुपदरसणदेंदेहैं॥ वेपवाहीजाहरकरकरस्
जराभीनहिलैंदेहै॥ प्यारेयाररुकदहसनैसेतीतैंउकोघरजांदाहै॥ कहर०॥ ॥रुवाअजवंजा
हगस्तो सौसीमैवसकरदाहैं॥ आठपहरदिलअंदरवसदाक्यातअसेतीपरदाहै॥ स्यायतमी
नोतजैनवेबातौकाघरनिजरनआदाहै॥ कहरजहररासिइस्कदापउगलेविच्चपांदाहै॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥रूपघटा क्यौं तुम्हैं देव हा आंनत क्यों तजी लाज समाजन कीं द्वा॥ मो म्हेली यो हसि हेर घवीले कही
अति प्यार पगी बतीयां जब॥ सोच विचार के साजट रे घनआनंद रीझ भीजि रह्यो तब॥ आस भरयो
गहि द्वार परयो सो जियपा घर आप कै जाय कहा अब॥ ॥भले ही रसीले अरसीले सुनहु जियन
गुन निति हा रौ उरझो है मन गाय गाय॥ कांनन सुने हैं तेसे आवन दूहूं देवे आपदी सत नहि औसव
गैं वर रहे है घाय घाय॥ ऐसे घन आनंद ही अभूं मै सो भरे है भारी बोये सदक्त जित जितित रुम्है पा
य पाय॥ एक बास बसे सदा बालम विसासी बैन भई को चिन्हारि कहहु मैं तुमैं हाय हाय॥ ॥
तीर ही यरयो हौं तन पीर तें भरयो हौं निज मूल नै टरयो हो परिवे के से टट जाय हौ॥ जौ लौं घट सासतौ
लौ यहै विसवास टरि ऐहौ रसरासि प्यारा मिल कै मिटाय हो॥ जीवन की जीवन रकाहे को कर
त दूर रयाव रो सुजस भरि दिनि सदि न गाय है॥ या तें हि पघा य मीन लिजिये रचाय दीन रावरौ कहा
य अव कौन को कहा कहे॥ ॥तेरी है आस उपासना तेरी है तेरो निसवास विसास तिहारो॥
रूप घन जीवन प्रान तू ही इन प्रान कौ रखवारो॥ तेरौ कहावत है रसरासि सु नैक तौ ओ पिउ घा
र निहारौ॥ कीच वीच परयौ तर यै अब कै सैजिये प्रा हमीन विचारो॥ ॥अघ ट घटाई

मरवेनिघटैननिघटमोघरत्नौंरावरीवडाहौनिवरटेहै॥तीकैकरदेवोनपरेवोउरमानौमानौं
जांनप्यारेदृसियेजरहाहावकैसहटेहै॥दानीसमानीदीनदारिददलनह्वैकेंअतिहीअचेजोवचा
ईनउटेहै॥सियगोपयेगोरसकौकुटुंबीचातकतौआनंदकेघनवौकहोपोकहायटेहै॥ ॥
सुरेपैंनपरेजेकटेहैतेगतीरनसौंतिलतिलह्वैकेंतनरनमेंदटेईहै॥वेउरसरक्तमहालेहीरिम
वारहोतप्रीतरसरीगभरेजोमसौतैंटेर्इहै॥पातिकटाछिनखागिनकेवारनसौंकटिकटिजा
तउनैकनहटेईहै॥कटेईकटेंटूकटूकह्वैहैटूकटूकनैकनकटेहैंतेतौनैकनकटेईकहे॥
विदा॥एरेलोभीमनहनदौरिदौरिजातहतौरूपकालभायौसमझायोदरदमैं॥देतहैनवे
नवसकीनैआपनैनपरयोअधिवववधिकयोनआननमैंनमनमैं॥अवपतपायोम
सकानमैंकसायोनौंहकसनिकसायोलैमिलायोरंगदरदमैं॥पारिकैकटाछिनसौ
वेधनीवेकोहनसौंहरकरिलोहनसौंडारयोनेहनदमैं॥ ॥ ॥ ॥

५२ 51

उत्साह॥ धामगिरेनवांवे उपरे है कुरवौं गिरेन लौं धाम धाम पवन के धूम घुनियत है॥ कलहरी अतरसां रखौ वारस घनसा
रदीपवका हजारन अंध्यारे हूं नियत है॥ मधुर मृदंग संग रंगन की तरंगन मैं अंग अंग गोपिन के उमगउनियत है॥ देवत
बहाजव जनराज महाराज आजटाधेनु सदन सिधारे हूं नियत है॥ ॥सरदारस॥ गोरधरवे मैं सखी सब सवस
गहे पै ब्रजराज त्यौं हामरे केवल हीकौ होरहे हैं॥ कहौं काहू हार सबरा क्रम कहा कियौ जु तुम तेलघाट मैं साक कहौ का कोजा
रहे॥ इतनी अधिक मधि नायक कियै है आवला गेन सौं पांमे सब आजु पथ वह और है॥ रावरी तो दाग है नौं उनहीं वां पौक
रञ्जठ्यो ताहू मांगरि कौ नैक छैयनी कौ घेरे रहे॥ ॥हम तो न मैया कोउ सखी विजायजानै रातै ली नेमहालंबस
रवनि निहारे रे॥ ब्रजवतरानि हू सिंगारि दैन मीठो लगै कैसें करि आंधे देववानी कौं उहारे रे॥ चित्र के से काढे कानवाढेर
रहे होन धव कह वह ब्रावन वीथिन विहारे रे॥ के सै कैक है यासंग बलन को सब गोवठौ वें कौन रहि हां ग्वारि हानकों
भारे रे॥ ॥मैया मैं या मधुर कहै याकी फ्रुन तेरी अमृत चहन कौ थै कानन सौं छेरे है॥ जौलौं चरे गया तो लों तुमछे
पासौ वैं सामकाहू गोदसी सकाहू गोद पाय छैरहे हैं॥ आप चढि कांधे कर औरन चढाय चले औ ढीनकरतव
वन छेल रस छै रहे हैं॥ ऐसी सखा मीत नाते घ्यां गैवाग्उपालकौ रैकौंन हंपावें कुठग्वाल द्वार पास छै रहे हैं॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीमद्रामचंद्रजूकेकवित॥सोहैंदेहपायकिधौंच्यारिहैंउपायकिधौंचतुरंगसेनपतिकेअंगनिरधारहै॥किधौंरा
घुरूपभूपच्यारिपुरषारथहैंकिधौंवेदच्यारिधरेमूरतिउदारहै॥नवगुनआगरउजागरसरूपधरेंसेनापतिकिं
धौंच्यारिसागरसंसारहै॥दीपतिविसालकिधौंच्यारिदिगपालकिधौंच्यारिमहाराजदसरथकेकुमारहै॥ ॥
॥सवैया॥अवधेसकेद्वारेसकारेगईसुतगोदकेभूपतिलैनिकसे॥अवलोकतसोचविमोचनकोठगदोउसेये
नटगैध्रिगसे॥तुलसीमनरंजनरंजतअंजननैनसुखंजनजातकसे॥सजनीससीमैंसमसीलउभैनवनीलस
रोरुहसेविकसे॥ ॥पदनूपरऔपहुचीकरकंजनमंजुवनीमनमालिग्हिये॥नवनीलकलेवरपीतझगा
झलकैपुलकैंन्रपगोदलिये॥अरविंदसोआननरूपमरंदअनंदितलोचनभ्रंगपिये॥मनमेनवस्योअसो
वालकतौतुलसीजगमेंफलकौनजिये॥ ॥पदकंजनमंजुवनीपनहींधनुहींसरपंकजपानलिये॥
लरिकासंगखेलतडोलतहैसरजूतटचौहटवारहिये॥तुलसीअसेवालकसौंनहीनेहतौकाजपजोगसमा
धिकिये॥नरकुबरस्तूरकरस्वानसमानकहोजगमेंफलमेंफलकौनजिये॥ ॥कवहूंससिमांगतआरि
करैकवहूंप्रतिविंवनिहारिडरै॥कवहूंकरतालवजावतनाचतमातसवैमनमोदभरै॥कवहूंसरोसभरैं
हठसौंजवलेतसोईजिग्हिलागअरैं॥अवधेसकेवालकच्यारिसदातुलसीमनमंदरमैंविहरैं॥ ॥:५:॥:॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥दंतनकीपंकतिकुंदकलीअधराधरपल्लवखोलनकी॥चपलाचमकैनिसवीचमनौमनमातिनमाल
अमोलनकी॥घुघरारीलटैलटकैंमुखऊपरकुंडललोलकपोलनकी॥नोछावरप्रानकरौतुलसीवलजा
उललाइनवोलनकी॥ ॥चूमलैंनपायोमैनचलतदिखायोंकाहूकदाकहोमेरीविधिलौंवसाईकौ॥काल
कालकाटीकाल्हिकोवलेउलैंनगईकहूकललकरेजेवीचकिलककहसाईकौ॥पायपरपायनहोमृनिसो
नमांगिलीहोंमैनजान्योमेरोदिनआयोअदसाईकौ॥कोठनेरीकासौकहौकेसैविनरामरहौंकसकौनदि
योहायकौसिकसाईकौ॥ ॥तारीछमपरसतिसिलादीयोलालनकीदशाकरठवटषिलौनांअैसेफ्टेहैं॥
तेसोईउपावस्नेरीनावकौनकीजैनाथपाजहैपिघोहीतहांभीजतनछूटेहैं॥हरिहरजनककीपोरहोपुकार
होजूरामसदोसनाहिइनविस्वामित्रलूटेहैं॥विनाइनवालकनटांडेलौंउतारौंवलिपांडेकहांपैउपरपांओ
रपैडेदूटेहैं॥ ॥तामसतेंमरेनेंनसुनतजनकवेनकोपमृगराजज्योंपिनाकपानकरगे॥रामचरितते
हतोरपोगरववक्रेहभरिचटकीपनचगोसादूटकेउतरगे॥तनकमनकजवजानकीकेकानपरी
ठाढीरहीलाखिपटनीलसोंउघरिगे॥चहुंओरचांदनीमुमारथयोंकेलरहीमानोदाहसुरतिपियाकर
उघरिगे॥ ॥जसअपजसजागकुलमैकलंकलागोभागेपराजनककोहोनउवच्याईहै॥

लगन

कीजै समान चाप वान सो विराजमान विक्रम निधान उवधा निमिय वामकौ ॥ परम कृपाल दिगपाल नरकेर षण्या
लयं भई हैं रिसाल जेंपताल देवधामके ॥ दीरघ उदार भुवभारके हरनहार कुंजर दनहार सेनापति मनकामके ॥
भ्राजत सरस छवि गाजत जगत पर राजत भवलभुज ईडे उरानारामके ॥ ॥ भाज्ञ महारानी कौं वुलाबो म
हाराज हू कौं लीजै मतके कई हमिना के जियकै ॥ रातनकौं विलसत सात रिषवीच यो तैं लीजै उपदेस सतानंद
पती के पायकै ॥ सेनापति विहवमे वषानैं भीम विस्वामित्र उतवोलप्रची पै मवोध करदीयकैं ॥ बोलिये
निसं कयह चनुअनसं करकौ कुवर मयंक यहकों कनदेसीयकै ॥ ॥ जनकनंदनी को वदनारविंद सेना
पति हैं दरसता परम वषानी वेद च्यारि कै ॥ वरनी न जाय जाकी नैकहूं निकाई लौन नृहोई कगैरपें कजनि संकवा
रैक्करलै ॥ ताकव रावरी करवे कौं सविरंचि नितरतप चविधकौं वमावत मैं घरी है ॥ फन्यौ कौ वनाइ फि
र जानत जैसो हो वन्यों कुहू वे कपट ताहू उरतविगारकै ॥ ॥ भूमतषपायके वुलाय वाल घरनि वेद वैच
रनचंद्र दिसवैठे घेरि घेरि ॥ छाडे सोक ठौता भरम्यान्यौं पानी गंगाजू कौ धोयपाय पियत पुनीत वारि फेरि फेरि
तुलसी सदा है ताको भाग सानुराम सरवर वैसन नहसि जय जय करि टेर टेर ॥ विवुध समेह सानी वानी सपानी
सन हससरा धोजानकी [illegible] लषन तन हेरि हेरि ॥ ॥ सीसजटा भ्रर वाहु विसाल है लोचन लाल तिरीछी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीमौंहै॥तुनसरासनवानधरैंतुलसीमनमारगमैंरुचिसोहै॥सादरवाहीवारसभायचितैतुमसौंहमरोमनमोहै॥वूझ
तग्रामवधूसियसौंसषासांवरेसेयहवावरेकोहैं॥ ॥द्वैकतपसीलैगिउलोकनकीसीलैचररावासुंदरीहैपंचव
टीपैकुटीगही॥रावननहींजोगयहरावनहिजोगहैरेमेरेमुषम्यानतेकृपानसीजुवावही॥रावरीनकानकरी
मेरहुविनकानकरीआनकरीवलवाकीआनविनजोरही॥झूल्योअकवाकरोरेरावनवराकतेरेसूरवरन
षाकयहसूरपनषाकही॥ ॥चलेकपिसकलपयानकरिप्यानप्यानवोलरघुरायवायसुतविदामांगतैं॥
कांषउठीकायअकुलायनउचारपोजायरोवनसेलोचनभयेहैंमनोजागेतैं॥सरनसहायनररूपपावैताबामरग
ओजनीकुमारकाहूविधरौंअभागेतैं॥सेरजाउसर्वजाउफिरसीताजाउठमजिनजाउहनुमानमेरेआगेतैं॥
॥ ॥नगरकुवेरकोसुमेरकीवरावरीविरंचिविधुकोविसातलंकनिरमानभौं॥ईसहिचढायसीसवीसवा
वाउवीरतहांरावनसौंरुजराजतेजकौनिधानभौं॥तुलसीतिलोककीसमृधसौंजसंपदासकेलिचाकि
राषीरासिजाहूरूरजहांनभौं॥तीसरेउपायसिंधपासवनवासतौंसमाजमहाराजजूकेएकदीनदानभौं॥
॥ ॥अवनीकोकाटिकारिंदतीनोपास्थिनिचष्ठलिकचलिकवलउचलतपानीरे॥गाजतदलदल
मरम्लरघुनाथजूकोकोटहीकीओटटेरिसीवतेरीभानीरे॥चरनसरनगहिकपिजोगिरिजायमिलि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देषविभीषनकौरनरावनसक्तिगहीकरसोबदरईहै॥आउतहीहनुमंतसवीचहीमषलेपेटकेडारदईहै॥हसरीवल
वत कीसगतिअमोघचलीहाहाकारभईहै॥राषोभलोसरनागतलषनफूलैकैफलसीओडिलईहै॥ ॥सवकेक
लपद्रुमकेवनेहैसवकेघरवानरकाजतहे॥सवकेघरसोभितदेवसभासवकेजयदुंदभिवाजतहै॥रिधिसिधिविशेषनकों
सवलोगसवैसठसंपतिसाजतहै॥कहिकेसवश्रीरघुनाथकेराजसवैसरजातसेराजतहै॥ ॥तीलोलोकती
नोकालतीनोतापहरिकैहैंभरदैहैभावजाकेगुनगनगाथको॥थांवनभतावदापदलेदुष्टदोषिनकेदानवदहन
कारिवानजाकेहाथको॥छत्रधारीरामकीदुहाईकलकालहूमैछाईरसरामहैनिवासतसोचेतायको॥औरनकराज
कीवडाईदिनचारिहीलौअविचलराजमहाराजारघुनाथको॥ ॥कीरतितिहारीहामकोतुकेकरतभारीगा
वतसकलकवअकहकहानीसी॥श्रीपतिसपारदकेतालतीरनादतीनारदकेमुखसुखसारदसयानीसी॥सारद
विसारदकेभालमैकलागनिघहीकलानिधिकमलामांगचांदनीसमानीसी॥चांदनीमैभवकेभवनतीविलोकग
तिभवकेभवनमांउभासततभवानीसी॥ ॥भूमिपालव्यालपालपालनाकपाललोकपालकारनकपालसवही
केजीकीयाहली॥कादरकोआदरसोकाहूकेनदेषियतसवकोसहातैहसआनसेवालाहली॥तुलसीसुभायकहैनाहीकछू
पछपातकौनैईसकहीयैकीसभालषासमहली॥रामहीकेद्वारयैवुलायमनमानीयतमोसेदीनदूवरेकपतकूरकाहली॥ ॥

॥शिवजीकेकवित्त॥रामचंद्रजूकेचंद्रचूडकीभक्तिसदाचंद्रचूडरामचंद्रआठोजाम॥रसौघरैगंगावेमसादीवीलपत्रचरै
रामकहेरामेस्वरईस्वरकहतराम॥आपसमेंऐसीरसरासहैभरातप्रीतिसेवककेत्यसबासोहैतनगौरस्याम॥राकअरूपकाई
मयतवरघुराईयहजोगौद्रुजगाहीमहामृत्युंजयजाकोनाम॥ ॥जोकेआगेंगएचतुराननअनेकचलकेफिरकगारेदेव
लिख्यारिख्यारिहाथके॥गंगाजूकीदैनकावरावरीवीतीतिंहिंइंद्रराशेमेदीमायवरदाईदसमाथके॥दृदेअरवावरेकोछ
वीलीकुवरदेतवावरेभयोहैवायसनगुनगाथके॥सवहीकोवेदाकहिवोलेवरअंवकाकोवावाकहेवोलतवदात्री
हमसाथके॥ ॥विषमाग्योनेगउवरैनीगेष्ठि॥ ॥वारवारवेलकौनिपटउचौंनादसनगुंजरतिवाघविर
जानीरसरेलामें॥भूधरमननत्ताकीवासयायरौंरसनकुताकुतवालरौंभुसानैवगमिलामें॥कंवरतमसबकोहूखबक
भुजंगताकौजगजूरवेकौंअवसोडठोहेलामें॥आपसहैपाटघदकहतपुकारदेषौटागरेमचीआजत्रिपुरारिकेतवे
लामें॥ ॥परद्रोहकेकेपरधानहरतततनघिनरकुटिलेघरितत्तापभरयोहैं॥संतनकीकदीनतुनतहमुलयो
हैसोकरनअघायोविषवोलउदगरयोहै॥जगतजनककहामेरोअवराधऐसोअधमअनाथतुमहीसे
वारिवस्योहो॥गरीवनवाजनविसारपैगवरदजैसैआलगेरेपरयौतेसैहमहूगरेपरयोहो॥ ॥शिवायनमः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गंगाजीके॥ सुरलोकसीतलकरतअवनीतलवैगईधरनीतलतटीहीतीनवारकी॥ गनेवोनगुननजावैनरनरतनआवै
मनिअटकतचतुराननसेभाटकी॥ होहतआधारहेमवंजनकेनिरधारगंगाजूकीधारनिधिमृषमाकेठाटकी॥ क
षझंघलीनीकछूलरवातसेनापतिध्यावेदारपापमनौंपुरबविराटकी॥ ॥पावनमवादहदेदेबदोबउबरादहोत
हियमेंउछाहहोतपातकनसतहे॥ न्हायकीयेंध्यानकियेंजाकोजलपालकीयेंउरधाअनेकदेवलोकमेंबसतहे॥
ससराहिमासेअतिअचमउधारिबेकोदेवधुनीधारतीनौंलोकमैंलसतहे॥ सदाशिवसंगातेहंगेसअरांधा
देखैगंगामुनराशिहंसहीसवैवसतहे॥ ॥पीयोपहचाहैतताहिदेहहोहदाहरकोमातातेरोनामसिरवादहीर
हतहे॥ यहजननीतेहितसदेगनालैततौताहअकलेकैहलीयेकरतहे॥ भागीरथीगंगगतहेपावनपुनीतकचसै
सीकरनीतजोदयाहिआदरतहे॥ हीरजआनकहूवापुरैषुवायोसीसवाकेकौतकपालमेंजआगप्रजरतिहे॥
॥राकहहावनमेंववकागिरेकेंसिंघउठ्योमृगघायकीनो॥ अपगयोपलमेंपजवंगजप्यासलगीतवढी
तच्चीनो॥ आवमेरिगरकाननतेमुखलोहूभरेपावपगंगकोपीनो॥ पीवतहीरगेरहकेरमगिरदुहूमिलि
वांटवचेवरलीनो॥ ॥यमुनाजीके॥ जोहिदिगजादजाकीजातिंपतिथाईरोमायेपरमोरकेपखौवातेघर
तहे॥ सांवरैहैअंगकैरगापनकेसंगवैरतनकोनिभंगवेधरिप्रसरतहे॥ ररराहिकवहूगवाचतनजीकलें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कैंकवहूनप्रायवेकोअंतवितरतहै॥कवहूंजंगकेसीमपैचढायराधेजमुनाकोजलदंबजालसौंकरतहै॥ ॥नैन
नीरदेषैदोऊनैनहोतनीरजसेपीरेवीरहोतनीरतीरआयेतें॥पायनपखारैंपायसुरसरीप्रगटायनाभिकौलहोतग
जनाभिधुवायेतें॥हाथचक्रगिरेहोतहाथचारिकप्रवाहपैठेवजंतीहोतकंठपैपरसायेतें॥गोकुलकोउराकसांवरी
सीनदीतौहूसांवरेहोतसवनैकहाकेहारातें॥ ॥वेठयोहोकलापीकूलआसीविषमलीनेकरदौनिरजी
वदेमहारवरजोरके॥काहूघलघरदवरपैपावनप्रवाहवीचदेषततमासेव्रजवासीदोऊओरकै॥जमुनाकवा
रिमाऊंपरतनताहिवारउनमेषकीनौहठिकासुन्दरकिसोरकै॥वेहघरीवेपलवेहेमगहेकै आलिलाग्योसिरघर
नपधोवावाहीमोरके॥ ॥जमकहैधाताकौंनरचढैजमलोककोऊरूठेअंधकारमेसेकैसेतोगिजियहै ॥ ता
पापनकोनकवेतेसवस्नानेहोततिनहूकोपुन्यलोकदीजियते॥अधमविकारीनरकूकरओसरकरसैंजिनि
हीकेअंगनेववारमिज्जियतहै॥स्वर्गकीजियतराकहरकीजियतराकहरकीजियराकहरकीजियतहै॥
॥विज्ञप्ति॥दीनदुषीउजहूवेरीदासदयाकेकैंदुषदोषहरोगे॥गाहगहेगजलौंवलिकालविहालकि
पौकरच्चक्रधरोगे॥जौपैकहावतहौंदसराशितौंनेदकुवारलुठारठरौगे॥आरतवंतपुकारतहैंवै
तौंसौचकरौनतौकौनवरौगे॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तर्की काविचार गमवलोकपायो पैनपायो विस्तरम कहूं राते पर अधिक जनार जेरियत है ॥ गुनदी प्रसिद्ध गुनगावत गुवाल
नके गुन हीकी रीझ गुनदीलो छेरियत है ॥ ज्ञानमनि दानमनि देवमन दयामनि चिंतामन चिंतातें नखौं नवेरियत है ॥
केवलानिवास दासपास राखत है कि आसपास वांधि आसपासते फेरियत है ॥ ॥ काहूकी सहाय करी वामनवरा
हहै कैकै कहूं नरसिंघरूप धरिकै सधारे काम ॥ भराम घाक घाक कहू कहूं हरहे समराम भये राम रूपमें कहूं राम औ परसराम ॥
सुतमरा पितामरा सेवक सुहृद भये करिस्येपे कहालौं रसनासिहो कृपाके धाम ॥ औरनके भागकी वडाई कौन कीयो करे रह
मारैहूं भागतैं भराहौं भभहालियाम ॥ ॥ साथी भयो हाथीके वचायो प्रहलाद तव धरा द्रोपदीके काज वेदनमैं भा
ष्यो है ॥ सब समरथ सबहीके करतार तातैं सचराचर व्यापी सेनापति अभिलाखे हैं ॥ दीनतें छुदीन केन कचरन करत
कामन मौन हरै है हौ कछ मानो भीत पाखे हैं ॥ धातें राजाराम जगदीसजीय जानियत मेरे कूरकरम मृहमालकी
लराखहे ॥ ॥ तुमकरतार जगरिछा ॥ ॥ जोकहू सुदामाके सदन कीने कंचन केह तौ गुरुभाईता
रिस कवन वखानिये ॥ जोकहूं विभीखनकौं भूपकीनौं मतिराम भेदी गढ लंककौं सकैसें मजान हैं ॥ करिये
कहालौं कहौ करी अनतकही भलीऔ तौ ठकुराई हम भाबीहैन मानहे ॥ जबहम जानिहे विहरि वडे जानि
औ विनापरहि छावानहे चगति है परेहचानिहे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सहाय॥ ग्राहके गहे तें अतिव्याकुल भये हैं प्रान जात ही रहे हैं आनिराव ही तुम्हा सकौ न हांसे नाथपति राजराम चिन
और कौंन धाय आय सो बडे सहाय होय दास कौ॥ गहे मैं गयंद गज उद्धरन पंकज वे कों जौ लौं कोउ कमल लय कि लेय पास
कौ॥ तौ लौं ताही बार चारन के आयो हाथ कमल को लेन हाथ कमलानिवास कौ॥ ॥ पंडवन की रानी गहे
रावरे तें आनी तेरो मन बिललानी बिलखानी महा चेत हे॥ घटत घटाए न घटत उघटत पट हूलास न वार बार ढे
कै कै लेत हैं॥ पांचन पकरत आंच पति कौन लागी पांच पति को बिपत जदुपति कीनो हेत हैं॥ जो पिन के चार रखा ठे
पटको रर ते ईमनो जोर रद्रोपदी को देत हैं॥ ॥ अंबर थंद वरको टेर लग्यौं अंबर लौं दीनसुता द्रुपद की व्याकु
ल पुकी है॥ मनन कविदत्ता पुकारी ही की जांई साथ आए जदुनाथ जो अनाथ हितकारी हैं॥ खैचे लेंगु सास
न उसास न उसास न तात न लेत हारि गो दुसासन दुसह दुराचारी है॥ आंगुरी तौं उघरी नो आंगुरी तो हाथ के
सै सारी देह द्रौपदी की सारी करि डारी है॥ ॥ हूल लिंग हियरा मैं कामै कामैन परी है सैरि मेटत मदा मैं सो
मैं वनें न आघात हीं॥ सिराम निरिषि न हूतें सिचन मैं सोर परयो कांह्वि कसे गो ढाढी को बैकालता तहीं॥
हर लोक नर लोकें नग लोक नाग लोक कांपि र उठे हरि री ठमुसकात हीं॥ हाले परयो हरिन मैं लालो
लोकपालन मैं चालो चहू चक्रन मैं चांवर चवात हीं॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ल

सिद्दा॥जो तुम अभिमानी मन चंद्रिका सौं रुचिर करि जात तुम अति चंचल मिलि कुंडल की चाल सौं॥जो तु
तिस्वादी तौ वना मरघा पीवै कौ जो रवक वारी मिलि किंकिनी जाल सौं॥दरस कैरया तौ तुदै षै कौ नसा
म सोभा जो तु रंग रागी मिल मुरली रसाल हौं॥
मैं कही चंचल चेलता तज॥ ॥जो हौं असो जानतो कि जैहै तु विषय के संग है है मन मेरे हाथ पाथ तौ
रोतो रतो॥आज लो हौं कित नर नारि की नाम्ही सहिने हसौ निहार वदन निहारो तौ॥चलन न देतो देव चं
चल अचल करि चाव क चिंतावनी न मारि सहूमो स्ति॥भारी प्रेम पाथर लै नगारो गरै तें वांधि राधावर
विरह के वारि घमै वोरतौ॥ ॥मान न रहौं तौ भलै रसखान वसै मिलि गोकुल गांव गुवारन॥जो प सहौ तौ
कहा वस मेरो चलामिल नंद की धेनु मझारन॥या हू न हो तौ वहै गिरि कौ तक कियो व्रज छत्र पुरंदर धा
रन॥जो षहौ तौ व सेरौ मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥ ॥जैं लौं रहै सासा तालौ॥ ॥
॥कैसों दलय उव सगर सुत जा दौं जेते जात हू न जाने ज्यों तरैया परभात की॥वल वेनु अवरीस मान
धाता प्रहलाद कहिये कहां लौं कथा रावन जजात की॥वेहू न वचन पाये काल कोतु की के रू
प भांति भांति सेना राममी घने दुख घात की॥च्यारि दिनां को चवाव सब को उपरा अंत लगि जैहै जैसे पांतरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करिलैरैसुकंत सुमरलैरैन रहहरिपरिहरि औढरढरनमोहलाजकी ॥ रसरासतेरेहाथचिंतामनिहै
यातें औटगहिलेप्रहलादप्रतिपालकी ॥ करतकहाहैकहाकरिवेका आयोवाहिकोहेतलकहाहैप
हकैसोगतकालकी ॥ गईसोतोगईअवरहीसोनोराखिमूढराकाकैकवलजातलाबलाबलालकी
॥ धीय ॥ केतोकरोकोईजीयैकरमलिख्योइतातैंहूसीनहोईजियसोईसमुझायरये ॥ आछेतें
सरसगरवीतकैवरसअवदुर्जनदससवीचनरसचढारये ॥ चिंताअनुचितकर धीरजउचितसेनापति
ह्वैसुचितरघुराइजसगाइये ॥ च्यारिवरदानतजयायपकमलेधानकेपायकमहेधानकेकाहेकोंकहा
इये ॥ ॥ पाल्यौप्रहलादगजग्राहतैंछुडायोजिनजाकेनाभिकमलविधाताहूकोभोनहै ॥ धा
सनकाहिजाहिगावैवेदवंदीसवदासहैरिजा हैसेसरविससियोनहैं ॥ ऐसैरघुवीरकोअधीहैउ
नावोपीरवेघुभीरआगेसेनापतिभलैमोनहै ॥ तोरेवस्नताहित्तारंगधरनविनइजोदुषहरनहमारेभोरकौन
है ॥ ॥ आपमहाराजमोहिनीकैपहिचानैरानीजानकीहूजानेहेतधानकुमारको ॥ लिभीछिनह
नुमानतजिअभिमानमेरोकरैसनमानजानिकैसिरकारको ॥ एरेकलिकालमोहिकालोनतिहरि
सकैहतोगवारकूरकापरलवारको ॥ सेनापतिसिरदारपायोसखरदारमहाराजारामवेनजकेंदरवारकों

दाजवर्णन ॥ उद्भूत रस्मायहै जैसे रथायहै मोसर देखके स्मायनी चाकों ॥ वारिकी बूंदको वरस्त राये जामनकको नहीं दोसनि

साकैं ॥ ईश्वर मेघ कहे सत्तरईश्वर माँसो वनेन नहीं कामहत्वाकैं ॥ कंचनको भरलाये रहति तहों कहाहाथ हैं ॥ रिमतथाकों ॥

॥ ॥ अस्त्र वर्णन ॥ पारा हौं चपलौंचिपला ॥ हि चारि पारा लागे पारा वजि गरव गरव जीते लेत है ॥ चलत सभाइन सों छा

ती छुहै पायन सौ वात कारे वाथिन सौ विविधि वनेत है ॥ छुरी करे सो करे विलोकत नन साकरै ॥ हीये मेंहेमसा करै सत्रूपके निकेत

हैं ॥ मनके सखा से लखि लीन जे ते खासे मा ॥ है रखला सखा नेदेत है ॥ ॥ चंचल चपल चपला हू तें चला क अति चंचल तिया न

हू वै तैं व मी खलीन है ॥ कंधी है कपंधी हूरि एक घन के अंग धरी गोटिका कि टोटै काट टावन सें छूने है ॥ पान के छुले खे तवहरात

लगे पर थर थार मा के मोती कि धों वारमा के मीन है ॥ मानो सा चेढारे कि धों वस्त्र धाकरी विलोंदे कों दि फो दे परत फिरा

ई खानदी ने है ॥ ॥ नवल छवी ले है अती लेनी लेतैं नैं देख सातो हय सूर्य्य के चिंतत ते उतरंगे ॥ कामल मिरे सदी ये वाजी

वाज राज सम छलभरे घरे है छिन छोर लौं उछरंगे ॥ मेरे जाने रन को पखे रूकी या चारु तहों वडुं वंधी विधि के वो को वि

रंगे ॥ कै धों करतार लै के पंख न सवारे तो लों निपट तरल ताके करते निकरंगे ॥ ॥

मटकी सभाकी मतलट की सकुल गत हटकी न काहू सम्हीजी मटकी ॥ उरकी दुलास तनसन नट की कलासी भई चरकी मी सेतीत गति देखि

ये हैं नटकी ॥ तहीं रट की हतहीं जाने घर की वेमर की मीटें के नाम सचर नन तर की ॥ जीवन निपर की नीपर की नदी जानाय वतिला जपर की सों तुमें ता...

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शृंगारिरसवर्णन॥धरेहीरहेंगेधराधरमांझगाढेघनभरहीरहेंगेवेभंडारवकुबानीके॥जांहीरहेंगेगजानराजराजजीरनसौंबरेहीरहें
गेअंकलमहाथंयपानीके॥आरहीलगैहैतबकरैगोसहायकौनजरेहीरहेंगेभरमभरमोप्रमानीके॥येकेमुखवानीमायाहोयगीव
कनीतवछाडरजनीवासीहोवगेमहानीके॥ ॥सोरठा॥टारीटरेनराकविचाविचनालिख्यालिलाटसों॥भरमोभवनअ
नेकविनविवेकनररातदिन॥ ॥मैकहीचंचलचंचलतातजस्यामगरेरोमनकेरुनेरौ॥मोसौंकहीपिरमासोंहैकौमेरो
स्यामहीमैनिसदिनसवमेरो॥देखविचारवहेंजगमेंजगवाहीमेंमेरोकहालगफेरो॥होसमझावतहौंमनकौंमनहोहलगमो
समनाबनमेरो॥ ॥जौलोंरहेसासातौलोंदीवतउजासावेठसाघनकेपासाजहांकाहूकीनआसाहै॥मानविसवासातंकहा
यहरिदासाकरमजुकीउपासामेंवतायोमतवासाहै॥वृंदावनिवासाकरित्रयउपवासासरसरासअनपासापायोजगटभवामाहै॥
॥कठीयरमासातासौंहोहरेउदासादेखपानीकापतासाजैसातनकातमासाहै॥ ॥तजकेसंसारफेरताहीमेंवहारकरौं
मायातेनिकसफेरमायामनधारीहै॥पहलेतोकीचधोरफेरकीचवीचहोरायोरायवनतीनोतमवातहीविगारीहै॥तीयपाटी
क्योविसारीनिषतनारीनारीकेचनकेलाभकरधर्मताविसारीहैं॥करकेफिकीरीउरधरेहै अमीरीआसकाहेकोरेधगडीकेप
गडीडारीहै॥ ॥दीजीराकमंडलकैतजमहीमंडलकोदीजीरातरंगकेकुरंगछालाकटकेरो॥दिजीरागजराजकैविराजवेकोवृंदावनऊची
देअटारीकैनिकासगंगातटकेरो॥दीजीराहिंघासनकैआसनविघंवरकोचंदनजडाडूकैविभूतलांऊघटको॥मनहीमैंआनमनमानरहोविहारी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

फा[illegible]नी॥ रूपबिन गुमान जैसे मानबिन दान जैसे गुरुबिन ग्यान जैसे दलबिन नातदल है॥ [illegible]बिन गीत जैसे प्रीत बिन मी-
त जैसे बेहार करी जि जैसे जल बिना सर है॥ नादबिन कंत जैसे जंत्र बिन मंत्र जैसे पुत्र बिन घर है॥ [illegible] ज्ञान
देखो समझ बिचार ऐसे पै सेविन जैसे पे [illegible] पर है॥ ॥गोतम नारि पती घात सो सिला भई पाउ
प्रताप सो वो टीक तारी॥ दीपो [illegible] रामा को नारद [illegible] लोक [illegible] रामा के दारद हारी॥ बात [illegible] की
पत नि पट निरंजन सो [illegible] निहारी कृपा तउ पारी॥ द्रोपदी चीर अबं की कृपालु ने लाज निकारी कै
लाजन मारी॥ ॥तेरो सुष चरचनि का है कौन कंत प्यारी चारु सुबचे उनर च्यो है उतेरो [illegible]
पुकन को घरो [illegible] के उजारो [illegible] सौतन की अबन पै परत अधरो सौं॥ काहू की सौं कब जाय पै
तो ताप चरचो ता की उपमान बनी कहू [illegible] मन मे रो सौं॥ ताकी [illegible] बतार कहू का को
जाको चाकर सो चंद अरबिंद लागै मेर सौं॥ ॥देखो करतार [illegible] कारन करन हार सरस
[illegible] काढ़ के [illegible] रतचारए है॥ बेग चपला न बल के [illegible] नन [illegible] नर आन [illegible]
बिरचे राए हैं॥ इन ही के [illegible] लघु [illegible] बग औरगज आदि [illegible] रूप ठराए हैं॥ नातो
तजे भोजन [illegible] ने कर दै [illegible] माधुरी [illegible] वाही के सरीर वहू काहे [illegible] बनाए हैं॥ ॥सो रसिका [illegible]
यो सम [illegible] रस मैं [illegible] विज्ञान [illegible] की नी॥ [illegible] पर बार [illegible] [illegible] सम [illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दीनविनातनसोचनकाहूकोजानतहीनभमारगदीनो॥सो[illegible]जानत[illegible]रविचारसनारस
ससीरविराशिवकीनो॥ ॥सहससीसचवबेउनवकेमितसीमोन[illegible]॥संहतसकलरोस
रजमधुजाग्निचडतसिकार॥ ॥सारंगधरणमृतलागतविदेहप्रियराकसीवधा
रीरतसमहलबधामहै॥पंचाननरिपुगतदायसंगारसमधुमितलिनैलीनोपासविश्राम
है॥चपलचलाकचपलासेचकचौंधावानजिनैलगेहोतजडचेतननिकामहै॥ग्वाल
कविपंडितविचारदेखोमनऐसेरामहैककामहैकवामअभिरामहै॥ ॥ = ॥ = ॥
नवमंवगाढपरीसतनकोदेवीदासतवतवहीसहायकरिजूनैकीनोहै॥तैसैंकपटदेल
नहरिजूदयानिधानऐसेकौनअवतारधरसकीनोहै॥मातनकेपेटतेसजूवचयेसौर
नौसतेहेंउदितऐसोऔरकौनप्रवीनहै॥प्रहलादहेतजाततीर्थकेवाधेआपपारथके
पेटमैतेअवतारलीनोहै॥ ॥दीनबंधुदीनानाथकृपानिधिहरिनिरधनिरगुनि[illegible]कु
लातहै॥तरसिरतयैसरसदरसकाजवरसिरनींरपीरतैंपिरातहै॥एहोरसिरासितुमनि
रगुनपाहीतेंजुदीनीवाहीहारपरेकौनहोतगतहै॥कवहकंप्रानएहिनानचपिचुरहेंहैंकुवरीवं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ प्रक्रि वर्णन ॥ कवित ॥ तुम करतार जगरछा के करन हार दुरवन हार मनोरथ चित चाहे के ॥ यही जियजान सेनापति हूं सरन आयो हूं नी
रास हाय महाताप तमरा है के ॥ कांम तुम अैसी कहो तेरे कर्म लिषो हूं हम नही गारहू करुक तन मलाहे के ॥ मेरे हीकरम जौं जो हौ ही
उत रोग पार हैहौं ही करतार करतार तुम काहे के ॥ ॥ संतन के तीर सेनापति भवो वग्गि तीर दह के तीर थके तीर व हू वास रहितारहे ॥
माया के विलास तोते है केउ दास रूगे रास तिन की गिनती मैं आय ही गिना यहै ॥ छोडो और साधन चलो गो मत साधन के विनी जो गसा
धन परम पद पार है ॥ विषै की तारना हू क बहर ग्वार कर्मे लै के करतार करतार गुन गारहै ॥ ॥ चाकरी गुलाम ये न कछु वक
आई तहां उगन हमारे मम ही यमैं न टरी यो ॥ तुम सो हजार वार विनती करत लाल राम क व आपने विरद ते न टरीयो ॥ आपनी व
डाभार हीयमैं विचार करता ही ठार दरे होवताही टार टरीयो ॥ प्यारी योरी कर के बडुत मया करी यो पै कर कै बडुतें योरी मति करी हरि
यो ॥ ॥ आम ब अरुरी विभ चारी रत गत साथ सभ रास उकियत है ॥ राईसर ज्वाई की रकूल साई गोत घारन के हीयमरु उमाल
रापीयत है ॥ होत अवनासी मभ कासी रामकासी नाथ बैठ के किलास कैं उरोषा ऊं कीयत है ॥ नेकन विवेक राव पंडे सुरसरी जू के
राषी वेद पाठी राऊ लाठी हो कीयत है ॥ ॥ कामनी कमल नैनी करेन रहस केल कै गला विलास नविशेष वो रादयो है ॥
घर मैं रहे ते को ऊघर को न पूछे वात वारह गरा ते लोक चाव वरो ईठयो है ॥ करै क वंग गत नक रा निपान का हू नैम मैं है मैं
दह्वार रौव दार भयो है ॥ तुम हूं की रास किला छात मह वन ता राज गार कते गयो ते अवसांई ते न भयो है ॥ ॥ ॥ राम ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दीपमालिकावर्णन ॥ कुंजनकी मही पति किसोर पति संग मिलि दीपनि दीपवति सोमा मानी जरदि नारी है। दीपनकी दीपक ... पद ८
दीपकु मे दीपति के पार हू अपार उति चार है ॥ वल्लकर ति कसर सती पति तची पर ॥ गीपति निग ... वे चन्द चकी ध्यकार है ॥ ज ...
ाक दीपति सौं दीपन मे दीपत्तति दीपति विकुंठहू की लीपति उज्यारी है ॥ ॥ कवीवर्णन ॥ उदार सम्रुद्रसी पसार दासों
लायो कादमरजीयान दाम गउण केलगाये हैं ॥ पानिपअमल जोपअभा सु वरनवान बनरहत जोग भूषन उपाये हैं ॥ ग्रास्मा
सदजो हूंगरी तुलाइ पर बाय लीजे चंदन विवेकी जे वेंपे चन गाये हैं ॥ कीरत कवित्त मुकता हलान पति जान रावरो निकट
हमवे चवे कौ लाये हैं ॥ ॥ घोघरोघ नेरो कौन को जरवदा बजरवा फी ओढनी अनूवरंग ठानी है ॥ केचुकी कटायसे करि तसाजे
ल नखसिसकी सिंगार सु बसानो है ॥ कवी लालचंद कौ सौभाग जाके भाल लसै सदा मनवसै जाके काम की कहानी है ॥ जोतन सुधा सीजो तहोत
चदकासी वासी मे नकु सरानी वे सबन अतरानी है ॥ ॥ जो हूसी जगत ठाडी भौन मैम ये कमु खी चाहन तु चाह रति रउ यलत है ॥ चतुरवि दा
री जहै तो कहि तति हारे से दे दासी तुरसत फूल माला सेगयत है ॥ रो रूबर कटपै दीये ते लसत घवराम कवि मओ री जैसी उपमयत है ॥
जवली सनोती रोम राजी सरस्विरनई नाभवम याली मन मैं नहीं मयत है ॥ ॥ सारंग नपन गोरी लोचन सरंग घ औद सासि सो
वदन समसगार सींगार की ॥ कहै कवि गंग ऐसी संदरी न पावै कोऊ जोपै होहो जुग मैं वेन वहे ओज नारसी ॥ राधी येजतन हूसें
... लोन और करराजकोरतनकी जे भौं की जे आरसी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रू॥ अंधकार घूमघार समै रहूटै गारविथु दैरि रानै यति अनहोनपरमै॥ कालिदास हासकाम
रूपस्यामा संग सोई राम काम कामिनी के रूप कामिकेलि घरमै॥ तरुणी की नाम भकु दोनै रा
हुलकुचगहि सोयेन गजरटित अंगरुनी सोहूँ करमै॥ मेरजान वामी तेनिवृसि कारे ना
मणिपंडित समेरि के सिषर मैं॥ ॥हैइन कोउन को अनुरास्यौ न हास्यौ न मानिहियेसर
मात है॥ कीचवीच गडे सर मैं वडे वे सर मैं न लजात है॥ मैर्हेली कहल्पा च विलोरविलोकर जो
रिषर हस्ता बात है॥ राधेजू प्यौवत रावरे पाइ मैं कौलद्यौं काहे को अैठेसेजात है॥ ॥
हिंडोरना के॥ विलसत देपजिसंपति साज सावन की सषीसरषरग वरसत ओतपोत है॥ झूलत हैं प्या
री रुकुलावत विहारी सो विहारी प्यारी नैनन मै रूपको उदोत है॥ प्यारी है विहारी भये विहारी भये है
प्यारी मर करचितौनि कुंजफूली रसमोत है॥ ऐसे हरे गये सखी राधा हरी निमो हैरत चकत जदै।
मैन हस्यौ होत है॥ ॥जमुना के तीर भीर भई हैं हिंडोरनावै दूरि दीते फगइ की गनदसत है॥
गोन धुनि मेदमेद आवत है कानन मैं वीच वीच वंसी प्रान पैठि रसत है॥ चिकेंउमन तं मोक
कदामिन सी परफदस नवीना भासरसत है॥ हाहावलि नागरवै हियौ तरसत हैली आज ककदे रस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

61

चौपई॥ कांत करवारी वैठे रहे अध कारी ते ऊंच भत विचित्र त्रिनजन अस्म सी बीरा॥ चौपई॥ पर
त्रिया सौं चित चौहु चाहनि रच्यो कंत होत मरन विशेषी रा॥ कौन परस पाले जीवत भए है नीनो ता
ही तें तजीत विनजनन पर वीरा॥ देवन अनूप रूप विंदुन ब्रह्मा ने मानो ईत न के ईत नउ पारे दृग देवी
रा॥ ॥गंजफा॥ आप आफताव ताव राजो महाराज मीत न नायब हताव अनुमान को
चंग चंग संग अंग अंगन उमंग स्कि भरसा चसीच रची रा किमाच गास्तकान को॥ ताज सिरताज ष्मम
सेर समसेर कर मंगल वरातन वरातन वद्धान को॥ गंजनगनी की आप गंजपेलो जी आदबी
मैं सा बसकल जहान को॥ ॥सं है चंसेरा॥ लाह चतेसम भौरा कपर जो मिवैं आय
कै॥ फरजी तिरछी त्रिछ चलफेर वी चावै॥ प्यादासी घाच रे सिध चराव हरन आवैं॥
रुष आटोप राजा यत पारठोर जु पावै॥ घोडा चर ढाई चल फील तान घर पेलीरा॥ कोस
जान जानै न लीय हक विजपड बेलीरा॥ ॥वृजसोभा॥ वज वैकुंठ दोऊ तोल है तुला मैं धरसा कपला
भरह्यो राकचडिगो अकास॥ याही ते रहत ईहां नंदको कुंवर सदा गोपी गोप गायन मैं कर्त विलास॥ जो रजन रहे तो सें
जे रहन ज्यारे होत प्यारे होत अंनको कोऊ कौन करै वास॥ रहियाम प्रेम सो माल्य मको विगास जहां नाचत नटी लों मुक्ति च्या

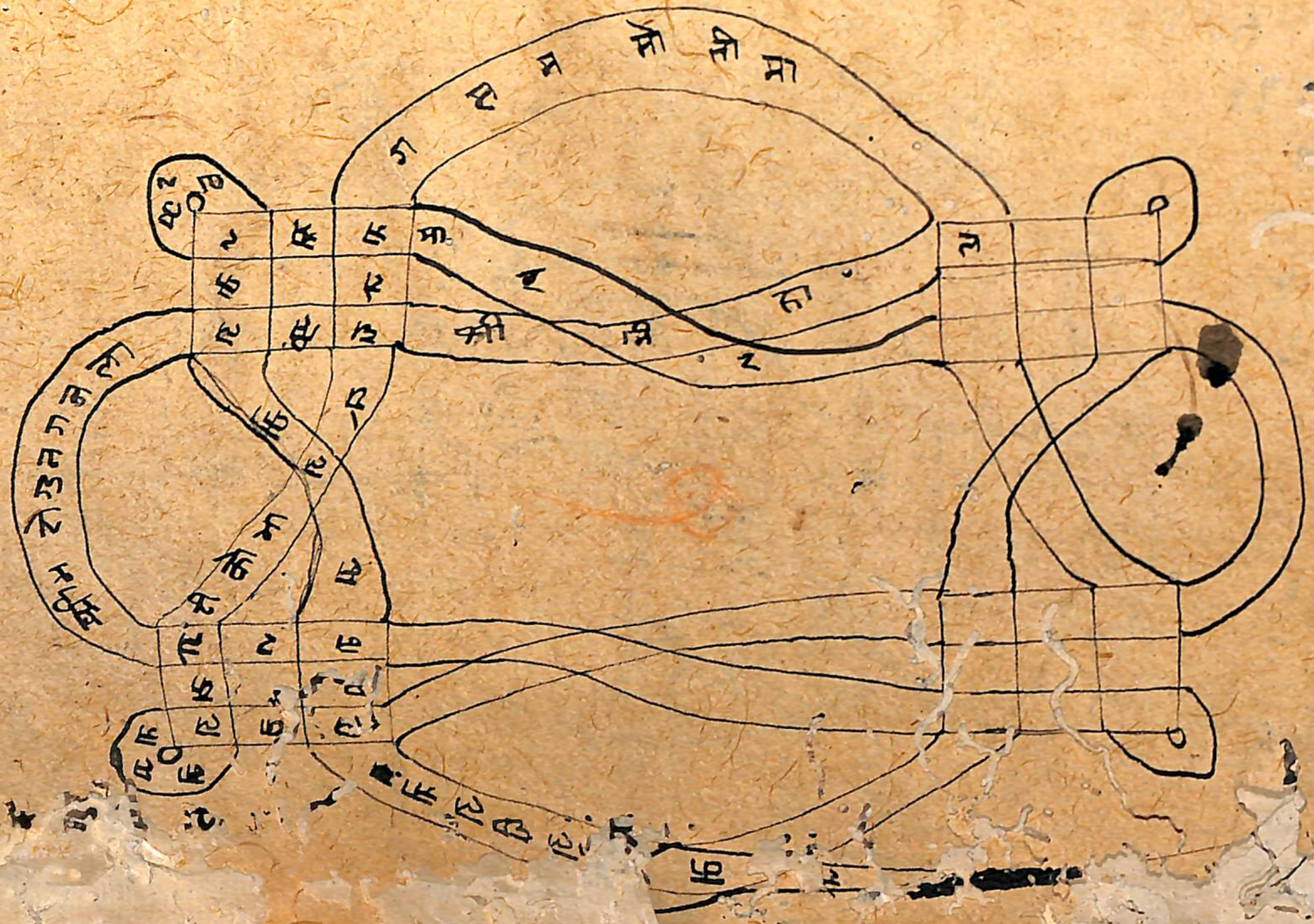

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीमद्रामचंद्राय नमः ॥ श्रीहनुमते नमः ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ राम ॥ राम ॥
अथ परमार्थ साधु भाव ॥ दोहा ॥ असुरकंदन मोहन मदन वदन चंद रघुनंद ॥ सीयासहित वसियो हृचित जयरमय आनं
द ॥१॥ नैन निकट काजर वसै पै दरपन दरसाय ॥ ज्यों साधन सत संग विन नाहिन ज्ञान उपाय ॥२॥ कर घुंघट जग मोहिया वहुत भु
ला ए लोग ॥ दूर सजि नहिं दिषाइया जे दरसन थे जोग ॥३॥ तौलौ या मन सदन में हरि आवहि किहिं वाट ॥ विकट जुटे जौलौ निपट षुले
न कपट कपाट ॥४॥ भजन कह्यो तातैं भज्यो भज्यो न एकेवार ॥ दूर भजन जाते कह्यो सो तैं भज्यो गवार ॥५॥ हरि कौ फिरे वान पै उहूं लो
भ फिर्यो सम देस ॥ मन न भयो काहु ऊजरो भरा ऊजरे केस ॥६॥ तुरसी जो पै राम सौं नाहिन सहज सनेह ॥ मूंड मुंडायो वादही भांड भरा तजि
अरु ७ गेह ॥७॥ आसा नाम सकैलि करैं मन सकैल करै असान ॥ कव तुरसी वलर गयो रहरज्जाय भगवान ॥८॥ प्रभुता को सब कोई चहै प्रभु को
चहै न कोई ॥ जो तुर प्रभु को चहे प्रभुता आपे होय ॥९॥ या अनुरागी चित्त की समुझै नहि कोय ॥ ज्यौं ज्यौं बूडै स्याम रंग त्यौं त्यौं उज्जल गति ६
होय ॥१०॥ कमला इह जुग सुषन ही कीरा जुवहुते मित ॥ जिह चित वांध्या एक सौं सो सोवे सुषनित ॥११॥ कावर उटन भेदु सन कुघच
रण चित लाय ॥ घर डोलत मल्ल कहहाथी चडे न जाइ ॥१२॥ लिषन वैठ जाकी सवी गहर गरव गरूर ॥ भरान के तज जगत के चतुर
चितेरे कूर ॥१३॥ तरवर एक अकास फल पंथी मरा न कूर ॥ वहुत कलाल चकर रहे फल मीठे पै दूर ॥१४॥ तत्तं करतें तत भया मुल में रह्युनि
हू ॥ तकरतें तत पाइया अव तो तरही तें ॥१५॥ वैराग्य भाव ॥ ऊंचा फल वैराग का अगम अगोचर दूर ॥ चडे तो चाटे प्रेमरस पर तो चाटे ध
र ॥१६॥ सब जग देष्या दूढि कैं कहूं न पायो चैन ॥ जित देषों तित स्वंट है गो सापकरहु सैन ॥१७॥ ऐसा कोई ना मिल्या जासों रहीए लाग ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संख्या ॥५६७

१	२	६	३
२	२	२	२
२	२	२	७
३	२	१०	११
४	३	१	१
१	२	५	१
६	२	४	३
३	४	१	२२
२	२	३	४
२	२	११	४
१	२	६	४
१	१८	५०	४
१	७	३	१
१	१५	२	८
१	२	६	५
१	२	१	५
१	४	३	६
२	२	४	६
२	११	४	१
२	२	४	२
२	२	१०	८
२	२	७	५
२	२	३	१
१	२	५	३
१	२	६	२
१	६	७	२
३	३	१	१
१	१५	२	१
२	२०	२	१
३	३	३	१
६३	३६	५५	११
		५६७	

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

٨٧

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बरनन	कवित	पत्र	बरनन	क	पत्र	बरनन	क	पत्र	बरनन	क	पत्र	बरनन	क	पत्र	बरनन	क	पत्र
मुखवर्नन	१	१	मुखरागव०	१	३	मध्या०	१	५	विरहव० होर	१२	९ / १०	द्वितीया चंद०	१	१५	सरदरितु० व०	४	२२
तिलवर्न	२	१।२	ठोडीविंदुव०	१	३	प्रोटासुरतांत	१	५	वियोग०	१४	१० / ११	चंदवर्नन	२	१५	विरहसरद०	१	२२
जिह्वाव०	१	१	तिलदंतव०	१	३	अनुराग	१	५	विछाद०	२	११	सूर्योदय	१	१५	शिशिररितु०	३	२२
भ्रूवर्नन	३	१ / १२	चांदनीव०	१	३	दृष्टान्तुराग	२	५	आगम०	१	११	वसंतरितु	६	१५ / १६	षट्रितुचंद	१२	२२
नेत्रवर्न	४	१	रासवरन	१	३	वाग्विदग्धा०	२	५ / १४	संदेस०	४	१२	वसंतखेल	३	१६	हिमरितुवर	६	२५ / २६
कटाक्ष	१	१	स्त्रीवर्न	२	४	कृष्णाभिसारिका	१	५	पत्रीलिखन०	२	१२	वसंतरितु	१६	१७ / १८	लगनवरन	५०	२६ / ३२
कुलक	६	१	दूतीवर्न	१	४	उत्कंठा०	१	५	गोपीगीत०	१४	१२ / १३	विरहवसंत	२०	१९ / २०	स्वपनवरन	३	३२
कुचव०	३	२	उत्तनकथ	२	४	मानवर्न	४	५ / ६	खंडिता०	२	१४	ग्रीष्मरितु	६	२०	संयोगवर्न०	८	३२ / ३३
नखछत	२	२	सिक्षावर	३	४	तमोलव	१	६	अक्रताभिसारका०	१	१४	विरहग्रीष्म	१	२०	विपरीतिव०	२	३३
रोमावली	१	२	लच्छवर	२	४	वैससंघ	१	६	स्वयंदूती	२	१५	ग्रीष्मरितु	१०	२४	स्वेदवर्नन०	१	३३
त्रिवेनीव०	१	२	मध्यासुरता	१	५	रूपगर्विता	१	७	अभिसारिका	१	१५	वर्षारितु०	७	२१ / २४	सुरतांतव०	३	३३ / ३४
कटी०	१	२	सुरतांत	३	५	प्रोषितपतिका	१	७	संध्या०	१	१५	वर्षाविरह	७	२१	जलक्रीडा०	४	३४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊ०पत्र॥५६०

१	२	६	३
२	२	२	२
१	२	२	७
३	२	१०	२२
४	३	७	१
१	२	२८	१
६	२	४	३
३	४	१	३२
२	२	३	४
२	२	२२	४
१	२	६	४
१	२	५०	१
१	७	३	८
१	२८	८	५
१	२	३	३
१	२	१	६
१	४	३	१
२	२	४	२
२	२२	४	८
२	२	३०	५
२	२	७७	१
२	१	३	३
१	२	५	२
१	२	६	२
१	६	७	१
१	३	१	१
३	१६	२	
१	२०	२	
२	३		
२			
२			
१			
३			
जो०			
६८	३६	२५०	९१
५६०			

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॥श्रीमद्रामचंद्रायनमः॥श्रीहनुमतेनमः॥श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः॥श्रीसरस्वत्यैनमः॥राम॥राम॥
अथपरमार्थसंग्रहभाव॥दोहा॥असुरकंदनमोहनमदनवदनचंदरघुनंद॥सीयासहितवसियोहृचितजयरमयआनं
द॥१॥नैननिकटकाजरवसैपैदरपनदरसाय॥ज्यौंसाधनसतसंगविन नाहनआनउपाय॥२॥करघुंघटजगमोहियावहुतभु
लाएलोग॥दूरसजिनहिदिषाइयाजेदरसनथेजोग॥३॥तौलौयामनसदनमैहरिआवहिकिहिवाट॥विकटजुटेजौलौनिपटषुले
नकपटकपाट॥४॥भजनकह्योतातैभज्योभज्योनएकेवार॥दूरभजनजातेकह्योसोतैभज्योगवार॥५॥हरिकौफिरैयानपैउहू लो
भफिरयोसमदेस॥मननभयोकहुऊजरोभराउजरेकेस॥६॥तुरसीजोपैरामसौंनाहिनसहजसनेह॥मंडमुंडायोवादहीभांडभरातजी
अ०१ गेह॥७॥आसानासरसकैलिकरैमनसकैलकरैअसान॥कवतुरसीवलरगयोरञ्जायभगवान॥८॥प्रभुताकोसभकोईचहैप्रभुको
चहैनकोई॥जोतुरप्रभुकोचहेप्रभुताआपेहोय॥९॥याअनुरागीचितकीसमुझैनहिकोय॥ज्यौंज्यौंवडेस्यामरंगत्यौंत्यौंउजल गति ६
होय॥१०॥कमलाइहजुगिसुखनहीकीराजुवहुतेमित॥जिहचितवांध्याराकसौंसोसोवेसुखनित॥११॥कावरउरनभेदुसनकघच
रणचितलाय॥घरडोलतमल्लकहहाथीचढेयानजाइ॥१२॥लिषनवैरजाकीसवीगहरगरतगरूर॥भरानकेतजगतकेचतुर
चितेरेकूर॥१३॥तरवरराकआकासफलपंथीमराकूर॥वहुतकलालचकररहेफलमीठेपेदूर॥१४॥तातकरतेतंभयामुळमैरहनि
हू॥तकरतेतलपाइयाअवतोलहीतं॥१५॥वैराग्यभाव॥ऊचाफलवैरागकाअगमअगोचरदूर॥चढेतोचाटेप्रेमरसपरेतोचाटेधू
र॥१६॥सवजगदेष्यादूहिकैकहनपायोचैन॥जितदेषौंतितेसपटहगोसापकरहुसैन॥१७॥ऐसाकोईनामिल्याजासोरहीएलाग॥
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१

समझं जलता देषके अपनी २ आग ॥ १८ ॥ काल समजग हू पै रहा कंध मंदल गाय ॥ को अ कैसी कान नहीं देषे ढोक वजाय ॥ १९ ॥ का को कीजे
रोवना का को कीजे सोग ॥ आइ मद या संसार मैं वसैं वटाऊ लोग ॥ २० ॥ हं मन रोऊ किह लमर देषह सो किह आव ॥ जे आ रात ऊगरा र है ते जैहै सस
वा ॥ २१ ॥ यम घानी संसार तिल वास सकै तौ वास ॥ यह तन फूल गुलाव का घरी न लावी आस ॥ २२ ॥ वारी २ आपनी चले पियारे मित ॥ =॥
तेरी वारी रे हियां मेरी आवे नित्त ॥ २३ ॥ आगे पीछे जां है गे है को ऊ थिर नाह ॥ जग पंथी काल कै है वैठे मारग माह ॥ २४ ॥ दसो द्वार को पिंज
रो ता मैं पंछी पौन ॥ रहवे को अचरज महा ऊडे ऊ अचरज कौन ॥ २५ ॥ ऊठे लष को लष कहे मानत है मन मोद ॥ जगत चवीना काल
का कछु मुष मै कछु गोद ॥ २६ ॥ माली आवत देष के कली आं करी पुकार ॥ फूली २ चुन लई काल हमारी वार ॥ २७ ॥ जैसा मोती ओस
का तैसा यह संसार ॥ दीसत दीसे ऊलमला जात न लावे वार ॥ २८ ॥ जगत रवर पत जीव सभ ता बा रूपी संत ॥ प्रीत काल वसंत गरित आ
वर षिरे अनंत ॥ २९ ॥ पर न दरपन देषके कहत ते मरत षव ॥ धर भई या धर मैं कै मरत मह रव ॥ ३० ॥ भीजे घर रैं लवास हैं क हि को पु नि
र न दास ॥ मू घर सजन माटी मिलै तिन की आवत वास ॥ ३१ ॥ सहल सटा संसरीर की कौन वस्यो म षचैन ॥ स्वास नगारे कूच के वाज य ५
त है दिन रैन ॥ ३२ ॥ यह संसार सराय धोषा नाही मल कह ॥ हम को ई ऊतरे आय रात वसे दिन ऊठ चले ॥ ३३ ॥ जिह घर रोवत आ
ई रा अंत हु चली ए रोय ॥ सम्मन ता संसार मैं लष कहां ते होय ॥ ३४ ॥ घरी पलक की षवर नह करत काल्ह को साज ॥ काल अचानक
ऊपट है ज्यौं तीतर को वाज ॥ ३५ ॥ वरीव जे घरि पालकी तुकुच समझा वित ॥ आव घटै ओ वनि मि टै यह सम जावे नित ॥ ३६ ॥ वऊत गई
थोरी रही ता हू माह घटाय ॥ वाकी इतनी परक हा को काहू के जाय ॥ ३७ ॥ तो रैं सह मत हेली आं तुरी अठारां लष ॥ सां ई तेरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कारणछ्योड्यासहरवलष्ठ॥३८॥हमपरदेसीयाऊनादिनरडौरेगाम॥मरननजानेस्रावनो कैहैकोनैठांव॥३९॥कहकालकेमेवने
कालगहेसिरकेस॥नाजानोकहामारहैकैघरकैपरदेस॥४०॥सोरठा॥देषिस्राषिकोभीचतादहरगतसंसारकी॥यहजानीतुमीचाघो
षानाहीविचकछु॥४१॥कुसलरषलकैकहेसंसारीसबकोइ॥वातजगतकीकुसलहैकुसलकहांतेहोय॥४२॥दारस्टीतादहरकुटी
यहकलकोस्राहार॥गिलमोसोगेमांगिलैगिलसोवैठनहार॥४३॥यम्नसेषलौलघमीउदेस्रललोराज॥संमनजोनिजमरन
हैतौयहकौनेकाज॥४४॥वितचंचलनिहचलनहीकहाकरेस्रनुराग॥कालजोगसघेविनामहाकठनवैराग॥४५॥यमला
गुडीउडावतेमनकीकरतेदोर॥लहरजुस्राईप्रेमकीकहायमलाकहाडोर॥४६॥कायासरवरकेतजलमांऊजीवहैमीन॥
कालकिलकलाउरपिवेस्रानस्रचानकलीन॥४७॥षालवहंतीरहगईस्रनवुऊगरास्रंगार॥स्रहरनकाठदकामिटयाजवडठगयोलु
हार॥४८॥जिनसोंमानीरंगरलीवहुतकीरासुषभोग॥कहसंम्मनजानेकघरकहांगरावेलोग॥४९॥मोसोंपूछतहैकहाजीहीजां
नजलेह॥वैसज्जनमाटीमिलेऊपरवरसेमेह॥५०॥ठानतोषतरनीगिलेपूतहयकरीहाथ॥पाइनवेरीकुटमकीतुमघोलोव
जनाथ॥५१॥मनरवकमोचोमितकरडोरसमैछिटकाय॥परजुगम्मरहटकीघरीभरस्रावेदुरजाइ॥५२॥जैसेमगतसाविषेजल
भतीतनरहिहोय॥तैसेयहसंसारकौंजानिसयानेलोइ॥५३॥रूठकोसोचोगिनतसांचोसमजतनाह॥तेनरचोरासीचमैपिरर
स्रावैमाह॥५४॥वयसंघिभाववया॥वादनतोउरउरजभरभरतनईविकास॥वौगलसोंतिनकेहिएस्रावतरुंघिडसास॥५५
स्रोरहसनिस्रोरैलसैनस्रोरकहनिकटिहोर॥चुगलैनैनुस्रांकनिलगेमनकगिरडारयोस्रोर॥५६॥योवनभाव॥दोहा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२

2

आरसमोरतजोगिरिकर।कुचउनतकटिसुध॥मदनमहाजलउमड्योथाहनिहारतमुध॥५७॥अंगभाव॥इहकटवरतीरूपकेउरसरोज
अतभार॥जोनहिंहोतोत्रिवलकोदृढवंधनआधार॥५८॥लगीअनलगीसीविधकरीषरीकटछीन॥करैमनोगाहीसुकरिकु
चनितंवअतिपीन॥५९॥समैसलोनोदेषीराष्यारीतेरोगात॥प्रगटकहातेहोतहेमीठीमीठीवात॥६०॥रंचनलषीतपहिरयैकंचन
सेतनवाल॥कुम्हिलानैजानीपरततनचंपेकीमाल॥६१॥मृगसकुचेचषिदेषकेमुषलषिलजैवैचंद॥वेनीदेषेवामकीह्कोदीपकमंद॥
॥६२॥रोमावलिनहिंदेषनहि।कारिनागननाहिं॥नाभिषैतीयनिरमलीवेनीकीपरछांह॥६३॥कुचगिरिपरमनमथकरीच
ढेजातइहभाय॥रोमावलिनाहिंनहीयेसोकरघीसेजाइ॥६४॥मृगनैनीवैनीसुधाचैनीसोहतपीठ॥सुषदेनीमनस्यामकौंचे
तीचितवतदीठ॥६५॥अंगुरीसोभानषनिकी॥कनिमनिजैसीहोइ॥मदनआरतीकोकीएपंचहिंदीपकजोय॥६६॥लोनेमुषदी
ठनलगौयोकहिंदीनोईहि।हूनीहैलागनलगेदीठदिठौनादीठ॥६७॥अंग२छविकीलपटउपजततजातअछेह॥षरीपातरीउत
उलगैभईसीदेह॥६८॥ललनातुवमुषलैनसमकमलकहावतसोज॥तवविधिदीनीपनदुवीअजऊतिरतपिरोज॥६९॥
॥अलकभाव॥लटकपोललटकाति लसति।अटकतिसुमतिविलोकि॥कांमगारस्रूकमलजनुराषीनागनिरोकि।७०॥छूटचटप
टउचरततलषीलटलटकतिइहपार॥राहुडंकलागतचुलीससिकलंकधसिधार॥७१॥अलककलटकिलगीकुचनपर।उपमा
ऐसीदेत॥शिवतनजकेनागिनचढीससिमुषअंमृतहेत॥७२॥अवनजलकुंदनजुवदनपरतापरकेसरुवासु॥मनहुंफिरतवचना
गकेचारनडौसपियासु॥७३॥संभ्रमनलटजुलिलाटपरलटकिरहीलपटाइ॥मानहुनागनपेमकीजोदेषतिहिषाय॥७४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुटलअलकछुटपरतमुषवढिगोइतौउदोत॥वंकवयाकीरेषज्यौंदामरूपरहोदेत॥७५॥कारीसटकारीअलकरहीउरजपरआइ
मनहुउरगहरकंठस्योंराष्योवांधिवनाय॥७६॥तिलभाव॥उरसिलताविचतिलवन्यौजोवनलहरेलेत॥विरहीघरउगोजातहैसी
सगिषाईदेत॥७७॥तिलइकदेष्यौवदनपरचुपरयोतनफुलेल॥मैमनचुपरयौआपनोवाहीतिलकैतेल॥७८॥मोहनमुषपरितिल
निरषि॥मैवरिजासोलेष॥अवमोहिजागरितहैसषीवाहीतिलकोदेष॥७९॥तिलकपोलछवितकनेकेकथतनलहोविवेक॥
तिलस्योंहरूयो [illegible]॥राजितपतिलागिस्योजनएक॥८०॥जगनसमैजरआगनमैतिलकीनोतपसार॥
त्रियकपोलताउंनितैतिहिपायोअवतार॥८१॥कविछविवितिलकीवरकैदरसिदयालकपोल॥मंउहिचंउउरयोकिअलि।
चरदलकंजअलोल॥८२॥तिलकपोलअनतोलदुतिमुनिवरनदमनमोद॥गइकडुधरिआपनेकुंवरइंदकीगोद॥८३॥
तिलविलोकहुकतरुनिकैतिलतिलवारतदेह॥[illegible]नुउउलागोवामकोजरयौकामहकेवेह॥८४॥तिलअवलोकिततरुनिको
उकतिआउनसहाय॥सतगुनमैतामसदुरयोउकवतनेनदिषाय॥८५॥रूपसुचिरचिनागरीतिलकपोलतवकीन॥
दुषदृष्टिमोहनमनुकजलवेंदीदीन॥८६॥वदनसदनघनमदनकीदीपनासिकादीन॥ताकोकज्जलकाढिजनुतिलक
पोलपरवीन॥८७॥कुचनीचैतिलनिषकैइहउपमाजियमाहिं॥मनोकमलतैनिकसिकैअलिसगिंवैठ्योंछांह॥८८॥
॥नैनभाव॥नलिननमलिनकीनागरीतेरेलोचनलोल॥अरुचकोरचेरीकीयोलिएममोलमोल॥८९॥जोगजुगतसि
षरसवै॥[illegible]नोमहामुनिमैन॥चाहतपीयअद्वैतताकोसेवतकाननैन॥९०॥सवैअंगकरकैसवरनाइकेनहसिलाइ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२

3 ॥रसयुत लेत अनंत गति युत रीधात सुराय॥ ९१॥ जदपि लोचन जात तउ नैकन करत निहोर॥ ऐनाबैं नाक हत तद्दै नैनां मनके चोर॥
॥९२॥ राचा हैं रस लोइना वैरस रसहीं ललचाय॥ अबी बंधी सारथी सुवका हूपरजाय॥ ९३॥ जैसे तनकी करत है। करनारी विन वेन॥ त्यौं
ही मनकी हेत कहि मनकी नारी नैन॥ ९४॥ वरजी तै सर मैनके ऐसे देख मैन॥ हिरनी कैनै नानि तै हरनी केए नैन॥ ९५॥ सिंगार
भाव॥ अवलानि कसत नीरज वनी रचुवत सुव वीर॥ जनु अलवन रोवत वसन तनविछुरन की पीर॥ ९६॥ नेंजन कर
र कव तिअलिक चिउर चुवत जल धार॥ मानडु ससि के त्रासि तै रुदन करत अंधियार॥ ९८॥ न्हायरत ज्यौं समीप को॥
छिट्ट करा ये गात॥ मुकता न्धरन घूसवे॥ व हत विसंभरबात॥ ९९॥ उदधि छोरि उर छेदियो याई नहीं जगीसा मु
कता अधरन नहि मिलै॥ तातै डौलत सीस॥ १००॥ चिबुककूप नथनी रहत॥ मुकता छरि गंभीर॥ चषधोला मुकुटी
नुवा॥ तरु निभरत छवि नीर॥ १०१॥ वेसरि मोति दुति झलिक परे ओट पर आइ॥ चूनो होयन चतुर तिय॥ क्यों पट पू
छ्यो जाय॥ १०२॥ वेसरमोति धरिन्दुति सी कौवु जै बुलजा ति॥ पियवो करि रति य ओट कौ रहनिरंकदिन राति॥ १०३॥ =॥
मुकता तारा इनभरा रैनके समुख चंद॥ कविमुरनिहूनी किरनि॥ चस्तुव कोरनंदनंद॥ १०४॥ [illegible] ॥ नासिकू
मा पमाली मदन माला सुन वसरहार॥ नैन चढि वचान लतिलक॥ मुकता मगज गधार॥ १०५॥ अंग अंग प्रतिविंव
परदरपन से सब गात॥ दुहरे तिहरे चौहरे भूषन जाने जात॥ १०६॥ दूरत न कुच विच कंचुकी चुपरी सादी सेत॥
कवि अंकन के अर्थ ज्यो प्रगट दिखाई देत॥ १०७॥ पहुपमाल पहरे गले रोमावलि छविदेत॥ मान हुनाग नै वसन त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जि नासिबां मन धसि लेत ॥१०८॥ कुच घर माल न लाल की उपमा इह मन आइ ॥ बेरि पुरातम जानि कै मनमथ अंग लगाइ ॥
१०९॥ वदन कुं दल लाट तिय । अवनजल भ्रकुटी वंक ॥ मनहु चंद सों पल भयो देग यो राहति संक ॥११०॥ विधु वदनी के वदन पर
वेंदी अचक अनूप ॥ मो नहु का हू कुलवधू विधि धरयो वधू [illegible] रका ॥१११॥ मोती तीय के कान के विहि बिधवरे रुपाय ॥ तिरछी
चितवन तैं रहे । मति फिर बेधे जाइ ॥११२॥ वेषाभाव ॥ लखि गुरजन विच कमल सों । सीस छुवायो स्याम ॥ हरि सनमुख करि आर
सी हिए लगाइ बाम ॥११३॥ नैन लगन भाव ॥ लोयन लागे लाल तें कहा करैं वसि नाहिं ॥ ऐंचे आवत घन बज्यौं छूटे सरलों
जाय ॥११४॥ तनक विरक करी जो परै करमीं उतजी यजाय ॥ देषो अचरज प्रेम को मुरति नैन समाय ॥११५॥ कहों कहा इन नैन को क
थो न मानत नीठ ॥ सिर दै वे को आ करे दीयो न चाहत पीठ ॥११६॥ वडी भेद अरविंद सतजि नरन प्रेम पहिचान ॥ पीय मुख
देषन ग्रिगन कौंप [illegible] लख रची विच आन ॥११७॥ नेरे वर जे नारहैं गरा भ्रमर हलैन ॥ अपवस तैं पर वस भए रवि ससवासी नैन ॥
११८॥ रूप हाट री देष कै गाहक भए जु नैन ॥ जिय गहने धर ले चले विरह दिसा गहि हु सैन ॥११९॥ दृग उरझत सुरझत कुरम
जरत चतुर चित प्रीत ॥ परित गांठ दुर्जन हिए दई दई यह रीति ॥१२०॥ क्यों वसिए क्यों निवहिए नीत नेह पुर नांहि ॥
लगालगी लोयन करैं नाहक मन वंधि जाति ॥१२१॥ लाज लगाम न मानही ॥ नैना मो वस नाहि ॥ ए मुहजोर तुरंग लों ।
ऐंचत हू चलि जाहि ॥१२२॥ दृग जोगी जगदीस के कामदेव को सिष ॥ वसे प्रेम के नगर में लेत रूप की भिष ॥१२३॥ दरस
नहीं कोमष्ट है ॥ होंन न कबहू भेद ॥ वैसे नैन अचात है । जाके जी मन पेट ॥१२४॥ इन दुषियन अषियान को सुष सिरजो ही नांह ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

४
5

नैनमिलनभाव
देखबनैनदेखते अनदेखे अकुलांहि॥१२५॥नैननैनकीजानहीनैननैनकोदेत॥नैननैनकेमिलतही नैननैनकहदेत॥१२६॥तप
तिकुरीतनकोमकीभयोसकलसुखचैन॥प्रीतिवदीकविमल्लकहमिलेनैनसौनैन॥१२७॥नैनमिलजेनारहेनाअपजसहिउरा
हि॥प्रीतमआवतदेखवे॥मिलनअगाउजाहि॥१२८॥नैनमिल्यामनमिल्यामननमैनिल्यामित॥जिसगदकानेइमिल्यासोग
हलीनचित॥१२९॥चतुरनकैउरचुभतहै॥नैनबानकीचोट॥मर्मउरलागैनहीमूरखताकीवोट॥१३०॥मोहधनुषकजल
पिणाच॥दिष्टसरसंधान॥मितनमारतअवचाततडोबिमेकीबान॥१३१॥नैननमैतेमदनसरछुटतविनाप्रमान॥जुतनमधके
तेचेटवा॥लगतकरेजाआन॥१३२॥नैनगजभाव॥अरुनसिंदूरभरेखरेसकुचवागवसहैन॥जिनजानेतितपरतहैरागगजरत्नी
नैन॥१३३॥फटिकेलाजजंजीरकुकिपटकैमुनिमनमार॥द्रिगमदमत्तगयंदह्वैहटकिरहितनगिहहारि॥१३४॥मनवंधनन
हिनरहितानैनाकीयेकरोर॥चरकुंजमदज्यौंवहै॥चलतेतसांकरतोर॥१३५॥मनसिकारभाव॥अवरागजलवंदछुटेगम
यो॥अलकावरिफंदवार॥चितवंसीचुगतौफदेगोसवैबकोनिरवारि॥१३६॥प्रेमलगनभाव॥कंकनछोरतछविलगत॥
वरदुलहनिपीयहेत॥मनदुप्रेमकीगांठह्वै करछोरतमनदेत॥१३७॥नगिहपरागनहिमधुरमधु॥नहिप्रकासतिह
काल॥अलीकलीसौंसोलगै॥आगैकौनहवाल॥१३८॥संमनजासौमननमिल्योकहाकरकहारावदेमकहरनदंचकीमि
लैरहागीताव॥१३९॥रूपनरेखनगुनकछुसवदेखैअंधाव॥तंमनजासोमननमिल्योसोकछुओरेआव॥१४०॥रूपक
रूपजुकहतहैतनकूदेखप्रमान॥मूरखमनकीलगनकोजानेकहाअजान॥१४१॥जहांअटकभईप्रेमकीतहांनक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मप्रो

परविचार॥ कोजानेकिहस्वादलगचुगचकोरअंगार॥१४२॥लीयोसोअमृतजोघाउयोसोपव्य॥ज्यौंपावककचुगेतजै चकोर
मूलफलभष्य॥१४३॥कुतवकोगुरप्रेमकाउचाजातिदिउतंग॥सीसदीयाविनपायतरकरनपङचेषंग॥
॥१४४॥सीसपलटैप्रेमहैसंमनहाटविकाय॥राजापरिजाजिहरुचैसीसदेहलेजाय॥१४५॥सिरसटेजोपाइ
एप्रेमविकावतहाट॥मूलविलंबनकीजिएतवहीदीजेकाटि॥१४६॥जोतोहिसाधुजुप्रेमकीसीसकाटिकरगो
य॥जबजहपैचैहाललौंतवकछहोयसुहोय॥१४७॥वेदपुरानसबैपढेहृदैषोसभकोय॥एकोअक्षरप्रेम
कापढैसोपरउतहोय॥१४८॥चिगनएकजोउपजैप्रेमअगनिजिहिदेह॥ग्यानध्यानसबसंजमहजारिकरै
सबषेह॥१४९॥अहमदराधेप्रेमकेबुझिबुझिनैमिलगांहि॥जेमिलगेतेवलबुझैबुझेतमिलगेनाहि॥१५०॥
उचकरीरनिसकहैअहमदआयाषोय॥वैजलमांनिककैचढैकैजलमांनिकहोय॥१५१॥समदत्तिरंतरचढंत
गिराऊंपङतासलियंत॥प्रेमसराजिहिअचयोकियकियरनकरंत॥१५२॥राजकाजवड्डवेदविधिजपतपसंजम
नेम॥यहसबवातविवादकेगहैसयानेप्रेम॥१५३॥मैमनदीनोतोहजादिनतेदरसनकीयो॥सुघनरहीकछुमोह
प्रेमलाजतुमराषीयो॥१५४॥जौकोउजरैजजीरतनतौतोरैसतमात॥प्रेमततअटक्योलवलमटक्योनैकन
जात॥१५५॥उजियारीप्यारीवनीससितैसुंदजोत॥जादिनतेयारीभईन्यारीनैकनहोत॥१५६॥मैमनदीनोतोहि
जादिनतैदरसनकीयो॥सुधिनरहीवकछुमोहिप्रेमलाजतुमराषीयो॥१५७॥मैमनअपनोजनकेपठयोहोपियु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पासि॥ देषतिहीउनवसनयो॥ हमतैगयोउदास॥१५८॥ मनतौमेरोतुमलयो॥ मनविनतकिंहिकाज॥ कैमनदेहुमयाकरो
5 कैतजल्योतजिलाज॥१५९॥ पैंटाचलेछुडायकै॥ निवलजानिकैमोहि॥ मनकीगैलछुडायहो॥ तोवलिवदिहौतो
हि॥१६०॥ लगनलगीलोगनलषी प्रगटीप्रीतनिदान॥ लगनिअगनितनतमैंमे ज्योंकरिदुरतवखान॥१६१॥ प्रीत ले२
दुराईनादुरैउतममनकीलागि॥ जौजुगभरजलमैंरहै मिटैनचकमकआगि॥१६२॥ कमंलनालसजनहीयो॥ अगाअंग
रह्योसमाय॥ षंडषंडकरकाटीए तातनउनजाय॥१६३॥ रमिमूरतिमनमैंरही प्रीतमकीयहभाय॥ जैसेआंकअका
रसौंन्यारेकसोनजाय॥१६४॥ कौंकैनूठौंकोउकौं क्योकयहोयउदास॥ प्रेमपराउप्रानकेपरैरहैप्रियपास॥१६५॥
मनमोहनमनमोहनामनमोहनमंमाहि॥ मनमोहनसौंमोहनाऔरजगतमैनाहि॥१६६॥ सुमनगांठिजुप्रेमकी॥
परीजुकैहुफेर॥ वक्रतसयानेपचिगए नासुरझेउरझेर॥१६७॥ चलोसषीजहांजाईए तहांवसैव्रजराज॥ गोरसवेच
एउप्रेमरसराकपंथहूकाज॥१६८॥ सेउजहांनमनमिले॥ नहीजातपैलाज॥ भावंताकेउगरमैविनाकाजही
काज॥१६९॥ जौचितरातेमितसौं सोवरजेनरहाय॥ दीपकअंगपतंगज्योंदागततजलपटाइ॥१७०॥ ला
ग्योहोयछुटाईए॥ कालिकौरहैस्वभाव॥ मनकौंकहाछुडाईए जाकेहाथनपाव॥१७१॥ रतारतीनाघटैकोरिक
रैजोकोइ॥ नेहहीस्यौंसजना॥ रोकोगहरहोय॥१७२॥ वेलडीबनराइयांनेहीनाचूकंत॥ ज्यांहिकठविल
गयास्पाहीसोसकंत॥१७३॥ षलवढैवलकरिषक्योकटेनचुवतकुठार॥ आलवालउरझायलेषदप्रेमत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हुडार॥१७४॥मगरउगरदादुरकमठजलजीवनजललेग्रेह॥तुरमीराकहीमीनकौहै ताविलेसनेह॥१७५॥मीनकाटजलधोई
एगाराऊधिकप्यास॥वलिहारीवाचितकीअयमितकोआस॥१७६॥अहोमितमोचितकीतेननहिपाईपीर॥अघरीजीवन
मरनकीज्योंनहिजानतनीर॥१७७॥वलिहारीउनषगनकीजिनकोजंगलवास॥जलपीवैकाकरचुगै॥नेकनछाडतपास॥
१७८॥सरवरहुकौदेषकैपंछीगएउडाय॥कमलकुलीनज्यौंवापुरेहुकीरहेलपटाय॥१७९॥मारतौतैजुभलीकरीकपट
भावकरिदाव॥जवलगजीउशरीरमैतवलगवहैवजाय॥१८०॥चतुरनादसौंमृगवेध्यौमासवेचघनलेहु॥मोकालापरगाह
एाउहमोह्मांग्योदेहु॥१८१॥जालगमरैजुहोयसौयामैचकुरनवाद॥नाहदेतमृगतनतजै॥सीगीउपजैनाद॥१८२॥विरह
दुष्षिजोदुषकहै॥त्रिभुवनआरनलुषचनिचनिजीवनताहिनर॥ताहिप्रेमकोदुष॥१८३॥जिन्हिलागतविषवंडुडवअस
आयपचवडुहय॥तिन्हिलागतषिवरकाडुवंपोचनावमनमथ॥१८४॥समनतनभयोप्रानवसप्रानभयोवसचितचितभयो
वसप्रेमके प्रेमभयोवसमित॥१८५॥जादिनपीयानदेषीरामेहिरानाभरहेत॥सोदिनलेषेआनकेविधिकादेलिषलेत॥१८६
जौनहिदेषौंवदनछविसौंवैकुंडनजाउं॥रहउरीकिहिकामनीमीतनहीउहठांउ॥१८७॥लैवैकुंठकहाकरौंकलपवृछि
कीछांह॥प्रीषमटाकहाहावनो॥जौप्रीतमनालवाह॥१८८॥तलहुपैदीडारचुभैराकलेसकलतननपाटसमानपसा
र॥जौप्रीतमसंगसोइरा॥१८९॥उनकौहितउनहीवनेकौऊकरौअनेक॥फिरतकागगोलननभयोदुउदेहज्योएक॥१९०॥
पंवअगतिसाधनसगमासगमसहनषगधार॥एकविधिप्रीतनिवाहीएमहाकठनव्यौहार॥१९१॥नेहनिवाहही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वनै॥ वनैन सो चैन्या नाघन दै मन दै सी सदै पेमन दीजे दान॥१९२॥ सुरतन ताल रु तान की रस्तो न सुरस रहराय॥ ऐसी राग वि
गारमो वैरी बोल सुनाय॥१९३॥ काम मविरवा बांधियो समद गैरन कै काज॥ जाय परैं ता भवरमै बुडै कौं रि जिहाज॥१९४॥
नैन सूरा ह्वै रणभिरै टूक टूक कै ह्वै जाय॥ ए नेही ह्वै स्रौन तरै। कटत कघार दिन मोग्हि॥१९५॥ जागत सोवत भी सुपन वसा ज्यों घट
भीतर स्वास॥ जो जन जाको भावतो सो जन ताकै पासि॥१९६॥ विधु कै केत क कुमद है॥ इह जानत सब कोइ॥ विधु समान
ता कुमद कै कौंन दूसरो होय॥१९७॥ एक जोति दोय लोइना एक वात है कान॥ एक प्रीत है सज्जना है घट एकै प्रान॥१९८॥
प्रेम तराजू तोल कै जो तन कीयो विवेक॥ तुलाराम का सौ कहौं है मन को भयो एक॥१९९॥ संभोगभाव॥ तिय मुख
य पुतरीन कै लाग्यौ सो भाइन॥ सूर्व न ससि धोक व भयो मांग अमावस रैन॥२००॥ सून ससि वाहन च्यक स्हे तज ऊ वीन कि
न आप॥ चाहत हो आजु हलयो सब चंवनि को पाप॥२०१॥ चो पर खलत अति चतुर चेवन वाजी लाय॥ हारे पिय प्यारी
तहां॥ मांगि मांगि मुसकाय॥२०२॥ मो मन तुषि या जान कै तरुन महा मति कीन॥ कुच तरवी उर लाय कै विरहु कु सब
गह्हि लीन॥२०३॥ संयोगभाव॥ प्रथम समागम को तिया उर रहन सन मुख बैन॥ हा रि मान महा हा करत॥ अबला ही
देत॥२०४॥ तिय हिय ज्यो नग कनक कुच॥ लूटत अनंग अपार॥ ताका रन पीय पी ठपर पायल करत पुकार॥२०५॥
हंदर वै रति प्रीत तै अधिर जु खंडन कीन॥ सुधा पान कर सेष पर मानो विधु किनी॥२०६॥ अनबभाव॥ सुरंग महा
वर सोति पग॥ निरख रही अनखाय॥ पिय अंगुरी लाली लषी वरी उठि लगी लाय॥२०७॥ तीय कीय का जर नैन सौ ति

मानभाव॥

खेदचल्यौ घरआपनैजातजोंहूकोजात॥कोहूगरवगवारीए सरदसमैकीरात॥२०९॥तोरसराच्यो आनवस कहेकुटिल

मनकूर॥जीभनिबोरीक्योंलगैवारीचाषअंगूर॥२१०॥मोहीसोतजरातहैजानदेदहरहजाम॥हाथपकरिकैमोपिहैकामीके

करकाम॥२११॥दूतीकावचननायकप्रति॥होमतसबकरकाममनातमपिमिलनकोलाल॥ज्वालमुषिमीजरतलषिलगनिअगनि की

झाल॥२१२॥जौवाकैतनकीदसादेषोचाहतआप॥तौवलिनैकविलोकिए चलिऔचकचुपचाप॥२१३॥दूरदीकारंगजरद

हैचूनेकोरंगसेत॥मिलेविनाक्योंजानीएलाललतनकोहेत॥२१४॥नैकोउडनज्रदीकरीहरिषजुहीतुमलाल॥उरतैवासछु

ट्योनहीवासछुटैहूमाल॥२१५॥छिनकछवीलेलालडहू॥जोलगनहिवतराइ॥उषमयूषपियूषकीजौलोभूषनजाय॥२१६

सषीवचननायकप्रति॥जंत्रमंत्रटोनाटमन॥एजिनसीषहुकोय॥मनलैनायककोचल्योज्योंआपुरुष्हिवसहोय॥२१७॥सेवाक

हैजुकंतकीकंततिसहीकाहोय॥रूपरंगरचैनहीपीउप्रेमवसहोइ॥२१८॥दयौसोसीसचढायलेआरीकूरैनिजटेर॥जापे

सुषचाहतलीए॥ताकेदुषनहिफेर॥२१९॥मैवरजीकैवारतूइतकितलेतकरोट॥पंषुरीचुभैगुलावकीपरैहैगातखरोट॥

॥२२०॥॥तुमहूंगषंजननरेषविनामनकोंडारतमारि॥कहिहैधोकोउदेतहै॥मतवारेतरिवार॥२२१॥सषीवचनायक प्रति॥

यौंमवीनचितचाहिए॥मुग्धाकौभरतार॥ज्योंहूचसमकौंरिसजजैजैसीमीरसिकार॥२२२॥पोयदलिमलियतनिरदइ॥दईकु

समसोगात॥करधरिदेषोघरचरा॥उरकोअजूनजात॥२२३॥रसतर्कभाव॥मोहिकरतकतवावरी॥करैदुरावदु

रैन॥कहैदेतरहरीतिए॥रंगनिछुरतसेनैंन॥२२४॥रससीसोपीयइषतैवदत्तोरसकीवान॥जोंहागोंवतहोरसतदी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यहैरसकजियजानि॥२२५॥लालतुमारीदेषिए।सबकाहूसौंप्रीति॥जासौंडारीरातहौवाढै॥अमरवेलकीरीति॥२२६॥का
7 हूपावसकेसमै॥गहसोकोकिलामौन॥अबअधिकारीदादुरा।हमकोपूछैकौन॥२२७॥विछुरनभाव॥काहूप्रीतमचल
हिंगे॥यहैकहतसबकोइ॥विधिनारोसीरातकर।प्रातनकवहूहोय॥२२८॥गवनसमैअंचरगह्यौ।घाउनकसोहूजान॥
प्रेमपियारेप्रथमकहि।अंतरतंजोकिप्रान॥२२९॥मोमनमनसायहूउठी।निसुबनघाउउपाय॥विछुरनअकजुविधिलिषे।तूकै
कहावसाय॥२३०॥जादिनपीयानदेषीए।भेटीएनाभरिहेत॥सोदिनलेषेआनवे।विधिकाहेलिषलेत॥२३१॥नायकाविरहभाव॥
जादिनतेपियगमनकियपौरषधारेपाय॥विछुरतरैतेविरहरा।ढ्वारेवैठोआय॥२३२॥असुवनराकजरगिरत।जियपरपर
तलकीर॥कामराजकरवतविरह।वैचनचहैसरीर॥२३३॥पीयवियोगतेविरहनीनैननआंसुधार॥मनहुंचढावत
संभुकोपूजतमुकताहार॥२३४॥सजनविछुरनविरहदुषसहीजातिनगहिपीर॥मोमनपीतलफतरहै।ज्यौंमृग
लागेतीर॥२३५॥प्रीतमचलेजुहेसषीफिरिचितिवौनहिऔर॥विनजाराकीआगज्यौंगयेसिलगतीछोर॥२३६॥
जोवनवंतवसंतरित।प्रानपियारेदूर।चलीपूजैजीयकीमनूंविसूरविसूर॥२३७॥मुषअग्नीवमपावसनयनगृषमी
तरजडकाल॥पियविछुरैतनतीररित॥कवहूनमिटतजमाल॥२३८॥हरिविछुरतिकुंजनमहिलगीविरहकी
लाय॥हमजलवलकैलाभईकुमकठौरहरियाय॥२३९॥वूझनगईतवीवकौमैदुषकहाहोय॥वौदुषदाधंयोकहै
यहदुषदूरिनहोइ॥२४०॥हौजानोहोहौजरीप्रेमपियारेलागि॥घरघरजहैंजुटोवतीतनमनयहैंजुआगि॥२४१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैलिषन्यारीगयानाकीरराष्योनिरधारयहृ।वरहईरोगनिदान।वैहैवैदवोषदवैहृ॥२४२॥कोईसषीषुदायकीमिहरहमा
रीलेइ॥निसदिनपरीपुराराषी रस्दहृदारुदेह॥२४३॥वेगमुलावोपीवकूपकरटटौरैवाहृ॥मरबलोगलनजानहीं।क
रककरेजामाहृ॥२४४॥जाइवैदघरआपनेमेरीपीरनलेइ॥हौंदुषदाधीविरहकीतुकयादारुदेइ॥२४५॥विरह
अगनकेकारिनेकितेककीराइपाय॥वालमआनिवुझायहैकैयहतनजरजाय॥२४६॥हौंहीवोरीविरहवसकैवै
रोसवगाव॥कहाजानराकहततहैसशिहीसीतकरनाव॥२४७॥सुरतअंतप्रीतमचलेकरकलग्योहियनार॥जो
लैआरीहमैगईचांदनीमारि॥२४८॥मोमनकदलीपुत्रज्योंउडतोविलसंदेह॥लालरहैहिरदेसदातातेतजीनदेह॥२४९
अरेसोनहिंमजसी।संदेसोकहजाय॥मिटिहैहरआरासषीकैहरिपासिगयाहु॥२५०॥पियविनदीयानवारहीमोअंधिआरे
सुष्य॥करिउजआरोदेहसषीवाकोदेषौंमुष्य॥२५१॥जौहौंऐसीजानतीप्रीतदुहेलीहोयदेसउडाईफेरतीप्रीतकरो
जिनकोइ॥२५२॥जवसुधआवतमितकीविरहउठततनजागि॥ज्योचूनेकीकांकरीजवछिरकोतवआगि॥२५३॥
ज्योंधाइसीहीसषिनविरहबरनजलजात॥विचहीसूकिगुलावकोछीटेछुइनगात॥२५४॥पलनिप्रगटवरुनीन
चढानहिंकपोलवहिरात॥अंसुवापरिछतियाछिनकुछननछनायछविजात॥२५५॥तातीयकेतनतापकी
कहोकहांलगवात॥ताकीपीयसवीयोलिषत।करकागरपरजात॥२५६॥जरतीवरतीहौंफिरौंजलहरदौरीजा
उ॥मोदेषतजलहरजरैजरतीकहांसमाउ॥२५७॥सीतकालजलमध्यतैं॥निकसतवापरुनाय॥मानउकोहिंहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

8

नी॥ अबहीगईअहार॥२५८॥ हौंजानेपियमिलनतें॥ विरहअधिकसुषदोय॥ मिलतेंमिलिएकसौं विछुरेसरवगसोइ॥

॥२५९॥ तौलौंसजनदूरितें॥ जौलौंनेनउदिठ॥ विछुरेंतैंयहरुगुनभयो॥ हिरदामांहिपयठ॥ २०० जोगनहै॥ रामजंगफिरीकम

रबाधमरगघाल॥ विछुरेसजनमनामिलै कारनकौनजमाल॥२६१॥ केतेमठमंडपअमीमोहनमिटैनजाम॥ डंडोतनकेमि

सफिरी॥ हीसपटकततताम॥२६२॥ मैंजानोघरफाटहै पियहिचलतअचुलाइ॥ अवहिपराअसुरनैभयो सहैविरहघन

घाय॥२६३॥ कठिनकरेकेकंठको॥ तवकिनगयोतरकि॥ पियविछुरतपटोनहीरहोफरकिफरकि॥२६४॥

सरवतसीसीरीलगी॥ पीयतजिहैदवलागि॥ तिओहमसिरसरिसंझिहैवरतविरहकीआगि॥२६५॥ जवतेंतनत

जमनगयो॥ फिरपौनहीफिराय॥ अवसोहैकोसषीतनमनपैलेजाय॥२६६॥ हाहासुरतमितकीचरीरहैनितचित

कहाकरौंतननामिलेमनमिलिआवतनित॥२६७॥ चाहितहौंज्योंउउमिलौमनमोहनकोआय॥ कहाकरोतन

परनहीं॥ परविनउडयौनजाय॥२६८॥ हाहापंछनउलहै चितसंगभेदउमित्र॥ चितहीनेनालगहीनैनाभरानहि

त॥२६९॥ नयोसिगारसंगारसमतिलतिलदाउतदेह॥ उसिगोकारेनागज्यौं नौजकरेंतीनेह॥२७०॥ चूरीकोरें

पिलंगसोचोलीलाउलागि॥ [illegible] ॥ जिनकारनमैपरिहस्रानोसतीगललागि॥२७१॥ नेहदसा

मैहीकहीवारीविरहहुगैन॥ रुदनजरैघरकैरिया दोसकाहिदोजैन॥२७२॥ नीरभरनसरहौगईतरतंगअ

रदास॥ कैविरहीकैवावरैकीरघलेतउसास॥२७३॥ जिनहूं दयातिनपायपापियनगगहरैपैठि॥ हौंवुतैकुज

ठडरी। रही किनारे वैसि॥२७४॥ दीसा ब्रै दीजा हि गे अवधि विचारत आस॥ मारग जोवत दिन गिनत। नित प्रति लेत
उसास॥२७५॥ वे मिमिलऊं कि न वलहा। अवधि रही है सेष॥ गनत गनत ही घस गई अंगुरीया की रेष॥२७६॥ जिन देस
ही साजन वसे कागत हो उउ जाऊ॥ ले च चूरंग रीपास री। पिय देषै तु बाऊ॥२७७॥ मै मन दीनो आपनो सषी कहत हि हो
तो हू॥ पलक परै न पीय विन विरह व्यथा दहै मोहू॥२७८॥ पहले प्रेम बुझ्घा सषी समीप सब सथ्य। अवजा नै जीय वा
परो॥ परयो विरह के हथ्य॥२७९॥ बात कहो तो य पीय की। सुनो तो पीय की वात॥ और वात सब वात है पी की वात
स वात॥२८०॥ विरह तै जत तन मै तपै अंग सबै अकुलाइ। घर सूनो जीय पीय मै मो तिदूं दिफिर जाय॥२८१॥ मै जी
य राष्यो हाथ यहै वात संमझाय कै। पठयो है मन साथ्य। कवहु तो लो आय दै॥२८२॥ पावस आगम घन घुमर विरहन
अत मन त्रास। मान हु वैठक कामनी डारत गिलम कराम॥२८३॥ छुरवा हो दिंत अलि उठै घव घर नि चढ को द॥
जारत आवत जगत कौ। पावस पर मपयोद॥२८४॥ विरह जरी लष जिगन निकसो ज्यु उ कै पार। अरी आव म जिभी
तरी वरसत आज अंगार॥२८५॥ घटत घटत तन घटरही रहीं स पिय मग नाहि। तन कज्यु सास घट मैं रह्यो॥
घटा वनत ताहि॥२८६॥ ये आराधन स्याम। यह काहूं सुंदरि कही यो सनि हसी वामदे षत तुब चूनो भयो॥२८७॥ कहो
तो लाजे नेह पथिक विथा कैसे कहू॥ वरसत मन्हियो मे हा। और सवै जानि है॥२८८॥ अहो चंद सब के दत्तु मा जात
अहि उन देस॥ द्वारावती नंद नंदस्यो कहियो व लिसंदेस॥२८९॥ पीय पीय करै वपीहरा दाधै उपर लोन। पीय मोरा है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पीयकी लपी यकरै सकौन ॥२९०॥ सबै कहत यह जैस है रे री औसन होय ॥ मो विरहन को देषदुष रैन गई हौं रोइ ॥
9 २९१॥ बाला रैनी विरह की मनमथ दरचढाय । रंग रंगत नैना चुवै चित रंग्यो पिय आय ॥२९२॥ प्रीतम मम रवियोग
की लनिली जो यह वात । मषतो पीरो ह्वै गयो स्याम भयो सब गात ॥२९३॥ जव सुमरो तव नाम को नगर सलै नै अधिरै न
हियसमुद्र तै आनि मनु मुकता वारत नैन ॥२९४॥ प्रान रहै घट आय दो ज्यौं जव अंकुर तोय ॥ अन आवन तुम पवन
अति ॥ उरपि रहै पिय सोय ॥२९५॥ छिग फरकत तहां देत त्रिन कहिं संमन कि हियोग ॥ मान हु सकुन तिसो हदै
कुजत बहू वियोग ॥२९६॥ ॥ पाती साहपठाईए जो प्रीतम परदेस ॥ निसदिन हिरदै मै वसे ताको कहा
संदेस ॥२९७॥ पाती लिषत जु विरह की बाल ह्वै गई लाल । लिष्यो आपको आपुही प्यारी जोगिर साल ॥२९८॥
प्रीतम कौं पतिया लिषी लिषत लिषी भरवात । तामै और कछु नहीं कै हा हा कै आव ॥२९९॥ लेषन की छतीयां
फटी कागज चौली धात ॥ अषिउ कारे ह्वै गए लिषत विरह की वात ॥३००॥ विरह विमसों वौंरहो वेगैसो हदिवा
य ॥ सजन घन विन ना उठै रही उचाय उचाय ॥३०१॥ नैन विरह भाव ॥ आठ पहर साठै घरी जैसो वै ते और ॥ नैनन
मै मोहन वसै नहीं नीद की ठौर ॥३०२॥ नीद देष जल दृग उलठि उघूठी जागि ॥ याते आवन नाहि नै कुवन तै कु
कुरात ॥३०३॥ सावन लनत है लज सलन रसना रहत जपि सुष्य । अवरा चीकुटि हि नयन देष जु जौ पिय मुष्य ॥
॥३०४॥ नैन हमारे रहत घरि घरीन धीर धराय ॥ विना पिया रे आपनो भरि आवे ढरि जाय ॥३०५॥ ज्यौं ज्यौ नैन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उलीचिरा करिपलकनकी भीर॥ त्यौंत्यौं त्हटोना वज्यौं भरि भरि आवत नीर॥२०६॥ भांवता के [illegible] घुरे मकोसवूल
सरीर॥ वा रौरा नैना सषी भर भर ल्यावत नीर॥२०७॥ लोचन षंजन दरसकौ। उडते मन के साथ। जेन रहे भीजत अंसुवजल
पलक पंच है नाथ॥२०८॥ नायक को विरह भाव॥ राकक लाहर सिर धरत। तन विषजर न जरात॥ चंद मुषी चित मै वसित ता
ते मन न जरात॥२०९॥ सेज उजरी कुसमर विछौर उजरी रात॥ राक उजरी नार विन सवै उजरे जात॥२१०॥ फिर घर कौ नूत
न पथिक चल्यो चकित चित लागि॥ फूलो देष पलास वन समुहो समुझि दवागि॥२११॥ साधारण विरह भाव॥ दोहा
विरह आगनि विपरीत गत कैहे न जाने कोइ॥ हूरभरा देही जरे नेरे मीरी होइ॥२१२॥ विरह आग न नैनाद ही कठन ना वहीठां
व। वहै व चौतो जरि मरौ। जरै व चौ व गेह जांउ॥२१३॥ मन मै राषौ मन जरे कहो तो मुष जर जाय। अहम दवा तनु विरह की
कठिन परी दहू भाय॥२१४॥ जो मित देष चाहीये तेने नन ते दूर॥ अस नेही अनभावते वहै न कट परहूरि॥२१५॥ अनभा
वंत नियरा वसै भावंता परदेस। इन देषै उन दरस विन है दुष वढत गनेस॥२१६॥ चाहत ते पाऊं नही पांउ तेन लहाय॥
मो मन अनलो पंषज्यौ नही विलंवन ठाय॥२१७॥ प्रीत की रीत अनीत यह दषो सव कोय॥ लष दीपक के सेवरै विरह
ना गज हाहोय॥२१८॥ विरहा उतरयो स्वगति की पोपु रूप पै गोन अनजानै ष्छित फिरै सं मन का घर कौन॥२१९
घर तन तो लैका भया मन भया रावन राय॥ विरह रूप हनुमत भयो देत लगाय लगाय॥२२०॥ तन मन जोवन ज्ञा

वनजारिके भस्म करी सव देह ॥ सं मन जैसा विरहा अजहु ढंढोरत षेह ॥ २२१ ॥ रकत मास सब भषि गयो ॥ नैकन की नीका
न ॥ अब विरहा कूकर भयो लाग्यो हाड चवानि ॥ २२२ ॥ को जानै पर वेदना का सौं कहो सुनाय ॥ जा की सपत गीर ग
ई ता को सुष जाय ॥ २२३ ॥ ता लापडिया तुपाहु कूं चीता पासे रही उघडि सी आयो सुकै जडिया रहुती जे ठवा
२२४ ॥ और जा तिषो यो कषु ढूंढै लीजै पाइ ॥ विरही मांनस अटपटौ ढूंढै षो यो जाय ॥ २२५ ॥ आयो रा कवि
योगी आकर जोगी को भेष ॥ कहत अलेषा मुष सौं भासै अंग अलेष ॥ २२६ ॥ विरहा भयो विछावना
औढत विपत वियोग ॥ दुष सिरांनै पायतै क्यौं न वन्यौं संजोग ॥ २२७ ॥ कहा करै मन वापुरो दब्यो प्रेम
के भार ॥ लंघ्यो परै न कै सहुं निकसे पहुं रपहार ॥ २२८ ॥ चित उसां पिंजर रई हां तन नल गीर है दुकूल
ते क्यौं जीवै वापुरो वेल विछुने फूल ॥ २२९ ॥ जुग रापल देषे विना ॥ युग राम रेजान ॥ कारी निस का
री वडी । दो उ विधि कला पसमान ॥ २३० ॥ तलफ सेज संकलप किय तलफ तिरागि विहागि पलकन
पल सो पल लगै ॥ अलप कलप सम जात ॥ २३१ ॥ औस आगन मेटत सुगम मन रितव रसत तोय ॥ विर
हा गनि विपरीति गति घन तै दूनी होय ॥ २३२ ॥ सं मन न रही वी प्रेम की । रही करे जै लागी ॥ लोहू ढूंढै
नाल है । भरि भरि आवत आग ॥ २३३ ॥ लोगो लं काज रवु री मो सन अजहू आग । चिनगी परी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जुपेमकीउठैसिलगीसिलगि॥३३४॥वाजीदाविधिव्यौंमरचिए नधिरत्रसीकीन॥विरहदुग धमकास
कौ॥तातैफोहादीन॥३३५॥प्रेमप्रगटतनतैभयोतनहीदेतफिरपीर॥ज्यौंलोन्यौंमितहूलगैगातिय
दमईगंभीर॥३३६॥ताहिदिननैपूछिएयऊकहैपतोहौंसाच॥आगिहिलागैआगीसीमेरेतनकी
आच॥३३७॥सबरंगतोतिरवावतनविरहबजावतनित॥औरनकोउरलनेसकैकैसारकैचित॥३॥
॥३३८॥पावककहुतैंविरहउदाहकदुसैविसेषि॥वदैदेहवांकेपरसवाहिद्रिगननहिदेषि॥३३९॥
तिसजुलागीनिसकूं॥तिसविनतिनबुझाय॥आनमिलावोतिसकूंतिसदेषेतिसजाय॥३४०॥३॥
सुमनसजनविछुरे॥ठिगवैठेसोग॥लोऊरौवैदेंनितदिनकेसत्रअषैलोग॥३४१॥दीनोहोयसोपाईरा +
कहतेवेदपुरान॥मनदेपाइवेदना॥वांहद्दमारेदान॥३४२॥मनहीझावामूलसमझायोसमझैनही
मांगैताकोफूला॥ताडारीपातहनहीं॥३४३॥निसदिनराखौंतोहि॥मकरमांहिज्यौंदेखिए॥पैजियत्रि +
पतनहोय॥आगआगपरसौंचहै॥३४४॥तेरोवसिवोवोलिवौमूलतनाहीगोय॥जहांजहांदेखौनैन
भरि॥तहांतहांदेखोतोहि॥३४५॥तुवमूरतिमोमनवसितातोयदरदहीसरीर॥नहितोपोषेपिंजरो +
रतीनवांधैचीर॥३४६॥आंबरियाडावरभरीभौंहैंकांधीपाल॥जोभरियाघालेपडे॥तुजैसंभालि
संभालि॥३४७॥अषीयांसीतलहोतहीं॥जाहिनिहारिनिहारि॥ताहिसुमरततनतपैअजरजविपु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

११ रेयारि॥२४८॥सज्जनविसारेहीभलेसुमिरंकरैंविहाल॥देखौचतुरविचारकैंसांचीकहैजंमाल॥२४९॥
२ मनतौवौसोतुमलयौ।सुवतजिगयोगांव॥अवतोहमपैकछुनहीघुरिगिहारेनांव॥२५०॥स्वपन
स्वपनंतरसज्जनमिले।हौजलगीगलधाय॥उरपतिपलानघाउडिहौमतिस्वपनौह्वैजाय॥२५१॥पल
कलगैप्रीतममिलैछिनननरोकठहराय॥स्वपनेहूअपनेनहीतिनसूकहावसाय॥२५२॥स्वपनैंसा
ज्जनमिले।सुषपायोतिनसाथ॥जौजागौतौदेसुषी।हैहैरहिगईहाथ॥२५३॥स्वपनाहौतोवारिहौ
क्रियोकरेजाघेक॥जवसोउतवपीसंगजवजागेतवराक॥२५४॥देखिरहानेगूदरीसूतोरावांके
गाल॥स्वपनामैराजाभयोजागैवहैहवाल॥२५५॥मिलनभाव॥वामवाहूफुरकतमिलैजौहरिजीव
नमूर॥तौतोहीसौभरिहौ॥राषिदाहिनीदूरि॥२५६॥भावंताआवतसुनतपलकलगतनहिचा
इ॥लोयनललनापांवडेराषेललनवनाय॥२५७॥नैननविनतीबहुकरी।जोमेरीसुनिलेहु॥प्री
तमआवतदेषिकैपलककपाटनदेहु॥२५८॥वहुतदिवसतैंपिवमिलेरहीजुकंठिलगाय।नीदना
आइहौवीहती।मतिस्वपनौह्वैजाय॥२५९॥पियहिमिलसमरुदनकराउचरततियसुभवैन॥विर
हअगनिवुझतमईद्यमलगयोदैनैन॥२६०॥किमुजुयहैहगनारि।ममआयोभायोनही॥निरषत
नैनपषारि॥मलिनहुतेतुवदरसविन॥२६१॥सेउसंपतिपियमिलनविपततोजहिनदियो॥॥=॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संपतिविपतउत्तमकही औरकहैंकछुलोग॥२६२॥मनप्रकृतिभाव॥मैलाहोयनतिमलमनजो टकरैंजोकोइ
घारपरयाज्यौंआरसीअधिकउजरीहोइ॥२६३॥भलीबुरीजैसीपरीमनचाननकीजाय॥अमृतपीवैचको
रनितवहौरअंगारनखाय॥२६४॥मननगमोलअमोलहै।तौरनज्योंखौंजाय॥मनीयानाहीकीचकौंकी
जैआंचलगाय॥२६५॥उत्तउत्तरैफिरमदै।उत्तरैचढैक्षणताम॥मनउत्तरैफिरिचैदे।ज्यौंकुचउत्तरैजान॥२६६॥
ववेकभाव॥भौरांआवतदूरतैलिएकमलकीवास॥दादुरमीननजानहीरहैकमलकेपास॥२६७॥सज्जनभाव कै ५
नही मित्रवरोवरलषतीनलोकमैकोइ॥जैसोचाहैचोंपसो।जैवैसोचितहोइ॥२६८॥सज्जनधनतोपैद्दवैजोति
णमीरैकोइ॥देवतदुर्जनसरपसम॥छीरदियेविषहोय॥२६९॥सुंदरतनचितअतिचतुरराजभोगसमपा
मित्रभावज्ञानैनहीसमनसोनलनाय॥२७०॥वैरीहूकोगुनकरै।वडेकरतउतास॥कूटैचीरैचंदनहियद
नकरोतहिवास॥२७१॥२७५॥हेमउतमआगरसहैआपतनत्रास॥वाजीचढैचवगुनीकसेकसेलिवदास॥
॥२७२॥सज्जनजनकंचनकलसतोरिनिरस्तारयहाल।दुर्जनहितकुंभारघटविनसनजुरैगोपाल॥२७३॥
उतमयहैजुपारिखामनहिनआनैगास॥काटचोघोसोचेदियोमधुरैवाजैवस॥२७४॥मलोननत्रंभ तर
लापनै॥जोड्डवदीजैत्रास॥ज्यौंज्यौं घरियतआगनिपरत्यौंसोआगनेलवास॥२७५॥औरापरीयो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परिहरै॥सज्जनसहजसुभाय॥जेताछिद्रसरूस्करैंतेउनऐरवतजाय॥२७६॥मित्ररहैहैंउनचाहीए॥होइकोरद्रसदोस

12 प्रीततोपाहनरेषसम॥बीजकममकारोम॥२७७॥सज्जनएहाचाहीएजेहातरवरज्ञान॥फलभषिछिनपानीपिवतना

हिनकरतजमाल॥२७८॥सज्जनएहाचाहीएजेहापानीरंग॥षारीषासोषारिषावहमितामवरंग॥२७९॥दुर्जनभाव॥

दुर्जनऔरबबूलदुमाकंटककुटिलकुलोक॥आपननिरफलआनफलरोकनजायअसोक॥२८०॥दुर्जनबुरो

भुवंगतैजिनअसोकपतियाय॥कानसौंलागतऔरकेआनकाउमरजाय॥२८१॥अहमदतजौअगारज्यौचोषे

कासंगसाथ॥सीरोकरकरोकरैं।तातीजारैहाथ॥२८२॥बुरोबुराईनातजैजौहठठिलागैलोग॥घनकोजोकलगार

केदुधनपीवैअसोक॥२८३॥संमनअरूरहरस्वभावयहज्यौसुमित्रसोईठ॥जवषालीतवसामुहीजवसुभरततवपिठ॥२८४

दुर्जनकौंकविउदकहैजदपिदीजैहेत॥जैसैरंगकसूंभकौछिनकचटकपुनिसेत॥२८५॥सम्मनदुर्जनकीमिलन

केसूकलीरसाल॥मिलतैहीमुषस्यामकियं।कहाभलेपुनिलाल॥२८६॥दुर्जनकोदुर्जनदहतयेहीविरद

बान॥अघरनकौअगिवानहैपानकरावतप्रान॥२८७॥कपटभाव॥सेउषीराकीमिलनकहीवातहैचीन।

कहाभयोऊपरमिलैभीतरफाकैंतीन॥२८८॥घूअंगूरीवफूचागिलतदिनतेअतग्रिहिरिषाय।वलिजावनमैं

औतलषि।कोचालितुमग्रिपत्याय॥२८९॥वपरोगायसहीम्यलौ।तनमनएकहिरे॥मूंसैलौतनउजलो

कपटीवगुलाअंग॥२९०॥पैपानीऊपरमिलैअंतरमिलैनहीर॥कौंमरालिनीरहितजैाकोगहिलोवेषीर॥२९१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कपटीकारीकोकिलाकपरकागगर्हिजाय॥अंडपरायामारिकैअपनाघरेवनाय॥३९२॥सठभाव॥आंखिनप्रासितानहीनही
अवनरसरूप॥ताकौमनकैसैमिलेकहोसयानोवुद्धि॥३९४॥प्रेममंदजानेनहीचिरहभारनहिंलेत॥तंलतैवनम्रगही
भलेसरपलटैसिरदेत॥३९५॥वहलैतोसमझैनहीफिरपीछेपछिताय॥वाहैपेडउवेरूलकेआवकहासंभाय॥३९६॥
ज्ञानीनहीनजीकतैंअवडारहिंरूल॥सेवलउपरघसउवाकीयोसोवानेभूलि॥३९७॥भलीवुरीसमझैनहीजोअपनेकीवा
त॥काहूरनाहीएकरसलुनेपाचकीसात॥३९८॥निघ्राभाव॥जिनाकमोकोनहीगुरगतोकम्मविसारि॥मतिसरमंदाथीथवे॥
रवारेदरवार॥३९९॥ज्ञासोकीजेनेहतटेकाचैलतज्यों॥अहमदवडोजगेहसेवाहीससोनही॥४००॥वडेघरजनमेकहाभयोव
डोभागसंगनाहि॥जैसेफूलउजारकेविथालागरुरिजाम्हि॥४०१॥देहघरेकोगुनयहैदेहदेहकछुदेह॥वहुरुदेहनपाइहै
अवकेदेहसुदेह॥४०२॥जोजलवादैनावमैघरमैवादैदाम॥दूहुहाथउलिचीएयहैसयानोकाम॥४०३॥ज्ञाविकरतिपतिदुम
हूरीउदेतसवपात॥तातैंनवपल्लवभएदयोनहिकहूनजाय॥४०४॥आपुनतेंसमझैनही॥कहीनमानेचित॥तिनसोंसं
गतिमतिकरोकहतसयानेमित॥४०५॥लौंरौवडोदयालकहिचहिएएवसहाय॥चष्यचिरवतचिरमीविनाकरकपूर
उड़िजाय॥दयालसंतसंगतभलीमिटेनकुलकैभाय॥निपरनीवचंदनभयोकरहुटनहीजाय॥४०७॥गिरतेगिरिराघा
आयसमुद्रमेवुड़िरा॥मरीरामहूरषायम्गिरेमितनकीजीरा॥४०८॥सज्जनरासाकीजीराजैसानिसअरचंद॥चंदविनानिमि
अघलीनिसिविनचंदामंद॥४०९॥सज्जनरासीप्रीतकरिजैसीकरीमयंक॥जगतकलंककीवहरह्योतउनवनज्योंकलंक॥४१०

त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहिवोसुनवोसमझवोमनकोमनहीमांहि॥कवहूवाहरनाकढैज्यौंकूराकीछांहि॥४११॥सेउनैकनविसरीए।दुर्जनदुखसहस्व
13 भाव॥ओटैपरप्रानहीहरतकोटैलोलगपाय॥४१२॥म्रदुसौंम्रदुकठिनसौंकठिननंदयहमतिसार॥अलिअंबुजमेगडिरहैका
ठहिकाटनहारि॥४१३॥वोलननाहीमोलजेकोईजानैबोलकेहिरातराजूतोलतवहीबाहरकाढिए॥ ४१४॥:
क४ सखिपररांविवेकनहिंकहतनलावोवेर॥हासीहसखयारविनरसनाहीसमसेर॥४१५॥वसैवुराईजासतनताहीकोसनमा
न॥भलोभलोकहिछांडिए॥खोटैग्रहजपदान॥४१६॥ताहीकोअपनोकहैअपनायततामांहि॥यामेअपनायतनहींसोतो
अपनौंनांहि॥४१७॥पांनीपानीकहतहैपानीमैहीजीव॥पानपचावैहैआपनौपांनीनामिनपीव॥४१८॥नीचकाजहैमांगनाछु
टीभलीयहरीति॥ ॥जिसकानावजुमागनातिसकीक्यापरतीति ४१९॥मांगनमरनसमानहैकहैमलोहरवैन॥दनियरदीघल
छुभयोगयोदधिदिसलेन॥४२०॥हंसातनमदमछांडिए॥जेजलखारोहोइ॥डावरिडावरिभटकितौभलोनकहैसीकोइ॥४२२॥
तौलौहंसपखानचुग॥समौकाटियहगोहि॥जोलौवेरहरकावचा॥नेकसयानैहोहि॥४२३॥जाहिवडपनचाहिएतजैनउत्तम
साथ॥पातढाककोपानसंग॥पहोंचतराजाहाथ॥४२४॥जिहिउतंगचढफिरिपतन॥सोउतंगनहिंकूप॥तिहिहिठभलीतिर
आयवसैसोसुखहैदुखरूप॥४२५॥जिनकोडरेरकाउरनहीनहीलोककीलाज॥तासौंवोलविगाडिए॥उठिभलीवघराज
॥४२६॥घहूजमलासांचीकहैमानलेतसवकोइ॥कंरोपराधोचितवैपहलौंअपनोहोय॥४२७॥मनमेराखोगोपि।
अपनेकीनैकीवुरी॥चलैजुऔरनलोप॥सोनरअरखजानिए॥४२८॥संपनप्रीतितिनिकीजिए॥काहूसौंमनलाय॥अवमिल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क

नवदुविछुरन। सोचततहीजियजाय॥४२९॥ नैंनामिलततौमिलनदे हियरातू न मिलेह॥ नैंनारोरा घरट ही दुहुंधायमरेह॥४३०
७ दीर्घसासनलेतदुषसुषसायरहैंनभूलतदईदईकहाकरतदईदईसुंकूल॥४३१॥ प्रीतकरेसेवावरेतनमनअवरहिदेह॥ कौ
नसयानपमलकहिचितदैचिंतालेह॥४३२॥ सेउकलीकनेरकीरंगरातीदिनचारि॥ हैकैहैकरईनीवसीअंतपराईनारि॥
पहरैअपनैजागिरा नैकुनरहिरासोइ॥ अनजानेपललागैहैकाकोपहराहोय॥४३४॥ दिगजीतनहेजगतमेरेदुमसंपति
पाय॥ जोरावरसोलेयफलरहतदुषीललचाय॥४३५॥ समसोममताकीजीरा अनसमसोवेकाम॥ उंजाकनकवरावरी
करीतौमुषभयोस्याम॥४३६॥ घुटहैउंगेहीमयोरेसुकसमकउपाय॥ जोचाहेकुरंगमहिमिलोवोलनवचनवनाइ॥
४३७॥ लद्दूमरायोनगरकेसुनतकाककेवोल॥ रेसुकजवतौकौतकत। तवहीतकतगिलोल॥४३८॥ अरेहंसयानग
६६ रमैं। जैयोआपसम्हारि॥ कागनिसौंजिन्हिरीझकेकोइलदईविडार॥४३९॥ फलदलसंपतिपायदुमकरतनहींपरका
ज॥ विनउपगारवियाविभोआवतनहीनलाज॥४४०॥ पिरचलरेभोरावदनभोरीमनअकुलाइ॥ वाचेदनके
रुषसौंरहेनागलपटाय॥४४१॥ पवनगवनइतमतिकरे। हितकरिकहितजिताय॥ ह्यांतेरोपेडालषतविरहनाग
मैंहुवाय॥४४२॥ ज्ञानभाव॥ भलोबुरोक्यौंजानिरामषसौंवोलतवैंन॥ हिरदाकीसवकपटताकहैदेतहैनैंन॥४४३॥
जैसेउपजेजीवमैंकरिलेषनलिषलेत॥ त्यौंपरमारथप्रेमकोनाथनैंनकहिदेत॥४४४॥ प्रस्तावभाव॥ जेहीसिंघरसाए
रसरनकोयहैसुभाव॥ ज्यौंरघायलहैतहूत्योंसोंआयैपाय॥४४५॥ वंहिसंकरकायरकेवुलहिक्यौंकरउपजेसूर॥ पार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१४ कयरक कदलीकैं भाग पोजायक रु॥४४६॥ विप्रवेदजो नायदेवे साचाहे प्रीति॥ वनिया वनिजकरै नहीं॥ रहती नो विपरीति॥४४७॥
दीया भगती या कौं कीच ससिरजाम॥ विन नाम॥ ए च्यारौ कवि मल्ल कहि वडे भराकिह कांम॥४४८॥ सज्जि कलक दामो समद
कावलह कैटकनाल॥ जां न्रदु षी मूरष सुषी दई कावु ऊजमाल॥४४९॥ सेउ समयो पुरुष को होय न हीसदा चारि॥ त्रिन
वूडे पषि रतिरै॥ अवनी अवनी वार॥४५०॥ सेउ समया वाहिरौं सगो सगा के जाय॥ हसि कुस रातन रुषही मोगरगातें जु
उराय॥४५१॥ को कहि सकै वडिन सौं लषै वडो यह भूल॥ दीनै दई गुलाव कौं इन डारिन वै फूल॥४५२॥ दुषसुष कहे रदे
वैसदा मोल नल्या वो कोइ॥ जा जाकी चारी वहै सोई परगट होइ॥४५३॥ सेउ सबतन पीरहै विना पीर कोउ नांहि॥ जो पर
पीर न जान ही सो वे पीर कहांहि॥४५४॥ मोहन अंतरकी वृथा नै न निहून समाय॥ जो जाने तासौं कहो कहि रावात व
नाय॥४५५॥ कहा नठ सौं मित्र [illegible]॥ कहा निगुन सौ नेह॥ कहा सूंम सौं गुन किरा कहा फागुन कौ मेह॥४५६॥ कोई की
जेन जना भीड़ न भाजै त्याह॥ अजा कंठ पयोहरा दूचन पारी त्साह॥४५७॥ सज्जन सौं सन कुच्छ वसे दुर्जन सौं न वसाइ॥ मां
नमहा तमरो सरस॥ जो की जैल अटाय॥४५८॥ उत्तम संगति मल्ल कहि रहत प्रीत ठहराय॥ नीच नेह अरु षर सवद घटत
घटत घटिजाइ॥४५९॥ तेई सज्जन मल्ल कहि सेज समर सवदौरा॥ इषदंड अरु दुर्जन नर गांठि गांठि रस और॥४६०॥
सज्जन दुर्जन की मिलन हौरा षौ समुझाय॥ आगि अंति को चूसनो इषदै तव ताय॥४६१॥ विन्नु मित्राई मित्र पै चित्र
[illegible]वोहे मोर॥ जितेव [illegible] ससारमै [illegible] एक सिरमोर॥४६२॥ रुषीवती यन जो तिन रहि चर [illegible] गेह॥ जिहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सनेहसोईजैरे॥कहादीपगकहादेह॥४६३॥वडोवडाईनातजेलघुअतिइतराय॥तरुनतपैतपनातपैवा खारपाय॥४६४॥
वडोसाईपरकाजकोवडावडेमेफेर॥दीपगसोकहिएवडो॥घरमेकरततअंधेर॥४६५॥वडेनहूजेगु ॥ऊंचरसढाईपाय॥क किनर
नकधतूरेसोंकहितगरूपाघडेनजाय॥४६६॥मेउतंदुलतुसगहिविनजोन्नमावेकोइ॥नापरिवारवडपनेकरि
देषोजोहोइ॥४६७॥तजैसभाउनसापुरिसापरैअवस्थाकोइ॥औंधिकीराअगनिकी॥ज्वालासौंघीहोइ॥४६८॥
तन्नतनप्रकृतिनसिहैमहततनर॥संपतिविपतिसमान॥उदैअस्तअनुरागमुषभानमानितजियजान॥४६९॥वडोवडेसो
छलकैरेजनमकनेडोहोय॥अजऊतरसीसिरचडैवलिकेहारेसोइ॥४७०॥पंचामैसुषउपसहैसोरीनारो॥पंचन
तेजोवगिहरैंताकोसुषकारो॥४७१॥नेदसुआदरपायकेकरिलेआपवषान॥जौलगकागसराधपंषतौलगतौ
सनमान॥४७२॥गोधनतहरषोगिरिधरीकुलेऊपजाय॥सममऊगीसिरपरपरतएवसुवनकेपाय॥४७३॥क
घराकसुघरनहिसरनराकोसुत॥वडेपापतेहोतहैवडेवापकेपूत॥४७४॥भलोभलोसवकहउठैवडेवंसकी
ब्रान॥कुटोनकोऊकहिसकेधूवोअगरकोजान॥४७५॥वारोंयहैवडपरोसरलेपेडषिजूर॥पंषीघ्याह
नवैडहीफललागेपैदूर॥४७६॥विनाउसीलेचावरीविनाकुचकोदेह॥विनासिधकोजोगनाफिरैलपटेषेह॥४७७॥
उजडषेडाफिरवसै निधयाधनहोय॥गयानयोवनवाऊडेमवानजीवैकोइ॥४७८॥सदानफूलेतोरई॥सदानसाव
नहोइ॥सदानजोवनथिरहै॥सदानकोऊहोय॥४७९॥सन्वोंचंदकसुमअरंगनदीतीवहुमडाल॥रेत भीत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१५ 15

सलीपनो। सौदिहहोयजमाल॥४८०॥नीचघहिराउलसौफिरतगहैगेदकोपोत।जेतोमाथेमागिराते तोउचोहोत॥४८१॥संग
तिसेंफल लहै स्वातिसलिलकीसीच॥कहुकपूरमुकताकहूंकहूंगरलकहूंकीच॥४८२॥संगतसंगसोभालहैकहतसया
नैवैन॥सोरकाजरठीकरीतोरकाजरनैन॥४८३॥संगतिसाधअसाधकी।कहीदयालयहजानि।पायरवुजतमानलेनाचति
रावतश्रैनि॥४८४॥उत्तमवच्चनगयंदरदनिकसफिरतनहसोइ॥नंदवोलनरनीचको कमठसीसममहोय॥४८५॥सोध
सीयां जो अतिप्रियतहैदुषमूलनदेह॥इकसेवाअज्ञानकीइकअरागितकोमेह॥४८६॥गुडसीयागुडसोनतपताअ
श्री वगातपतनः नादानैनातपतननिरषतांरस्वतपतनचाद॥४८७॥रागसुनतअरहिरघुनतसनकोनसुभाइ॥
असवनकौरउरभाज दिमरतहलाहलाय॥४८८॥चाजिकचकवाचनुरनरतीनोरहितउदास॥वरघसरष
पसुतदासषीप्रवीराज॥४८९॥घोराहरियानूषडापारीगोहदानेह सुकोकाठनजानहीकिधाजलमेह॥४९० २
सेउसंपतिकोछिरोसीचतहीकुमिलाय॥जलकाठेफलनीपजेफलकाठेजडजाय॥४९१॥ताचकहेतोमारी
राजूरेजगपतियाय॥कलियुगकारीकूकरीजछोडेतोषाय॥४९२॥षाटकोसहारहै देषोपरवोसाल॥अ
धमुषजलमैगिरेसोचकडतलाल॥कोयलसुतज्यौकागलोपालेअपनेजान॥जोजाकोताकौतहांमि
लहैजायनिदान॥४९४॥सीचोसनेवनायकेलाहेराकहिठार॥सोनहारविवानवेचम.. कारसीओर॥
४९५॥कागगेयककोकहरे॥कोयलकाकोदेत॥वानीमधुरसुनायके।जगअपनोकरलेत॥४९६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मेषरुननअरसापुरिसनेतीछवरनजाय॥ कैसवकौंसिरपररहै कैचनिमाउविलाय॥४९७॥ जैसेचहरैअंगु
काहहोयसरीर॥ राषेतेअपजससअधकोटतेअतिपीर॥४९८॥ कोरिफुलेलकौआचमन सोठोकहतसराह
चुपरहैसुयोगंधीचतुरेअतरदिषावततादि॥४९९॥ पातगराकोसोचनरहैदुषतरवरमनमाह॥ आरापथि
कनपायहै॥ सनमुगिपाछिलोछांह॥५००॥ जाचंदनसौंजगतउरसीतलताअतिहोय॥ कलकितताफल
फलकौनाबोलतनकोइ॥५०१॥ हहमवपारावारकोउलंघिपारकोजाय॥ तियछविछाइगाहनीगहैवी
चहीआय॥५०२॥ राकाकनकअरकामिनी हालोवीतरवारि॥ जातझतेहरगैमनजनकौंलरावीचहीमारि॥५०३॥
दूवादूकेकारगोदरदरस्वानफिरात॥ तुरसीचीरनकेचरेअलीहोमनषात॥५०४॥ बाजीहावडाउपरकित
सोकरैसनेह॥ रातेंवसैदिनउठचलेआधिगैननमेह॥५०५॥ कहालंकपतिलेगयोकहाकरगगयोबोय॥
अपजसजससंसारमेंअवनरहैनोसवकोय॥५०६॥ प्रानगरातेपतिरहैरहैप्रानपतिजायँ॥ गजीयोवापुरष
कौंकहतनमंहमदसागहि॥५०७॥ जपतपसंयमविधिवरततोलोंज्ञानगुमान॥ जोलौंमनमधरायवेकरनहि
चठतकवांन॥५०८॥ तंत्रीनादकवितरसरसरागरतिरंग॥ अनवूडेवूडेतिरेजेवूडेसवअंग॥५०९॥ किती
कगोकुलकुलवधुकहेनविहिसिवदीन॥ कौनेतजीनकुलगलीहैमुरलीसुरलीन॥५१०॥ सकसघत्रपति
वसिकीयोअपनेसीवलवाल॥ सवलासोअवलाकहैनरषलोगजमाल॥५११॥ वसतीकाहनौंकरीपुरष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९६ 18

अरुदिवसतीहोय॥वसतीतवहीजानें।एवसतीकरैंजुकोय॥५१२॥चतुरस्त्रपरसनायका जटमानसकेहाय॥लीजीवस
ज्योहितहै।जउमानसकेहाय॥पेउतरूरवनतालसितवसौनहीनरसोह॥तंमनसोजन्योग्यिवाजननीजोवनबोइ॥५१४
घनयोवनअरुरूपकोपधितावैसुरवकार॥वहितोजोवनचरित्रियोवैरावैहीवार॥५१५॥नरनारीरोदीरहितवलतैगढे
लेत॥सवैविगारीपेटकैयाहीहूभरपेट॥५१६॥नगरसबैवनियानिगउरासिषनवालेनजांहि॥गउरमोलैतोलेगउरहिगउर
वेचेगउरुसाह॥५१७॥सतीसनेहीसूरमाअरुपानीगजदंत॥एतानिकसवाहुरेजोजुगजायअनंत॥५१८॥पसूपंषी
जलचरअरुवलनरतियतरुनैवाल॥अपनेजालेआपनेमवहीजीवकुसाल॥५१९॥वारघिवडवानलवहेजादौजिनव
तिवाहु॥सतरहिकलकीदषकेहोतउदरकोदाहु॥५२०॥जोवनघोवीजगप्रगटधायोसिगरोदेस॥विनसावनविन
सिलसलिललैहिउजारेकेस॥५२१॥सम्मकचअरुधियारमेंकीनेवडेजतउपाय॥सतचिउरकीचांदिनीचोरीकरी
नजाय॥५२२॥विधिग्निहारतमगचलत॥उकतिकहतेसाहु॥जोवनरतनजुगिरगयोपगपगढूंढतताहु॥५२३
तरुनाईकीसांजकोमोरदिषाईदीन॥विरधपनैकेभोरकौसांउनपालीकीन॥५२४॥जोवनसिकदारीत
जीचल्योनिसानवजाइ॥सिरपरसेतसिरायचेदयेचुदापैआय॥५२५॥सीसकिनौतीउजरीकहतसमनकिह
भाइ॥मौतसंदेसादेनकूवानविलंवीआय॥५२६॥कागगेहलोलीकटगएवगवैठेमिलिसंभलिघनफिर
सीरतेवजरीअजकिकाहि॥५२७॥दयालगुनीसुभावयहसुपगहितगनरोसि॥औगुनगाहकचालिनी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्उनकहारतहोर॥५२८॥दुषीयाआगैदुषकहैपीरनजानैलोइ॥पांवनतरकीर॥दुषीयाआगैदुषकहैकहोक

जगरचितवनचतुर चोर

हाफलहोय॥५२९॥अपनीगरजकोसमबोलतकरितनिहोर॥विनागरजबोलेनहीअंगलहूकोमोर॥

॥५३०॥कारजहीवितहेदसहरोरैमउरषिच्छरिलाज॥दुरितफिरतिहैदुमनिमेनीठिकंठविनकाज॥५३१॥

जेतीसंपतिक्रिपनघरातितीसुमताजोर॥वढतजातज्योंज्योंउरज॥त्योंत्योंहोतकठोर॥५३२॥जैसेघो

टेनरनसोंसरतवडेकौकाम॥मढ्योदनामोजातहै॥कहिचहाकेचाम॥५३३॥वडेनकीसंगततगहैकहै

उायहोइ॥गलीनीरगंगामिलैसिरवंदैतवकोइ॥५३४॥दयालनिरमलयलेहै॥लघुदीघदरसाय॥

जलपमैलिलपरसीपमै॥मुकताहलहैजाय॥५३५॥कहतवातहेकवितसोंवातेकवितकहाइ॥

आवै जोकहिवाततोंअघररचैवलाइ॥५३६॥रहतदूरतिनतमरहितः॥अचरिजकहजमौन॥तिमरकह

तअरासरनदीपगयहमतिकोन॥५३७॥वनाघाहनहोयघह॥निरषोंसहजसभाय॥दीपगडरलघु

देहघरमन्योवरयोतनपाय॥५३८॥कछवारोकरतव्यताभारसपालरदेइ॥निजकन्याअरुकामि

नीकंठलाइजुगलेइ॥५३९॥यहकोईजानैनहीहूरकहामविष्य॥वहुरवारोसोंअवकरोराककहा

कैलष्य॥५४०॥साहिवतेसेवकवडोजोनिजघरमसुजान॥रामवांधिउदधिलांघिगयोहनुमान॥

५४१॥जोमतिपीछेऊपजेसोमतपहलीहोइ॥काजनविणसैआपणोदुर्जनहसैनकोइ॥५४२॥राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कूरकंभा॥

१२ . १७ मनतोगाहिकभयो नैनाभरादलाल॥ मूरखबसमनवेचही मतौंफिरैंजमाल॥५४३॥ मनिआदिरं
रवतेनिरसउपजतहोतअहेत॥ सोआदिरकविजनकहैंतियमुखसोभादेत॥५४४॥ घूंघटकरिरहिरी हि
रचली॥ जानतहौकिहिकाज॥ चितचुरायोसोमना लनमुखआवतलाज॥५४५॥ चिंततेरोजोकरैर
चिपचिसुरतिचाल॥ वहचितवनवहमुसकानकौंकरिलिबैजमाल॥५४६॥ सममनदीयाघउनवस
अचलसरनपपठि॥ कारहीनोघलैकमलकठिनपयोदहरदिठ॥५४७॥ मिलेविनामनथिरनहीफिर
देखौंसमठोर॥ सरसेकोलखऔरहैपरसेकोलखऔर॥५४८॥ भूषलगेभोजनभराकोनरहैबाय॥
वहरसऔरकपूरजोहिजिमललचाय॥५४९॥ मतिवारेकीबातकोजगमैलषैनकोइ॥ मनमोहनसोई
लषैजोमतिवारौहोय॥५५०॥ सहसमहलोएकपीयचिहिदिसदियपियहोइ॥ नाजानूउसपीयकेको
नलहागनहोइ॥५५१॥ वहतसवैवैंदीदएआंवादसगुनौंहोत॥ तियललाटवैंदीवनेअगनित
हितउदोत॥५५२॥ कनकनवोढाकामिनीसहजमिलमलेलत॥ प्रीतरचोटाएकहीसोजेही
छविदेत॥५५३॥ लरिकालेवेकेमिसनलंगरमोढिगआय॥ गयोअचानकआंगुरीछातीछैल
छुवाय॥५५४॥ सोवततउरजनभीरमेअतिआंधियारेधाम॥ भोरनिदेखतताहिकैहियप्यारी
जिहिठाम॥५५५॥ अनयारेदीर्घनयनकितीनतरुनसमान॥ वहचितवनऔरैकछूजिहिंवस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होरसज्ञान॥५५६॥मोपैंपामलीसुमनकीक्योंडरमहीनजाय॥करलीनैंप्रफुलितरहैं॥अनपरसकुमिलाइ॥
५५७॥रीतिवर्ननभाव॥पायसटनऋधियारमैंद्विरहोभेदंनहिंज्ञान॥रातिद्योसजान्योपरतलाषिचकइच
चकवान॥५५८॥भावभाव॥कुतवसेदमकरंदकनतरुतरुतरुविरमाय॥आवतदछिनदेसतैंथकौंव
वहतमुख
डाहीवाय॥५५९॥छुटतिमुठनिसगहीलोकलाजकुलचाल॥लगेदहूंनिरकाजरही चलचितनैं
नगुलाल॥५६०॥हास्यरसभाव॥विनतीवादीआरमकीकरीवेदसौंजाय॥रहिवेदऊरुबहैमहायाकौ
यहैउपाय॥५६१॥वोधनलैरासानकेपारोदेतसराहि॥वैदवधूहसिभेदसौंरहीनाहमुखचाहि॥५६२
प्रतिहरकमारगजोगगउरभराभयोसुतसोग॥फिरफूलस्योंजीयजोयसी॥समझनारसजोग॥५६३॥प
रतीदोषपुरानसुनहसिमहलकीसुखदानि॥कंपिकरिरापीमिस्रहमौंहआरसिक्यानि॥५६४॥पंडितकि
योचितराकंचीकहतुननेकलजात॥दीयावतावतओरकूंन्नापकोधरेजात॥५६५॥चातकभा
अउाकोरिकिवैचाचेरवातुवपरमीरिनिहारि॥मरिचउलचातिगाचतुरडारेवाहिवारि॥५६६
तुरसोजातपपीहरापीयेनछीलरनीर॥कैजाचैसुरपतिकोकैदुखसहैसरीर॥५६७॥नहिजाचै
नहिसंग्रहैमृमिपसौनहिलेय॥तुरहीऐसेमांगनैवारिदविनकोदेय॥५६८॥मानराषिवौमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१८ 18

गीवौपियसौंनितनवनेह।।मुरसौंतीस्यौंतोवनैजोचातरृतलेह।।६९।।नहिजाचैनहिसंग्रहैसीसनवावैनहीं

नहिलेय।।।।।रटतरटतरसनाघटी।त्रिषासूकगयेअंग।।तुलसीचातकप्रेमकोनितनौतनरंग।।७०।।

अद्वनितिध्यावतागेहिरोगिदेतघननीरफल।।चातकचतुरसराहियापरसोनिवाहनो।।७१।।तुलसीचातकम

तैसंगतिहूधिउवषानि।।प्रेमतरषाचढतैभलीघटैघटैगीकानि।।७२।।वध्यौवधिकपरनिपरयोजललउलटिउगार

चौंच।।तुलसीचातिकचतुरसौंमरतहूलगीनषोंच।।७३।।चकोरभाव।।हूलनप्रीतचकोरकीससिनिरषतनिसजा

ति।।वासरकौउरजीवमैपलकनहीपतिजात।।७४।।चोविनचुगतअंगाररहुजाकेवलकेजोर।।सोहजौजा

रैहियावैसेजीराचकोर।।७५।।पावकचुगतचकोरनित।।मतमकरननकौअंग।।हैवमृतिस्रिवसिरचंदतापाउवस

सिसंग।।७६।।भ्रमरप्रसंगभाव।।वहदीहयौहीगरो।।गएकंमलसरवास।।मवरफिरैदिनकाटतौआकधतू

रापास।।७७।।पीऊजसरदिमांतिवैनवमंजिरतरुराज।।कितमकमलपरसेभवरालटतननआवतलाज।

।।७८।।जितदिनदेषैवैकुसम।।गइसुविततिवीहार।।अवमलिरहीगुलावमैअपतकटीलीडार।।७९।।सघ

नगुलावकलीनकोरसलीनोचितचाय।।मधुपकटीलीडारसौंअवभाजतावनिजाय।।८०।।रही

आसअटक्यौरहतअलिगुलाबमूल।।हैहैफेरिवसंतरितिइनडारनिवैफूल।।८१।।भौंरभौंअभोज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जकौं तजत कौं सत्ति हटेक॥ कवला कौ जन कवलतें न्हरा निकसै नै क॥५८२॥ कुंजर प्रति पुंज अलि गुंज
करत हैं आत॥ अनुरवि उरमत जिम ज्यौं रोवत निज सिसजात॥५८३॥ भौंरा भौं रविआस मुषविलास सुरधा
रकिय॥ कत तवास लेवां सलैत नास दुषनास कौं॥५८४॥ भमरा ए दिन कठिन हैं सम्झ अस होत न पीर॥ जब
लग फूलै केतकी तव लग बिलंब करीर॥५८५॥ जौ भौंरा सत लेघनो फूल करीर न पाय॥ केउ ठिवैठ केतकी
केल घिन ही मरजाय॥५८६॥ पतंगभाव॥ परत पतंग निसंग मन पेम परनि कौ लाग॥ आगे दीपक की ष्ठसी हीरें
ऊऊ कि आग॥५८७॥ परयौ पतंग प्रेम वस निरषि जोति निज नैन॥ तन मन सौं प्यास जन रहना हम कौ चैन॥५८८॥
जेह तस्मन के सैवने अन मिलता सो संग॥ दीपक कै भावे नहीं परि रमरै पतंग॥५८९॥ तेल जरे वाती जरै सी ऊ
जरै पतंग॥ अरु या जाति पतंग की जरत न मोरे अंग॥५९०॥ पर दुष सुष तासौं कहौं जाके प्रीति अभंग॥ दीपक जरै प
नु सभै वा ग्रि रपि कै र पतंग॥५९१॥ चकोर भाव॥ जादो जा वै जनक कौं नी र न पीवे को इ॥ सो दुष गिरा स पत कै मौ न
कालिमा होइ॥५९२॥ वा ह्लष यर ऋषेडाल घर जरत जो तउ ज यार मो हन मते पतंग के सम दीपक रकसा
र॥५९३॥ सम्मन कवहू चूकिए चंद आपनी ओर॥ वढ़ रयौ परि चाहा होयगी॥ या पूनिम कै भोर॥५९४॥
कर्मभाव॥ उरिया उरिम वड्ड कारै विधि डारै ति हि वेलि॥ ताकौं गालि कहा करै रति हूँ फाले न वेलि॥५९५

२५ १७

मनको लैसे रकवचै वतिकवति कीजोम ॥ रती घटै न वढै अजव करमकी चोव ॥५९६॥ सेउ संपति विपति
कौं जेम रैते कूर ॥ मासा घटै न तिल वढै जो कछू लिख्या अंकूर ॥५९७॥ कारे कोतस्कालः फत्त फिरे इवी
हीतवे काम ॥ धीरै धीरै होयगा जो कछु लिखि आराम ॥५९८॥ जिन मोती समअव को कीयो वडो वि
स्तार ॥ करै सोइ पोषन भरन सो हरि राषनहार ॥५९९॥ जिणि दिहाडे जिण घडी जिण वेलां जिण
वेस ॥ जो लिख्यौ विह अष्य रै सो तिन दिन मांमेस ॥ [illegible] ॥६००॥ गूढार्थ भाव ॥ रामन दीनी रावनहि अरजुन
तौ नकरनोह ॥ त्रिपुर नदीं तं करे सो पीय दीनी मोह ॥६०१॥ [illegible] ॥ मुकटि माह अवला सकुचा सकल लूटलियस ।
ज ॥ मकताहल ज्यौं नासिका कहि पंडत विहकाज ॥६०२॥ दधसुतका मनमिंन करहु परहंस चुगन
त्यौ हार ॥ उगिए हस चकोर चुग कारन कौन जमाल ॥६०३॥ सजन सवग्यन जो नतुम अरथ विचार तंताम ।
पियदेषत तिय हसि लीपिय रनै विकहिकाम ॥ वायस राह भवंग हर कागर पट कर लाल ॥ [illegible] लिषि लिषि
मेटत फिर लिषत ॥ कारन कोन जमाल ॥६०५॥ राम नाम हित चातका मवर भमै वनमांहि पंचतत नवा
तो मही कें हिउ न अवकावर सांहि ॥६०६॥ सशिवदनी सषि देषि कै पिय तज गइ तिहि काल ॥ सकुची
वहुत सरीर मै ॥ कारन कौन जमाल ॥६०७॥ [illegible] ॥ जाके डर सायरत ज्यौं सुन ब्रह्मा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सन नीच॥ अवगुण धकर आसनकी यों हूं गिरवरकै वीच॥६०८॥ [illegible] दधि सुत ताम्हेन तौं रिपसो
माम्हि दहै सरीर॥ अजहुन आयो वलहौ फलन लगे करीर॥६०९॥ मालिन वेचत कमलकों अपनो वदहु राइ।
लाजकौन की करत है कहि जमाल समझाय॥६१०॥ काचे अंत म्हि लहुलहावने गदरे वरे मिठाहि॥ सुमन वै फलक
चन है पवै तै कडवाम्हि॥६११॥ जमलाहु टन हो गई मलिपरी निसताहि॥ एक कमलहै पांखडी वीचै वी
च जमाल॥६१२॥ सिघ पंषानै जो घडै भोजन कठ करेहु॥ निज उतम जल अचवे नरसिरहुघरहु रेहु॥६१३॥
बडपद हे पेम मरनम्हि॥ तीन नैन नम्हि ईस॥ हूं तिम्हा नम्हि पूनपती च्यारि कान हूं सीस॥६१४॥ चंदगहु नजव हो
त है लोग देत है माल॥ विरहन लोंगन देत है॥ सोकार कोन जमाल॥६१५॥ अन व्याही होसै करे यो ती लत
उसास॥ गौनेकी मौने रही॥ देषि रामम्हडु हास॥६१६॥ मै दीयाते कूपला कासी परैसु कांम॥ सुकलमहा रक
ब्रा॥ सनी मोम्हि वस्यो चित राम॥६१७॥ चोवोला भाव॥ मो मन तरकस दे चले जा दिन गए कमान॥ अव मो
ती रन आवही जी यकरौं कुरवान॥६१८॥ पियमो सौं नुर राप यानै कुल आवत वाज॥ औगुन सौं वहु
री भई कहू लोककी लाज॥६१९॥ कबू तरतो को दयो कावक लागी तोय॥ पीय पानी दानी भयो
दाना क्यै के नोय॥६२०॥ मरहुमुंदकवल गरहो बासा जारजु जाय॥ तन लषत वहीहो रगा मलमल

२८ 120 घोऊ आय॥६२१॥ सकचहहा रासी भई गोरी जात है देह॥ किस मिस प्रीतम सौं मिलौं नौं जपरौं यह सेह॥६२२॥
कचोरी वाला सषी पूरी परती नाह॥ दही दही विरहा दई लौन मिलत हिय मांहि॥६२३॥ लोटा कें तन मा
नही चोली औरन कोइ॥ वौह गुनरही दिषाय कै करषी वनत नहि सोय॥६२४॥ पाल गई ढूंढन सो गई पी
लाल१ यसोया पाया॥ मैं चौनि पट अजानें मैं चूक जगाया॥६२५॥ डोल पियारा मोह संग भौन टाब मन मांह॥
सेज मिला हूं आव ह पिय च ढ सी चित चाव॥६२६॥ पीय लोटा मो सो सषी प्यारी जौं ज षाउं वेला अंषि
वन रलगई तव लौ कै सेरहाउं॥६२७॥ अच पगरी ते रे पटौं परकाहे कौ लेत॥ इजारैं तो तै लीयो एक
या मरु है देन॥६२८॥ कबू तर पिय सौं दियो तोता करी न वात॥ सारी जन मग वाय कें मेंना चूकी
वात॥६२९॥ पानी पथ मावे न हीलन पथ कही जो जाइ॥ इक पंथ आगम मयो तिलपथ मो हुन
सुहाइ॥६३०॥ की कुर कं करैं सिंगार सुह पीय पल देषे नही वेरर हीपु कार मिर सिस सौं ना
हे सषी॥६३१॥ वेरर विनती करैं सेवक टौं चित लाइ॥ जा मन मैं जिय टाव सै तूर करत विहाइ॥
विरोधा भाव॥ रूपषी रजत प्रीत है॥ यह जानै सव कोइ॥ करत जुदा रह मिति हिय लतें कहीन होइ॥६३
वै पानी की जीत मैं। पस्यो जु कपटी लोन॥ वं उ वं उजि हि मन कीयो वहुर मिलावै कोन॥६३२॥:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेहवढ्यो नातो मिट्यो रहीन हीय पहचान॥ अवतो लूटीना सदे घवैं धन वैसे मान॥६३३॥ समझउधकी नेक पटसों नि
पट रूठे लेसाय॥ अवमन न काढ्यो दूध ज्यों रही तउ म्हारै ठाय॥६३४॥ हरि लीला भाव॥ मोरचंद्रका सिसपर
मुष मुरली की घोर॥ कुंजभवन राजत रहै जै जै नंदकिसोर॥ उरवैजंती लालके अंगरहे लपटाय॥ मानों
घनमें दामिनी दइ दिखाई आइ॥ जगपति सों नाहीं भुसीत जिकमलसत भाय॥ गाय चरावत नंदकी विना
पोंहनी पाइ॥६३७॥ जिन वाध्यो पाताल वलि अषिल भवन के नाथ॥ ताके गोकल ग्वालिनी दांवरि
वांधत हाथ॥६३८॥ जोग ध्यान आवै नहीं जग्य भोग न गहे लेत॥ ताको गोकुल ग्वालिनी जूठो मांषिन
देत॥६३९॥ पानी जाके पायकौं धरयौ जटा महेस॥ ताकौं वेकुल ग्वालिनी पाय लगावत सीस॥६४०
तीन लोक जाके कीए और तान चौवीस॥ तापै गोकल ग्वालिनी फूल गुहावत सीस॥६४१॥ व्रह्मा
दिक सुरनर सकल॥ कवहू ध्यान न देत॥ सो हरि षेलत गोप संग जूठो माषन लेत॥६४२॥ सुरनर से
ससहस्रमुष गावति निगम अपार॥ तापै गोकल ग्वालिनी पकरि गुहावत हार॥६४३॥ सहस अ
ठ्यासी तीसत्रि॥ सेवत त्रिअंग लगाय॥ तापै गोकल ग्वालिनी चित्र करावति पाय॥६४४॥ कुंजकु
ज क्रीडा करत॥ कालिंदी के कूल॥ गुहत हार हरि राधिका लेलै उत्तम फूल॥६४५॥ सुभमस्तु॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२१ — 21

वैराग्यभाव ॥ दोहा ॥ छवि घटी फूटै तिमर गिरित घटै मत हान ॥ अब यह ग्यान न उर रहत है कौन
मलपन ज्यौन ॥ ६४६ ॥ जम अनुवती अरु गजां मिनी दुरु दिन दीह गनाय ॥ कौ जानै कर कै निप
ट पह कै पहलैं जाय ॥ ६४७ ॥ कुसल कि सीरे कंतडा सव उग जासी च्चाल ॥ घन जोवन वासो वसो
रहसी आज न काल ॥ ६४८ ॥ ताइ रलैपै जाय कौं कौंन सनी रा जाय ॥ कौंन वनी यह आय कै कौं
न वनी यह आय ॥ ६४९ ॥ कौ छुटयौ इह लाज पगिर कित कुरंग अकुलाय ॥ ज्यौं रनि छुट भयो व
हैत्यौं त्यौं उरअत जाय ॥ ६५० ॥ इक भीजै चहलै परै वूडै वहे हजार ॥ कितने ओगन जग करत नवे
नवाहै तवार ॥ ६५१ ॥ दादू सव तन न दाग है विरह दाग वैराग ॥ तिल घर नैं को ठौर नहि देत दाग
पर दाग ॥ ६५२ ॥ सत रैसै वीसो तरे हा स चै त्र गउरुवार ॥ इक लप त्तइ तीया सति षि रच्यौ नर दुहा सार ॥ ६५३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

व

॥फोटकभाव॥तूतिंरचेपरखाईयावाजनआवेपीय॥हंसगिरानोतैलीयावगेंकटारीजीय॥६५४॥
साजनरेदीय।करोदीयाकरैसभकोर॥चरचरयानहीपाईराजेकरदीयानहोय॥६५५॥कवरपरि
रपंगकेअचरवेघअगार॥विरहाभगरोलेजरोंघटपरैसभार॥६५६॥सम्मनयहमनकूपकर
लैकरज्जगतपघोर॥हन्नूराहन्नूराजानदेगन्नूरासैंचितजोर॥६५७॥घुरगरज्जापर्वतबच्चान्नठा
रानविरान॥मैतोन्नूनीपियविनाक्योन्नूनीघान॥६५८ चिउ काट्याविडवांघीयांविदुहीलारान्नन
न्नतौन्नूनीपियविनाहोन्नूनीतगहीन॥६५९॥वाजवजावतरकहैनापियआरामुगलैन॥वाजवजा
वतमैचलीपियरावदलादैन॥ ६६० ॥पीयमोकूंभावरदरामैपियभावरदीन॥भावरकेभावरदराप्र
नअधकनुहलीन॥ ६६१ ॥तुरसीचातककेमतेस्वातोपीयनपान॥प्रेमतृषावटीराभलीघटेघटेगी
कान॥ ६६२ ॥तुलसीसेवकरामसोबोटोबरोबरो॥दीपककाजरसिरधरयोघरयोघरयोसुधरयो॥
॥६६३ ॥दीपकमानीहारभावंतोपायनतरै॥तवसिरलीनोधारसस्योनहीहितहीनपन॥६६४ ॥
रोटीरोटीसभरटैसोवतजागतलेट॥सभेविगारीपेटकेसभेविगारीपेट॥ ६६५ ॥जमलाअवगुनसभ
नमै॥कहुकाहीमैनाह॥काहूकेपरगटभराकाहूकेमनमाह॥ ६६६ ॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुनभमरा भवरे। कहे जरद पीठ जेरी कार॥ चरघी लागी प्रेम की हस्द लगारा जाय॥ ६६७ ॥भमरा सोव
से हरी तन कै वसे चंदन पास॥ सुन भमरा भमरी कहे काला कित गुरगास॥ ६६८॥ सुन भमरी भमरा क
हे घने करे रेमित॥ मिलरसा जन गविछुरे तिल तिल दाघ्यो नित॥ ६६९॥ जवमालनि दव मै गही भम
रा दाह्या न संग॥ प्रीत लजावत रा फिरे भम्म चरावत अंग॥ ६७०॥ जवमालनि दवने दही भमराउ
सानि संग॥ अस्ल समेट को रहै। लैवो रन को गंग॥ ६७१॥ वडो मे दर अर विंद सुत जिहन प्रेम प
हचानि॥ पीय सुषदे षन हगन को पलक रची विच आन॥ ६७२॥ मौ सौ सुनको ईक हे अस्लक
कहना को इ॥ विरहन को दुष देष कै रैन गई है रो इ॥ ६७३॥ हर टाइ कोरीत वरी जा मे गुन
भरा तीन॥ इकतारन इक ऊ चर पीय इक संगवीन प्रवीन॥ ६७४॥ हर टाई कोरीत वरी जा
मै उपज्यो राग॥ संगत गुन भेदे नही ता के वडे भाग॥ ६७५॥ पीय कारन पीली भई लो
ग कहै पिंड रोग॥ छ्यरलेच नमै की ए पिय सुषदेषन जोग॥ ६७६॥ रामन मिले तत पर घी रा सम्मन दे
दिसद स्स॥ ते ऊगवारासी सद स कारन कौन अवास॥ ६७७॥ रावन की इक वेन ती सन सम्मन मत
च्यार॥ प्रेम की च के वीच मै दी जै सीस करोर॥ ६७८॥ असुर पकरा वे री गुके उदस हेन्र गडार॥

मानुषरीझयोदरनहिंरिझिकत्ताकोअवतार॥६७९॥पजपदीतननविछुडेकीयापलासेमाग॥रजलपटेरागहषडेकेतत्रआ
पनेलाक॥६८०॥परसोआवन्तकहहगरापरसौंअटकेपीयपरसो॥जोपरसोनहीपरसोअपनोजीयपरसो॥६८१॥
साजनसुपनेआपछयाकहनक्याईवान॥सोवतेतेरावततउठीधीटतघरकत दय॥६८२॥हीलालचपियलालकीपीयल
लचकऊओर॥कहततमनकैसेवनेराकलालहुहडोर॥६८३॥साजनसपनेहीलगीधाइरहीपलकनबोर॥
॥६८४॥एसपनातोहमारहोनलीकरावैछेक॥जमोरानवदोजने
जवजागेतवराक॥६८५॥सपनाकोहमारहोसपनाआदमजात॥सोवरसाकेवीछुडेआनमिलावेरात॥६८६॥
नैनाकेरीप्रीतहीत्रोकरजानोकोइ॥जोसषनैनाडपजैसोमुषसेजनहोय॥६८७॥नैनादीठेकोनगउनजोलगअग
नमिनेत॥उपरजलहरउतयोसरवरनांदभरंत॥६८८॥विरहदहीपतघटगईतउनतपततिराइ॥भरेघरेसि
रागरीरीशीतीहोदहोदजाय॥६८९॥चकवीचकवादोजनेउहेनमारोकोइ॥वेमारेकरतारकेरैनविछोहोहोइ॥
॥६९०॥चकवीमरायेमाहवूंजूत्क्यानभईवाजअसमैपंषरमिलरहेहसमैविछोडामाग॥६९१॥चकवीजोनिस
वीछुरेभोफिरमिलेजुआन॥हमजुअभागनवीछुरीनांदिनमिलेनरात॥६९२॥प्रीतवीजन्हिरदेभयोउपज्यो
उवकोमूल॥विरहीजलविरवाभयोआसूताकोफूल॥६९३॥श्रीमद्रामचंद्रायनमः श्रीहनुमतेनमः॥
+प्रीतमतुममतजानोएविछुरेप्रीतघटाइ॥व्यापारीकेसूदज्योंदिनरवढतीजाइ॥६९४॥संकरसषसमुद्रकोमैसुरा

श्री

यौकाजैत॥मीतवीरसंगवीछरेपरघरसदनवंरत॥९५॥काहूहूँपाविरहनीनाउचरयोविपरीत॥जैसें
विषकोमिंगकहेसौंतुष सौंकहैप्रीत॥९६॥द्वालनघरचंदालघरजरत्तजोजोतउजयार॥मोहनमतेघतंगकेस
मदीपकइकसार॥९७॥मीठावोलनवकुतगउनजोकोउजानेवोल॥विनहीदामावाहरेमानसलीजेमोल॥९८॥
नसा इसतनकीकिंगरीकरेंसमनतार॥वाजाऔरनवाजसीवाजेनामतुमार॥९९॥तुषसुषजानीजावकोघाभासेमनमा
हे॥ज्यागोरसवुगरलकरमैभारमीजवोनार॥नीचउदीज्यैजानीएलुनलषतुरसीदास॥हीलदीरागीरद्वीपरतजैं
चेवडतजकास॥१००॥उत्तमनमध्यमनअधमननरपाहनसिकतावार॥मीतअनुकमजानीराव
व्यत्पवैरविचार॥१०१॥

॥ विहारीसतसयासार ॥ राजनीतिदोहा ॥ मेरीभवबाधाहरौराधानागरिसोइ ॥ जातनकीझाईपरैस्यामहरितदुतिहोइ
तीसमुकटकटकाछनीकरमुरलीउरमाल ॥ यहवानकमुमनवसैसदाविहारीलाल ॥ ॥ मोहनमूरतिस्या
तिउ मकीअतिअदिभुतगतिजोइ ॥ वसतसुचीतअंतरतउप्रतिबिंबितजगहोइ ॥ ॥ तजितीरथहरिराधकी
तनदुतकरअनुराग ॥ जिहबजकेलनिकुंजमगपगपगहोतप्रयाग ॥ ॥ गोधनतोहरषे ... घरी =
कतेइपुजाइ ॥ मरूउपरैगीहीसपरपरतपसुनजेपाय ॥ याअनुरागीचितकीगतिसमुझैनहिकोइ
इ ॥ ज्योंज्योंबूडेस्यामरंगसौंत्योंउजलोंहोइ ॥ ॥ उनकोहितउनहीवनैकोउकरोअनेक ॥ फिर
ज्योंकगोलकभयोदुहूंदेहज्योंएक ॥ ॥ जदपिहौररसघरपानिसउनोदीपकदेह ॥ तउप्रकास
करैतितोभरियेजितोसनेह ॥ ॥ सजनवरनन ॥ कटकनछाडतघटतऊसजननमेहगंभीर ॥ कीवो
परैनवरूघटैरंग्योचोलरंगचीच ॥ ॥ सपतिकेसमदेसनरकनवतरुगदिनिइकवान ॥ विभवसतकुचनीच
नरनवमविभोकोदान ॥ ॥ दुर्जनवरनन ॥ नराविसाहदिखनरादुर्जनदुसहसभाव ॥ आटेपरप्रानन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

24

कृपन वरनन॥ जेती संपति क्रपन के तेती सूमति जोर॥ वढत जात ज्यौं ज्यौं उरज त्यौं त्यौं होत कठोर॥ ॥ ॥
नीच हिये हुलसे रहैं गहे गेंद की पोत जेते माथे मारीए तेते ऊंचे होत॥ ॥ कवैन ओछो नरन सौं सरैं वडे को काम॥
नन मड्यो दमामा जात क्यौं व्है चूहे के चांम॥ कोर जो कोऊ करै परै न प्रकृति हि वीच॥ नल वल जल ऊंचै चढै तऊ नीच को नीच॥
वर घर डोलन दीन व्है जन जन जाचत जाइ॥ दीयो लोभ दसमा चखन लघु पुनि वडो लखाइ॥ ॥ उचैं वडे न ह्वै स
कै लख सतरोहैं नैन॥ दीन घटै न नै क्यों हि कारन निहारे नैन॥ ॥ नृपति उलगति॥ लहु आलो मसु करगहैं नि
गुन उनी गुन लपटाइ॥ वहे गुनी कर तें छुटे निगुनी पै ह्वै जाइ॥ ॥ दुष राज वरनन॥ दुसह दुराज प्र
जान को क्यौं न वढै दुष दंद॥ अधिक अंधेरो जग करत मिल मावस रवि चंद॥ ॥ लोकरीत वर्न०
नसैवु राई जा सतन ताहि को सनमान॥ भलो भलो कहि छाडीये षोटे जप ~~[struck]~~ ग्रह दान॥ ॥
कैहै वहै सो सुत समित सकृत वहै सयान लोग॥ तीन दिवावत निसक ही पातक राजा जोग॥ ॥
वडे न हूजे गुन विन विरद वडाई पाइ॥ कहत धतूरे कन कसों कनक गहनो घड्यो न जाइ॥ ॥२३
जो गुनी सव वेक हैं निगुनी उनी न होत॥ सुन्यो कहुं तरु अरक तें अरक समान उदोत॥ ॥२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संगतिसमतनपावहीपेरकुमनकेंधध॥राओमेलकपरमैहीगमहोतसगंध॥ ॥सवैहहतकरतार
देनागरत्ताकेनाव॥गयेगारवगुनकोसवैगवावैदाव॥ ॥मरकीकारननलीरकीगतिरावै
करजोर॥जेतोनीचोद्वैचलैतेतोऊंचोहोय॥ ॥वढतवढतसंपतिसलिलमनसरोजवढजाय॥
घटतघटनसनफिरघटैवरसमूलकुंमलाहि॥ ॥जोचाहतचटकनघटैमैलोहोयनमित्त॥र
जराजसनछुउहरानेहचीकनेचित्त॥ ॥अतिअगाधअतिओथरेनदीकूपसरवाय॥सोताको
सागरतहांजोकीपासवुझाय॥ ॥नीतननीतगलीलदैलेलेपरीरापनजोर॥आराबरचेजोनरतेरो
हीवितोकविचार॥विरहनरकिहसमराभीरायपरेवड्डपरवार॥ ॥[illegible]कौरे॥कनकनकन
कतेसोगुनैमादकताअधिकार॥रहिखारवोरातहैव्यरिपारावौरार॥ ॥कुरोवुराईज्योंत
तैसौचितवरोसंलात॥ज्योनवतलोवामंयकलषिगनेलोगउलपात॥ ॥भावरअनभावर
भरेकोरवकवार॥अपनीरमावनकोपुटैनसरुजसचार॥ ॥जिनदिवदेषवेकुसमगरि
सहीनवहार॥अवअलरहीगुलावकेअपतकटीलीडार॥ ॥तिरुआसअरमोरहैअति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२५

25 गुलाबके सूल ज्यों हैं कैर खसंत रितु हनआ रिन के फूल ॥ ॥ हरस कुसम मदरा ति आलि उक
रूप रतल परान ॥ दरसति अति सुकमार वरस तमन नरखात ॥ ॥ बहिक वचाई आपनी
कमिरा चतमरसूल ॥ दिन मधु मधुकर के हिये गडैन हरि मन फूल ॥ ॥ जदप इतामे
व कत हूँ सरवर नि परव चाल ॥ नरा भरा तौ कहा भरा ऐमन हरन मराल ॥ ॥ अरे हंस या
नगर मैं जैयो आप विचार ॥ कागनि सौ जिन प्रीति करि कोइल दई विडार ॥ ॥ कै कहसगै
वडेन सौं रहै वैवडी हिमूल ॥ दीनें दई गुलाब को इन डारन के फूल ॥ ॥ छेनई ते न गरव डे जि
न आदरत नाव ॥ फूल्यो अनफूल्यो भयो गवई गाव गुलाव ॥ ॥ करतें संघ सरार रखें रहै
बसै हीन ॥ गंधी गंध गुलाब को गवई गाहक कौन ॥ ॥ फिर खोद हूँ जाल पर कत तकर
ग आकुलाय ॥ ज्यों ज्यों सुरझ भज्यो चहैं त्यों त्यों उरझत जाइ ॥ ॥ पर पाछै भख को क
रैं सुफर परेखौ सेग ॥ सखी विखा जगत मैं एके रंगी विहंग ॥ ॥ स्वारथ सुकृत न स्रम वृथा
देख विहंग विचार ॥ बाज पराए पान पर तू पक्षीन न मारि ॥ ॥ दिन दस आदर पाय
कै कर लै आप बखान ॥ ज्यों लौं काग सराध पख तौ लौं तौ सनमान ॥ ॥ ६० ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मरन ख्यास पिंजरा परचो सआस मे के फेर ॥ आदर दे दै गो लिए वायस वल की टेर ॥ ॥ जो कैरा

कैं कहूं जग ख्यो सा यन को य ॥ सो नि दा घ फूले फलै आ क उ हि उ हो होय ॥ ॥ न हि पाव स रित

रा जय हित जत र व स्मत मूल ॥ अपत भये विन पा य हैं को न च दल फल फाल ॥ ॥ रितु व

संत जा च क भयो आ र द्दिरा द्रुम पात ॥ पा ते नव पल व भ ये दियो दूर न ही जा त ॥ ॥ सीतल

ता अरु सुगंध की मह मा घटी न मूर ॥ पीन स वा रे जो त ज्यो सो रा जा न कपूर ॥ ॥ गहै न

ने को गुन गरव ह हैं स कल संसार ॥ कुच उच पद लाल च रहै वा हू है व रैं हहार ॥ ॥ मरु उच

डा ए ह्रू रहै परयो वी ठक च भार ॥ रहे प्राग है परसा बीए त उ हीए पर हार ॥ ॥ जो सिर धा

र महि मा मही लहि यत रा जा राव ॥ प्रग ट त जड ता आप नी मुकर पहर पत पाव ॥ ॥

सरसौं जा ड़ ता को करै ता यन को व्या पार ॥ न ही जा न त इह पुर व सैं घोवी उड के

भार ॥ ॥ कर फुले को ॥ विषम वृषा दित भ की त्रिषा जीए मतिा र न सोध ॥

अमित आ पार आ गा ल जल भा रयो मूढ पाोध ॥ ॥ जम करी मु स त रह रप रयो

26 यहि घर रहौ रखि ततो हा।। विछुरै त्रिभाव हिहरि आनोन रह जे केउनको ह।। ।।जगत जनायो जि
हसकल सोहर जानो ना हु।। ज्यो आगिन सब देखी रा आगि न देखी जाहु।। ।।जब स्यो हा साधम
पाति लक सरें ग्रहण को डगम।। मन का चेनां चे बचा सा चे रा चे रम।। ।।तौ लग याम नम
रनमै हरि आवै कि हवाट।। निकट जटै जौ लौ निपट बुटै न कपट कपाट।। ।।पाम वपा
रा हार को ड ले घवरा को जाह।। जियजिय घव घा लाग्या हनी ग है वी च दी आर।। ।।
भजन कहेपो तोते ।। पति का रीमा ला पकर औन क ढूढका।। तर संसार पयो धव कहूँ हु
गैना मैं करि नाव।। ।।यहि विरओं न हि और की ले वाहि आवहि साध।। पाहून वा क
घा डइ जिन कीने पार पयो ध।। ।।हूरभजन न प्रभु पीठ दै उनविसतार न काल।। प्रगट
त निरउन निकट हरि रेच रच गोपाल।। ।।जात जात विन होत है ज्यों जीय मैं संतोष।। हूतर
ज्यों होय तौ हो ह घरी मैं सो ष।। वजवासरको उचित घन उचित न कोय।। उचित आपो उचित ही कि सो क
तोत होय।। ।।दीनताबरनन।। नीकी दई अनाकनी फीकी परि गुहार।। तज्यो मनो तारन विरद
वार कवार न तार।। ।।कौन भांति रहि है विरद अब देखवी मुरारि।। वीधे मो सो आन के गीधे
गीध ही तार।। ।।समै पलटि पलटै प्रकृति कौन तजै निज चाल।। भो अकुरन करना करा यहि का

व हूकत काल।। ।।अबने रमनिता गो वादमचा वतसो र
ज्यों रसव ही सी ही गेरा कें नंदकिसोर।। ।। रामजी

तिलवरनन॥दोहा॥गोरेमुखपरतिललस्योताहकरोपरनाम॥मानोससिकोगोदमैंवैठ्योसालगराम॥ ॥वुधोवीजसिंगा
रतिलतियकपोलछवखेत॥ललतमनोअंकुरउठ्योतीयतनमेंकरदेत॥ ॥मदहसततहततदसनकीचिवुकलस्योतिल
छहेत॥मुखवाटैंतिलचाकरीनैननवधाईदेत॥ ॥वरुनीतनकलमंचनुपतीसनवानसनेन॥अलकतेलतिल
टालतैशीवसनलखनयोमैन॥ ॥औरजवेह्योराधीयेवानलेगतहुजाय॥तिलवेह्योउलटोलगैनैनवाननेआय॥
॥ ॥समनतावततिलनकोयहजानतसबकोइ॥तिलजवलावतमुँनकोनेहनवेलोहोय॥ ॥कोसकुचितहे
सुंदरीधुराटसौमुखकाढ॥तवोमुखससतमतल्योमयोराकतीवाढ॥ ॥चिवुकतियाकेतिलवसेयहजानोमतको
य॥सोमअंकमैंनिसमनोरहीसकुचकेसोय॥ ॥कामजारकीयोमसाशीववियहीजानततनाह॥जाननतेहजीवत
रह्योतिलधायाकेमाह॥ ॥अवलकपुसीलेकामकोभईचिलकीचाह॥टारीटरैनगैंदतिलपरीचिवुककीगाय॥
॥तीयकपोलकंचनतलाएकपलातिलडार॥तोलनकोसमकोनहीरह्योविरंचविचार॥ ॥त्र्यसिंधनो
वहतहैनतकोउउतजाउ॥तिलजलालयापाधरैहचिवुकगाढदरयाउ॥ ॥जनजोगीआसनकीयोचिवुकउ
फामेंआय॥रस्योसमपलगायकेतिलसिलहारचढाय॥ ॥सुंदरमुखपैतिललसैअतअविवरन्योजाय॥मा
नोभोरहकनलपरभोररह्योठहराय॥ ॥औरतिलनछंडनकीयेहोयचीकनोदेह॥यहतिलऐसोचिवुकपरदेखलगेसनेह॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

27

चिबुककूपरमलीअलकतिलसचरमदृगवैल॥ वारीविरहकृसिंगारकीसीचमनमथछैल॥ ॥अलकडोरतिलचिबु
कूपरअरुआननपरवाह॥ पीवेंदहदेतनिलोजलीनैनातुमविननाह॥ ॥तिलजुचिबुकपरसोहीयेमजनजालेजीय॥
गेयहीयलोचनतारकादेषननिकसीपीय॥ ॥तिलदेषतचूडेकमलविधसौंकहतरिसाय॥ जौतेरमनसौंम
छकीयातौतिलकौनवनाय॥ ॥अलकडोरवनसीहतितछविजनुचिबुकसरताल॥ रूपचडयोन्नपमीन
दृगआनफसेततकाल॥ ॥दृगकाजरराजकरभरीअलकफिरंगविहूक॥ तिलगोलीमतछलहनीभारीमवन
अचूक॥ ॥तिलवेंदीलटयेकरीविधलिषवकीरीति॥ चिबुकपटामैलिषधरयोमदक्षोदसहितजीत॥ ॥
तिलनहमुहरवनायमठातहांदईविधआय॥ तासौंसवकेदृगनपरकरीतावकाघाव॥ ॥यहऔसोवरत
नकरतमोहलगैपोवककवाद॥ तिलतरुनीकेचिबुकपररसंसिंगारकोस्वाद॥ ॥मुखतिललष्योवनायविध
ताहनजानतकोय॥ राकोअछरभेमकापडैलपडतहोय॥ ॥काजरकजरौटीनिमैलेजेदृगनिलाय॥ य
हतिलकाजरचिबुकमेवाहतसगैदृगआय॥ ॥होरीखेलेमैननितअधरगुलालसधार॥ तिलचोवाकोवो
वचादेषतमनथोडार॥ ॥मुखससिकोसोभाकरेउडमोतनकौजाल॥ अवातुतदामनिमेघतिलजातपरस्प
रहोत॥ ॥तिलतरुनीकेचिबुकमेसोआरसीअनूप॥ मननृपदेषेआपनोमतजैकामहरूप॥ ॥[illegible]॥

विधिकपोलदिकियाकरीनयतिलकीवनाय॥ तोमनघुमतफकीरज्यौंरिककीरह्योलगाइ॥ ॥औरकसौटीपरलगे
कानकसरेखाजाग॥ तिलजुकसौटीरीरकेकनकचिबुककरहीलाग॥ ॥औरअंगसमधछोडकेतिलसौंपीयकोप्यार॥
साधकीयाविधचिबुककैयेमनमताआनसार॥ ॥नासासीमीसोधकेकानकुठारीताय॥ पारोभयोकलककोतिलल
सातधातविधजाय॥ ॥तिलगडरिकातियचिबुकपरजितजानोतिनजाय॥ नैनपैठहीयपैठवेमनमैपैठजाय॥
॥तिलजुलकंजेनचिबुकपरजितअषियमेजाय॥ तेअषियांतहंदृवसेकोऊनदेषेताय॥ ॥प्यारीमुष
परतिललसैसुद्दतहैदुतदंद॥ जानोवदाभानुकोगोदषिलावतचंद॥ ॥जियपरहतेंसोतिलभयोतिलसौंदृग
योजिय॥ जियषैचेहैचिबुककोचिबुकलषैचेहोय॥ ॥वेनीनदीसिंगारकोलटवंवरहारदुअोर॥ चिबुकछेतजि गोउपानी चलनकी
लवीजवैसौचैकामकिसोर॥ ॥अगहोसनकारजसुतिलदियाविधातातोह॥ आषनमेजवतीचरमोसलेतदे
सोह॥ ॥यामिसरीलकपोलकोवकेसुअगुरीलाय॥ अधरमिठाईलैनकोचैटीवेठीआय॥ ॥तियको
मुषसुदरवन्योविधफेरयोपरकार॥ तिलजुबीचकोविंदुहैगाहूगोरूपकडार॥ ॥तिलडोरीदृगपातदैनासि
कपुलसमेत॥ बेतीकामकिसानकीराकेतिलकोषेत॥ ॥नाकेढिगउसीडोलतिलअलकलेजुकरमैन॥ कूपचि
बुककीगाडपरप्यासेपथीनैन॥ ॥तिलतरुनीकेचिबुकपरकोपैवरन्योजाय॥ अरतवानीलननकोकोकिलबैठोआय॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घाउघाउकेलतहैंद्वेटीतिलनुभमाह॥मतचेटीकोगहस्हैनुभतिलघोउनाह॥ ॥नैनपुलैंनेदेषीरातिलयहराकतका
र॥नैननंदनजोदेषीरागंत्लकोनवविस्तार॥ ॥मोमननमरजीयाभयोषिनिकडुभषिनचैन॥मारेविसतिलचिवुकको
ज्यावेत्रमनतवैन॥ ॥विधितिलकीनोचिवुकपरमनेपिदठोनादीर॥देभतविलज्योटरतनहमानोकाटोकीन॥
॥ ॥रोमावलीवेनीभ्रकुटीअलवस्यामघविराम॥सभतैतिलमीरीभयोचिवुकगाहवसपास॥ ॥वेधदये
तेघोउकेमुकतदरालटकाय॥चिवुकचोतरवैठकेतिलकलजुगकेराय॥ ॥हासलेतदुतपीतहैअधरला
लतिलस्याम॥रंगेकामरंगरेजुमनुहोतचित्रअभराम॥ ॥हासमतपुणारजअधरतिलतामसतअनप॥
हगजोगीरसभरभयेतारलगायअचूक॥ ॥मेदहसतदुतदामनीमेघचिवुकतिलनित॥ज्योगरजेव
रसेनहीतरसेचात्रकचित॥ ॥चिवुकसरूपसमुद्रमेमनजातेतिलघ्याह॥मुषअोरालतैनकौलीलगयोवह
काह॥ ॥वयोनहोयमभुजगतकोहंपतलवनिधान॥तियमुषसोहिजराजनेकीनेहैतिलदान॥ ॥
देषरहत्आधीनहैमलनिकरतसलाम॥नैननचैनपरेनहीजोकहूलगेअवेर॥जवतिलकादरसनभयोजा
नोतस्योसुमेर॥ ॥तिलमनालसोवुनतहैतोभापरजानराम॥चिवुकगाढमैवैठकेवुनेजुलाहोकाम॥
× ॥चिवुकगाढगहाकीयोतिलहयनीठहराय॥मनकुंजरकोगहतहैउहविधमननमघराय॥ ॥

हासीफांसीगरेकेदीयोगाढमनजार॥चिवुकदेसमैकामठगविषतिलाईधार॥ ॥चिवुकगाडमैंरूपनिध
कानरूपननह्योधार॥तिलतहांसावकसाकोरस्योजैडलीमार॥ ॥चिवुकगाढमैरूपनिधराषीमनतम
२६ पसाय॥कोऊलैननपावईतिलतहांकीनीघाय॥ ॥मलकवलीतिलनावमैहौलोमनवैठाय॥वोर
मैनमलाहज्यौंचिवुकभौरमैजाय॥ ॥मनलिष्यालटलषनीतिलसमपानीपान॥अछरधरवकप
२७ लेकेहेजीमपटीतसमान॥ ॥कवलनीजतिलकवलमुषमनचतुराननवास॥तिरजतहैकवितागग
तरचनाविधसुविलास॥ ॥तेरेतिलकोतनकलषवैठगयोमनऐच॥डारनिवारसिंगारकरपरोने
हकेसिंच॥ ॥कामगुरुककविजीमतिलतिषके अच्छरमंत्र॥पठनलग्योविपडेयोंरूपपाठकेजंत्र॥
तिलकीसोभावर्नीयेत्यौंत्यौंहोयअपार॥सौसक्षोपदीकेभयोजैसेचीरविस्तार॥ ॥ज्यौंज्यौंति
लकोवर्नीयत्यौंअच्छरउपटान॥मानोगिरतेंपरगटीहीरनिकीसोषान॥ ॥चिवुकसंघासन
परसेतिलघोसालगराम॥वानीपुन्याजलकीयेकरौंतातहूपरनाम॥ ॥तिलसतकमेत॥०॥७०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

19

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दोहेकवीरके॥कवीरभीतरहकसोंकिराआनदविषाजाय॥भंमेलांवेकेसकरभामेघरिउमुडाय॥ ॥कवीररा
ऊतनजायगाकवनेमारगलाइ॥कैसोगतिकरसाधकीकैहरिकेउनगाय॥ ॥कवीरमरतामरताजगमआ
मरभीनजानेकोइ॥ऐसीमरनीजोमरैवहुरनमरनाहोइ॥ ॥कवीरमानसजनमदुलभहैहोइनवारैवार॥ +
ज्यौंफललागेभूइगिरेवहुरनलागेडार॥ ॥कवीरकसोटीरामकीझुठाटिकेनकोइ॥रामकसोटीसोसहे
जोमरजीवाहोइ॥ ॥कवीरउजलपहरैकापरेपानसुपारीषांहि॥एकसहरिकेनामविनवांधेजमपुर
जाहि॥ ॥वेडाजरजराफूटेछेकसहजार॥हरूराहरूएतरगए वूडेजिनसिरभार॥ ॥कवीरागरवन
कीजीराउच्चादेषिअवास॥आजकालसल्भूइलेटनाऊपरजामेघास॥ ॥कवीरगरवनकीजीरादेहिदेष
हरंग॥आजकालसलतनजाऊगेज्योंकाचुदीभुवंग॥ ॥कवीरएसाकोउजनमआसयनेघरलावेआग॥
पांचऊलरकाजारकैरहैरामलिवलाग॥ ॥कवीरमैजान्योपढवोभलोपढनेसोंभलोजोग॥भगतन
छाडिउरामकीभामेनिंदउलोग॥ ॥कवीरहरदीपीयरीचूनऊजलभार॥रामसनेहीत्योंमिलेदोनो
वरनगवार॥ ॥कवीरसवनेफुवरडायवेजिहमुषनिकसेराम॥तागेपगकीपांहनीमेरेतनकोचा +
म॥ ॥कवीरमाटीवेरसम हलरेमानसराषिउनाम॥चारदिवसकेपाऊनेवउरुधिरठाम॥ ॥म
नदीकरकैचालितआपपिलाहपीसाइ॥नैसकिवातनषछाहिकवनसाईपाइ॥ ॥कवीरापीभरत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नभावई हरि सूजा नसहाइ॥ माथी चंदन परसै हैजन हुंग धन हुजाइ॥ ॥कवीर वैद मुइआ रोग मुइआ मुइआ सभ
२ संसार॥ एक कबीरा ना मुइआ जिह नाही रोवन हार॥ ॥कवीर कूकर राम को मुतीआ मेरो नाउ॥ गले हमारे
जेवरी जह खिचै तह जाउ॥ ॥कवीरा पारस चंदनै तिन है एक सुगंध॥ तिह मिलते ऊतम भए लोह काठ नि
रगंध॥ ॥कवीर जमका ठेंगा बुरा है उह नही सहिआ जाइ॥ एक जु साधु मोहि मिलिउ तिन लीआ अंचल ला
इ॥ ॥कवीर नौवत आपनी दिन दस लेहु वजाइ॥ नदी नाम संजोग जिउ बहुर न मिलहै आइ॥ ॥
कवीरा सात समुंदहि मस करउ कलम करउ बनराइ॥ वसुधा कागद जउ करउ हरि जसु लिखन न जाइ॥ ॥क
वीर ऐसो कोन है रतन देवै पाक॥ ऐ धाला बन जानई रहू कवीरा हूआ॥ ॥कवीर सती पुकारै
चिह चढी सुन हो वीर मसान॥ लोग सबाइआ चलि गए हम तुम का मन दान॥ ॥कवीर मन पंखी
२० भइउ उडउ दस दिस जाइ॥ जो जैसी संगत वसै सो तैसो फल पाइ॥ ॥कवीर मारी मरहु कुसंग की केले नि
कट ज्यों वेर॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगन हेर॥ ॥कवीर वनना पीला करी माटी करै पुकार
मत वसपर हुल हार के जारै दूजी वार॥ ॥कवीर संगत करीऐ साध की अंत करै निरवाहु॥ सा
कत संगन कीजीऐ जाते होइ विनाउ॥ ॥कवीर जग मै चेतउ जान के जग मै रहु समाइ॥ जिन हरि
का नाम न चेतउ बादि जनम आइ॥ ॥कवीरा आवै कउ उपदेश ते मुख मै चर है रेत॥ रासके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गनीराषतेबाहरआघरकाषेत॥ ॥कबीरमनमुरिआनहीकेसमुंदाराकाह॥ जोवपुकीयासोमन
कीयमूंडोमूंडिआडिआजाह॥ ॥कबीरजहमजेतवजावते टूटगईसभतार॥ चितुविचारआक
हैचले वजामन हार॥ ॥कबीरमारमूडोतिसगुरूकी जातेमरमनजाह॥ आपवडे चतुरदेसभैचेलेसीर
वहाह॥ ॥कबीरसोईमुखु धनहेजामुखकहीराराम॥ देहीकिसकीबापुरीपवित्रहोइगोराम॥ ॥
कबीरमारगमोतीवीथरेअंधानिकसोआइ॥ जोतिविनाजीदीसकीजगततउलंघेजाह॥ ॥कबीर
साधकोमिलनेजाइरैसाथनलीजेकोइ॥ पाछैपाउनदीजीरआगैहोइसुहोइ॥ ॥कबीरसुताकाक
रहेउठकिनजपहिमुरारि॥ इकदिनसोवन होवनहोइगा लांबेगोरपसारि॥ ॥कबीरसुताकाकरैवैरा
गुआरजाग॥ जाकेसंगतेविछुडपाताहीकेसंगलाग॥ ॥कबीरठाकुरपूजहिमोललेमनहठतीरथजा
हदेषादेषीस्वांगधरभूलभटकाषाह॥ ॥कबीरपाहनपरमेसरकीआ[illegible]जेतसभसंसार॥ [illegible] इसभरवासासो
रहेकूडेकालीधार॥ ॥कबीरकालकरंतासभवहिकरिअबकरतात्तहताल॥ पाछेकछनहोइगाजो
सिरपरआवेकाल॥ ॥कबीरकूडीकोडीजोबैजोरेलाषकरोर॥ चलाकारनकछुलईलगोटीतोर॥
कबीरवेडाहोर[illegible]काजतजमतकाअभिमान॥ ऐसाकोईनसतोहतागिमिलेभगवान॥ ॥कबीर
[illegible]ताकाहआंलषीकोडबेरर॥ ऐसातेदासहोइजिउधरपीमैबेह॥ ॥कबीरप्रहमईतंबप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मयाजेंउंउंलागेअंग ॥ हरजन ऐसो चाहीए ज्यौं पान सरवंग ॥ ॥कवीर पानी भया तां क्या भया सीरा ताता होइ
3 ॥ हरिजन ऐसा चाहीए जैसा हरि ही होइ ॥ ॥कवीर गंग जमन के अंतरे सहज सुंन के घाट ॥ तहां कवीर मठ की
आ षोजत मुनिजन घाट ॥ ॥कवीर एक कर्म च भोट बिआ ही रा हार विकार ॥ वन जन हारे वापरा कौडी वदले जार
॥कवीर जिंह मार गमें ड तग रा पाषी पर ली वहीर ॥ इक अव चर पाती राम की तिह चढ र है कवीर ॥ ॥
कवीर दुनी अंके धोषे मुआ चाल त कुल की कान ॥ तव कुल किस का लाजसी जव ले धरे मसान ॥ ॥कवीर
भलो भयो कीरो नाना विध को नाज ॥ दावा काहू को नही वडा देस वडा राज ॥ ॥कवीर कोठी काठ की चहु
दिस लागी आग ॥ पंडत पंडत जल मूए हम उवरे ष ड व स्य भाग ॥ ॥कवीर सं सार रवारका गदे कुवहार ॥ वा
वन आ वरतो घ कै हरि चरणी चितलार ॥ ॥कवीर चरन कंवल के परी आप ची देह ॥ देव सचार कोप
वना अंत वहको ष ह ॥ ॥कवीर चोट सहेली सेल की लागत ले उ अस ॥ चोट सहारे सवद की ता हउ
इमै दास ॥ ॥कवीर मुलां मुनारे क्या चडहि सांई ना वहरा होइ ॥ जाकारणा तू वांग देहि दिल ही भीतर जोइ
॥ ॥कवीर जोरी कीए जुलम है कहता नाउ हलाल ॥ दफतर लेषा मांगीए तव होइगा कवन हवाल ॥
राम कहन मै भेद है ता मै एक विचार ॥ सोई राम सभै कहै सोई कउतक हार ॥ ॥कवीर उंगा भया
वावरा वहरा हूआ कान ॥ पावहु ते पंगुल भया मारिआ सत गुरु वान ॥ ॥कवीर सत गुरु सूरमे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाहिआवानजराक॥लागतभइरगिरिपरिआपराकलेजेचेवे॥ ॥कबीरहजकावैहउजातयाआगैमिआ
घुदाइ॥हाजीमुजमैलरवआतनेजेकिनफरमांईगांइ॥ ॥कबीरहजकावैहारहोइगयाकेतीवारकबीर॥सां
मुजमैकाषतामघहूतवोलैपीर॥ ॥कबीरजोरकीआहोजुलमहैलेइजवावषुदाइ॥दफतरलेषानिकसै
मारमुहैमुहषाइ॥ ॥कबीरधरतीअरुआकासमैदोइतूंवरीअवध॥षटदरसनसंसैपरेअरुचौरासी
सिध॥ ॥कबीरमेरामुजमैकछुनहीजोकछुहैसोतेर॥तेरकौसौपतेक्यालागैमेर॥ ॥कबी
रालेटोलेदिनगयाव्याजवढतउजाइ॥नाहरिभजउनषतफटिउकालपौहच्चिउआइ॥ ॥नामाकहै
त्रिलोचनामुषतेरामसमाल॥हाथपाउकरकामसभचितनिरंजनतालि॥ ॥कबीरहमाराकोनही
हमकिसहूकेनाहिं॥जिनइहरचनरचोययातिसहीमाहिसमाइ॥ ॥कबीरचिकिरआतागिरपरा
कछूनाआइयोहथ॥पीसततपीसतचावयातोईनिभयालाथ॥ ॥कबीरमनजानतसभवातजानत
हीअउगुनकरै॥काहेकोकुसलातहाथदीपकूएंपरै॥ ॥कबीरलागीप्रीतसुजानसिउवरजै
लोगअजान॥तासिउटूटीक्योवनैजाकेजीउपरान॥ ॥कबीरजोमैचितवनाकरउकिआ
मेरेचितवेहोइ॥मपनाचितवाहरिआहरिकरैजोमेरेचितनहोइ॥ ॥चिंतामियापकराइहीअचिं

3

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तेमिसाधेरहे ॥ नाकके सेसालाहे ओने सभनाकारकरेह ॥ ॥कवीर रामनचेतउ पीरि आसाल चमेगहे ॥
पापकरंतामरगयाआयअ पुषनीमागेहे ॥ ॥कवीर केसो केसो कूकीएन सोईएअसार ॥ रातदिवसकेके
केनेकवहूकहतेउकारि ॥ ॥कवीर रामरतनअषकोयलीपारषआगेषोल ॥ कोईआयमिलैगो
गाहिकलेगेहिंगेमोल ॥ ॥कवीर तनवरउरीरामहैफलउरीवैराग ॥ छायाउपीसाचहैजिनतजयावा
दिवार ॥ ॥कवीर ऐसावीजकोरवाहुरमासफलेत ॥ सीतलछायागहरफलपंछीकेलकरंत ॥ ॥
कवीर दातातरवरदयाफलउपकारीजीवेत ॥ पंछीचलेदिसावरीविरछासफलफलंत ॥ ॥कवीर
एकघरीआधीघरीआधीहूतेआध ॥ भगतनसेतीगोसटेजोकीनसोलाभ ॥ ॥भागमाछलीसराषान
जोजोमानीषाइ ॥ तीरथवरतननेमकीरासभेरसातलजांइ ॥ ॥कवीर नीचलोइनकररहउलेसाजनघर
माह ॥ अमरसनेषेलिउपीउसोकिसीलषावननांगेहे ॥ ॥आठपहरसाठेघरीतुअनदिषतहैंजीउ ॥ नीचलोइ
22 नकौकरउअमघटदेषउपीउ ॥ ॥तनमषीजीउमैगेहेजियवहैजीयमैवमैविपीउ ॥ जीयपीयवूझेनहीघर
मैजीउमैपीउ ॥ ॥कवीर व्राहमनगुरहैजगतकाभगतकागुरनाहें ॥ अरझउरझकेपचिमुआचारोवेद
माहें ॥ ॥रूदतडोलैअचगतअरचीनतनहींसत ॥ करतामारुकेउपाईमैंवितामगतउभगेत ॥ ॥ वं
दरीसोहीराछाडकेकरहेआनकीआस ॥ तेनरदोजकजाहिंगेसतभाषेरविदास ॥ —— ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सेख फरीद दोहा॥ फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े संमल बुक भरी॥ जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणा करी॥ ॥फरीदा जे जाणा
लड़ छिजणा पीडी पाईं गंढ॥ जै जेवड मै नाहि को सभ जग डिठा हंढ॥ ॥फरीदा जे तूं अकल लतीफ हैं काले लिख न ले
ख॥ आपनड़े गिरेवान महि सिर नीवां करि देख॥ ॥फरीदा जो तै मारन मुकीआं तिनां ना मारी घुंम॥ आपनड़े घर जा
ईऐ पैर तिनां दे चूम॥ ॥देख फरीदा जो थीआ दाड़ी होई भूर॥ अगहु नेड़ा आया पिछा रहिआ दूर॥ ॥
फरीदा काली धौली साहिब सदा है जे को चित करै॥ आपना लाइआ पिरम न लगई जे लोचै सभ कोइ॥ ॥फरीदा का
ली जिनी न राविआ धौली रावै कोइ॥ कर सांई सिउ पिरहड़ी रंग नवेला होइ॥ ॥जिन लोइन जग मोहिआ सो लो
इन मै डिठ॥ कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठ॥ ॥फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देंदिआ नित॥ जो सै
तानि करा इआ से कित फेरहि चित॥ ॥फरीदा थाकु बनि दीरा थाकु जेडन कोइ॥ जीविदिआं पैरां तले मुइआ उ
पर होय॥ ॥फरीदा जंगल जंगल किआ भवहि वण कंडा मोड़ेहु॥ वसी रब हीआलीऐ जंगल किआ ढूंढेहु॥ ॥
फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि उठन पास॥ धिग तिनां दा जीवणा जिना विडाणी आस॥ ॥फरीदा गली
आं चिकड़ दूर घर नाल पिआरे नेहु॥ चलां ता भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु॥ ॥भिजउ सिजउ कंबली अ
लह वरसउ मेहु॥ जाइ मिला तिना सजना तुटउ नाही नेहु॥ ॥फरीदा मै भुलावा पग दा मत मैली होइ जाइ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हरिहि हरा नराईसिरभीमिटीआइ ॥ ॥फरीदारोटीमेरीकाठकीलावरामेरीभुख॥जिनाखाधीचोपडीघणे

सहनगे दुख॥ ॥रुखीसुखीखाइकैठंडापाणीपाउ॥फरीदादेखपराईचोपडीनतरसाएजीउ॥ ॥अजुनसो

5 तीकंतसिउअगमुडेमुडजाइ॥जाइपुछिउडुहागणीतुमकिउरैनविहाइ॥म ॥साहुरेढोईनलहैपेईएनाहीथाउ॥

पिरवातडीनपुछई धंनसुहागणनाउ॥ ॥साहुरेपेईअकंतकीकंतअगमअथाउ॥नानकसोसुहागणीजोभावै

वेपरवाहु॥ ॥नातीधोतीसाथहीसुतीआइनचिंत॥फरीदारहीसुवेड़ीहिंडुदीगईकथूरीगंध॥ ॥जोबनजाइ

नडराजेसहुप्रीतिनजाइ॥फरीदाकितीजोबनप्रीतिबिनसुकगएकुमलाइ॥ ॥फरीदाचिंताखटोलावाणा

दुखबिरहविछावणलेफु॥एहुअसाडाजीवणातूसाहिबसचेदेखु॥ ॥बिरहाबिरहाआखीऐबिरहा

तूसुलतान॥फरीदाजितननबिरहानऊपजैसोतनुजाणमसान॥ ॥फरीदाएविखगंदलाधाखंडलिवाड॥इकरहेदेखहगा

रिआखंडलिवाड॥इकरहेदेरहगाराइकराधीगएउजाड॥ ॥फरीदादरदरवाजेजाइकैकिउडिठोघड़ीआ

ल॥इकुनिदोखामारीऐहमदोखाकाहाल॥ ॥घड़ीएघड़ीएमारीऐपहरीलहैसजाइ॥सोहेडाघ

ड़िआलजिउडुखीरैणविहाइ॥ ॥बुढाहोइआसेखफरीदाकंबणलागीदेह॥जेसौवरिआजीवणाभीतनहोसी

खेह॥ ॥फरीदाबारपराइऐबैसणासांईमुझैनदेहु॥जेतूएवैरखसीजीउसरीरहुलेहु॥ ॥फरीदाको

ठेमंडपमाड़ीआउसारेदेभीगए॥कूड़ासौदाकरिगएगोरीआइपए॥ ॥फरीदादोहदिवीबलंदिआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मलकवग्हिडाम्माइ॥गडलीताधरलगिम्मादीवडेगइम्मावुऊ॥ ॥फरीदारतीरतननिवलेजेतनचीरैकोइ॥जोतनरते
रवसिउनिननतनरतनहोइ॥ ॥इहतनसभोरतहैरतविननतजनहोइ॥जोसहरतेम्मापरोगतिननतनलोभरतनहोइ॥
॥ ॥फरीदासोईसरवरढूंढलहिजियइलवीवथु॥घ्पउढ़डेक्याहोयचिकडडूवेहथ॥ ॥फरीदासिरपल
म्मादाढीपलीमुछांभीपलीम्मां॥रेमनगहलेबावरेमाणिहिकिम्मारलीम्मा॥ ॥फरीदाकोठेमंडपमाडीम्मां
राननलाएचिंत॥मिटीपईम्मतोलवीकोइनहोसीमित॥ ॥फरीदाजिएाकंमीनाहीगुएातेकंमडे
विसार॥मतसरमंदापीवहीसांईदिदरवार॥ ॥फरीदासाहवदीकरचाकरीदिलदीलाहलाहभरांदि॥
दरवेसानोलोडीऐरुखांदीजीरांदि॥ ॥फरीदाकलामैलेकपडेकालामैडावेस॥गुनाहीभरम्मामैफि
रालोककहैदरवेस॥ ॥कलरकेरीछपरीम्माउलवैहंजु॥चिंजुबोडंहिनपीवहिउडएासदीडंऊ॥ ॥ १२७

तुलसीदासकृतदोहा ॥ कामी माकास्से ... तिप्रेमचाहीरासांच ॥ कामजुआवेकामहीकालैकरैकुमाच ॥ ॥मग १
लमनमरजादमनसकलधर्ममनधीर ॥ लालरूपमनअपमनआनंदमनरघुवीर ॥ ॥जयलछमनजयजान १
कीजयरघुवरररणधीर ॥ जयतिभरतजयसत्रुघनजयहनुमतवलवीर ॥ ॥सीतापतिरघुनाथतनकरहु
लगमेरीदोर ॥ जैसेकागजहाजकोसुजतऔरनठोर ॥ ॥रामभजतकुटीभलोवाकेततननहिंचाम ॥ कंच १
नदेहीपायकेआवैकोनेकाम ॥ ॥ताकततभाईत्यागीकर्णकुवेरसमान ॥ जोघजोरजोआईरामआवरनरकनि
दान ॥ ॥हरिकेहरिजनकृतदेहरिजनकेमुविवेक ॥ कुमदनिकैसमिराकहेहसमिकेकुमदअनेक ॥ ॥१
तुलसीकूठेभगतकौरघुपतिराखमान ॥ जैसेमठउपरोहतैनेगदेतजजमान ॥ ॥नारीसेतीनरभयोले
परसादीसीस ॥ तुलसीसेईयजन्मतततसवालकोमीत ॥ ॥अंतर्जामीगर्भगतिताधुलंदरीमांह ॥ तुल १
राकैपावीयदानोपावजांह ॥ ॥हरिदरवारीसंततहैंहनतैसमकुछहोय ॥ तुरतमिलावैरामकोइहैमिलै
जोकोइ ॥ ॥वघापलभचैनहीनदीनअचवैनीर ॥ परमारथकारनेसाधनधरेसरीर ॥ ॥तुलसी १
रामहरयाडकैवैरऔरकोजाप ॥ ताकेमुखमैदीजियेनोसादरकोवाप ॥ ॥हितअनहितसमहानदैतुलसी
अमरिलपाइ ॥ वधकवध्योभगवानतेरुघरोदेकदिखाइ ॥ ॥वडोजानकेसेवीराजवततवआवैकाम ॥ १
लंकविभीषनकोदियोवडोईचितमेराम ॥ ॥छप ॥ कीटमुकटमाथेवन्योधनुषवानवन्योहाथ ॥ १०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुलसीनिजजनजानकेनाथमयेरघुनाथ॥ ॥तुलसीतहांनजाईराजहांनवरनववेक॥रागनूपारतआंधु
आखेतखेतसमराक॥ ॥चंदनपरयोचुमारघरनितप्रतिघीसेचाम॥चंदनरोवैदिनमेरेपरयोनी
चसोकाम॥ ॥राकभरोसाराकवलराकआसविस्वास॥राकरामघनस्यामहितचातकतुलसीदास॥ ॥
जहांनजाकोगुनगहैतहांनताकोकाम॥धोबीवसकेकहाकरेदिगअंबरकेग्राम॥ ॥रामनाकील
टहैलटसकेसोलूट॥एनपीछेपछताहुगेजबतनजैहैछूट॥ ॥रामऊरोषबैठकेसभकाभुजरा
लेहि॥जोकीजैसीचाकरीतांकोतैसोदेहि॥ ॥तुलसीतहांनजाईराजहांजन्मकोगाम॥भगतभावजानै
नहीलेतपाछलोनाम॥ ॥काकाहूकेव्यनमिलकाकाहूकेतोड॥तुलसीसनमुखचाहीएदसर
एलतकेमोह॥ ॥तुलसीत्रिसासनिदीयजोपायनतरहोय॥केवहुउआवनपरेघीरघनेरी
होइ॥ ॥तुलसीवाहरवारकीजोगहिहोसोवार॥नेउछघभादोनदीकोगहिउतरेपार॥ ॥आलुभ
मरोसेसोइरादेहजोदमरसीन॥तोजोताताछलकैरखवारोजगदीन॥ ॥तुलसीयावउपनानीचसंग
नवकीन॥खेतपरयोरंगरेजगहिनीलतोरवेदीन॥ ॥हृदयवाचनीकपटकीमुखपीवननरबोट॥
तुलसीतहांनजाईएमिलेकनककीचोट॥ ॥सो॰॥मनतेमतोजुमहुजोनहिजानैजगतगति॥तु
लसीहृदेम्हत्तउजोनबजानचि[illegible]ही॥ ॥वैठरामगुनगायतुलसीमनतेतोछवरआवनहारजात॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

7

निकटवसतसरतनहीघ्रगजीवनतजिंह॥ तुलसीयासंसारकोभयोमोतीयाविंदु॥ ॥तुलसीयाजगआनकेको
नगयोसमरस्य॥इककंचनइककामिनीकिननपसारयोहत्य॥ ॥शाकम्रगाकेकारनेभरतधरीदुइदेह॥तु
लसीऊदिहैकौनगतजाकेनानानेह॥ ॥तुलसीघरकेघनघेरमैघरीघरीतनछीन॥कवहिकववननहि
फिरेकरकहुवाकोपीन॥ ॥मिटैनमनकीकल्पनागयेकल्पतरछाहतुलसीकपानकरदवैजनकसुनाके
नाह॥ ॥नीचनीचभवतरगयेरामनामलेलीन॥जातहिकेअभमानतेवूडेवडुतकुलीन॥ ॥राम
भगतभैजोपजैजातवरनकुलखोइ॥तुलसीसंमतखेतमैपरैसोसंभलहोय॥ ॥जाकेपदवनहिनहीता १
देतगजराज॥विखदेतेविखयादईरामगरीवनवाज॥ ॥नगिगमानकमहिगाकीयासेऊगजलति
णानाज॥तुलसीयातेजानीएरामगरीवनवाज॥ ॥वारवरोवरवारहैतापरवहितभार॥रघुवर २
पारउतारहैअपनीवोरनिहार॥ ॥नारीहैचौवाघुरीमतकोईलावोअंग॥दसमसरावननराएपरनारी ३
केसंग॥ ॥नारीकोनहनिंदीएनारइतनकीघ्रान॥नारीसोनवउपजैध्रुवप्रहलादसमान॥ ॥रा
गहुनेमगतनदीपानरघनुदेतउरार॥रामानुभवेप्रसकहेतुलसीकिउकरहुजाय॥ ॥हज्ञान
सौहूरहीमतोकहितुलसीजियजान॥निकटनिरादरहोतहैजिउगंगाकोपान॥ ॥वनीवनाईदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देहिहैविनादुह्वेस्तूल ॥ तुलसीकहुकाकीजीएविनावासकोफूल ॥ ॥वनीवनाईवनरहीअववनवेकीनाहि ॥ तुलसीरहजी
यज्ञानकेमगनरहोमनमाहि ॥ ॥आयोनहीकछुलेकरलेनगयोकछुसाथ ॥ तुलसीनिजकृतकर्मतेगललग्योघ
न्यघगहाथ ॥ ॥तुलसीद्विजकर्तूतितेगयोवडाईभाग ॥ औरनकोसुखदेखकेजरैसुडदिनआग ॥ ॥कमलाकु
मदनजलवसैरविससिवसेअकास ॥ जोजनजाकेमनवसैसोजनताकेपास ॥ ॥विमुखकमलसुवासुविनजाचकविमुख
करत ॥ ॥उत्तकुलकीकरनीतजीउत्तनभयेभगवान ॥ तुलसीअधविचकोरयोज्योवेडरकोपान ॥ ॥ज्ञानग
रीवीगुरधर्मसत्सवचननिर्दोष ॥ तुलसीकवहूछाडीएअक्षाशीलसंतोष ॥ ॥डरैनहींसंसारसौंगुरुधर्महितग
योषाइ ॥ तुलसीडरैवदोषतेनरककुंडमोजाय ॥ ॥कोईतोतनमनदुखीकोईचिततउदास ॥ राकरांकदुखसमनको
सुखीरामकोदास ॥ ॥तुलसीयाजगजन्मकैहमकोमिलिराम्रघार ॥ काजानीराकाभेषमेनारायणमिलजार
समरहूरूमननिरखकेतुलसीगहिरहुमौन ॥ ननमेरोमेरोनहीऔरसुमेराकौन ॥ ॥रामनामनिजअंककैसमसाध
नदेसरन ॥ अंकगयेकछुहाथनहिअंकरहेदसगुन ॥ ॥तुलसीसीतारामकोनिसदिनभजैनिसंक ॥ आगेअंतप्र
तिपालहैजैसैनवकोअंक ॥ ॥रामनामजपजीयजन्मभयेसुकृतसुखसाल ॥ तुलसीइहजोआलसीगयोआजुकेका
ल ॥ ॥साधसुखसुमयनेआगतपरमार्थनप्रवेश ॥ रामनामसुमिरतमिटैतुलसीकठनकलेश ॥ ॥ ०ः ॥

[illegible] रामसत ॥ २

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रीतिप्रतीतसुरीतसौंरामनामजपराम॥तुलसीतेरोहैभलोआदिमध्यपरिनाम॥ ॥राममनिमनितकऊतरुतनमनआठोजा
म॥तुलसीपातककटतहैदेखतजिनकोधाम॥ ॥तुलसीप्रेमप्रतीतसौंरामनामजपजाग॥किएहोइविधदाहिनोदेत
अभागीभाग॥ ॥तुलसीपरघरजायकेदुखनकहिकहीरारोइ॥भरिजगवाइरामआपनोवाटलेवेकोइ॥ ॥रसना
सापनिवदनविलजेनजपैहरिनाम॥तुलसीप्रेमुनरामसौंताहिविधाताबाम॥ ॥हियफाटोफूटोनयननजरोसुतन
किहकाम॥द्रवैस्रवैपुलकैनहीतुलसीसुमरतराम॥ ॥रहेनजलभरपूररामसुजससुनरावरे॥तिनआखनमेंदू
रभरभरमूठीमेलीरा॥ ॥साहवहोतसरोषसेवककोअपराधसुन॥अपुनेदेषेदोषरामकवहूनहिउरधरहि॥
॥हमननसमसोनिरसरकृतरसरामसोहोइ॥भलीसिषावनदेतनितहिनतुलसीतोहि॥तुलसीस्वारथरामहितप
रमारथरघुवीर॥सेवकजाकेलषनसेपवनपुत्ररणधीर॥ ॥रामसनेहीरामगतिरामचरनरतजाहि॥तुलसी
फलजगजनमनोदयोविधाताताहि॥ ॥आपुआपुनेतेअधिकजिहिप्रीयसीताराम॥तिनकेपगकीपानही
मेरेतनकोचाम॥ ॥अध्यातमसंतोषसुषरघुवरचरनहिप्रेम॥तुलसीजिउमनवुदसोकातीर्थव्रतनेम॥
तुलसीजोपैरामसोंनाहिनसहजसनेह॥मूंडमुडायोवादहीभांडभयेतजगेह॥ ॥सेयसीतारामनहिभजेनशं
करगौर॥जन्मगवायोवादहीरातपराईपौर॥ ॥चरषाकोगोचरभयोकोचरकोवरप्रीति॥तुलसीतुम्हनहिराम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवहिसमर्थहसुखदप्रियअच्छत्तरप्रियसुखकार॥कवहुनकाहुहिरामहिप्रियतुलसीकह्योविचार॥ ॥निजदूषनगुनरामकोसमझेतु
लसीदास॥होइभलोकलिकालहूउभयलोकअनयास॥ ॥निगमअगमसाहवसुगमरामसाचलिचाह॥अंवअसनलोकियतसु
लभसवनमहिजगमाहि॥ ॥तुलसीजौलौंविषयकीमुधामाधुरीमीठ॥तौलौंसुधासहस्रसमरामभक्तिसुठसीठ॥ ॥
जैसेतैसोरावरोकेवलकोशलपाल॥तौतुलसीकोअतिभलोतिहूंलोकतिहूंकाल॥ ॥तुलसीसुषीहरामसोदुषीनि
जकरतूत॥कर्मवचनमनठीकजिहतिहकनतकेवलघूत॥नातोनातेरामकेरामसनेहसनेहु॥तुलसीमांगतजोरकरजन्मजन्म
शिवदेहु॥ ॥सबसाधनकोएकफलजानोसोईजान॥ज्योंत्योंमनमंदरवसोरामधरेधनुवान॥ ॥जौजगदीसतो
अतिभलोजौमहिमसतोभाग॥तुलसीचाहतजन्मभररामचरनअनुराग॥ ॥परऊनरकफलचारिसिसुमीचडाकि
नीखाइ॥ ॥ ॥राममेहुउरकररामसोंममतारीतिप्रतीति॥तुलसीनिरुपधरामसोभईहा
रिहूजीत॥ ॥तुलसीरामकृपालसोंकहिसुनाउगुणदोष॥होइदूवरीदीनतापरमपीनपरतोष॥ ॥सुमरनसेवा
रामसोंसाहवसोंपहचान॥ऐसेलाभनलललकिजिहतुलसीनितहितहान॥ ॥जामेंजानतसेईरावितजानेकोज
न॥तुलसीइहसलनसमझउरआनधरेधनुवान॥ ॥करमठकठमलयाकहैज्ञानीज्ञानविहीन॥तुलसीत्रिपथ
विहायगोरामदुआरेदीन॥ ॥तुलसीरघुवरआदरोषोटीषरोखरोई॥दीपककजलसिरधर्योधरोधरसो
सुधरयोइ॥ ॥वांधकसवकेभयेसाधकभरानकोइ॥तुलसीरामकृपालतेभलोहोइसोईहोइ॥ ॥जापक
हवकरतूतविनजापयोगविरुछेम॥तुलसीजपउपायसवविनारामपदप्रेम॥ ॥ ः ॥ १ ॥ १ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥तुलसीराममहुंतेअधिकरामभक्तिजियजान॥निरिय।राजारामसेधनकभयेहनुमान॥ ॥तुलसीजाकवदनतेधो
खेहुनिकसेराम॥तकालअमंगलहूरमंगलतिनकेधाम॥ ॥मिथ्यामाहुरसज्जनहिबलखहिगरलसमसांच॥
तुलसीछुअतपरागिज्यैंपावकपारदआच॥ ॥सो॥कहैंविमलमतसंतवेदउरानविचार॥सभैदवैजानकीके
ततवघटैससारअम॥ ॥मोईसाधुहनसमगवरराममक्तिथिरथाइ॥लरकाईकोपैरवोतुलसीविसरनजाइ॥ ॥
सभैकहावतरामकेसभहीरामकीआस॥रामकहितजिहआपुनोहितभजतुलसीदास॥ ॥जिहिशरीररतिराम
यदतिहआदरहिसुजान॥रुद्रदेहतजनेहवसवानभयेहनुमान॥ ॥जानरामसेवासरससमुझकरवअनुमा
न॥पुरखातेसेवकभयेहरतेभयेहनुमान॥ ॥खलतवालकव्यालसंगपावकमेलतहाथ॥तुलसीहतपितमा
तज्योराखतसीयरघुनाथ॥ ॥तुलसीदिनमलशाहकोभलीचोरकोरात॥निसवासरताकोभलोमानोरामहि
ष्यात॥ ॥तुलसीजागनभूषनवसनवचनविशेषसुदेख॥रामसुकीरतिकामिनीतुलसीकरतवकेख॥ ॥
सत्पवन्वनअरुदीनतापरतीयमातसमान॥रतनापरहरिनामिलैतुलसीदासतमान॥ ॥मातसकलसानु
जभरतगुरुपुरलोगसुभाउ॥देखदेतकेकईहिलिकापतकपराउ॥ ॥जैसोदसरथरायकोजन्ममरनजस
नाम॥रामविरहबरतनपरहरेजीयततिलाराराम॥ ॥तनहिकिलोवततगोदगतिसीयहितघाइलनीच॥
श्री तुलसीपाईंधवतिमुक्तमनोहरमीच॥ ॥मुयेमुक्तजीवतमुक्तमुक्तकहेबीच॥तुलसीसमहुंतेअधिकगी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

+ नीचनिचाईनाततजैंसज्जनहूंवेसंग॥ तुलसीचंदनविटपवसविनुविषभयेनभुजंग॥ ॥ज्ञानकहेअज्ञानविनुदि
नुतमकहेप्रकाश॥ निर्गुनकहेसोसगुनविनसोगुरुतुलसीदास॥ ॥रीसउचारनकीनकौवरजरहेपुरलोग॥
करहीसतीकहावतीजरजीनाहवियोग॥ ॥घरकीनेघरजाततहैघरछाडेघरजाय॥ तुलसीघरवनवीचही
रामप्रेमपरछाह॥ ॥दीयेपीठपाछेलगेसनमुखहोतपराइ॥ तुलसीसंपतछाहज्योंलखदिनवैठगवाइ॥ ॥
जोघनवरषैसमयसरजोभरजन्मउदास॥ तुलसीयाचतचात्रककहततउतिहारीआस॥ ॥चातकतरसीक॥ ॥
ररतररटतरसनाघटी॥ ॥मानराषवोमांगवो॥ ॥गरजआपुनीसमनकोघनगरतडरआन॥ तुलसीचात्रकचत
रनौंजाचकजानसुजान॥ ॥वधवौवधंकपरौ॥ ॥अडकोरकीयेचेदु॥ ॥जावेचारोमासपीयेपपीहास्वातजल
जान्योतुलसीदासजुगवनेहमेहमन॥ ॥तुलसीमनचातककहिकेवलप्रेमप्यास॥ पीयतस्वातजलजानजाचतवारहि
सास॥ ॥सुलभप्रीतप्रीतमसवैकहतकरतसभकोइ॥ तुलसीनेहनिवाहवोवडेभागवसहोइ॥ ॥रागदोष
गुनदोषकोसाषीहदेसरोज॥ तुलसीविकसतमित्रलषसकुचतदेषमनोज॥ ॥कुदिनहितसोहितसुदिन
हितअनहितनहिकोइ॥ ससिछविहररविआरुनताभित्रकहतसभकोइ॥ ॥रुचानमानहिमांगवोतुलसी
दानहिदान॥ असततआनखनआचजप्रेमपिहरिजान॥ ॥नाषीकाकउलूकदादुरसेभयेलोग॥ भलेतेसुकपि
कमोरसेकोउप्रेमपथयोग॥ ॥उतममघमवीचगतपाहनसिकतावार॥ प्रीतपरिज्ञातिहुनकीवैरविक्रमजात॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आयआपकोसमभलोमनुनेकहेकोउकोर॥तुलसभकहसेभलोसुजनसराहिरासोर॥ ॥गुरसंगतगुरहोयजोतघुसंगत
10 परनाम॥चारपदारथमनगनैनरकदुआरहकाम॥ ॥तुलसीगुरतलघुलहततलघुसंगतपरनाम॥देवीदेवपुकारयतनीचनार
नरनाम॥ ॥रामकृपातुलसीसंतभगंगगसगंगसमान॥जोजतेपरसेजननमिलैसोकरआपसमान॥ ॥आचरचा
रविचारकैसमतअकलिखलेखु॥जोगकुजोगमयजगगतसमकविशेख॥ ॥होईभलकेआनभलेहोइदानकैसम॥
होरकहतसहतकोज्योंपावकमेधूम॥ ॥राखीयेरखीएसजननजननिरखपरखअगहिमंद॥वडवडानलसोखतउदधिह
र्षचढावतचंद॥ ॥नीचनिरावैसिरसततुलसीसीचैऊख॥पोखतजलदसमानसभविषपियूखकेरुख॥ ॥टाटी
कानदैसकैतुलसीजेनरनीच॥निंदहिवलहरचंदसेकाकियकनंदधीच॥ ॥भलोकहेविनुजानीराविनुजानेअपवाद॥
तेनरगाउरजानजीयकरवनहरखविखाद॥ ॥परसुखसंपतदेखसुननजरहितेजडविनआग॥तुलसीतिनकेभालसोंचली
९६ भलाईभाग॥ ॥भलोभलेसोघलकरेजन्मकनोडेहोइ॥तुलसीश्रीपतिसिरलसेवलवामनगतसोइ॥ ॥वचन
वेषक्योंजानीएमनमलीननरनार॥श्वपनखामृगपूतनादसमुखप्रभुविचार॥ ॥हसनिमिलनवोलनहसित
कटकरतमनमाहि॥छुयतसकुचतसमुझतसोतुलसीतिनपाहि॥ ॥वडेपापवाढेकीयेछोटेकीयेलजात॥तुल
सीतापरसुखकहतविघसोंवहुतरिसात॥ ॥राजुकरतविनुकाजहीकरैकुचातकसाज॥तुलसीतेदसकंधज्योंजैहै सहितसमाज॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुलसीतैसादेतगितहजैसीजितकोलाग॥हंसाकोमोतीदिवोदिवोचकोरहिआग॥ ॥लोकरीतफटीसहैआंजीसहैन
कोइ॥तुलसीजोआजीतहैसोआघरोनहोय॥ ॥जोपरपापमनाईयेमासोन्हठयेविचार॥तुलसीतहानजीतीयज
हाजीतहैहार॥ ॥ज्हैतेफलवूगवोभलीजीततेहार॥उहकेतेउहकायवोभलोजुकरैविचार॥ ॥वैरमूलहि
तहिवचनप्रेममूलउपकार॥दोहासुभसंतदोहसोतुलसीकीयेविचार॥ ॥राषनरसनाओलीरावरओलीरातरवार॥
सुनतमधुरपरनामहितवोलीयेवचनविचार॥ ॥पेडुनफूलतविनुकेहेकहतनलागततेर॥सुमतविचारवो
लवोसमुझकुफेरसफेर॥ ॥रामलषनविनईभरावनकुगरीवनवाज॥मुषरवालरावरागरासकुलसहतसमा
ज॥ ॥लाभसमैकोपालवोहानसमैकीचूक॥सदाविचारहिचारमतसुदिनकुदिनकीहूक॥ ॥समरथकोडुह
रामसोतीयहरनअराध॥समयसाधेकाजसवसमैसराहैसाध॥ ॥पापपातकौंसोचवोनर्कसुगतरहेत॥
कुटलकंठककुफिरैगोतुलसीकरतअचेत॥ ॥तुलसीलघुभोजनकरैविपतमानकोरग॥कनकतजीकाम
नतजीतजीघातकोसंग॥ ॥नेतिनेतिसभदिनकहतनामुविदतवडवेद॥तुलसीप्रभुपहचानकरपदिचा
नोभलभेद॥ ॥गउवेघनेपरतीतिवडवडोयोगतेछेम॥वडोसुसेवकस्वामितेवडेनेमतेप्रेम॥ ॥सिष्यसिखा
सेवकसचवसतियसिषावनसाच॥सुनसमुझीपसुनवरहरीरावरमनदेजनपाच॥ ॥अनसमझेअनसो
वनोआवसमुझीयेआप॥तुलसीआपुनसमझीरावरपरपरसुरताप॥ ॥वउमुखवडुरुचिवचनवउवउअचा

10

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative.

रविवहार॥ दूनकोमलोमनाइवोरहस्यज्ञानअपार॥ ॥मांगमधकरीखातहैसोवैवतपाउपसार॥परअप्रतिष्टाविप
रीततातेवाढीरार॥ ॥पाकपकपेविटपफलउत्तमसधममीच॥फलनरलहिहिनरश्योंकरविचारमनवीच॥ ॥
प्रीतिरामपदनीततधर्मप्रीतीतिसभाय॥प्रभहिनप्रनतापरहरैकवडवचनमनकाय॥ ॥शत्रुसयानेसलिलज्यों
राखसीसरिपुनाउ॥वूडतलखपगडगतलखचपरिहरीपाउ॥ ॥प्रभसमीपछोटोवडोनिवलहोतवलवान॥तुल
सीप्रगटविलोकिएकरअंगुलीअवमान॥ ॥साहवतेसेवकवडोजोनिजधर्मसमान॥रामवांधिउतरपोदधि
लांघगयेहनुमान॥ ॥पातपातकोसीचवोघरीघराकोलौन॥तुलसीखोटेचतुरपनकलिउद्गिकेकौन॥ ॥
कलिपाखंडप्रचारपापपरायननारनर॥तुलसीउभयअधाररामनामसुरसरतुजल॥ ॥जैसेजरवरकेजोरतेभो
जनकीरुचनाह॥तुलसीपूरवपावतेहरीचरचानसहाइ॥ ॥तुलसीजुगमेहोपलअमित्रजुकीएहजार॥
कौनमिलोरघुनाथसमप्रीतिनिवाहनहार॥ ॥जैंसिरकाटेऔरकोअपुनोरस्योकहार॥तुलसीहर
दरवारमैवदलोकहूनजाय॥ ॥तुलसीकहेपुकारकेसुनोसंतगुनधाम॥रामनामपरहवलहैततहावसत
हैराम॥ ॥तुलसीसूरततरामवेसमघटरहीसमाइ॥जिउमहदीकेपातमेलालीखीनजाइ॥ ॥साखीपदवर
नेलोवहुतुअर्थसुन्योचितलाय॥रामभगतिसोसारहैजनमकीकहावसाइ॥ ॥वाजवधिकअरहडश्वनर

नकोचितयोहार॥तोतुलसीयाजगतमैसाधनजीवैकोइ॥ ॥दयाधर्मक्रमोमग्देलम्मैसोचितजवहोय॥तेतुलसीयाज
गतमैमुथोरहैनकोइ॥ ॥कनकत्यागवोसहजहै अनतनीकोनेह॥मानवडाईईरसातुलसीदुर्लभयेह॥ ॥मायाजोसम
हीजजीमाननतज्योनहीजाय॥हियमारेमुनिसुनउहैमानसभगतिकोबोइ॥ ॥छमावडनकोउचतहैनीचनकोउतपा
त॥कहाघट्योरघुवीरकोजोभृगुमारीलात॥ ॥नाथवन्योविगरयोनहीविगरयोवन्योनजाइ॥जोसुरसरनीचे
वहेवारदकहासमाइ॥ ॥वितीवडुतअनंदसौंरहीतनकसीआइ॥तुलसीचिंतमतकरोमीरघुवीरसहाइ॥ ॥
रामनामजपतेरहोसंतसदालौलीन॥तुलसोजोजनहुधदहैहोतनकवहूषीन॥हनुमानजपतजनतुलसीहोत
सकाज॥हरोचरनदयालकोरामवारीवनवाज॥ ॥हनुमानहनुमानकहैहनुमतहरनसंदेस॥तुलसीते
हिरामप्रियरामप्रियारोतेह॥ ॥दयाराधअरुहरमजैउधमकरकरसार॥तुलसीतांकेमधहरसोवैकुठेजाय॥
नमनुकहतपरवारसौंअसनवसनहमदीन॥जेरजेरदुमपत्रकहहरेहरेकिहकीन॥ ॥चाहैविधुलमेर
तिलतिलहमेरपगतहल॥कीयोसदामाधनदसनदारिदहन्योसमूल॥ ॥तुलसीचीरजकेघरेकुं
जरमननभरसार॥टूकटूककेकारनेस्वानघमितिसलाय॥ ॥आवनहीआदरनहीदेषडरावैमोह॥
तुलसीतहानजाइएपरमसुरकीसोह॥ ॥तुलसीपावसकीसमैधरयोकोकलनमौत॥अवराइरव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

12

करतंहहैआनंदनरहोतहमारोव्याह॥तुलसीगाइवजाइकैडारदूहरिआगार॥ ॥तुलसी।तीनोलोकमेंजेजागे
बरवीर॥केजीपजानोआपनोवेजानेरघुवीर॥ ॥वडेभयेतोकामयोजैसेवडोषजूर॥पथिकछाहपावेनही
फललागोवडदूर॥ ॥तुलसीसपुरुषहीएयेवडेकुलनकीरीति॥तीनवडेसोकीजीयेव्याहुवैरअरुप्रीति॥
नाथनाथकेहाथमैषेंचतफिरैअहार॥तुलसीतहतहजाईएजहांअसहमार॥ ॥तुलसीभावीप्रवल
हैजोषीजैसोकूर॥साईघटैनतिलवधैजोविधलिषअकूर॥ ॥तुलसीरामभरोसतेकीयोपापकीमोट॥
जैसैनाकुनारकेवडीषसमकीवोट॥ ॥तुलसीनवैकोआपकोपरकोनवैनकोइ॥घालतराजतोलीर
निवैसुगेराहोय॥ ॥पतवारीमालावकरओरनकछुउपाय॥तरतेमारपयोनिचहरिनामेकरताउ॥
जगतजनायोजिहिसकलसोहरजान्योनाह॥जोआषनसोदेषीएआषेदेषनजाह॥ ॥वनैतुर
पुवरतैवनेकेविगरैमरपूरि॥तुलसीवनैजुओरतेनावतिवेमैधूरि॥ ॥रघुपततेसमहोतहैकपु
दासनतेनाह॥साईतेपरवतकरैपरवतसाईमाह॥ ॥श्रवननकथसुधामयीसुनैसुचितथिरहोइ॥
सुनसुनमनसुरझायपैओतावहीरासोइ॥ ॥कीरतकरनासिंधकीजिनउरधारीसोइ॥तुल
सीतेकंचनभयेवहुरोकाचनहोय॥ ॥षोटोकरनहीमानीराहरकोसुमरनटेक॥तुलसीकनका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र कोल्दासनछोईरारामनामबिनुधाम॥तुलसीवीत्योजाततनधूवाकोसोधाम॥ ॥रामनामनितदिनज
पैप्रेमप्रीतचित्तलाइ॥तुलसीसोसिधकोसहीघ्यायामायाछोइ॥ ॥रामरोमररंकाररघुनसहजैचली
जुजाय॥कारजबिनकुहस्तारकोसहजचाकफिराइ॥ ॥तेजपुंजमैचरनहैहाउचामकेनाह॥वेदपुरा
ननवरनयोहृदयकमलकेमाइ॥ ॥सभहीसरवरत्रिप्तहैकरतमलजलयोछ॥तुलसीहरसे
वनकरतसवमानैसंतोछ॥ ॥गुरुगोविंदसंतनविछैप्रतिभावउपजाइ॥मंगलसौंवंदनज
रैपापपुंजनरहाय॥ ॥लाभकाजरामग्रैहनजैसामनमत्तदेदान॥तावतदासापननहीतुलसी
सोदाजान॥ ॥कोउचहैधनमालकोकोउचहैमानवडमाग॥दासचहैहरिभरगतकोमटन
कोदुखदाग॥ ॥दासवडाईआपुनीआपुनेमखनकराइ॥तौतुलसीवादासकोदासापनघ
टजाइ॥ ॥कनककरूपनतेप्रीतज्योंअमलजुअमलीजान॥सर्वभावहरिकोभजैचंद
चकोरप्रमान॥ ॥तुलसीचिंताकरहिसौंजाकोमोप्याभार॥चे[illegible]हरिचरनकाआदिअंत[illegible]

12

मैंमेरीमैंतौकरीजोकछुमेरीहै।।१।।सवतुलसींहैरामकीमैंतामें…कोइ।। ।।प्रेमभक्तपायोजिंहें
रहतलछनप्रवान।।तुलसीलछनशरीरकीऔरकोकरैवखान।। ।।तुलसीनहीकठोरतका
पामाह।।प्रेमपंथऐसोकठनतुलसीपहुंचतनाह।। ।।कामक्रोधघोरागरफिरवहुरेनाह।।
चढकेमैननुरंगपरचलवोपावकमाह।।प्रेमपंथऐसोकठनतुसीपहुंचतनाह।। ।।तु
लसीविरहीवापरोअपनेभौमनजार।।पंथनिहारेरामकोपलपलवारंवार।। ।।व।।जीय
मैंजकरीलगरहीनिसवासरनितहोइ।।राममिलनवेकारमेरहीपपीहाहोइ।। ।।जोमह
3 लीजलकोचहैचात्रकघनकीप्यास।।योविरहिहरिदरसकोतलपितलिपतरसास।।
।। ।।घतानेहकागहियेतोलाघायनठंक।।भांचलगेउघरयोसअवसेहअकैसों
अंक।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।

कुंडलीया॥बुरा नित का पंथ बुरा जंगल का बासा॥बुरा कुमति का संग बुरा मूरष का हासा॥बुरा अर्थ विन बाद बुरा प्रस्ताव न जंने॥
बुरा लछ्यविन पुरुष बुरा हो आप बषाने बुरा जु विद्याहीन नर बुरा जु रन में भागणा॥कवक कहै गद्दर सुणि जनरणे पास भसे बुरा जु मांगणा॥
॥ ॥रहे हु चुप्प करसुं गवा तक बनिंद्रा कन आवे॥रहे हु चुप्प कर सा धमठी सें ध्यान लगावे॥रहे हु चुप्प कर चोर रैन कौ गमन लि
धावे॥रहे हु चुप्प कर यार सेज पर तीया रमावे॥रहे हु चुप्प कर यार घी सकल पाप गहै रहे गहे॥कवक कहै गद्द रे सुणि जन रणे चतुर चु
प्य कौं कर रहे॥ ॥वचन छल्यो वलराय वचन कौ रव दलषोयो॥वचन काज हरिचंद नीच घर नीर ज ढोयो॥वचन काज
जगदेव सीस कंकाली ऽप्यो॥वचन काज श्री राम लंक विभीषन थप्यो॥सोई वचन वैताल कहै जीभ कर गहै कदी रा ज रमा दू
लछ्य विक्रम न लनोल कहै वचन पलटी रा॥ ॥कवित्त॥जब से विकल भई सल सुषी सूक गई वाल म विदेस चलवे को नाम है ल
दे॥हूव दध श्री फल स्पैया घर थाली मा सटी को मात प्रत हू के भाल रोला को दयो॥तंदुल विसर गई व घ सो कह्यो ले आव बरो र सी
पतीनो गात पानी तन तेज यो॥जौलो भरलाय मूंठी आंगन मो आय वच हाथ जो पसारे तो लौ भान साय मैं भयो॥ ॥दी॥दीजी
राकमंडल कै राजमही मंडल को दीजी रातु रंग के कुरंग छाला कटके॥दीजि राग जराज कैं विराजवे को वृंदावन ऊंचो दै अटारी
कै निवास गंगा तट को॥दीजी एसिंहासन वे आसन विचैव र को चंदन च ढा ऊ के विभूति लाऊ घट को॥मन ही मैं आन मन मान सो
विहारीलाल दो मै राक की जे जो पख्यो न वी च भर को॥ ॥कुंडलीया॥सो विरले संसार नेह निरधन सों पाले॥सो विरले संसार
कछु क्रिया कर्म संभाले॥सो विरले संसार जगत तें रहे मिठा॥सो विरले संसार देष के करे अदिठा॥समाज मां डे रण चढे वच
चले पर नार॥कवक कहै गद्दर सुणि जन रणो सो वि[illegible] संसार॥ ॥जिके दान दातार सतो निरधन कर थप्पे॥जिके सत्त मसत
हीन सतो घर [illegible] लम थप्पे॥कासी कुवडी नार[illegible] नेवर अघाल हू॥जे अरु बाई लार तिने गल हो सुरवड्॥नागर वेल निर
निफल गई हील फूल विन कारणा॥क[illegible]वक कहै [illegible] दर सुणि जन नो सयो भलाभ वह[illegible] णा॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥१॥
मदसमाराखे

॥ दा

॥:॥

१११

14

कवित्त॥करकेथीलीराइकवेंचचल्यो इ तहछि॥हे तुमजातकितैहो॥वैदइतोमेरीवैद्गहो विरगातवदननो॥ विततैहों॥पेउतहो ॥
त्रचलोघरमैंभाँयकेमिलवेकोघरीस्तुवत्तेहो॥अलनअगचनीघनमेघनमेघनकेघुमडेतेघनोदुखपैहों॥ ॥जोवनकोजो
वनसिंगारकोसिंगारडौसत्रूपहीकोत्रपरासौअ देषीयतुहै॥अधरनकीललाईपैभलाईलालकेलोचनझंदरसेसोभा
सीचीयतुहै॥अंगचीरपहरेकोचरेचीरमेरीवैरदिंगहीकेचीरनतेहीयोचिरयतुहै॥ज्यौंज्यौंकरकोकदीलेवारनसवारत
है सोतनकेसीसनकरैतफेरियतुहै॥ ॥रामजी सहाकरनी॥सोईमहाराजसदासरननिवाज परमधरमन्याबनीतकोकर
एकसनेजसजुधदेवदारमुबजोवती॥हमररचमरेलीयाचुरेलीयाहूमेरबसमाराजाराजा करूरोवती॥सोईमहीराजदानघा
रानहकतजाकीजाकेदरहनमैंनिफलहोवती॥सोईमहीराजाजाकेराजमैविगतभीत प्रजाध्रुवधारमधुजाकोधांहसो
वती॥ ॥

हैकोरेराजाकोद
राजघर
ओटतीह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कैजैठी ॥ रंगमहलमें होरीमचीहै ॥ अबीरगुलालकेबादरछाए रात आतरंनसों भमरचीहै । केसरकीपिचकारी हाथ लियविन रंग कोइसखिना
वचीहै ॥ ब्रजदूले नंदरायलाल संगनीकेराधा आजनचीहै ॥१॥ काफी ॥ चलतरंगरस्योरी श्रीवृषभाननवलनागरसंग । अलसत
जुगवरनो वेकटछविजलसुत अधरधरयोरी ॥ मंजुकरीट मुक्ताहल राजित रविरथ अंचरस्योरी ॥ हसमुसकायसुभगसागरमे
२ रमणीको रूपधरयोरी ॥ दारमसैन अधर अति सोभा मनुससिराहुगह्योरी ॥ स्यामा स्याम सवे सुखसागर सुखसागर सुगतेरी ॥ सू
ररास चरनन परवलवल हदैसु नाथि सरयोरी ॥ सारंग ॥ जिनकरेदृगनकीचोट । छैला होरीमें ॥ अबकीवारबचायगईहो
करछुघटकीओट ॥ हौंतो लाजभरीवडकुलकी तुमजुमरेवडखोट ॥ जुगलबिहारीजहाजायवेलौ तहवने तुमारीचोट ॥३
सखीरीमैंपनियाभरनकैसेजाउ । मोपैमांगैंजोवनवाकोदान । उदैवजावेगारीगावेलेलेमेरोनाउ ॥ याब्रजकीकछुउलटीरी
तहै ॥ वादरपरतनपाउ ॥ वामाधोसोकैसेवचोरसवाही गोकलगाउ ॥ इमलान्हहोरीबलदानहीज्ञानदा । निपटलंगर
लंगराई । करकरहाडादिलपरचेदी ॥ वलवलजोदीस्याममैतेरे । अटमेरेध्यारेहोयार ॥ सुनियेकुवरकह्नाईविनतीमोर
रूपदिखावे ॥ ऐसीआवतहमरेजीयमेंअखियनआगेआवो । सामरेविहारीजीमहाराज । रावोजीरावोजीरावोह्मारीरे ॥
ला ॥ सनदासीब्रजनिधनीप्यारी तुमबिनकौनसंभारेह्मारोकाज । । निंदियालागीरेहाथमा निंदियालागीरे मोहीको
नाजिगावो । रैनकीउनींदीमातीरहीमहिलमेंसोर विरहानेआनसितारईरे ॥ ॥ होमीह्वानेलारलीराजायवातीवगेंदा
लदावाहीकाह्न ॥ नंदनंदव्रजराजसामरोप्यारीदुलारी श्रीवृषभान ॥ मनवंछतकलपाबाअवहेओनहीमनआन ॥ ब्रज
घलालकानवनवारीघाउदेतकुलकान ॥ ॥ जेविंदगाटोचौजीमनरोमीत ॥ जैसीकरीपाईमेंतैसीभलीनिवाहीप्री
तासरनआघेजात्योनहीक्योंहूकहूकौनपरदरीत ॥ व्रजनिधभईगोकुलअपकीरितं ॥ ॥ कन्हैयाप्यारोनाहीमेरेवस
कीवृंदावनकीकुंजगलिनमेंवैयाककरनजाकी ॥ जंगलराग ॥ निरनोहीराह मसमारारे कुवजानेजारूदीनोरे संग

कीर्तन 15

मिसहिं रनवग्दितनहीकवहूँ हूँवानैनोजीघाटाटे॥ ॥एनैनातीवहूरजतरहोतहैनमा[illegible]गोरीसीष॥दरजरहीवरज्योनहीमानत।
घरघरमांगतत्रयभीष॥जोसुखचाहेतोपियके[illegible]नकै चेदहूमलीनमानोभमरविराजत॥आनंदघन[illegible]ब्रजमोहनप्यारेटारीन
टरही करमरेष॥विहाग॥तुमपहलेतोदेषो[illegible]हूम[illegible]ननीकीसोभा लाललसीलावरविंदुभालनासकाकोमोतीदेषउडगन
सकुचाय॥आरानिकरगलरीउरहेललचायवारआर॥रुपकीरोत्तवलाइ॥नंददासप्रभुप्यारीवीरीअघरानधरीरसह

आ०४ समयाए

हारीप्यारीचौकथापरीउसकाय॥ ॥विहाग॥रेमनसमऊसोचविचार॥भक्तिविनभगवानदुर्लभकहतनिगमपुकार
सोधसंगतओरपासाकैरसनासार॥हूटजेतजतीनकानेचुतरचौकसहार॥आषसत्रहचलअठारहपंचहीकोमार
पत्योअवकेदावतेरेजीतभावेहार॥कामक्रोधमदलोभमायाठग्योठगिनीनांसूरहरकेभजनपदविन चल्योदोऊक
रझार॥विहाग॥आडो॥फूलनसोवेनीगुहीफूलनकीअगियारीफूलनकीसारी मानोफूलीफुलवारी॥फूलनके
डुलरीहमेलहारफूलनकेफूलनकेवाजूवंदओरगजरारी फूलनकीतरलकु[illegible]लहारफूलनकेफूलनकीचोवीचा
तरचरसवारीफूलमहलमेफूलीहैराधकाप्यारीराहेफूलेनंददासलेतवलहारी॥ ॥अजोटीतिलवा॥विनरामो
दीचेरीयांतेरीयां।स्यांमामेंतोतेरीआंचेरीआंभावेतमाननहीमान।भानदीविनदामोदीचेरीआं।अटपटीवा
तनुप्रेमकीवरनतवनेनवेन॥जहाचरनप्यारीघरेलालधरेतहांनैन॥लडेतोमेरेप्रानजीमनचनप्यारीतनु
हूलडेतीमनहूलडेतीछिनहूंहोतनन्यारी।कुंजमहलमैसदाहीविराजैलालनकेउरहारीकुंजविहारवलल
तकिसोरीपारसकेअधिकारीमहार॥[illegible]॥यहरततरसवेकीनाही॥ जरहततमेहनेरुघरनीपर
मिरेहकवरकहाई॥ज्योवेतीग्रीषमरुतदासीषिगततरवरलिपटाई जेसीनदीप्रेम[illegible]रसवाढीमिलतन

सुखउपजाई॥ ॥यहसमयोग्दिनदिवसचारकोसुमनजचज्ञरमंनमाही॥सूरदासउरचलीनंदकोहतीकेगलवाही। ॥केदारधीमे॥
बनठनकहांचलेहोएरीकोमनभाईऐसेदिपैजैसेघोतकोचंद्रमावनठनदेतदिषाई॥जोबोलनातुमपरश्रावनेकोदिनद्विषासिआई॥श्रा
नंदघनप्रियतुमजिनकेलोनिकसजैठकुराई॥॥ ॥सोरठ॥हेसखीसामनश्रायोबूरजततश्रागमनैनातपतप्रानप्यारेबिन॥चहूंदिस
तेघनश्रौलरंगश्रायोमेरीछातीश्रोउमंगीकान्हकारेबिन॥दादुरमोरपपीहाबोलेकोबलालाकीकान्हकतुनघाउहूनमारेबिन॥हसनी
श्ररजमेरीसूरकेप्रभुसोंघायलकोकलनपुकारेबिन॥हेतोयामगनिकसीरीश्रानश्रचानककाह्नकुंवरठाढेश्रपनीपोर॥दीठसो
दीठजोरीसैनसैनमिथलभईतनमैपरीरीकिधौकामदौर॥बांधेसुरंगपागओढेपीतपटओरलगाईचंदनकीषोर॥सूरप्रभुजी
मनलघीरामकैप्रभुसौंमनमैश्रावतकिधौमिलौंदौर॥ ॥नैननचावतगूजरीउजरेगात॥भौहैकसतमनकेसजात॥दकपो
६ सहिंगाउरकोरकेसरभीनीश्रंगीयासूहीसारीतनहुषश्रतम्हिलहात॥सबकीनिकाईकहाकहौंश्रालीचंदहूमलीनप्रानोउग्र
लजात॥रामचासीवाटोकोटघीरजकेप्रभुमौंतलाललालचात॥ ॥नवलस्यामनवलवधूनवलकुंजनवलकेलनवलचंदनंद
लश्र्योमर्वरी॥तालधरनश्रतमृदंगहकरचरकरवजावतउमंगमधनायकनाचतनागरिनागरकरतगवरी॥कटततरंगनसि
कटततरुनकरतकटततमृदंचंपकवरनवामदचनप्रीतमावजोकवरी॥मदनमोहनगिरवरधरउदतमुदतगगनमगनघंदा
सुसुखविलाससंभ्रमपर्वरी॥ ॥सोरठमल्हार॥गजपरनिकीआजघटौनैनौनैनोंवूदसुहावनी॥लागतचमकतवीजछटा॥
जरतगगनमृदंगवजावत॥नाचतमोरनटा॥गावतसुरभीदेतचात्रकपिकप्रगद्योमदनभटा॥सभमिलभेददेतनंदलालहवेठें
ऊंचेश्रटा॥चत्रभुजप्रभुगिरधरलालसिरकं[illegible]पीतपटा॥ ॥उगरउगरद्देरेनिपटनिडरनटवरनट॥श्रातदिचतउरचि
तवतकहूउरजनलपनसौंकात[illegible]रनिडर[illegible]उउउ उरश्रंगश्रंगहेरे॥श्ररजग[illegible]का[illegible]कीनमानेहेरजतहियमेरे॥श्ररजग श्रंग
टजकारजसभगरजश्रपनी[illegible]रे॥प्रीतबसनदास[illegible]सजदासफिरस्मसकानकारहतिरघजोतरेरे॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

16

॥ म्हारी हूसी बावरी सीमें डोलो ॥ ॥ चेतव्रजमोहन झगरे रगयो हेली चंदचोर नवकिसोर निवास्यामो हमन्त तिहार ने हरे गनवेर गवोम
कीटेर ॥ वलहारी वटनी नजाय सामेरवसें हसनचा दुरन मुरन फिरन याकी वस मेंरी ॥ ॥ चितेमें कानोरी कीवृषभान दुलारी
तीसे गो! चव तमु रारी करतंद नंद को लीयो लाल मन हारी गत गति चाल चलत व्रज सुंदर लटकलटक चिविरहित सखारी ॥ आसनपर आवत
धीरज भ्रमलेत निवारी ॥ ॥ मह्लार राग ॥ ॥ धरे रंग हग न घनगरजत मंदमंद वरषत वर वृंदावन सघन पावस रितु सहाई ॥ सट
चात्रक पिक मोर मुदित नाचत गावत भरे रंग दूरत निरख देपत संपत सुखदाई ॥ जैसे हैं पावस रितु सुहाई जैसी है भूमहरयाई ॥
जैसी ए लाल नलाडलडाई रहे केथ लपटाई ॥ विहारनदास गाई गूठडोर नी उगाई रहेरी अंग भीज मिल मह्लार गाई ॥ ॥
गहर गहर गाजि वदरा समूह घन घा घहर घहमेंह वरसै सुघरी या ॥ कहर २ करे पवन पानी अति महर महर करै भुतलम हरीया ॥
डाल झुलन यालख दे खवे को गावत मह्लार रंग हेक दमकी डरीया ॥ फहर फहर करे पीय को पीतंवर लहर लहर लहर करै प्यारी को लह
रीया ॥ ॥ नयो मेहनवरेग नयो रसन वल स्याम वृषभान की किसोरी । नवल पीतंवर नवल चूनरी नई नई बूंदन भीज
गोरी ॥ नव वृंदावन रहत मनोहर नव चात्रक वोलत मोरा मोरी ॥ नव भूषनन व मुकट विराजत नई नई तान लेत पोरा पो
री ॥ नव मुरली सुमह्लार नई गजत स्वरन सुनत आए घनचोरी ॥ जैश्री हितहरिवंस असीस देत मुख चिरजीव रहो भूतल
यह जोरी ॥ ॥ कुंजमहल आंगन में पीय प्यारी वाहु जोटी विहरत रंग सो रंग भगे ॥ धूरे आरती ॥ स्वरन वसन चरे मोति
नकी माले गरे चौहर सरीर चीर नीरसों सग वरे। घर टेवार भीने लागे ललत कपोलन सों कुंडल करनन भूषन अंग
मगे ॥ नागरीदास सगामें वरसत यानीता मै रूपक नहाम मानो डोलत उगमगे ॥ ॥ राग धनासिरी ॥ सखी नंदकुमार
लापन में घोमन हरलीनो ॥ जीय अकुलाय तमे रैनैनन सों तीर ज्ञात रसे कहा करू कीनो । साम रोहसलोना ठोटा गेसरो
ग ठाठी भयो नाजानो चित चकृत सो कीनो मउ उलगोरे तसे नबुलाय सेत वांसुरी वजाय वार जादू सो कीनो ॥ ॥ ३ ॥

34

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सारंग॥ बैठे हरराधा संग कुंजभवन अपने रंग कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई री॥ मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुन
निधान जान बूझ राग तान कुछ के बजाई री॥ प्यारी जू रंग सो गोर सकल गुन प्रवीन अति नवीन रूप सहस बहीतान सुनाई री
बलम गीरधर सुलाल री उदई अके कमाल जी मते कहे भर ले अमले हेद रसुख दाई॥ सारंग॥ धन श्री गोकुल वृंदावन जमुना
निकट तट सीतल छाई॥ धन वे गोपी ग्वाल धन वे कुंज माल धन वे मुरली स्याम बजाई। धन वंसीवट धन द्रुम बेनी धन
गोवर्द्धन [illegible] धन्यो है वृहाई॥ नेंददास सु धन व्रजवासी लोग धन वे गैयां आप चराई॥ ॥ ॥ ॥[illegible]॥
नैनन लागी सूच टपटी॥ मदन मोहन पीय निकसे द्वारह्वै सो हत पागल टपटी॥ दूर जाय फिर चितए मोहन॥ नैन कम
ल मानो भ्रुकुटी। गोविंद प्रभु पीय चलत ललत गत कछुक तिया अपनी घटी॥ ॥ ॥ ॥ ॥[illegible]॥
शिव॥ हर के चरनारविंद शिव समाध लागी॥ नस अंग उर भुजंग संकर वैरागी॥ प्रभु गिरधर सिद्ध वाट दई आप भए त्यागी॥ तीन नै
न अमृत वैन गले रुंडमाला॥ रहत नगन प्रेम मगन संग गौरवाला॥ नीलकंठ अति विलम्ब सीस जटा धारी॥ कोट कलप ध्यां
धरै मन न ना अंत पारा॥ ऐसे महेस महेस विकट भेष अज कुंदर स आसा॥ तोहत जो कांही भजो गावे सूरदासा॥ ॥१०॥
[illegible]राग॥ तेरो गुन मानो गीचित वत चोर मिलाइदै॥ वारसिया को अरस धारस सूरा मोही को मिलाइदै॥ मैं तेरो गुन कब हु न
भूलौ प्रेम सुधा [illegible] तन दुल हलाय दै॥ व्रज निघ अंग रोकर लै मधुरी तान सुनाय दै॥ जैसो मन मेरो लग्यो तेरो कहू लगि
आरो नंद के॥ तन मन जोवन ले हर लीनो प्यारे। ऐसे तें ने मो का ठगी [illegible] कहू ठगि या रे॥ आनंद घन मन मोहन प्यारे दै
न कहा कब हूत भूज गिया रे॥ ॥ जा सो मन [illegible] सुध नि घ स्याम ल बाइदे॥ या नैने ह अ च क सर सायो [illegible] कर
इलै॥ तेरो विरह विहाय [illegible] ॥ [illegible] मन भायर [illegible] ले॥ दृग चकोर मुख
ससि लगाइदै अधिर अमी पिय प्याइदै॥ जन [illegible] स्याम सुंदर को [illegible] गायसे॥ ॥ ॥०॥ ॥०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हैजोचलआईबिरकओ सरद्याहुह्न्यारेनंदके॥गेहरवउमरगरजकैआयोकंदरम्रघेहरहन्यारे॥वडोनेचरहतईचनदीभीजेन
नैहैमोरलहनियारे॥हाहांरंगरावमवलीजैडीलनफेजोकरलकमनियारे॥असोनगैओसरपैहरगोविंदलनयेवुमरकहैयारे॥
दैयातोरकहाचटजमाकारोकामरनेउढैयारे॥चरहलैनचलेकहूंबगरहरिकविप्रभुहनकेहसकेयारे॥ ॥मेरोम
मनतोमैलग्योतेरोकहूलगयारे॥होतोतेरेहितरजागीतमकाहूकेहितजगीयारे॥होमालावहरीमोतनकीजमविन
गुनहीकीघरियारे॥आयेनंदलालनंदनंदलालगैलायेमोलगैकोकरियारे॥हरिकविप्रभजैसेहौठगईतैसेतैठगनीगग
यारे॥ ॥दूखोचारचरणदोइसीसकैजानेकोईमुनवरतपसीकैजानेजगदीस॥कैजानेकमलाअरधंगीरहतकुचनकसी
स॥सूरदासप्रभुयहीअचंभोपांचचरननबगीस॥ ॥रागसोरठा॥धारथतममित्रमिलायोआन॥जलसुतकेसुतकीसुच
तैभईरसकीहान॥पिनाकपतिसुततासवाहनभक्षकुम्भसहमबान॥गिरजापतिरिपतिलककरिकेरनतसायकतान॥
साखामृगकेवसिनमलिनज्योंहततहृताहनजान॥धर्म्मसुवनकेअरिसभामेतजेसिरधरपांन॥अवदरसदुर्लभसूरके
प्रभुजकरमनमैआन॥ ॥राधहरिरिपुक्योंछिपावत॥मेरुसुतापतिताहीकोसुतकोकोनवनावत॥सुरवाहनतावा
हनउपमाहोतेचरेरुरावत॥नवअरहातवाहतोहसकहितकाहेगहूरगलावत॥सारंगवचनकह्योकरहरिकोसा
रंगवचनसुनावत॥सूरदासप्रभुगतुमदरसविनुलोचननीरवुरावत॥ ॥जलसुतप्रीतमसुतरिपुवंधुअबुध
आननविलक्षमपोरी॥मेरुसुतापतिवसततुमाथेकोटप्रकासनताररगयोरी॥मारुतसुतपतिअरपुरवासीपति
वाहनभोजननहिहाई॥हरिसुतवाहनअसनसनेहीमानोअनलदेहदोलाई॥उदधिसुतापतिताकोवाहनताकाह
नकैसैसमझावै॥सूरस्यामभिलधर्म्मसुवनरिपुतिहिउरारलैनललवहावै॥ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

35

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥जीमनमारनसामनतलैंघोफूलबिनामनतम्रयोरे॥पैलीपारएकबेलबिरछबाउसमेपनतनहींहैरे॥सोईपत्रचुगतबआत
मरिगवामरगाकेसीसनहींहैरे॥उरबिनघुरबिनचरनचौंचबिनबिगरपंथकाहैसारे॥धोजाहंहैसेमारगवावेसकतनही
जामैमासारे॥धनुषबानलैचड्योपारधीधनुसमैमालनहींहैरे॥सोईमालकरमारयोमिरगवामरगावेधाउनहींहैरे॥कहत
कबीरसुनोभाईसाधोयोपदहैनिरबानीरे॥जोयापदकोअर्थलगावेसोसतगुरसमजानीरे॥ ॥चादरहैझीनीहैझीनी
कोईसदारामरंगभीनी॥अष्टकमलदलचरखाचालेपांचतत्वमिलपीनी॥आठमासनोबनतालागेमूरखमैलीकीनी॥
ध्रुवजोढीपहलादनेओढीसाधसंगतमिललीनी॥नामदेवसेदेवनेओढीसुकदेवनिरमलकीनी॥ओढनिसंकसंकमनतना
नेनितदिनतोकूदीनी॥दासकबीरजुगतसोंओढीज्योंकीत्योंधरदीनी॥ ॥मनमसतहूआजकौंबोलै॥मान
सरोवरहैसापायातालतलईआमैरकाडोलै॥सरबकलाहैमनवालीमचपीवेसोंअनतोलै॥मेरासाहबहैमोसांई
बाहरमननैंकेबोलै॥कहतकबीरसुनोभाईसाधोसाहबपायामोहनतनओलै॥ ॥कायागढखबबजारसौदा
कसोजानै॥पांचपचीसहाटजोलागीतिनिनोरिआसंसार॥इसकायामेमानकमोतीहीरालालजवारि॥इसकाया
मैनालकरहरहाजाकीउरपहार॥इसकायामंगेंकाजीमुलानितउठकरतपुकार॥इसकायामगैंदमदरवाजेवीचमे
दानमिसान॥कहतकबीरसुनहुभाईसाधोरुटिनजगअंधयार॥ ॥होरवीनीमाहोईवेपकीराकांमेगा
इदारसांईसचेकाहोमेगानिहासवेव्याकीरांहोरवींजीमाहोई॥मैलीटोपीसावनघोडावैठहिन्दारेधोईवेपकीराहो
रवीनीहोई॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

गीधकाजपधतानेरघुवर।।लैकरगीधगोदमैबैठेनैननीरभरानेरघुवर।।इतनीसोचकीयोनहीयाग्दिनताग्दिनपितासमाने।।
जौडेनचाहेतेपेरज्याधोनहीबैकुंठपठाउ।।क्षवकीजीउफेरऐसीमुखतपाउरामकेकाजविकाने।।इहासीदासदासकीम
इमाभवनेमुखसैवखाने।।सोजोजनुमरजादसिधकी।।। ४०।। दे[illegible]
[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐश्रीगणेशायनमः॥ श्रीमद्रामचंद्रायनमः॥ अथसभाभवा
ससखी॥ दोहा॥ लिख्योनिर्णमतभरतकोवामनहूकोसूत्र॥
दोषछुद्रकरहैनहीजोकविमाहसपूत्र॥ नायकजाति॥ नारि
पद्मनीचित्रनीऔसंखनीजान॥ फेरहस्तनीजातयहलक्ष
णतपहिचान॥२॥ पद्मनील॰॥ लोचनविसालकुचजेसेफ
लतालसवगातसुकमारराकावेदमुखजानीए॥ लाजम
दहासदेवपूजनविलासहरिसोनारंगपंकजसुगंधअंग
मानीए॥ हंससोगमनसेतभावतवसनमनकोठिलसो
स्वनलघुभोजनवखानीए॥ रतमैसुदेसमध्यदेसमैनके
सलमपदमनीसलच्छनतेचितमैपिछानीए॥३॥ चित्रनील॰
चपलनयनचारुचिरलसलोनेगातकामगेहदेहमित्रचित्र
प्रियकारीहै॥ उरजनपीनलोकललतलसतछीनहरत
सललमधुगंधसहचारीहै॥ मत्तगजचालऔसरोजनौ
नमनियारढंगनीनलोचीनाहपातरीनभारीहै॥ मोरकी
सीवानीरुचमानीउपभोगनमैऐसीसुखसानीतारचित्रनी
विचारीहै॥४॥ संखनील॰॥ मोटीजाकीलोकऔविलोवन
सुथावचोवलावीछीनटहनहिरोसवासहै॥ प्रलनमही
चीउरजछोटछोटमनहूतगांधजोनदानकेसवोविलास
है॥ वसनरंगीनपगदसनआहीनजाकेवडकामजलचाल
चपलउदासहै॥ भोजनसमानसवकोविवेकप्रमाननतेसबनी
परखवेकोलच्छनमकासहै॥५॥ हस्तनील॰॥ आंगुरी
अधरसुखभ्रकुटीचरनवोलेभारेभरेवारगौरीढीढो
पावहै॥ कामजलगंधमदजलकेसमानजाकोठगनी
उदरभरभोजनकोचावहै॥ मंदगतमोटगातलाजलेस
जामेजातरूरतस्हातमानोमदनकीनावहै॥ मिलोउ
नेदकताहिमिश्रताकहतकविसद्रऐसोहस्तनीकेतन
कोवनावहै॥६॥ अथभेददोहरा॥ स्वकीयापरकी
याकहेसामान्यालैतीन॥ इनहीमैयहभेदसव
उपजतलखोप्रवीन॥७॥ राम राम राम ०
राम नाम राम नाम राम नाम राम नाम॥०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्वकीयाल०॥स्वामिहिमैंअनुरक्तजोसोहैस्वकीयाबाम॥[illegible]
[illegible]केव्याजते पतिसेवाअतिनरमता लज्जाशीलकोधाम॥८॥
स्वकीयात्रिधा॥मुग्धामध्याकहततेंऔप्रगल्भाहोत॥दोयभे
दमुग्धाकेकहेजलवेजोवनजोत॥९॥मुग्धाकेदोयभेद०॥
ज्ञातताअज्ञाततालं०॥आयोजोवननालखेसोजोवनअज्ञात॥
आयोयोवनजोलखैसोजियजोवनज्ञात॥१०॥नवकामानव
जोवनानवलवधूअभिराम॥लज्जाप्रायाजानीएरामुग्धा
केनाम॥११॥नवोढाविश्रब्धनवोढा॥पराधीनरतलाज्ज
यचहेनवोढानारि॥कहैंशैवविश्रब्धसोकछुविश्वासहि
धारि॥१२॥मध्याल०॥पंचबानसेकोचअरसमजाकेतनहो
इ॥कविकुलमध्यानायकाकहततादहकोजोय॥१३॥प्रा
दुर्भूतमनोभवासुरतविचित्राजान॥ईषतप्रागल्भवचनाक
हेअगूढजोबनामान॥प्रौढाल०॥कर्कोरहेमदमैसदाको
ककलपरवीन॥गीतपतिरतसमरमैप्रौढाकहतसवीन॥
कामाधारतकोविदा॥गारततरल्याहैबा॥दयलजाभावोन्नताप्रा
कांतनायकालेख॥१६॥धीरादित्रिधा॥मध्याप्रौढाजोय
मैभेदतीनतिनहोय॥सअधीराधीराकहैधीराधीराजोय॥
मध्याधीराल०॥छलकरकोपहजोकरेआसयकरगंभीर
मध्याधीराताहिकोवरनतहैसचधीर॥१८॥मध्याधीर
धीराल०॥धीराधीराकहततहैमध्याताहिबनाइ॥उग्रप
गर्वरिसजतलहाकोपपधान्यौजाय॥१९॥प्रौढाधीराल
[illegible]॥लाघराधपीयदेखकैतर्जैक
हतकुवात॥सअधीराप्रौढाकहैरिसवसजाकेगात॥
प्रौढाधीराल०॥उग्रकोपआदरप्रगटरतमेंरहतउदास॥
प्रौढाधीराकहततेहैरिसतेलेतउसास॥२१॥प्रौढाधीराधी
रालछन०॥परुषवचनधीरजजहांदोनोहोतसमान॥
धीराधीराकहततेहैप्रौढासवसुजान॥२२॥ज्येष्ठाकनि
ष्टाल०॥अधिकन्यूनतानेमकीजिननारिनतेहोय॥ज्येष्टा
अरुकनिष्टाकहतव॥विवाविदसवकोय॥२३॥परकीया
द्विधा॥परकीयाद्वैभांतकीकन्यारासराद्ध॥औरपरोढाभा
नजोपरनैलईविवाह॥२४॥८ ५० ८ ९ ८८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कन्याकोपरकीयातापरकीयरहैअगोट॥नाहप्रगटयाकीहया
तनलरीरकीओट॥२५॥कन्यालं०॥नवभूषनपटचटकमें
उरकुचलनरुषभान॥छपीहतेपीयकीचरचानाहकन्यका
जान॥२६॥परकीयाभेद॥गुप्ताविदग्धालक्षिताकुलटा
मुदिताहोय॥अनुसयानानायकापरकीयामेजोय॥२७
गुप्तात्रिविधलं०॥भयोभविष्यतहोतहेसुरतत्रिविधइह
भांत॥गुप्ताकरैतिहजानीएगुप्ताभयविख्यात॥२८॥
विदग्धालं०॥वचनक्रियामेचातुरीचेरेकुप्रीतमहेत॥ता
हविदग्धाकहतहेवचनरुक्रियासमेत॥२९॥लक्षिता
प्रीतआनपीयकीभईलखेसखीकहितताह॥लक्षनते
यहलक्षिताकविगनकहतसराह॥३०॥कुलटालं०
जारनकारनवहुतकुलपिसभरीअतिकाम॥वाहत
नागतपुरुषमयमोहेकुलटावाम॥३१॥मुदितालं०॥
चाहतहेमनभावतीजानतहोतउलास॥मुदिताहैसो
नायकाचाहतकरयोविलास॥अनुशयानालं०॥त्रि
अनुसयायनानारिकोकहतसतीनप्रकार॥नासत
तसंकेतकेजाकोखेदविचार॥द्वितीयअनुषायालं०
जोवितसंकेतकोछुटैनहफेर॥जाहदूसरीकहतको भिले
विदलछनएकेर॥तृतीयअनुशयानाल०॥तियविखादही
यकोतजोचलभीतकेधाम॥ह्वैहैदेवीहरोतहांवि
पनआराम॥३५॥त्रितीय॥पियआयेसंकेतनेहान
गईतिहठाम॥लक्षनलखपछतातहेजोतीजीताको
नाम॥३६॥सामान्यालं०॥निसदिनवेलगथाकहेहा
मदीयेरतदेय॥सामान्यासोकहतहेजापेधनहरलेय॥
उनीपुरुषसोरीझनहनिरगुनीसोनाविगार॥धनीउ
रुषमनहरनकोआगदिबाहजनार॥३८॥सबसोधन
जाकोमिलैतमकरओरगिवार॥सोजनमासोंराख
रेजाकेनाहविचार॥३९॥मानआददेकरतैहैजतालै
नधनहोय॥लाजनहीआनिद्यएतासामान्या
तियजोय॥४०॥ इ इ इ॥ राम रामराम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

2

अन्यसंभोगदुःखिता लं०॥ प्रियजातीयसों रति करै ताहि देख
अनखाय॥ अन्यसंभोगदुःखिता कहै कवि जाहि गनाय॥
वक्रोक्तिगर्विता लं०॥ वक्र उक्ति गर्व जु कहै ताको द्विविध विचा
र॥ प्रेम रूप कै आदि में ताको नाम उचार॥४२॥ प्रेमगर्विता
चाह करै प्रिय प्रीतम को प्रेमगर्विता होय॥ रूपगर्विता लं०
अंग रूप को गर्व जो रूपगर्विता सोय॥४३॥ मानवती लं०
पीय निज अपराध हित लखै जाहि रिसि पात सोय॥ मान
करत है ताहि को जो पंडित जन गन सोय॥४४॥ मानभेद
लघु मध्यम गुरु करत है मान जु तीन प्रकार॥ ता
को भेद जु करत है हरि कवि करत विचार॥४५॥ लघु
परतिय देखत पिय लखै सहन सकै अनखाय॥
प्रगट होत लघु मान सो ख्याल करे छुटि जाय॥४५
मध्यम मान॥ बात कहत सपनादि में परतीय को ले
नाम॥ उपजत मध्यम मान है हरि मध्य विनय को
धाम॥४६॥ गुरुमान लं०॥ अन तन के हूं पतन रत करै
लखन लखै रिसाय॥ कहत ताहि गुरु मान सो पाय
परे छुट जाय॥४७॥ अलयमान॥ छैल कहै लखै होत
जो अनयमान सो मान॥ हरि कवि ताको कहत है उ
दाहरण सो जान॥४८॥ अन्यसंभोग संचारी मान लं०
भोग संचारी मान है संपद सो फर सेंग॥ अनतनय र
ति सो लटे प्रगट के ला अनेग॥४९॥ नायका नाम
नार विरहनी खंडिता कलहंतरा नाम॥ विप्रल
ब्धा उत्कंठिता वासकसज्जा वाम॥५०॥ स्वाधीन
पति अभिसारिका या मिल आठ प्रकार॥ हरि क
वि लक्षन करत है उदाहरण सु विचार॥५१॥ वि
रहनी लं०॥ तीन भांत को विरह है जो उपजे तिन
काल॥ सो जामें हरपाई रा विरहन है सो बाल
॥५२॥ जिय पीय सो विछोह सो विरह मिलन की
आस॥ पलक आदि दै कहत है जाको उन मैं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिरह भेद हरि लीजीरा कीजे ना गिन भेद ॥ आगतपतिका कहत है
दूखन तहां अभेद ॥ ५४ ॥ जद्यप भेद न आदि के कहे प्रमान हु पा
य ॥ संचारी तहां मानी राह है भेद न लगाय ॥ ५५ ॥ पति आरा अ
ति रूठि है काई बरने शोक ॥ सब कवि के मत ते परे दूखन दूखन त
हां अरोक ॥ ५६ ॥ बिरह निती न प्रकार की प्रोषित प्रोष्यत के
त ॥ प्रोषत है पर भांत ते त्रिविध लखो सब संत ॥ ५७ ॥ बिरह नि
ष्ठ्या होय जो ताको यह सभाव ॥ भीतर लहै सबै दसा करि नि
ह्निसकै लखाव ॥ ५८ ॥ बिरह की दसा ॥ अभिलाषा चिंता कहे
समरन अरु गुनगान ॥ अरु उद्वेग प्रलाप पुन चित्त भ्रम को जा
न ॥ ५९ ॥ संज्वर जडता मरन पुन यह दस दसा बिराह ॥ द्वै हर
स की हान ज्यों मरन उहोन सराह ॥ ६० ॥ अभिलाष ॥ ओर ठौर
रत करक हूं आवे प्रीतम पास ॥ लहन लखसो बंडिता रिस
बस होय उदास ॥ ६१ ॥ कहू बात जा चित्त चढे अनुचित उचि
त समान ॥ सो है द्वै जो उत्तम मान तजरिस उत्तम वान ॥ ६२ ॥ दसा०
चिंता दीर्घ स्वास धर मन में द्वै संताप ॥ मानग हैता की दसा अ
स्फुट कहै अलाप ॥ ६३ ॥ कलहांतरिता ल० ॥ हित कारी पति
को तिया कोप करै अपमान ॥ ताहु गये पछतायसो कलहं
तरता मान ॥ ६४ ॥ भ्रम संताप प्रलाप उसास महं ॥ मोह ज्वर
द होत उछवास रहु ॥ दसा तिया को ऐसी जानहु ॥ कवि पंडित स
बजा हु बखानहु ॥ ६५ ॥ विप्रलब्धा ल० ॥ जासो करे संकेट पीय
ता को टिग न हि जाय ॥ ताहि विप्रलब्धा कहे सो चित में अकु
लाय ॥ ६६ ॥ दसा० ॥ उच्च स्वास उदास हिय रहै सखी को मा
न ॥ संरुदन अचेतता ताकी दसा सुजान ॥ ६७ ॥ उत्कंठा ल०
प्रीतम को मै कारनै आये न हो संकेत ॥ चिंता जो मन मै करे उ
त्का को यह हेत ॥ ६८ ॥ दसा० रोदन कंपा स्वास गुर
वाई तन मोर ॥ रमन बिना संताप यह कहत दसा उतजोर ॥ ६९
वासकसज्जा ल० ॥ निश्चै दिन प्रेस की यो पीय आवहु गे आ
ज ॥ वासकसज्जा जो रचै सामग्री रत काज ॥ ७० ॥ दसा० ॥ अभि
लाषा मछि सो हसै हरी सो वतरात ॥ सामग्री रत की दसा
प्रग निहार पिरजात ॥ ७१ ॥ स्वाधीनपतिका ल० ॥ जा को
पति रत गुन नसौं तज समीप न कहूं जाय ॥ स्व अधीनपतिका

३:

3

आज्ञावसगउनपाय॥७२॥दसा०॥वनविहारअरुकामकोउत्स
वमदनहंकार॥मिलैमनोरथपरदसाकहीकरनसुविचार॥७३
अभिसरकाल०॥आपजायजोकंतढिगकैनहिलेहबुलाइ॥ताह
कोअभिसारकाजोपेउतसरसाय॥७४॥दसा०॥केपदुद्भवल
निउनतासमयरूपसिंगार॥परकीयाकीयहदसास्वीयाको
नविचार॥७५॥परकीयाउरलाजवससुवीयामैसंकोच॥दासी
मैवाघुलेसहूंचस्यामैमतिसोच॥७६॥परकीयअभिसा०॥ला
जननिजवपुमैचपेउरभूषनकरमौन॥घूंघटपटदीरघरहै
परकीयाकोगौन॥७७॥ध्यारी०॥दासीऽभिसरकाल०॥मदत्त
सारीवातनहिंआनेदविकसेनैन॥दासीगतकपुवदसीसो
तचलैचहगैन॥७८॥सामान्यभिसरकाल॥उज्जलभूषनवस
नअतपरधुनिहोय॥आनेदहासअसघनवेस्यागौन
जोय॥७९॥अंधकारदिनचांदनीकरेजुतियऽभिसार॥प
रकीयासाजानीययोतेतीनप्रकार॥इतिअष्टनायका०॥
उत्तमा०॥हितनकरैपियजाहिसोसोहितकारीनारि॥नाहिउ
त्तमाकहतहैउत्तमदसाविचार॥मध्याल०॥हितअनहि
तकारीललनतैसीतासोहोय॥जोतियताकोमध्यमा
कविभाषतसवकोइ॥८२॥अधमा॥नाहकहितकारीस
दातियकोदुष्टसुभाव॥अधमाताकोकहतहैजोजानैरसभा
व॥८३॥इतिनायकाभेद०॥सखील०॥नेहचाहविनजोकरै
सखदुखरागैभाय॥समवयमनकीसवलखैसखीताहठहरा
य॥८४॥प्रियसखीनर्मसखोल०॥प्रियसखीघाघालोवले
सरसनर्मरतदेख॥वाविगनताहसराहराननर्मसखीसुपरे
ख॥८५॥प्रियनर्मसखील०॥प्रियानाहसुखसेनर्मसखीरहति
हठाव॥प्रतिम्हरतसीआपनीप्रियपरसर्वनाव॥८६॥शि
क्षभूषनपरिहासरुचिवहुविधयाकेकर्म॥विरहितसवैस
त्तेपवाधुवरनतहैहरिसर्म॥८७॥सिक्षा०॥कुंजननजैयेन
हांसवुमारथाहरहीराननदीतौनकाई॥भीतनजठानीसोलैति
वहोवलदानमैमौनरहतौभलाई॥नैननचावनघाउाकेर
हरिमानसनमानीयनाहिवताई॥राजीकरैगुरुलोगनको
ससखीसिखदेतकरैचतुराई॥८८॥इतिनायकाभेद०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika-Bharata Initiative

नायकभेद॥ पति उपपति वैसिक गनो स्वीया परकीया रु॥ सामा
न्या के नायक नके महीत निरधार॥ नायक ल०॥ दाता सुंदर
रूप वहु लहुतौ रस सील कुलीन॥ जुवा मता पी चतुर वर रु
नायक परवीन॥९०॥ धीरोदात्त सु कहत है धीरोद्धत पुन जा
न॥ धीर ललित नायक गनै धीर शांत विधान॥ लछन०॥
धीरोदात्त सु [illegible] तजन सछमा महा सत्व गंभीर॥ विनय गरव प
न हृद धरै वडु गुडन भरे सरीर॥९२॥ मायावी गरवी चपल उनमा
दी हंकार॥ धीरोद्धत परचंड यह जाको दर्प अपार॥९३॥ धीर
ललित निहचिंत है कोक कला तरीश जा॥ सब कवि कोविद कहत है
याको ललित वखान॥९४॥ धीर शांत दृज जन जा तैं जाको सुग
समान॥ सिंगारी इन सवन कौ भेद चारि सो जान॥९५॥ अनु
कूल रु दछिण धृष्ट सठ ल०॥ नायक सो अनुकूल कहै जु सरीती
य जो न हि चित वितारै दछिन सो सम प्रीत करै निज प्यार सो सब
के मन भावै॥ धृष्ट करै अपराध घनो डर लाज न देखत दो
ष छपावै॥ सो सठ राकु सों प्रेम कपो कपटी जु छउ पाहे त
जनावै॥९६॥ नायक मानी चतुर को सठ ही मैं विश्राम॥ वच
न काज मैं चातुरी करै चतुर को काम॥९७॥ उत्तम नायक ल
नार को पपरिहार को जो पिय करै उपाय॥ उत्तमता को कहत
है जो कवि कवि चनाय॥९८॥ मध्यम नायक ल०॥ जो पिय
रूठी नारि सौं रहरि स करै न सोय॥ कवि वरता को कहत है
मध्यम नायक होय॥९९॥ अधम नायक ल०॥ समैं न जा
नै केल को लाज भीत कर हीन॥ अधम कहे कवित हि को
जोर समागर मीन॥१००॥ विरही नायक ल०॥ तजि तिय जो
परदेस को नायक करै पियान॥ विरही ताको कहत है वैसे
त्रिविध वखान॥१०१॥ प्रोषित पति॥ प्रोषत पति कहत है॥ प्रो
षत पति नायक गो॥ ॥ अनभिज्ञ नायक लछन०॥ इक नायक
अनभिज्ञ है भेद रस ज्ञान न ताहि॥ वे जग मैं जन भेद या ज्यौं ब
भर के धार॥१०२॥ संख्या॥ धीर आदि पति चार है अरु
सठ तें है चारि॥ लीला वसंत लो तहै ओउ स विध निरधार॥१०३
उत्तमादि पुन भेद ते मानो अठतालीस॥ दिव्य आदि के भेद

इकशतचौतालीस ॥१०४॥ देवदिव्यपुनमानुषनमानस
दिव्यसरीर ॥ अर्जुनदिव्यादिव्यहै हरि सबगुनगंभीर ॥१०५
याहीभांतिनिनायकनदिव्यादिव्यउचारि ॥ भेदकरै सब
नीयनकोवाटेग्रंथअपार ॥१०६॥ कीयेभरततियनमैंजो
नहोयपीयमाह ॥ उत्तमअधमस्याभेदहैं इहांसभावलषाय
१०७ ॥ अथनायककोसहचर्वर्नन ॥ नर्मसचिव
लछन० ॥ हरिनायकसोंजोसषातियकोंकरैमिला
प ॥ नर्मसचिवताकोकहैदूरकरैतनताप ॥१०८॥ पीठ
मर्दल० ॥ मानवतीजोनारिकोकरैलषापरसन्न ॥ पी
ठमर्दताकोकहैहितकारनअवसन्न ॥१०९॥ वि
टलछन० ॥ कामबातरीमैचतुरजानतबातअने
क ॥ विटनामवाकोकहैजोछितलहैविवेक ॥११०
चेटकलछन० ॥ चतुरहोपसंधानमैजानततियकै
चित० ॥ चेटकतासोकहतहैजोनरकरतचरित्र० ॥
विदूषकलछन० ॥ वेसरूपइहआदकोकैरैसषाजो
हास ॥ तादविदूषककहतहैजाकेहियेहुलास ॥११२
इतिनायकलछणम् ॥ ॥ अथपूर्वानुरागलछण ॥
रूपसुनमकेश्रवनतेदेषतेंहूं राग ॥ दंपतिकेचितमिल
नबिनसोपूर्वानुराग ॥१२३॥ श्रवणानुरागल० ॥
सुनेरूपहरिकेघकीदिनछिनसानहिचैन ॥ चढी
अटारीदेषतनहि लियेकटारीनैन ॥१२४॥ दरस
नानुरागउ० ॥ कहूंजोगसषिहरिकीपोभेटोमन
कुलाय ॥ आयोतिरछीडीठकेजबतेगयेचि
ताय ॥१२५॥ चारिप्रकारकेदरस० ॥ चित्रस्वप्नपरत
[illegible]तसनदर्शनकीचवजात ॥ लष्योचित्रमैस्व
प्नमैलष्योसहरिमगजात ॥१२६॥ अथहाव
भावहेलावर्ननम् ॥ हावभावहेलाकहूं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पजत है यह अंग ॥ दश हाव हरि कवि कहत है भाव प
रे पर संग ॥११७॥ हाव नाम ॥ लीला विलास विछि
त है किलकिंचित अरु विवोक ॥ मोटायत पुन कुट्टमि
त विभ्रम गनो अरोक ॥११८॥ ललित विहृत मद
त पन पुन मोग्ध्य विछेप विचार ॥ कुतूहल हस
त चकित कहि केलि हाव निरधार ॥११९॥ भाव
लछन ॥ निर्विकार जो चित तें उपजे प्रथम विकार
आलंबन उद्दीप तें भाव जानि निरधार ॥१२०॥ आ
लंबन प्रिय नायका उद्दीपन बन मोर ॥ औसर पंक
ज चांदनी और मालती कोर ॥१२१॥ आलंबनो
द्यभाव ॥ तब हरि राधा राक संग छलत हसत रि
सात ॥ अब संदर वंधु निरख के पुलकत है सब
गात ॥१२२॥ कन्या मुग्धा तियन को निर्विकार जा
ले हु ॥ अरु मध्या प्रौढानि को दरस उपज करि
देहु ॥१२३॥ हेला हाव लछन ॥ नैन आदि विकार
तें प्रगट भाव है हाव ॥ अति विकार वाको लखैं हे
ला सो कवि राव ॥१२४॥ पुनः हाव ॥ सोभा कांति
दीप्ति पुन माधुर्ज प्रगल्भाता जान ॥ रु औदार्य
रु धैर्य है हरि कवि करत बखान ॥१२५॥ सोभा कांति
ल ॥ वेष आदि कछु विलछन ता जुत हेला सो भरि
उद्दीपन हुत काम बस सोभा कांति उदार ॥१२६॥ दी
प्रमाधुर्ज ल ॥ अति हि लीरन कांत को दीप्ति क
हे कवि वर्ज ॥ सर्व दसा रमनीय ता नार कहे माधुर्ज ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रगल्भताल० ॥ दृढता कहै प्रगल्भता कामिजन सबै
विचार ॥ चुंबन आलिंगन कीये चवत पुलकत नामा
रि ॥१२७॥ औदार्ज्य धैर्ज्यल० ॥ सदा विनय सुकुमारता
कवि गनता हि उदार ॥ सुष दुष मैं धीरज बडो निर्विका
रता आद ॥१२८॥ लीलाल० ॥ अंग वेष अलंकार ते
लीला हेत न कार ॥ स्वागत रा करबी गता सुप्रियगता
विचार ॥१२९॥ विलासहावल० ॥ देषिबो गमन रु बैठबो
सुष दृग आदि सुजान ॥ पियलष होत विशेषता ताहि
विलास बषान ॥१३०॥ विछ्छित विवोक ॥ विछ्छित करि
भूषन अलपता ही तछ्छ विशेष ॥ है विवोक सु इष्ट को
गर्व अनादर सोय ॥१३१॥ किलकिंचित ल० ॥ अमर्ष
हास निषेध डर आसु छ्छल सो देष ॥ मत्तान सु आ
रंभ मैं किलकिंचित तहि लेष ॥१३२॥ मोटायत ल० ॥
मोटायत प्रिय वात मैं पोतिय हिय देकान ॥ चेष्टाक
र निज गात की उर्वत लषेन आन ॥१३३॥ कुटि
मित विभ्रम ल० ॥ गहत आदि कुच कुटमित क्रोध
प्रगट हिय भीत ॥ भूषन फेर वेग ते गहे सुविभ्रम री
त ॥१३४॥ ललितमद ल० ॥ ललित गात सब विवस जे
कोमलता ते होत ॥ जोवनादिके गर्व ते मद विकार उदो
त ॥१३५॥ विहृततपन ल० ॥ कहिवे हूं वे समै लाजन क
रे विहृत ॥ चेष्टा काम विकार ते तपन गय पति दुर्त
जे सु जो मद मैं कहे उपजत है सु च हाव ॥ तिन मैं द
षन दीजी रग्यो कार लोम व चाव ॥ १३६ ॥ ०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोग्धविछेपल॥ मोग्धकेतहिगज्ञानकें छपेजो
ज्ञान विछेप॥ पियआगम सुन आदर करत कै
पन दृग छेप॥१३६॥ कलहंतरितल॥ हंकत ह्र
लर छिरम्य सु निचे चकतता जो होय॥ हासनये जोव
नगर्व वृथा हसित है जोय॥१३७॥ चकितकेलिल॥
चकित होत न ठिगमय उदे कांहु ते जो होय॥ प्रीतम
संग विहरमें खेल केलि है होय॥१३८॥ रस सब
अनुभाव समहै कोई जो हाव॥ ता प्रकार सकारकव
लीयो ते मिल्ल गनाव॥१३९॥ इति हाव॥ विभावादि
इक विभाव अनुभाव है स्थाई सात्विक मान॥ संचारी
वा विकहत है भाव पंच विध जान॥१४०॥ आलंब नावि
भावल॥ जो आधार रसादि को आलंबन सो होय॥
रविमें नायक नायका वाहत द्विविध वाविजोय॥१४१
आलंब द्वै भांत को आश्रय विषय बखान॥ तिय आ
श्रय करि हु पिय विषय अनत बुद्ध ल लजान॥ सवि
भाव द्वै भांत के आलंबन उद्दीप। सब हीरस में होत है
को रस कवि अवनीप॥१४३॥ अनुभावल॥ ताहि को अ
नुभाव जो प्रगट करै हिय भाव॥ ते विकार चार ह खरे गे
म्हाई ऊंकार पुन अरु निस्वास सजोर॥१४४॥ न्रस
गीत अरु लोटवो तन मोरन पुन मोर॥ जमुहाई हुंकार
पुन अरु विस्वास हजोर॥ गिरे लार ग उस हास पुन धु
टाहि च को जान॥ और अनेक सबुद्ध बल लछननै
पहचान॥१४५॥ स्थाईभावलछन॥ अविरोधी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

थिर है थल जे भाव दरसी रस दाय ॥ सुंदर भूषन जिते कहे
सषाई भाव बनाय ॥४७॥ जाम रह भाव अनेक सव होहि रहे घा
पि जांइ ॥ स्थाई शब्द विचारतें लषो चलै सो नाइ ॥४८॥ रुविमेर
ति पुन वीर मै जानो है उत्साह ॥ सोक करुना अद्भुत नन मै विसमय क
रतासरस ॥४९॥ हास्स हास भय जान कहौ रस भयानक मै सोय ॥ स्था
ई रस बीभत्स मै जुगुपसा को जोय ॥५०॥ कोप रौद्र मै भनत है
गिन आठो रस मान ॥ कहि कारीन व शांत सो तिह निर्वेद ब
षान ॥५१॥ सत्व ॥ जो वैध मनस्व दोतें लहत कछु इक विवरण ॥ भाव विव
स्व जो चित है सत्व ताहि को जान ॥५२॥ उपजै जो यह सत्व ते भाव अंग
मै आय ॥ सात्विक ताको जानीए सुंभ स्वेद दरसाय ॥५३॥ रोमांच वाक्
रभंग वेपथ मलयस्र अश्रु लषि ॥ पुन वैवर्ण्य प्रसंग सात्विक अष्ट प्रमा
न ॥ मल्य को चेष्टा रहत वेपथ कंपामान ॥ शिथल गात सो संभ है
विवरन स्वरभंग आन ॥५५॥ संचारी ॥ निर्वेद है निंदा अपो स्वरूप को
विकार ग्लान से वानि रसेका मदटादि मद जानीए ॥ असूया दोष तिकार
परि श्रम को कहे श्रम शंक्रिख तो आलस्य दैन्य दैन्य मानीये ॥ अ
पो गरु छिविंता स्मृति कहा है हैं जहो चैसे मोह सो अचेत स्वविं
ता स्मृति आनीये ॥ धृत धीरता है बीडा लाज चचलाई ता है चपल
ता हर्षे उत्सव बषानीये ॥५६॥ आवेग मद अड़ताई तें चलत न जड़ता चले
न कछु विषाद रूपा टेषीये ॥ औत्सु वपलालसा गर्व सुंकार निद्रा नींद अषबार
फेन सो अपसमार लेषीये ॥ नींद विनासो विमर्ष नींद रीन सप्रमो अमर्ष को
प कद्धते परेषो ये ॥ अवहित्था दुराव रूप उग्रता प्रचंडताई चित्त भ्रम उन्माद ताज
विरोषीये ॥५७॥ व्याधि व्याधि आर व्याधस्मरन ज्ञाथार्थ गति वितर्क भोर स
स्य कवि तड चासो है ॥ मरन मान त्यागत्रास समय को तिवास पररिविभचारी
ते तीस को कोस भावि चारयो है ॥ भावनि चाले सोइ रूप अंग उरे पुन स्था
ई ही भेद के प्रगट निरधारयो है ॥ निर्वेद अपसमार मरन करत कोई सांत
है को अंग सो सिंगार मै निवारयो है ॥५८॥ भाव संधि लं ॥ भाव स्वरूप वि
रूप की प्रगटत संधि सु आहि ॥ कारन भेद स्वरूप मै भाव रावको दीवा
रा ॥१५९॥ पुन: ॥ एक रहत वेधि मिलतें भाव भिन्न युत होय ॥ संधि सर
हत व्याचि कर उदाहरन रसभोय ॥१६०॥ पुन: ॥ एक रहत के वहुत ते भा
व वहुत जे अंग ॥ संधि ताहि को जानीए वरनत हैं रसरंग ॥१६१॥
भाव सवलं ॥ ०॥ दाव विभाव हि भाव जो उपजत वहुत सरीर ॥ ताहूत
रत साव ल जे कवि गन मै है धीर ॥१६२॥ भाव सांत ॥ वहै भाव का
रण लहै छुटे सो तव कहे होत ॥ तजन विषाद हरषी गिये लष्ठ रसष्ठ की
सोत ॥१६३॥ इति भाव ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ रसलछन ॥ सोधक कहैं सब करन को जो उपजै औरे काम ॥ आदवि
भावन सों मिल्यो होरस है अभिराम ॥१॥ मिल विभावन अनुभाव अरु
संचारी जे आन ॥ उपजावत रस रुचिर यों ज्यों निज अंग गन प्रान ॥२॥०॥
कहूं होय जो सून ता मन मै वोध अपार ॥ तरति ता हूं गहि आनी रे दोषन
ही निरधार ॥३॥ कहि को धीर जे धर सबै ॥०॥ शृंगार रस लछन ॥०॥
रम्य देस अरु चातुरी समय आदि दै देष ॥ इन ते तिय पिय चित रंजन
मधुर रति सचि होष ॥४॥ ललित अंग संचलन ते सो रति पायम
हर्ष ॥ उपजत रस शृंगार हो कवि मनक हत सदर्ष ॥५॥ द्वै प्रकार
सिंगार रस कहे योग वियोग ॥ मिलवो अनमिलवो आद दै वरनत
पंडित लोग ॥ वीररस लछन ॥०॥ युद्ध धर्म अरु दया ते वीर दान लेखा
र ॥ राधापति को ज्ञान है लीला अनंत विचार ॥७॥ देसकोस हडतवं
धुव पुनाशन नै कलभाय ॥ औ सो जो उत्साह सो स्थाई वीर विख्यात ॥८
करुणा रस ल० ॥ इष्ट नास उड निष्ट ते करुन रस सोक सरीर ॥ अद्भुत रस०
लछै अंसंभव होत है अद्भुत विसमय रूप ॥ वे सब वचन आद्भुत वि
कृत हास जु हास्य स रूप ॥९॥ भयानक ॥०॥ होत भयानक भय मिले नी
च आदि जे और ॥ वधबंधन वन को गिनै लखि निसरूनी छोर ॥१०॥
वीभत्स रस ॥०॥ रस वीभत्स दिषावही रज्जु गुप्सा की खान ॥ जाके अनु
भव ते भगट चित मै होत गलान ॥११॥ रौद्र सात ॥०॥ वैरी आदि सै
होत है रौद्र को पयप्रदेष ॥ सो तरुकै निर्वेद ते सांत ज्ञान मय लेष ॥१२
हास्य सख्य वात्सल्य ॥०॥ कहि दास्य अरु सख्य पुन कहि वात्सल्य व भाय ॥
रूप देवता और है इनमै नाहि समाय ॥१३॥ सख्य दास्य वत्सल रस गौन रस ॥०
तीनय है पुन सौन रुचि सख्य धीर रसे सात ॥ जो नवरस भाव होत है इन मै
अरु घपजात ॥१४॥ नवरस नाम ॥०॥ रुचि पुन वीर अरु करुन है
अद्भुत हास्य सु जान ॥ रस भयानक वीभत्स है रौद्र सांत नव मान ॥१५
नवरस रंग ॥०॥ स्याम गौर धूसर लखो पिंगल पांडुर रंग ॥ कालनी
ल अरु ररूगन सौं तस्वे तन भज्यो ॥१६॥ दास्य आद जे तीन है वि
त्र अरुन रंग होन ॥ माधव टेव ड पैडे है अरुन रह खपु होन ॥१७॥
नवरस देवता ॥ नंद जं कल्की राम है कछ्छप बलवाराह ॥ वडुर यस्त
चर कपिल मुनि क्रम ते रसपति रसराह ॥१८॥ कवकी ठकी न ला
शृंगार मित्र सत्रु ॥०॥ वीर होय पुन मधुर को हास्य सख्य है मीत ॥०॥
वात्सल्य वीभत्स भय रौद्र कहै अब होत ॥१९॥ वीर के सत्रु मित्र ॥०
हास्य वीर को हास्य अद्भुत सख्य द्विपार ॥ रस भयानक पुन सांत रस
इष्ट कहै निरधार ॥२०॥ करुना के मित्र सत्रु ॥०॥ मित्र करुन को रौद्र
है वत्सल हू को मान ॥ अद्भुत मोग सिंगार पुन वैरी हास्य गैजान ॥२
अद्भुत के मित्र सत्रु ॥०॥ सो नहास्य सुविरस्य पुनवत्सल औ हितवीर ॥
अद्भुत के वैरी कहै रौद्र विभत्स सधीर ॥२२॥ हास्य के मित्र सत्रु ॥०॥
रस के भयानक को वरुन रस वीभत्स हितेष्ट वीर हास्य सखा रौद्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६. 7

हास्य वेषु वीभत्स अरु विरह षष्ठ वात्सल्य आस ॥ करुण भयानक
को कहत ताको दुष्ट सराह ॥ २३ ॥ भयानक के मित्र शत्रु ॥ लखो भया
नक को करुण रस वीभत्स हि इष्ट ॥ वीर हास्य अरु फिरि रौद्र पुनि ताको
शत्रु अति दुष्ट ॥ २४ ॥ वीभत्स के मित्र शत्रु ॥ हास्य दास्य वीभत्स को
शांत करावत मित्र ॥ लष्य वऊर अरु शृंगार रस रौद्र मान वचित्र ॥ २५
रौद्र के मित्र शत्रु ॥ करुण वीर रस रौद्र के सहाय रलेषु समान ॥
हास्य भयानक अरु फिरि मिले रस को होत जियान ॥ २६ ॥ शांत के
मित्र शत्रु ॥ धर्मवीर वीभत्स अरु सेदास्य शांत को हेत ॥ युद्धवीर
भय रौद्र पुनि अद्भुत शृंगार समेत ॥ २७ ॥ शत्रु मित्र सब के कहे कर
के ग्रंथ विचार ॥ जो जाको नक होइ सो समान निरधार ॥ २८ ॥ ०
अंग अंगी लक्षण ॥ है तिनरस जहां मिलत है तामैं जो परधान ॥ सोई अं
गी होत है और अंग समजान ॥ २९ ॥ रस साक्षात लक्षण ॥ करत भाव
ना प्रेम वस वैहे रूप देह गात ॥ कवि पंडित सब कहत है वह रस है साक्षात ॥ ३०
प्रेम लक्षण ॥ मानत योग वियोग मैं योग हु माहु वियोग ॥ द्वैविधि
जो समय मैं द्विविध प्रेम कहलोग ॥ भलो ३१ ॥ रस मैं सेद ह ॥ रस
आने द सरस सो है वीभत्स मैं मिलान ॥ करुण सो कमैं प्रगट है यों ते
रस म सै मान ॥ ३२ ॥ समाधान ॥ अधिकारी को समय वस उपजत
है लख आन ॥ रुधिर हु सासन को पीयो भीम अमत से मान ॥ ३३ ॥
शिव सेवक अरु योगिनी आदिक नै आधार ॥ तनै अंजनी को सुनै रा
मायण सुखकार ॥ ३४ ॥ रावकआ आयता आदि तै द्वै विरुद्ध रस धीर
नाः ह सो अंगार पुन तादी से रसवीर ॥ ३५ ॥ केवल भाव ॥ देव
तादिक मैं रत्त न जहां स्थाई होय निरेग ॥ संचारी सु प्रधान जहि न सु रस म
व प्रसेग ॥ ३६ ॥ फुनः ॥ गुरु द्विज पिय के मित्र अरु बालक आदिग नाव ॥ रसाभा
स रुवचा या के रत उपजे सो भाव ॥ ३७ ॥ रसाभास लक्षण ॥ रसाभा
स अनुचित करै पुत्र पिता सो रार ॥ ह सी करै गुरु देव की रस अगम्या
नार ॥ ३८ ॥ भावाभास ॥ सत्रु करै स्तंगित सत्रु को वे स्थाई ह वमैं लाज ॥
भावाभास की यो सरवस सो तस गुनह जराज ॥ ३९ ॥ भावाभास
स्थाई ह कहु होत है संचारी रस पाय ॥ हास्य के पड़ साद भय वीच
शृंगार लखाय ॥ ४० ॥ इति रसर्थो उल्लास: ६ ॥ दोषवर्नन ॥ दोहा ॥
[illegible] रूप रस रूप ही ऐसे जे सब दोष ॥ आत्मा को जिम अंध ताव
[illegible] धरत दोष ॥ ४१ ॥ रसदोष लक्षण ॥ रस रस वाचक नाम के कवि
ता मा ह प्रकाश ॥ कवि से मत करकहत है दोहि दोष अवनास ॥ ४२
दोष अदोष लक्षण ॥ स्थाई विभचारी न के नाम गहे ते दोष ॥ स्थाई
कीजहां समझन हि जानत हा अदोष ॥ ४३ ॥ पुनः ॥ कहु आपनी
क्रियन ते संचारी न लखाइ ॥ कारन कारज सो न जहु नाम गहे प्रा
त रहे जाय ॥ ४४ ॥ पुनः दोष लक्षण ॥ जो विभाव अनुभाव अरु व्यक्त
कष्ट ते होय ॥ जो विरोध रस आदि मैं दोषक हावत सोइ ॥ ४५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुनदोषलं०॥ कौरेअ्पति क्रम प्रकृतिको दूषन यहै विचार॥
रामचन्द्र रवि तें लखें रावन बेलीनार॥ ४६॥ पुन: लक्ष०
एसवर्ज माधुर्ज को वरीरा नाहि मिलाप॥ होत हानरस की
किये रसकसराहत आप॥ ४७॥ पुन ल०॥ नरहि मैं प्रभुता प्रग
ट किये होत रस हान॥ मान रहत तीय को जहां तहां होय रसखषा
न॥ ४८॥ पुन: ल०॥ तीय की रति बहु पुरुष मैं उरु तीय प्रेम समान॥
याहि को दूषन वरहै जे कवि हैं सुज्ञान॥ ४९॥ मान नीछंडत॥
आदि पुन भेद न होत कितेक॥ धर्मरीत अनुकूल मैं औ
गुन गुनन हि राक॥ ५०॥ इति रसदोष॥ अथ अध्याहार॥
आकांक्षत जो पद रहै कवित मैं नहि होय॥ ताको जोरै आन
को अध्याहार सुजोय॥ ५१॥ आवे कवित०॥ उत्तम मध्यम
सुत्र की रीत॥ लखिन भेद को जीउ द्विधि समान विशेष॥
जो विशेष मैं भेद नहि तो दूषन अति देख॥ ५२॥ उदाहरनरीत
उदाहरन जाको कहै सो परघटत तिनाहि॥ ताहि दोष सराही
एकविसम के मन माहि॥ ५३॥ वचन लल०॥ एक वहु तवा चर
हों औरा आदनकार॥ भाषा मैं द्वै वचन नहि कविन कीयो निर
धार॥ ५४॥ एक विशेष द्वव वचन है द्वै मैं बहु आदर हेत॥ दीजे
बहु वाचक सब्द हरि सब को मत लेत॥ ५५॥ जाति ल०॥
एक शब्द के ज्ञान सौं जानी जाति अशेष॥ आवे बहु के बीच
हो जासो जाति सलेष॥ ५६॥ अथ अन्वय ल०॥ अन्वय प
द सें वंध है रहन सो तिंहि ठाम॥ अर्थ मैं लता पर्यं सौं ल्यावे
कवि वरनाम॥ ५७॥ समास ल०॥ जो सो आदक तादक आ
दि जहां नहि होय॥ अर्थ कहि तल हि ज्ञान सों लख समास
होय॥ ५८॥ इति पंचमो ल्लास:॥ अथ शब्द ल०॥ नभ जर शब्द
धनि रूप इक इकहै वरन सरीर॥ योग रूढ पुन रूढ है जोगिक
कहै सुधीर॥ ५९॥ लक्षन०॥ जोग रूढ साधन सहत रूढ अ
साधन नाम॥ साधन ही योगिक लहै त्रि विध वत अभिरा
म॥ ६०॥ शब्द जतें अवधा लक्षणा व्यंजना वर्नतं॥०
अवधा ल०॥ जाहि शब्द के कहत ही सहजै जो सल आय॥
तहां शब्द की वृत जो अविधा सो कहि राय॥ ६१॥ सीसम·
गुन अरु द्रव्य क्रिया न मैं रहै निरंतर जात॥ अविधा तहां स
जात मै व्यक्ति अनेक लखात॥ ६२॥ गुन है आश्रन द्रव्य
को द्रव्य कहै नव वागि॥ तेज वायु नभ काल मन दिसा आ
तमनव धरि॥ ६३॥ क्रिया· चलनो रखनो हसनो बोलनो जीव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ लक्षणा लक्षण ॥ मुख्य अर्थ को बाध नैं और है मुख्यार्थ (निरूढ)
रूढ जोग ॥ और अर्थ जा सों लखै कहि लक्षना सो ग ॥ ६४ ॥ रोसौ
सा लक्षि लक्षना ध्वनि बिन रूढा रूप ॥ सो प्रयोजनवती जहां (प्रयोजनवती)
उपजै ध्वनि कवि भूप ॥ ६५ ॥ (उपादान) अन्वय हित मुख्यार्थ को और अ
र्थ कर लेत ॥ सिखो कहत मुख्यार्थ है उपादान पद हेत ॥ ६६ ॥
(लक्षन लक्षना) तजै शब्द निज अर्थ को पर अन्वय सिद्ध हेत ॥ जान परै तहां
अर्थ अनल लक्षन लक्षना विजेत ॥ ६७ ॥ लक्षन ॥ तजै आपनें अ
र्थ को सो जहत्स्वार्थ प्रमान ॥ लक्षन जैसे निज अर्थ को अजहत्स्वा
र्थ बखान ॥ ६८ ॥ अथारोप ॥ सारोपा लक्षना ॥ जाको जहां
धरा धीर है उर है प्रकास ॥ सारोप्य आरोप को विषय आरोप्य
निवास ॥ ६९ ॥ तादात्म्य ॥ और और कर मानी रहै
न कछु द भेद ॥ सो तादात्म्य भाव पद ... सब वेद ॥ ७० ॥
साध्यवसाना रोप्यमान जहि रहित है रोप्य विषय नहि होय ॥ रोप्य विषय
जान्यो परै साध्यवसाना सोय ॥ ७१ ॥ अथ गौनी ॥ सब ही
शुद्धा लक्षना संबंधन मैं जान ॥ गौनी है सादृश्य मैं सार
रूप भेद प्रमान ॥ ७२ ॥ ... फल लक्षना ...
होत कहूं फल धर्म गत धर्मी गत कहूं होत ॥ जिती फलवती
लक्षना बत्तिस भेद उदोत ॥ ७३ ॥ पद मै वाक्य मैं लक्षना ॥
भेद निरूढा के जिते और फलवती अंग ॥ होत सु पद मैं वा
क्य मैं द्वै विध करत प्रसंग ॥ ... ॥ जो करवे को योग्य है ता
रूपता हि को लेख ॥ पद समूह अन्वय ... बोधकता रूप रेख ७४
लक्षना भेद ८० ॥ उपादान जो लक्षना लक्षन लक्षना नाम ॥ रूढ प्र
योजन भेद ते चारि होत अभिराम ॥ ७५ ॥ सारोपा एन चारि है सा
ध्यवसाना चारि ॥ ... कहे आठ भेद निरधार ॥ ७६
आठो सुद्धा लक्षना आठो गौनो होत ॥ यातें भाषा मैं जो रासो
रह भेद उदोत ॥ ७७ ॥ यामें आठ निरूढ है आठ फलवती जान
रूढ आरूढ ... फलवति सो परमान ॥ ७८ ॥ फल को वा सुर
धर्म मैं के धर्मी मैं वास ॥ बहुर फलवती लक्षना बत्तिस कहि प्रकास ॥
आठ निरूढा लक्षना बत्तिस फलवति भेद पद मै अरु पुन वाक्य मैं सु
बही होत ... ॥ ८० ॥ ... मुख्य अर्थ
को और अर्थ लै रहै मुख्या तिरह ॥ उपादान लक्षन सलाक्षन ...
ति मुख्या न हि ॥ रोप्य रोप्य ... एक है सारोपा कहि ॥ ...
न सा ध्यवसान ... रोप्य भेद लह ॥ गौनी सर होत सार
श्य मैं शुद्धा सब संबंध गन ॥ मुख्यार्थ बाध मुख्यार्थ को जोग
सु लक्षन स्वरूप गन ॥ इति लक्षना निरूपणाम् ॥ ८१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेति व्यंजना व्यंग जो व्यंगि किरत कै ज्यों ऽधा। धनि ज्यों प्रतिबिंबित
होत है नगन दर्पन में कवि लोग॥ १॥ शब्द स्वरूप गत है गंगक हा
प्रत्र॥ जदान अविधा लक्षना तो स्वार्थ बहुमर्थ॥ शब्द स्वार्थ को व्यंजना
रचे सु और है अर्थ॥ २॥ वचन व्यंजन शक्ती [illegible] कीरा कस [illegible]
दूसरी लक्षना सु लहै लखन मुनि मत अनुकूल॥ ३॥ [illegible]
वाचक [illegible] शब्द [illegible] अर्थ में गन्य॥ योगादिक [illegible]
॥ व्यंग लखि अविधा जन्य॥ ४॥ योग। वियोग। स साथ। पुन औचित
रोच को ज्ञान॥ अर्थ स्तु। प्रकरण। लिंग कहु॥ अन्य शब्द संग मान॥ ५
देश सामर्थ। सु औचती। काल व्यक्ति स्वर देस॥ इत्यादिक स्वार्थ के भे
द कहे सुवेस॥ ६॥ संयोग ल॥ अनेकार्थ है शब्द रुकल जु नल क्ष
लखाय॥ याही अर्थ वियोग करसो संयोग ठहराय॥ ७॥ उदाहरन॥
हर सो भनत है चक्र सो शिव कर लसे त्रिशूल। शंकर सो भनत चंद सो वनप
लाश के फूल॥ ८॥ वियोग॥ नागन सो हत मद विना राग कह्यो विन
तान॥ नागन सो हत अर्थ विन भूषन लसै विन यान॥ ९॥ साहचर्य॥
अर्थ अनेकन को करत जहा संवली शब्द बनाय॥ द्वै प्रधान सवही तहां सा
हचर्ज ठहराय॥ १०॥ उ॰॥ जीतन तहां संपति तहां तहां धर्म को जोर॥
अरि करसे वैन स तुला सरि अर्जुन भिर जोर॥ ११॥ विरोध॥
रच्यो रावन राम में लख्यो प्रलंब सुराम॥ इन दोउ रामन मही कौन गोर
कौन श्याम॥ १२॥ अर्थस॥ अर्थ हित बहु अर्थ कौं शब्द कुआवे राक
राह चर्थ विन अन्य संग अर्थ लख्यो सविवेक॥ १३॥ उ॰॥ सिंधु
सोगति योग लहैं हरि भय जगत निस्तार॥ चित्रभानु गहदहत है।
अंबर हर यो सुरार॥ १४॥ प्रकरण॥ एक शब्द बहु वाचक आने
प्रकरन तहां प्रसंग बखाने॥ उ॰॥ पावक को दाहक सबल को कवि
हौ बखान॥ दुपो [illegible] हा वल जान कै गरल भीम को मान॥ १५॥
चिह्न ल॰॥ वहे चिह्न जा को नही सके वियोग बनाय॥ ज्यों वियोग
ताको करै और स्वार्थ ठहराय॥ १६॥ उ॰॥ विन भूषन मन को
हरे का हर करत सिंगार॥ [illegible] पार लहै न हरै जावे नैन रजा र॥ १७
अन्य संनिधि॥ एक शब्द के संग ते और स्वार्थ ठहराय॥ बहु वाचक
के शब्द को अन्य सन्निधि रस भाय॥ १८॥ उ॰ घनवर सत फूलत सुमन
काम कलावत तीर॥ नयो नेह पीय को लग्यो तिय धरसकै न धीर॥ १९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सामर्थ्य ॥ अर्थ मई कवि ऊ करै अरु अर्थ सलखाइ ॥ ताहि कहै सा
मर्थ्य जानिहै द्विविध भेद दरपाइ ॥ १९ ॥ ३० ॥ गुन गगन तजै समाध
उष्ठम जग तौ तजै सब जग ॥ नैन रहैं न ती पान को बोलत पिक
मधुमत ॥ २१ ॥ औचित्य को चितै गल ॥ देश अर्थ के शर
तें निरखै रै योग अयोग ॥ योग अर्थ तसों कीजीरा सौं अवौठि
तौ क योग ॥ २२ ॥ ३० ॥ दुर्निवार संकट परे लखि विविन अति
अकुलाइ ॥ तासों तहां उर मुख निकों उरपर होत सहाइ ॥ २३
देश मन घर ते निर सरदु सरस रामते होइ ॥ यहै सिखावन देत है तुलसी
निरसदि नतोइ ॥ २४ ॥ समय ॥ ३ ॥ चित्रभानु को रूप ज्यों रजनी मै
अति होत ॥ हरि घर वजै है दिन समै त्यों तव वदन उदोत ॥ २५ ॥
व्यक्ति ॥ ल ॥ बहु वाचक मै भेद तत्ता है ॥ लिंग वचन पुन व्यक्ति कहावै
३ काहू को सोचत सखी काहू होत विसाल ॥ कुच बल घर लक्कारी
बहु पति मेरी नव बाल ॥ २६ ॥ जाको आनन कंज सो जाके नै
न विसाल ॥ देखो वेनु लकुंज मै मंजुल तन दुत वाल ॥ २७ ॥
अपवेद ॥ रस लै पुन तजत दत है वसत न ठिक रहक धाम ॥
ज्यों चित रहत घनस्याम नय सो विरहत वजराम ॥ २८ ॥
हो हा ॥ यह तेरह परकार रही ध्वनि मै ऽ विचार मूल ॥
स्वर नि मै च्चर तादिक स्वर निध्वनि नहिं वा वि अनुकूल ॥ २९
इति अवधपरस ध्वनि ॥ अथ लच्छना मूल लध्वनि ॥ साम ॥
योग बनै ता को वियोग रहि लच्छ रुलच्छन ॥ साहचर्य्य सम
धान शाक बहु वाचौ सब मन ॥ वैर परस्पर अर्थ अर्थ सौं
उकठाक विचार ॥ लिंग चिह्न देश काल देस औ चिती करि ॥
प्रकरण वाचक वहुर्द्धक नियम वचन सार्थ सामर्थ्य मन ॥
अनि सैग शब्द के संग करो व्यक्ति जाति मिल लिंग वचन ॥ ३
३० ॥ योग चक्र जुत हरि वियोग विन चक्र सुहरि पुन ॥
साथ भीम अर्जुन विरोध रावन सरराम सन ॥ अर्थ देत
विधु उभ भीम विषपीयो सेवकरन ॥ सरहन नयन हरि
चिह्न अन्य संधि घनवर खन ॥ सामर्थ्य मत्तपिक मधु सम
य विधु नित देश सुधा सर ॥ ॥ उर मुख सहाय औचिती
व्यक्ति तिविध मेल वा नरंग मन ॥ ३१ ॥ राम राम ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ आर्थी ॥ वक्ता ॥ अरु बोधव्य पुन वचन वाच्य अनि
संग ॥ देस काल रस जानीए चेष्टा काकु प्रसंग ॥ ३२ ॥ इनरस
के परभाव ते उपजत जे ध्वनि रूप ॥ वक्तादिक वैशिष्ट जिह कह
हत सकवि कुल भूप ॥ ३३ ॥ वक्ता ॥ इगनननबजन चातरी ब
चन न सुधा समान ॥ कहा समझ मो सो बधू हरि तन मन
दै प्रान ॥ ३४ ॥ बोधव्य ॥ मोहि तमै चित दे फिरी सखी निकुंज
न माहं ॥ नयन अंग स्रम स्वेद कन लख्यो स प्रीतम नाह ॥ ३५
वचन ॥ इक इक कर ग है स्वच्छ सुचवि रचत सो मोहार ॥ वही
हार आली समै लखत न कहा विचार ॥ ३६ ॥ वाच्य ॥ तरुनीम
नमोहत यहै राग कलिंदी तीर ॥ सघन वंधु सो मंद गत राजत
तरु समीर ॥ ३७ ॥ अन्य संनिधि - सासु ननद सो प्यो सदन क
हि कर घर को काज ॥ ३८ ॥ देस ३० ॥ लखि ईलाल चित लोकी रा
रा बो आव समीप ॥ जानो जात न और सी जाई संगल दीप
काल ० ॥ नहि उचार चंचल चित वतत जतन वास ॥ आवे
लखन कैसो टा छटे आयो फागन मास ॥ ४० ॥ चेष्टा ० ॥ सीलल वो
हे चखन ते देखी तीय सु अमल ॥ जान चतुर जल मै दीयो वंधु
जीव को फूल ॥ ४१ ॥ काकु ० ॥ कहिक हत काकु सर भेद जान ॥
घन घहरत चपला चलत की यो मदन आराज ॥ प्रसंग ० ॥ सन्यो
समय सहावन रसिक रथी पन और है आज ॥ जो कहनो सो कीजीए
पीय तो आपहे सजनी यातीवार ॥ जा कहनो सो कीजीर
अब वयो उरत अचार ॥ ४२ ॥ संक्षेप व्यंग्य ॥ वक्ता हरन
गहयो कृपान मैं अरि पुर भाजत ॥ पुन बोधव्य सहेत परसं
घर लखयो गाजत ॥ वचन नेग कर सकात वहा मारिये ॥
आनंद हू बिपन सु छि जरि दू जानत को किलस घर ॥ इह सम
य मान मत करि अली आयो सावन मास वर ॥ ४३ ॥ व्यंग्य ॥ वा
चेष्टा पिय तिय और मिलन हित लल चि चितावत ॥ वा
ल जोर हूं वंज भई मगमा हि गिरावत ॥ काकु न और है ग्वा
न नाय अतिरस के कहावत ॥ यह रूप उत यड सो दुदस
वस ही आवत ॥ पर हेगज हो परसंग करि और जाते आ
वत भगट ॥ ता जिम्ह कगामी सहेगजे है सहज ह आव
घर ॥ ४४ ॥ अथ अर्थ रूप ० ॥ तीन रूप है अर्थ के वाचक
रूप करि व्यंग ॥ याते त्रिविध स व्यंजना होत सदैय रव्यंग ॥ ४५
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अर्थ शब्द को आसरे शब्द अर्थ आसरे अर्थ॥ शब्द होत व्यंज
क जहां एक सहाय समर्थ॥४६॥ अथ शब्द वरनन॥ अव
धान लक्षणा व्यंजना याते तीन प्रकार॥ शब्द सु वाचक
लक्ष्य पद कहत व्यंजक कहै निरधार॥४७॥ तात्पर्य्याख्या ल०॥
जो पदार्थ अन्वय समुझावै। तात्पर्य्याख्या वृत्ति कहावै॥४८
आकांक्षाख्या ल०॥ ऊपर सो जो पदार्थ दिरावै॥ आकांक्षाख्या तादि
समाधौ॥४९॥ इति व्यंजना वृत्ति॥ अथ काव्य भेद०॥ उत्तम मध्य
म अधम पुनि भेद काव्य के तीन॥ इहां होत ध्वनि भेद जे लिखियत
ते परवीन॥५०॥ उत्तम काव्य ल०॥ जहां वाच्यते रहत है अधिक
चमत्कृत व्यंग॥ तहां सो ध्वनि कहत सो उत्तम काव्य सव्यंग॥५१
ध्वनि॥ वृत्ति व्यंजना जाहि निहारे॥ सुंदर व्यंग सु ध्वनि उच्चारे॥५२
काव्य राव ध्वनि कहत है गुनीभूत व्यंग होय॥ भेद आठ गुनीभूत
के काव्य मध्यम मे होय॥५३॥ भेद दोय ध्वनि के कहे अविधा ल
क्षनामूल॥ द्विविध विवक्षित अविवक्षित वाच्य क्रम लक्ष्य मत मूल०
लक्षन॥ ध्वनि अविवक्षित वाच्य है अर्थ न संगत होय॥ लक्षना
मूल कहत है भेद दोय कवि लोग॥५४॥ अर्थांतर संक्रमित वाच्य ल
अर्थ अनर्थ कभी सकै और अर्थ मे जाय॥ ताहि अर्थ मिलि सार्थ
ना अर्थांतर सरसाय॥५५॥ अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ल०॥ और अ
र्थ ते अर्थ ता मुख्य अर्थ वे काम॥ अति तिरस्कृत वाच्य तस हो
त सु ध्वनि को नाम॥५६॥ इति लक्षणा मूल ध्वनि॥ अथ अभिधा मूल
विवक्षित वाच्य ल०॥ विवक्षित अन्यपर वाच्य है ध्वनि यह अविधा
ठाव॥ संलक्ष्यक्रम असंलक्ष्य क्रम भेद पुनि पद ले त्रिविध गनाव॥
संलक्ष्यक्रम भेद॥ शब्द शक्ति करा कहे अर्थ शक्ति कर होय॥ शब्द
अर्थ दोउ नकर भेद तीसरो जोइ॥५८॥ अथ संलक्ष्यक्रम शब्द
सत्युद्भव०॥ वस्तु रूप अलंकार ते शब्द शक्ति भव होय॥ अलंका
र ते भिन्न जे वस्तु ताहि को जोइ॥५९॥ शब्द शक्ति ते व्यक्ति जह
होत वस्तु लंकार॥ शब्द ध्वनि तहि जानी ए कीनौ सुकवि वि
चार॥६०॥ शब्द शक्ति जल०॥ शब्द फेर वे दीजी ए वाकी जो प
र्जीय॥ इष्ट अर्थ निकरे नहीं शब्द शक्ति जकहाय॥६१॥ शब्द
शक्ति ते अलंकार॥ जाको वरसत दिसनमे सो भल है द्विजराज॥
रहे विघ्न पद मे सुरुचि तव हारा दर महाराज॥६२॥ राम

अथद्वादशविधअर्थशक्तेजलक्ष०॥ दीनेहूपरयायवेरहे
व्यंगकोअर्थ॥ अर्थशक्तिजसजानीए वरनतसुकविसमर्थ ॥६३
अथशक्तिजमेंहोतहैवारहविधिध्वनिमान॥ वस्तुअलं
कृतचारविध स्वतःसंभवीजान॥ ६४॥ कविप्रौढोक्तिसुसि
द्धते ताके चारप्रकार॥ कविनिवधतेचारयौंवारहभेदउचा
र॥ ६५॥ स्वतःसंभवीलक्ष०॥ जगतप्रसिद्धजुअर्थतेउचितअर्थ
व्यंगहोय॥ वाहीअर्थहिकोकहे स्वतःसंभवीजोय॥ ६६॥
कविप्रौढोक्तिलक्ष०॥ कविकल्पितजोअर्थहैनहीउचितकर
जान॥ कविप्रौढोक्तिसुसिद्धतिहवरनतसबसुजान॥ ६७
कविनिवधलक्ष०॥ वक्ताश्रोताआदजहांकल्पेसुकविवनाय॥
ताकीजहांप्रौढोक्तितहकविनिवद्धसुकहाय॥ ६८॥ अर्थ
शक्त्युद्भ०उ०॥ सुंदरलसतसुवासपुनअरुनवरनसुविलास॥
नीरभरेकुम्हिलातक्यौलोचननेरेवाल॥ ६९॥ ध्वनिभेदगीत
ध्वनिअविवाच्छितवाच्यहैभेददोयतुजान॥ अर्थांतरसंक्रमि
तहैअत्यंततिरस्कृतमान॥ ७०॥ पदमेंअरुपुनवाक्यमेंहो
तभेदएचारि॥ कहेलक्षनामूलकेभेदयहेनिरधार॥ ७१॥
पदमेंओरसुवाक्यमेंओपदकोइकदेस॥ घरनाजरनप्रवंध
करपहिलीकोयहवेस॥ ७२॥ सेलक्ष्यक्रमभेमेकहेशब्द
शक्तिजेमूल॥ पदमेंअरुपुनवाक्यमेंचारहोतअनुकूल॥ ७३
अर्थशक्तिजेमूलहैसेलक्ष्यक्रमभाइ॥ ताकेवारहभेदहैक
विजानैमनमाह॥ ७४॥ सोपदवाक्यप्रवंधमेंछत्तिसभेदसु
होत॥ उभयशक्तिजेमूलहैयाकेभेदउदोत॥ ७५॥ केहेभेद
सुध्याकियेएकइक्यावनसुपचास॥ सुद्धभेदजाकेकहेजाके
सानप्रकास॥ ७६॥ इक्कावनसोगुनेजोइक्कावनकोकोय॥
संसिनभेरसकृताहोतहैभेदसुध्वनिकेजोर॥ ७७॥ त्रैसंकरसं
सृष्टिकरभेदएभेदएचारि॥ चारिहसोंससिनभसरसकृतकोउ
नेविचार॥ भेदक्योंविधउठठससिहोगमेयहपेर॥ १०४०४
इक्कावनसोभेतसरवेदगगननमेंहेर॥ ७९॥ इक्कावनसोकजोड़े
१०४५५॥ व्यंगअसंलक्ष्यक्रमहैरसभावध्वनिमाह॥ जानतहै
उत्तम
सुकविवरयामेसेसैलाह॥ ८०॥ इसरहिविरहदाहनं॥ काव्यनिरं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मध्यमकाव्यलं०॥मध्यमसोजहांवाच्यतेंव्यंग्यप्रकृतनाहि॥
ध्यंगलसैंजहांगौनवैआठप्रकारलषाहि॥८१॥गौनप्रधान०
दैपदिलेइतरांगपुनिनामअसंदरफेर॥संदिग्धतुल्यप्रधान
औवाच्यसंदिग्धसुहेर॥८२॥अस्फुटकाक्वाक्षिप्तपुनिऔरअ
गूढसुधार॥सोइतरांगरसादिकोअंगरसादिविचार॥८३
असुंदर०॥धुनितेनीकोवाच्यजहतारूअसंदरजान॥संदि
ग्धलं०॥धुनिमेंजहांसंदेहहसोताहसंदिग्धपिछान॥८४॥
तुल्यप्रधानलं०॥ताहितुल्यप्रधानपुनिकविगनकसतवना
य॥वाच्यव्यंगजहंहिगवकसेकवितामाहिलषाय॥८५॥प्रलों०
वाच्यसंदिग्धलं०॥अर्थसिद्धतेअंगनीधुनिजलहेरसमा
य॥वाच्यसंदिग्धजुकहतहेकोविदसकविनाय॥८६॥
अस्फुटलं०॥सोअस्फुजोभ्रमकविकोनीठनीठसलषाने॥
सोहिगहेअतिभपदिवसिंहवहस्पतिजान॥८७॥अथका
क्वाक्षिप्तलं०॥धुनिनिवरेसुरभेदसोंकाक्वाक्षिप्तलषाय।
पावसमैनहिंआयहेपीतमरससवकहाय॥८८॥आरूढ
लं०॥सोअगूढपरगटसपुनिनिकैधुनिजहिठोर॥मा
लमहावरलालदृगआयेमलेसभोर॥८९॥संदेपत०॥
जहांरसादिकोअंगरसादिइतरांगसकहिपत॥करतजुविवि
धविलासहासप्रीतमनहिलरियत॥धुनितेनीकोवाच्यव
ढीसुअसुंदरकहावत॥बेजनवैनीवप्रघरीचलवेजाफि
रवत॥धुनिमाहजहांसंदेहसावहसंदिग्धवाविकुलकहत॥
व्वलचाहनाहदेषतसवैचतवकामिनिअवरचहत॥९०
उक्त॥यहैतुल्यप्रधानयवाच्यअरव्यंगतुलजहि॥ग्रीषमदि
ननिसशिसिरसरराषिगोपियाठिदसतह॥अस्फुटधुनिहअ
व्यंगसरसरवधउधारहत॥काचुनऐहपीयअधरअंज
नआरूढगत॥पुनवाक्षिप्तध्वंगलअंगता अर्थसिद्धमें
धुनिलहत॥लषैवैरपाछेकधंसपर॥अतिनितगान्ह
पईद्रसत॥९१॥तुल्यजोगिताआदिमैउपमाकोंगौनात
गुनीभूतसोव्यंगहेकविनकियोउद्योत॥९२॥दीपकादि
करकततहाललितकाव्यसोहोय॥उपमाहोलालित्यनहिकहयोस

अर्थशब्दसोचारुताछपीकरेपरगास॥गुनीभूतसोव्यंगकोक
वितहोतहिनास॥९४॥निरनयमध्यमकाव्यकोलखोसुकवि
सहुलास॥हरैहभामंकाममैपरअष्टमउल्लास॥९५॥अथ
अधमकाव्यल०॥अधमकाव्यसोव्यंगकोरहैनहीजिहचाह॥
शब्दचित्रपुनकहतहैवाच्यचित्रससराह॥शब्दचित्र०॥हंद
सकुंदनहरकोहरकरैसगहर॥अंगसेंढगतरंगजुतगंग
करोहुढहर॥९७॥अथचित्र॥मनिमुक्ताकोहारदैसंछवासजिह
पान॥सोहुतविधुशरीरसोरतनावारससठान॥९८॥
निरसकोउ०॥श्रीविश्वंभरचेसमैरामतनैहरिनाम॥नवापार
सरवारमैअभिजनवहयाग्राम॥९९॥आधकोससौंआर
तेगममृचैनपुरचार॥परगन्नागोवानहोहरिकविवासवि
चार॥१००॥गुनवर्नन॥जोरसकौउत्कर्षतारचनासोगुनसो
इ॥जीवमाहिज्योंसूरताविरूपतादिज्योंहोय॥१०१॥माधुर्जं०
कसोमलगिवर्ननजहांहतजुसानुस्वार॥विरवर्गरवलघु
जहांसोमाधुर्जउचारि॥१०२॥ओजगुनल०॥संयोगीअ
चाक्षरहाररहैसबडोसमास॥रेफवकृतपुनिटादेसबखर
सौंओजबिलास॥१०३॥प्रसादल०॥होतसुनतेतेशब्द
कीजाहिअर्थप्रतीत॥सबगुनमैजोरहतहैसोप्रसादय
हरीत॥१०४॥तनमक्रांतसक्रमजहांततप्रसिद्धमैजान॥
आनभूतार्थसुरहैतहांअनुभवकैहियमान॥१०५॥वहि
निर्छलप्रसकानवहवैसोहपानिधान॥राधाअचिल
विहारकोवसोहियेवहध्यान॥१०६॥वेदइंदुगजभू
गनितसंवत्सरकाविचार॥सावनसुकलत्रयोदशीरचौ
ग्रंथसुविचार॥इतिरसभाकासलक्षणासूचीसंपूर्ण॥
लिषीकृतंनंदकिसोरेणपठनार्थम॥सं१९१६भादो२५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ओम्

13

श्रीमद्रामचन्द्रायनमः॥ श्रीहनुमतेनमः॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः॥

सूची

	तुलसीसोमनव	अथरूपक	देहरूपकदोउमा
	ललितमालललि	रूपकलछन	उपमानरउपमे
	मंजुलकंजलीर	अधिकतद्रूपक न्यून	मुखससिवाससि सागरसेउपमी
वृन्दावनचरनन	कुंजतकोकलके	समतद्रूपरूपक अभेदरूपक	नैनकमलरोमे गमनकरतनी
उपमालछन॥	उपमानरउपमेय	न्यूनअभेदरूपक समअभेद	अधरद्रोठवि तवमुखपंकज
अथपूर्णोपमा॥	अंबुजसेलोचन	मालिकरूपकं हीनोक्ततद्रूपक	डारठंढीगाढग विप्रनकेमंदरन
अथलुप्तोपमा॥	वाचकलुप्ताए उपमानकिपुनलु	प्रनाम०॥	करैक्रियाउपमा
वाचकलुप्ताधर्म लुप्ताधर्मवाचकलु वाचकोपमेयलुप्ता धर्मोपमानलुप्तउपमा मलुप्तावाचकोपमा नलुप्ताधर्मोपमानवाच कलुप्ताइ१९६१२	कमलवदनसं		जैतघटहोतदिस
	मिगसेसुंदरनैन	अथउल्लेख॥	सोउलेखजोएक
उपमेयलुप्ता॥	पीयविधुरनके		बहुविधवरनेर
	पिककंठीगजगे	भ्रमरनभांतिसूंद	भ्रमरनभ्रमसंदे हघअवहु
अथअर्थीउपमा	जोअर्थ्यैह्हैसो	अथभ्रांति० संदेह०	वदनहृध्यानि वदनकिंधोयर
	नीचहीयेहरखे	भ्रमरन०	छिनछिनमैछ
अथमालोपमा	इककीउपमा	भ्रमअलंकार	रहीदिहेडीठि
अथरसनोपमा	रसनोपमतिंह	संदेहअलंकार	वदनपरैनहिंस
अथअनन्वैअलं	उपमेहीउपमा	लुप्तापहनत	घरमदुरेआरो
अथपरस्पराउप	उपमालागेपर		वेईगडिगाहैपा
मनीपपंचप्रकार	सोप्रतीपउपमेय	अथहेतुअपहनु	वसतदुराकेजु
प्रथमप्रतीप॥	उपमेयकोउप	परयस्तापहनु	परयहतऊनो
	नाहकतेजिन		हालाहलविष
	आननकेसमु	भ्रांतापहनुत	भ्रांतअपहनुत
दुतीयप्रतीप॥	अनआदरउप	विसारी००	केसरकेसमतु
	पाहनजिनजीय	छेकापहनुत	छेकापहुतिजु रहीसकीकेन
	उपमेकोउपमा	कैतवापहनुत	कैतवपहनुत
	विअर्थहैधउप		उहेउलवसग
			नेमुकरविये

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उत्प्रेक्षा ४८०	उत्प्रेक्षा सम्भा		हलनकी माला
	वसन्त द्विविध		उचरो इकुचव
	हेतुसफल सि	रूपकातिशयो	अतिशयोक
उदाहरण	वाचकजहांत		उततेइतइतते
	चकवनकी वि	सापन्हवरूप	सोइछायायो
	मकराकृतजो	प्रायोकसि० भेदकाल०	अतिशयोक
	रंगतहैमनुओ		औरैकछुचित
सुगमरीति०	नहीहेतुफल	संबंधातिशयो	संबंधातिशयो
	दृष्टोअनदृष्टो		भूपततेरदान
	ओंचत्तसीचित		दीयमालनकी
उत्प्रेक्षा	जहिंअहेतुको	असंबंधातिश	अतिशयोकत
	मनोचलीओं		मनीपलगीत
अस्तिधासप	चंदकंजसोवैर	अक्रमातिशयो	अतिशयोकत्र लोभजतो
फलोत्प्रेक्षा	जहांअफलको		रामवरनमुठ
	कंरिवुचधरवे	चपलातिशयो	चपलातुकत
अतिधात	पदसमताको		कंगडावतधन
	करइठायपुं		
सिधासपद	लगीअतलगि	अत्यंतातिशयो	अत्यंतातिशयोत
	सनसिनव		मानुकुपियोपद
असिधास	जगमगरुचि	तुल्ययोगयता	तुल्ययोग्यतातील
	ललनवलन		कोककुंभनदीलहे
	मुदततेजतहै		वनीकमलठी
सिधास०	चारुतसति		लवलेगवीतव
	मानउविधत	दूसरीतुल्यया	गुलसोजहिउ
	नीचेछिवैतिं	तीसरीतुल्य	सत्रुमित्रपैवरस
ऽसिधास०	आवत्तुतर		गुननिधनीक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

	दीपक।०	दीपकवरन	विसेषोक्ती।०	है विनकाज	औ सो भाख्यौ कौल
	गजमदसौं न			पीयमन रंजन	वलसमउलसै
	उपमानरु उपमेय	दीपक		विषय न तै निखे रूप न दीपत	निफल जानि रग राजत एकरूप तज
	घनकर दान	गजमदसौं	समासोकति।०	समासोकतम	क्रम दरनहू स्त्रे
आवृत्ति दीपक।०	आवृत्तदीप	पुनि है आव		नहिं परागन द	अली कली हि सौं
	पद अरथ अरथ	घनवरसत	परस्कर	है परकर आवै	हिमकर वदनी
	हैं उभय वत	मत भरा है सो	लंकार।०	वालवल हूषी	केर डर डहि कीजै
प्रतिवस्तु उपमा।	प्रतिवस्तु उ	तिनके घर रूप	परिकरां कुर।०	अभिप्राय विसेष	सूर्प है पीय के क
	सोहत भानम	विद्यधरसोप		जस अपजस	कहा करे लाल
दृष्टान्त	जहं विंव प्रति	कोतमा नसमि	सुलेषा लंकार	सो हलेषहू	लोचन हूरन नेह
	दुसैं दुराजमजा	अधिक अध		पीनपयोधर	है रउके सीमा न का
निदर्शनालंका	जहं उपमेय	जो सो कर म	अप्रस्तुत	अति अकुला	तिन कमलन की
	दाता सौ प्रभु	जो दार मीठे	प्रसंसा	अलंकार है भाव	रकवरनन प्रमलत
	रहै जहां उपमे	उपमा मै उ	कुर।०	घनजहं चरचा	विषय घतै कंठसि
	कमल की सही	जलदीन रहे	सलेषा	परभाख प्रभुका	सेठी पर बाजा न
	तव अधरन	की विद्रुमता		कोध के सबंध	कुककौ कर
	जवकरया हत	भावगति है मे	व्याज	मस्तक अंकुर	कासी करो
	जहां अतिरे	तीजी कहत	स्तुतिका	हवरन वरनमु	जैसे वपक कौन
	रविसों नसत	जवत नवपत	पर्या	पर्यायो कत	मिसकर कारज
	मधुकर हूर	मगर कर	योकति	वादवहै जो रव	तमह उदै है
	हरमुख सोच	नगरवारन		जाकै लोचनक	सो भाउ रूप पलक
व्यतिरेकालंकार।०	अतिरेक उउ	मुख है औ		लख लोयन लो	कौनारी कवा
	रहै पद असद	लोचन को	फलकावा	लरकाले वक	महैनाअवनज
	सो सहा कत उ	कीर तसर	रुजसा।	तिं दामत हतेसो	आज लाता का
	घर टनमुखें	घुटे लो कला	सरोजहो	जानी ज्ञान तक्षन	सरगल हारन
		लो उद्दन रके।			

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

2

२ कहालउतेदृगकौ केहूमुरलीकहूपीत तोपतोवनपियकाम मज्जोदोपहरीबरी हरेहरमेरतरहतहू मेसेहेतसुसेवते व्याजनिदा॥व्याज नहानदाहैसोनदा सदाध्यानकीनेन मगरकुलनानोकौ मधुपजोगविषआ कोकिलरवसोरवे मधुपरापतहैते मधुमधुप॥तीन मानमचापहैजे पहलकोहयआप दुरंनिधधजोविय होनहिदूतीआगान हसरी॥सीतकरण जानेहरिमोहनम हौनकहतनुमजा मेसुवाउरगनगर हे॥मोहसेजेमा जोवादिहीहपतु मदनसदनकोपा रचेतनेविरहत मोहूसोवातनल नाईलेउरलाये विलपाभासु॥मा सेजहाविरासोउ सुधिआरीसुधि तोतोपोपसे सगनसलाने पामहनतोवे

मोनमाहूउस्याम विभावना॥हेतव भावनभावना विनजावकदीनेव विनतीरतिविपरीत हसमनवलेही दूसरी॥हेतमपुरन कुसमवानकरग तीजपरवसोतन नवेमारगनहमोक हे॥प्रतिवधकेहोत नसदनप्रीतसग चलवलमोहनवेठ नैनवारसीचतउ आहसन॥जवेमकौ रनवसे॥कोकलहै हसतचालकेवद फूलीचपवेलती रहिकौरमोपारूग प्रीतजनावतभीत कौदूकानेवसतन करतमोहसंताप कियेचुकउठाये रउथहूटउफेर पुनकपकारजते नेनमानमेदसीपे मयोसियनेवुधि उपज्योतामुमरव वेप्राणोकहि॥विप्र योकतजहहैतुते नेनघातवहुरत नहीनेननकीक रीरमरेमेमन मथहेमावलाल

कहैमसंमहोतजह गोरवरधारहैगोप संकवतेनदोरतेनह कुमजावसकरहेकहू ससेगति॥तीनमसमे मोरहतरकोकीजिये मोरूकाजमरमीये कोकलमधुमातीम राधाकेहगथेलमे करनलगीहगको तेरेमदनकीमरना मोहिमरायोनाहमसु पलनपीअजकमधु कोमानमिलेसुमरेके उरतेमयोहेजलदहू मरेजीवनतेहेको विषम॥विषमलक कारनकोराधारव मोरूमलउदमकी कहूकोमलगनती षडगलतमति स्या सखीलायेघन॥

कहाराधा कोहमुदरी पीतजुवज मगटतउ लोनमुख दूनोहुस्या मघसमा॥ मेकाहरसम कारज भवनकाजहारेयास करतलाल सेउजक नीचमरा जहहीको पीछेतरी वदनमधु पुनमान किसमलद

विरुद्ध॥
इष्टाफल नमतउच
अधिकाई जो आधार
मानदीप अवरनेंदु
जा मनमै वैसविम्ब
आवत लख आगन आग

अथअलप
अलप अलप अंगरीको
करद्रूतेअ नरेकु वके
आसपास ससिलग्न

अथअन्योन्य
जनां दरस नि ससैनिस
तरा षीस नेराष्योनि

अथ विशेष
तीन प्रकार वरीलत
वस्तु एक नभउपर के
चलै लाल छिपेरहस

इती लक्षन
प्रसिद्ध अरि रव कीरए
कलप वृष अतर लैहि
तो हविलोक सापुधाक

व्याघात
व्याघात जु वहु रवि रो
सुषपावत रयाकस्ते
चिंवछुरत जैसे छत
जोवसषी नोहस
नरलोभी दाताधन

अथकारन
माला
कारनकाज नी नहद्व
नेहुवढेत वाढतपुन
पूरव पूरव कारन मा
नरकहोत हरिरहेप्र

अथएकावली
ग्रहनसुक गुग्न सुलय
कंजुसजल नहीभौर

अथमालादीपक
दीपकएक ओस को अधासा
एकत्र
देते हे चिकानी हरि
कनकवल तामेमद्

अथसार
एक एक ते सुषसोमु
तिनतेनूल पवननमा

अथसंख्य
जथासंख्य करिमरिम
सोनपरा नहिषेगउन

अथपर्याय
द्रूपजाइ फिर क्रमसे
इती अरला अवुनित
कवैसेज कवैजेवर
मिलनचाह अवतसमके

अथपरवत
परवत की लक्षन
अवकेवन यहसखी
सहतसन पानपान

अथपरिसंख्या
परिसंख्य [illegible]
हेभूषन चपलकृप

कौनदोष व्यासजो

अथविकलप
सभवले पैतकाम
मानकीयो सवैहैकर

अथसमुच्चय
दोषसमुच एककाम
तुवअसरभा जो वन धिय
अध्यकेम चकाउरै
भ्रिमातेम ततचपर

कारक दीपक
कारकमी जानचवे
भोहनत्रा ततरसला
कहतनर भरे भोन

अथसमाधि
समाधि उनके
सषीमवा चोलउठ

प्रतीनीक
उषहे अरिहीनाहरि
तो मुषवसे लररहु

काव्यारथा
पति
काव्यार्थापत्ति जो
भेदसम्पत्ति भेदतहैं

काव्यलिंग
काव्यलिंग कायें जो
कहका वाकीवद

अथअर्थान्तरन्यास
सोवेषोक रघुवर
नीवासग पतपा
चियमन लाकरे।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बडे नहूं मे करत धमु
॥ विक श्रृंगार ॥
विक श्रृंगार हो दृष्टि
संदरता की गुन मैं
मधुपन को रस
अथ मदोकति
प्रीकति उत जमनगी
अथ श्री तरुनाक
बरन कुच कराह
गंभीर कविकश
अथ हंसभावना
हुं योजे ककुता
जो वाके तन के बल
अथ स्याध
सिषणा कर मधुपा
लव वदन राम रोष
अथ ललित
ललितक सेतवा
मेरी सोष्टि हे याका
अथ मदरवर
तीन मदर कौशिक
सा धन जा ताके दरस
कर कुंदरी पीठ देष
री छवि हानि लो
कारनम भावति
रति की मुख असतवी
विषाद
सो विषाद ना बीद
रंग दोस सतो सो

अथ उल्लास
गुन को मन ताह तंतपा
अथ दोस अति गुन
लावंबरी जो कुसल
गुन कर दोष
देख भाग धन को देह
दोष ते दोष
कुर कुतन कुचको
निद नदे भाजन सभे
अथ गुन ते गुन
स मासंग रस तंदी
दोष ते गुन
दही कमीन बडे भाग
सब तो गुन
करि फुल तेल रंग की
दोस सभे तूठी वद
अथ दोष ते दोष
रे चंदन वन आप सभ
अथ अवगुन
दोत कमल पास
जो देन मैं जगत
परदिग उठ तं वसे
सीतल ता कोसनव
अथ अनुज्ञा
दान अनुज्ञा हो ऐसे
जोन जुग जो लहे

अथ लेस अलंकार
गुन को दोष सकथ
स्वच्छ केप विन कमध
केत सजनी बडे भाग मे
दिन विवत नो निज धिम
अथ मुद्रा
मुद्रा प्रस्तुत पते हि मन
विकत लप जाकु चंपक
नरहून पिय नैन सरे रा
अथ रतनावली
रतनावल सरसक चतुर
लाय जुहिर विज विजे
रवि तरे तेज मंगल बुध
अथ तदगुन
तदगुन तज वे सब मोति
रंपन वेठे कु राधा जाके
पीय के ध्यान आपको
अथ पूर्वरूप
पूर्वरूप ले दूजे जो गु
सम्म मेघ भो दीप मदा
मुकत हार हार के पुनपावत
वदन चंद वा रान वित
अथ अतदगुन
सो अनतर गुन दृष्टि अतद
रीयाहू तेरी नेह भौ न
अथ अनुगुन
अनुगुन सं मुकत मा
वानर भदा भूत सो पै
वरी अंधार तन करम

मीलत
मीलत सो समरस्य
सकल मल न वरनति
सारि जगतारी लखीपर
बारन बास पचरी लागी
सामान्य
सामान्य जु नाहू कुल
काचन महू ज्ञान पैरनौ
उनमीलत
उनमीलत कीरत आगे
मलचदन ज्यों जोग
विशेषक
इहू विषा घतिमधुकरू
काकस्याम उमकै बतसे
गुढोत्तर
गुढउतर कउ बेतसकै
ग्वालन रेउ बंसी तटके
पायजित रउ ननतर अप
चित्रअलंकार
वक्रअसन मुखतीको
सारद छंद सारद्वक
जैहै असन उत कौ अपा
कोहर वाहन तहाँ पच्चक
अथसूक्ष्म
सूक्ष्म अमदपर प्रात:सतुर
अथपिहित
पहत यापी प्रात आसी
रसी तिय कंमकु सो
अथ व्याघात।

यायोक्त लखीसूक
कार करि नेउ कर देवास
कोरकरैहू न काटलो
गुढोक्ति
गुढोक्ति कालहू
उतहै ररी हेननातहू
॥ अथ विवृतोक्ति
मलेमघ पा रचभाजै
कुजन जपै भितजरा
नैननेचा राजीकारेगु
ररसनहीं कहूनबो
लचलन भालेबाडू
अथ लोकोक्ति
लोकोकत नैनमूदो
गुनमूरत ऊडोरेगुन
छेकोक्ति
लोकोकति सखी
नजे नेहून चोरीको गु
अथ वक्रोक्ति
वक्रोक्ति तसर रसकअ
मेलबका वकसोहि
युवती के गुरूहाकरत
मवसम्बकर कनसोहै
अथ ललष सासिनरप
मोमनन नू नुमदोषका
अरे नहारी लकरी मेहू
ह्वैस्वभावोक्ति॥
मुभकोकत हविहसि
मेरी आमुन यारीघारी

भाविक॥
भाविक भूत भविष्य वनमे
जौ दलमलक अथरके
जिन चलाई मिटघाते
अथ उदात्त
उदत्त है संपत्ति
रतमि कै बनि सच्चाव
मुकतानुव लाल है
जमना तुरत जैसमोहेन
मोहन कूर
अत्युक्ति
अरद युत जो धक्का
अरद युत ही दानसरता
का हन नाहू जो जावे
वोलवलो जारै जान
अघार सो सबौ चन
अथ निरुक्ति
सो निरुक्ति जू धोखाव
पीय धरघात नो को
अथ प्रतिषेध
सो प्रतिषेध ते धरनवा
अहू अहीर यहू न हप
अथ विधि
अलकार विको कल
तुलसी जुते हैं अप
फूटे कूट मोहन अथ
हेतु अलंकार
हेत मले कारन का
उदय यो मोरे घर
दरपन मै तो
रतिकाके ऊक

[illegible] साहेकाले

अरति ग्रन्थ हिमेर
तुल सीको रहतुग
सेवतनमु राही हुईको
कृतम धी अलकार
आभूषन तोकोन
मत घालंकार
मनघ सोम पीठदेए
कुननयन कच अगुली
गती अंदधेरी धरे बेघाव
नुवमे जोन सोधे केड़ी
मृतननताल राठोराग
अधरमाधु धालुघवी
तोरमुरावे जीवनमारी
अर्थमनुमान अल
देमनमान समवदनी
नाचमचानेजाननने
गामोमवो डीठ
जिहरेर कोहुन सा
ज्ञान सेतम नुमान॥
उनमान अलकार
उनमानेना नावसमव
नाकीवानी छुछे
पर कालु कावासेप
प्रवेदा लकार
सवरसुमन विनकठीरह
अधरपान चतुरनाइ
नहीं अंग आसमा
अर्थापति
जहाअधि खि देवदत
नाननहो चानहोय

उमनमोहन अरकाम
मने कहे ताननकन
मआहित
नहजाने बकत नय
मेहे केन जीवनरही
अनुप लुक्षी
नेहमा मार्व अनुप
नेनके वस सखी मेरे
नेहरे कर इंजलिको
अथर्षभव
सभाव ज सभवपु
गोडु न तो घरमंडप
रस वंना अलकार
रसकतन विलसन्ती
रूपमकाठ गनहयो काम
नीय उरदे भीमन
मसेत अलकार
मस्तरस रमरटन
घरतवमु मसेपीनार
नमो घरन नाद घरन
उरज व्याती
उरनसघात निपनवेत
नुवसुधार सुन्नाकज
रसाआसल सथा
रसाथाम हकीकरे
सेत्रकेरमपन आ
समाहित

भाव सेत गरवत
दीघा वेपथ दहुरेल
भावोदय
जहाभाव भावदे
फिरफिर हारसिर
भौमिदेन॥
जहां भाव भावांस
जीय घिर न
दावतमा करतन
वालवीरे भोटसक
अरथोको
कवारीत डाडेव
गोरीय लाठउज
गोरी लन
गोटसया घादव
सपालूघा
गो सोको घर हेय
गोरीमे उजरा
हठ गाठे करिकर
अप स्तन घुकी
गायकानबोल
करे धारस लके
वध धर मररहेदा
आगाह रलव
बगा मनसर्वडे ग
बोधागोर वरगा
वेदरमील
कमसमासनर ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोहत चंदन गह गदंद
लक्ष्योगीख जाकी दोर
पचालीरीत॥
गोरीवैंदरभी उपजंत
महातरुप कंचनकली
गहउस्याम पकच्चुपत्र
लाटीरीत ल॰
कोमलपद लाटीरीत
अधर सुधा॰ लाललोय॰
मधरमधरी अधरसुधा
अनुप्रास ल॰
लखविन लग कोमल का
छेकाअनुप्रास
जहाँ स्वर है जै कास
आयस रंग कुंभ भवन
वृत्यअनुप्रास॥
बतरोकव वान नहे
लसो हे च॰ मदन सदन
अत्यांअनुप्रास
कहै अनत वारजन
श्रुतिअनुप्रास
अनुप्रासस्म मत मत

लाटानुप्रास॰
अधितरहत सोलदान
छेकव्रतीर्थ सेवतही
सहजवदो सहजव
पदरलानुप्रास
कंचनवर सुधानिवा
जमकलंकार
जमकपद जलधजली
मजनकहि दुरमजन
पुनरुक्तपदप्रकास
भाषेजहाँ पुन[उपस्तिकापन]
नारतकाउ॰ महासेत्व
प्रहेलाका॰
नीलचरन चारअचा
चारचरन देखो
तस्मिलम॰ लसमुख
नरनहूर॰ दोहीदेगु
लगत लग॰ वारीवारी
तीनतरहको संकार
उकारएकट उकपदेस

एकलेकारको उपकारस्वदेह
भालनतुव डारलाल
पतवदू आतवाल
संदेहलासकर
पीयकेनेन सखीरीत
कहहमार नेनकोर
पर्यंसनकलंडार
उरली नाम॰ होहलमी
आयअलंकारलक्षन
अलंकार भूषनन
मध्यातरल॰
सवदप्ररथ अलंकार
हरिकविश्र सयान
सातग्रामी भूतराल
वरगनागेग तहाँ प्रिय
ताकेलत हरि भाषभूष
मोहनलीलाकवित
फाकाकाट एककदुन
ओतेतेही कसा तीनलोक
कानउधार दयाउरमा
नयसेहेवद दाने याके सवे॰
दरसतवो बावनबार
मोहनलाल होतोमहा
हातोमहा॰ तवहीम
वहरावि॰ कलीपकास
वरध्यान परीत एके

सेवतम लाककीपे
इति श्री हरिकृतभाषाभू॰ लिखीसवत
संमावत सा १९ २९ कंमु॥
लिखतं देवीचंद पचनमथि॥
पूचीसमाभाषाभूषन

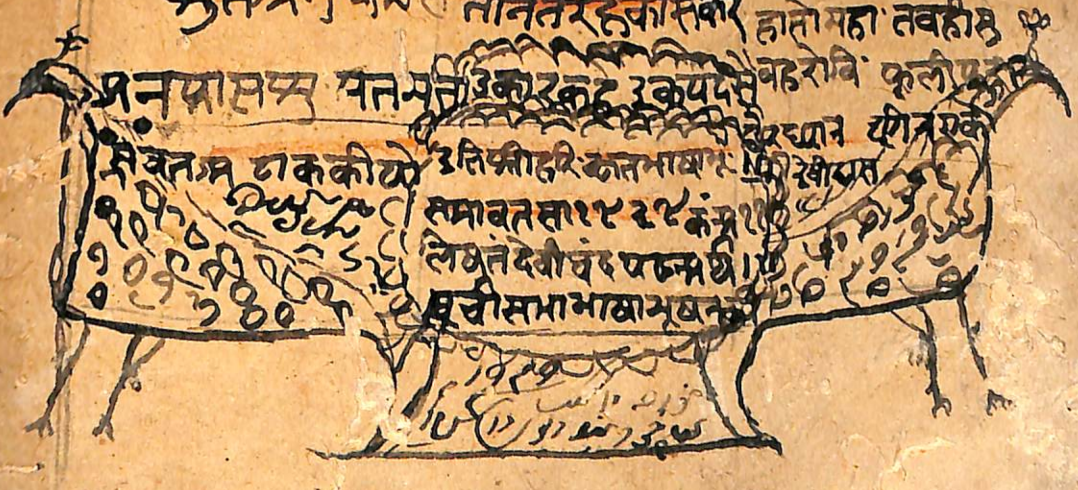

5

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

19

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

7

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐश्रीगणेशायनमः॥श्रीमद्रामचंद्रायनमः॥श्रीहनुमतेनमः॥श्रीगौरीशंकराभ्यांनमः॥१॥

ॐ॥महिम्नःपारंतेपरमविदुषोयद्यसदृशीस्तुतिर्ब्रह्मादीनामपितदवसन्नास्त्वयिगिरः॥

४

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमद्राचंद्रायनमः ॥ राम ॥
अथ नायकानिरूपयति ॥ शृंगाररसालंबनविभा
वत्वं ॥ नायकात्वं ॥ आलंबनत्वं च ॥ विषयतासंब
न्धावच्छिन्नरतिनिष्ठकार्यतानिरूपित तादात्म्य
संबन्धावच्छिन्नकारणताशालित्वं ॥ सा तद्विशि
ष्टस्त्रीत्वं पुंस्त्वं च क्रमान्नायकानायकस्य लक्षणं ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९

स्वकीयां लक्षयति । स्वामिन्येवानुरक्ता स्वकीया ।। १ ।।
स्वामीत्व विवाहजन्यसंस्कारविशेषवान् ।। एवका
रस्यान्ययोगव्यवच्छेदोर्थः ।। तथा च ।। पतिभिन्नवि
षयकानुरागाभाववत्वे सति पतिविषयकानुराग
वत्वं स्वकीयात्वमिति वाक्यार्थः । ननु स्वकीयाया
मेति लक्षणमसम्भवि ।। पतिभिन्नमात्रादौ तस्या
नुरागदर्शनात् ।। न चानुरागपदं रतिपरं तस्य
मात्राद्यनुरागस्य रतिरूपत्वाभावान्नासंभव इति
वाच्यम् ।। मात्राद्यनुरागस्यापि रतिरूपत्वेव । देवादि
विषयकरतिभाव इत्यस्य सर्वसम्मतत्वात् ।। न चासंभवे तद्वि
षयपतिविषयकानुरागवत्वमेव लक्षणमस्त्वाच्यम् ।। परकी
यायामतिव्याप्तेः । तस्याः पति पतिभिन्नोभयविषयका
नुरागवत्वात् ।। अत्रोच्यते ।। विषयताविशेषरूपसंबंधा
वच्छिन्नाधारतेरेवात्रानुरागपदार्थत्वात् ।। विशेषत्वं
च शृंगाररसप्रयोजकत्वेन स्त्रीनिष्ठत्वे सति पुरुषवि
षयकत्वं पुरुषनिष्ठत्वे सति स्त्रीविषयकत्वं ।। तथा च
पतिभिन्नविषयकविषयताविशेषरूपरत्यभाववत्
त्वे सति विषयकविषयताविशेषरतिवत्वं स्वकीया
त्वमिति लक्षणम् ।। न च ।। विषयताविशेषस्वी
कारे मानाभाव इति वाच्यम् ।। रसाभासप्रयोजक
त्वेन विषयताविशेषस्यावश्यांगीकारात् ।। अन्य
था ।। रसाभासस्याकस्मिकत्वापत्तिः ।। तथा हि ।।
देवतादिविषयभक्तिरूपस्य हृदरते रतिरूपत्वं ।।
देवतादिविषयकविषयताविशेषरूपत्वे चावच्छि
न्नरतेरासत्वं ।। तथा नैपत्यादिनामग्रा वा[illegible]
कारते

...ल्भो मत्ये क धीराधीरा भेदः
...प्रौढा द्वादश मुग्धा त्वेकैवेति
...द्विविधा ॥ रएकावेश्येति षोडश ॥ १६ ॥
...कएकमति अष्टाविधा ॥ ॥ तथाच ॥ ...
...या द्विविधा च परांगना ॥ एकावेश्या पुनस्त्वाष्टावस्थाभे
...नस्तास्त्रिधा सर्वा उत्तमाधममध्यमा ॥ १ ॥ रामराम
हरे राम गुन सकल जन

षोडशेति ॥ मुग्धा तावदेकैव मध्या प्रगल्भे मत्येके धीराधीरा धीरा
धीरा चेति ॥ षट् भेदाः ते पि ज्येष्ठा कनिष्ठेति द्विविधा इति ॥ द्वादश भेदा इति
सकल नयात्रयोदश स्वीया भेदाः परकीया परोढा कन्यका चेति द्विविधा
सामान्या त्वेकविधेति मिलित्वा षोडश भेदाः ॥ ता अवस्थाभेदेन प्रकारेण
अष्टविधा इति ॥ अष्टाविंशत्यधिके शते तासामुत्तममध्यमाधम
भेदेन प्रत्येकं त्रैविध्ये शतत्रयं च तदशीतिश्च भेदाः ॥ तदुक्तं रसार्णवे
त्रयोदशविधा स्वीया द्विविधा च परांगना ॥ एकावेश्या पुनस्त्वाष्टा
अवस्थाभेदतो मता ॥ पुनस्तास्त्रिधा ॥ सर्वा उत्तमाधममध्यमाः ॥ २ ॥
शतत्रयं ताशामशीतिश्च कुतरेति जाति काल वयोवस्था भावके
दर्शनायवेः इतराप्य संख्याता नोक्ता विस्तरभीतितः ॥

प्रोषितेति ॥ भगवान् भरतः ॥ तत्र वासकसज्जा च विरहोत्कंठिता
पि वा खंडिता विप्रलब्धा वा तथा प्रोषितभर्तृका ॥ तथाभिसा [illegible]
रिका चैव इत्यष्टौ नायकाः स्मृताः ॥ अत्र च निर्देशक्रमेण विवक्षि
विद्या नाय ॥ स्वाधीनपतिका चैव तथा वासकसज्जिका ॥ वि
रहोत्कंठिता चैव विप्रलब्धा च खंडिता कलहांतरिता चैव
तथा प्रोषितभर्तृका ॥ तथाभिसारिका चेति क्रमात्लक्षण
मुच्यते ॥ सा हि स्यादर्पयो ॥ स्वाधीनभर्तृका तद्वत् खंडिताथ
भिसारिका कलहांतरिता विप्रलब्धा प्रोषितभर्तृका ॥ अ
न्या वासकसज्जा स्याद्विरहोत्कंठिता तथा ॥ ३ ॥ रामजी ॥

अवस्थेति॥ दत्तालिकं न व्याप्यवृत्तित्वं यस्य सत्तागोपाधिनीय
का विभाजकं स्वर्यः रावकास्याव त्स्य माह॥ जातिभेदेनेति॥
तद्व्यक्तिनिष्ठात्यंताभावप्रतियोगित्वरहितस्योपाधेनते
त्पात्वं॥ अन्यथा॥ दिस्वत्वादवोत्तरीपाधेर्विद्यापरत्वादे
रपितथात्वं तत्तगाददिव्यत्वव्याप्यस्य द्वाद्शगत्वादेरपितस्य
संगाक्षेत्स्याह॥ भेदानंस्येति न चेष्टापत्तिः॥ त्वयाप्यनुदाहृ
तत्वात्॥ न च विभागस्यैकत्वाद्द्रव्यत्वादिसामान्यधर्मे
णैव विभागे न तत्तद्व्याप्येन विद्यापरत्वादिनेति काच्यं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीमद्रामचंद्रायनमः ॥ श्रीहनुमते नमः ॥ सरस्वत्यैनमः ॥
तत्ररसेषु शृंगाररसस्याभ्यर्हितत्वे तदालंबनविभावत्वेन ना
यिकातावन्निरूप्यते ॥ शृंगाररसालंबनत्वं नायिकात्वम् ॥ शृं
गारालंबनत्वं च ॥ विषयतासंबंधावच्छिन्नरतिनिष्ठकार्यतानि
रूपिततादात्म्यसंबंधावच्छिन्नकारणताशालित्वम् ॥ रसादि
शिष्टत्वे स्त्रीपुंस्त्वे चक्रमानायकानायकस्य लक्षणम् ॥ १
साचत्रिविधा ॥ स्वकीयापरकीयासामान्याचेति ॥ तत्रस्वामिन्येवा
नुरक्ता स्वकीया ॥ गतागतकलहलंघनयत्न...त्यागावधि ॥
स्वकीयात्रिविधा ॥ मुग्धा मध्या प्रगल्भा च ॥ तत्रांकुरितयौव
नामुग्धा ॥ साच ज्ञातयौवना ऽज्ञातयौवना चेति ॥ सैव क्रमशो
लज्जाभयपराधीनरतिर्नवोढा ॥ सैव क्रमशो सप्रश्रया वि
स्रब्धनवोढा ॥ मुग्धा ॥ आज्ञप्तैकिल· अज्ञातयौवना· नीराती॰
ज्ञातयौवना ॥ स्वयेभ्यः शाम्य॰ ॥ नवोढा ॥ हसेद्यतापि· विस्रब्धन
वोढा ॥ दरमुकिलत॰ ॥ समानलज्जामदना मध्या ॥ एषैवातिप्रश्र
यादतिविस्रब्धनवोढा ॥ पतिमात्रकेलिकलापकोविदा प्रगल्भा॰
मध्याप्रगल्भमानावस्थायां प्रत्येकं त्रिविधे ॥ धीरा धीरा धीराधी
रा चेति ॥ तत्र व्यंग्यकोपप्रकाशा धीरा ॥ अव्यंग्यकोपप्रकाशा ऽधीरा ॥ व्यंग्या
व्यंग्यकोपप्रकाशा धीरा ऽधीरा च ॥ अत्रेयां लक्षविशेषः ॥
मध्याधीरायाः कोपस्य स्वंगी व्यंजका ॥ अधीरायाः परुषवाक्
धीराधीरायां हसितरुदिते कोपप्रकाशिके ॥ प्रौढायाः धीरा
याः रत्यौदास्यम् ॥ अधीरायाः तर्जनताडनादि ॥ धीराऽधीरा
याः रत्यौदास्यतर्जनताडनादि च ॥ कोपप्रकाशिकम् ॥ धीरादि
भेदास्वयी या या रावनन्परकीयायाः स्वा ॥ इति ॥ एतेवधी
७८ रादिभेदाद्विधा ॥ ज्येष्ठा कनिष्ठा च ॥ धीराज्येष्ठा कनिष्ठा ॥ अ
धीराज्येष्ठा कनिष्ठा धीराधीरा ज्येष्ठा कनिष्ठा ॥ परिणीतत्वे
सति भर्त्राधिकस्नेहा ज्येष्ठा ॥ परिणीतत्वे सति भर्तुन्यून
स्नेहा कनिष्ठा ॥ अप्रकटपरपुरुषानुरागी परकीया ॥
साच द्विविधा ॥ परोढा कन्यका चेति ॥ कन्यकायाः पित्रा
द्यधीनत्वात् परकीयत्वम् ॥ गुप्ता विदग्धा लक्षिता कु
लटा अनुशयाना मुदिता प्रभृतीनां परकीयाभेदानामन्त
र्भावः ॥ गुप्तात्रिविधा ॥ वृत्तसुरतगोपना ॥ वर्तिष्य
माणसुरतगोपना ॥ वर्त्तिवर्तिष्यमानसुरतगोपगोपना ॥
विदग्धा द्विविधा ॥ वाग्विदग्धा क्रियाविदग्धा च ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

।।

लक्षिता॰ कुलटा।। अनुशयाना॰।।वर्तमानस्थान
विघटनेनभाविस्थानाभावसंकयास्वानधिष्टितसंकेतस्थानेभगति
भर्तृगमनानुमानेनचानुशयानात्रिविधा।। मुदिता॰
कन्यका।। वित्तमात्रोपाधिकसकलपुरुषाभिलाषासामा
न्यवनिता।। रत्नाअन्यसम्भोगदुःखितावक्रोक्तिगर्विताम
न्यचत्यस्त्रेति।।तिस्रोभवंति।।वक्रोक्तिगर्विताद्विविधा।।प्रेम
गर्वितासौंदर्यगर्विताच।। मानवति॰ ।।प्रियापराधसूचकाचे
ष्टामानःसचलघुर्मध्यमोगुरुश्च।।स्वल्पापनेयालघुः।।कष्ट
तरापनेयोगुरुः।।असाध्यस्तुरसाभासः।।अपरस्त्रीदर्शना
दिजन्मालघुः।।गोत्रस्खलनादिजन्मामध्यमः।।अपरस्त्री
सगमाजन्मागुरुः।।अन्यथासिद्धकुतर्कलादिनाऽपनेयोलघुः
अन्यथाकादशपथाद्यपनेयोमध्यमः।।चरणपातभूषणाद्य
पनेयोगुरुः।।प्रोषितभर्तृकाखंडिताकलहांतरिताविप्रलब्धा
उत्कावासकसज्जास्वाधीनपतिकाअभिसारिकाचेति।।गणना
याअष्टविंशत्याधिकशतंभवंति।।तासामपिउत्तमामध्यमाअ
धमागणनयाचतुरधिकाशीतियुतंशतत्रयंभेदाभवन्ति।।
एतासामपिदिव्याऽदिव्यादिव्यादिव्यागणनयाद्विपंचाशदधि
कशतयुतसहस्रभेदाभवन्ति।।दिव्याइन्द्राण्यादयः।।अदि
व्यामालत्यादयः।।दिव्यादिव्यासीतादयः।।देशांतरगतेप्रे
यसीसंतापव्याकुलाप्रोषितभर्तृका।।अन्योपभोगचिह्नितः
प्रातरागच्छतिपतिर्यस्याःसाखण्डिता।।पतिमवमन्यपश्चात्त
रितप्ताः।।कलहांतरिता।।अस्याचेष्टाभ्रांतिसंतापहेमोहनि
श्वासरुदनप्रलापादयः।।संकेतनिकेतनेप्रियमनवलोक्य
समाकुलहृदयाविप्रलब्धाः।अस्याचेष्टानिर्वेदनिःश्वासस
खीजनोपालंभचिंताश्रुपातादयः।।संकेतस्थलंप्रति
भर्तुरनागमनकारणंयाचिंतयतिसोत्का।।अस्याचेष्टा
अरतिसंतापजृंभागात्रकंपवेपथुरुदितमात्मावस्थाकथनादयः
अद्यमेप्रियवासकइतिनिश्चित्ययासुरतसामग्रीसज्जीक
रोतिसावासकसज्जा।वासकोवारः।अस्याचेष्टामनोरथसुरती
परिहाससहूतीप्रश्नसामग्रीसंपादनमार्गविलोकनादयः
सदाकृताज्ञाकरप्रियतमास्वाधीनपतिका।।अस्याश्चेष्टाव
नविहारादिमदनमहोत्सवमदाहंकारमनोरथाद्याधिक्यादयः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्वयमभिसरति प्रियमभिसारयति वा साभिसारिका ॥ अस्याश्चेष्टा
समयानुरूपवेषभूषणसंकेतस्थानैपुण्यकपटसाहसादयः ॥
ज्योत्स्नाभिसारिका ॥ तमोऽभिसारिका ॥ दिवाभिसारिका ॥ ॥
मुग्धा लज्जाप्राधान्येन मध्या लज्जामदनसाम्येन ॥ प्रगल्भायाः
प्रकाशप्राधान्येन ॥ धीराया धैर्यप्राधान्येन ॥ अधीरायाः
ऽधैर्यप्राधान्येन ॥ धीराधीराया धैर्याधैर्यप्राधान्येन ॥
ज्येष्ठायाः स्नेहाधिक्यप्राधान्येन ॥ कनिष्ठायाः स्नेहन्यूनत्वप्रा
धान्येन ॥ परोढायाः संगुप्तिप्राधान्येन ॥ [illegible]रव कान्यका
सामान्यवनितायाः धनप्राप्तिप्राधान्येन ॥ अष्टविधा नायिकाः
प्रोषितपतिका ॥ अग्रमकारणाद्देशान्तरं निश्चितगमने प्रेयसि प्रो
ष्यत्पतिका ॥ लक्षणं तु यस्याः पतिर्गमनकारणाद्देशान्तरं या
स्यति एव सा प्रोषितपतिका ॥ अस्याश्चेष्टा काकुवचनकात
रप्रेक्षणागमनविघ्नोपदर्शननिर्वेदसंतापसंमोहनिःश्वा
सबाष्पादयः ॥ अहितकारिण्यपि प्रिये हितकारिणी उत्तमा ॥
अस्याः उत्तमैव सकला चेष्टा ॥ हिताहितकारिण्यपि प्रियतमे हि
ताहितचेष्टावती मध्यमा ॥ हितकारिण्यपि प्रियेऽहितकारि
ण्यपि अधमा ॥ अधमैव चेष्टा ॥ विश्वासविश्रामकारिणी
पारस्परचारिणी सखी ॥ तस्या भेदा नोपालंभशिक्षापरिहास
प्रभृतीनि कर्माणि ॥ दौत्यव्यापारगता दूती ॥ इति नायिकानि
नायकं विभजते ॥ स च त्रिविधः ॥ पतिरुपपतिर्वैशिकश्चेति ॥ विधि
वत्पाणिग्राहकः पतिः ॥ चत्वारो ॥ अनुकूलदक्षिणधृष्टशठभे
दात्पतिश्चतुर्धा ॥ नायकभेदस्तु भावहेतुः न त्वायुषा यथानुकू
लस्तु कदाचित् दक्षिणः शठो धृष्टो न भवति ॥ सदानुकूल एव ॥
सर्वकालिकपराङ्गनापराङ्मुखत्वे सति सर्वकालमनुरक्तोऽनुकूलः
सकलनायिकाविषयकसमसहजानुरागो दाक्षिणः ॥ उत्तम० ॥
भूयो निःशंकः कृतदोषोऽपि भूयो निवारितोऽपि भूयो प्रश्रयपरायणो ॥ धृष्टः
कामिनीविषयकपटपटुः शठः ॥ मोलोदाम[illegible]धायमाल
आचाररहितदेहः पतिरुपपतिः ॥ आचारसम्भ्रमोपदर्शित
भोगसम्पदानिदेहतुर्नीशाहेतरितरिस्पर्धः ॥ बाहुल्यवेश्योपभो
गरसिको वैशिकः ॥ वैशिकस्तूत्तममध्यमाधमभेदात्त्रिधा ॥
दयितायाः भयः अकोपेऽप्युपचारवदायशाउत्तमः ॥ प्रियायाः
कोपेन अकोपमनुरागं वा प्रकटयति चेष्टया मनोभावं गूढा
ति स मध्यमः ॥ भयक्रियालज्जारहितः कामक्रीडायां अकृता
कृत्याकृत्यविचारोऽधमः ॥ आनीचतरश्च शठशाठ्यात्तर्भवति॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाक्चेष्टासमागमश्चेतरः ॥ वचनयोगसमागमा चेष्टायोगसमागमः
प्रसंगादन्यदप्याचेष्टं ॥ प्रोषितः पतिरुपपतिर्वाऽऽशीकश्च भवति ॥
प्रसंगादन्यदप्याचेष्टं ॥ अनभिज्ञो नायको नायकाभास एव ॥ संकेत
चेष्टितमजानन्नाकदाभासतेस नायकाभासः ॥ न च नायकाः
वनायकस्यैते भेदाः संचितिर्वाच्यम् ॥ अनुकूलत्वे धृष्टत्वे शठ
त्वे इति च चत्वार एव नायकस्वभावा इति ॥ उक्तिव्यतिरेकेऽपि किंचित्
दित्यत्रोपपत्तिं वक्ति ॥ अन्यच्चाथ स्यात्भेदे न यदि नायकस्य भेदः
स्यात् तर्हि तदोक्तविप्रलब्धखण्डितादयः ॥ स्वीवर्तत्वा इदमप्यनुचितं
तथा च संकेतस्थवस्थायां स्त्रीगमनागमने तेन भवितव्यात् ॥ अस्य
समागमसंकेताद्धृतत्वे चान्यसंभोगचिह्नित्वे ॥ वा नायकानां न तु
नायिकानां ॥ तो प्रतितद्भावनेऽस्याभासापन्नेत स्यादवस्थाभे
देनैव नायिकानां भेदः ॥ स्वभावभेदेनैव नायकानां भेदः ॥ १
तेषां नर्मसचिवः पीठमर्दविटचेटकविदूषकभेदाच्चतुर्द्धा ॥
कुपितस्त्रीप्रसादि पीठमर्दः ॥ कामतंत्रकलाकोविदो विटः ॥
सेवासंधानचतुरश्चेटकः ॥ अंगादिवैकृत्येन हास्यकारी विदूषकः
साधनं निरूपणमेतरासाध्यनिरूपणं स्यायुक्त्वात् ॥ स्वेदः
स्तंभोऽथ रोमांचः स्वरभंगोऽथ वेपथुः वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ
सात्त्विकाः स्मृताः ॥ १ ॥ भेदो वाची ॥ रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधो
त्साहौ भयं तथा जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायीभावाः प्रकीर्तिताः ॥
स च द्विविधः संयोगो विप्रलंभश्च ॥ तत्राभिलाषं लक्षयति ॥
संगमेच्छाभिलाषः ॥ दर्शनसंभोगयोः प्रकारश्चिंता सा चिंता ॥
प्रियाश्रितचेष्टोद्बोधितसंस्कारजन्यज्ञानं स्मृतिः ॥ विरह
कालीनकांतविषयकप्रशस्तप्रतिपादनं गुणकीर्तनं ॥ स्पर्शः
कामक्लेशजनितसकलविषयकहेयताज्ञानमुद्वेगः ॥ आरल
प्रियाश्रितकालकव्यवहारः प्रलापः ॥ औत्सुक्यपरितापादिकारि
तमनोविपर्यासजन्यप्रियाश्रितवृथाव्यापारः उन्मादः ॥
व्यापारः कायिको वाचिकश्च ॥ कायिको दैहिकः ॥ मदनवेदना
समुत्पन्नतापजनितकार्श्यादिदोषो व्याधिः ॥ विरहदुःखविकार
मात्रवेद्या जीवनावस्था जडता ॥ स्वप्नचित्रसाक्षात्भेदेन दर्शनं त्रि
धा ॥ स्वप्नदर्शनं ॥ चित्रदर्शनं ॥ साक्षाद्दर्शनं ॥ इति लक्षणम्

६५

६५ पत्रे प्रेमसिंह देति
बेहोराश्रीकाप्रिया
देवीरेहोरापिरो
होरालिबराले
गाहा·१९८९५म·१५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः॥ अथयमकव्यालंकारलिख्यते॥ उपमायत्रसादृश्यलक्ष्मीरुल्लसतिद्वयोः॥हंसी
वकृष्णतेकीर्तिःस्वर्गंगामवगाहते॥१॥वर्ण्योपमानधर्माणामुपमावाचकस्य च॥एकद्वित्र्यनुपा
दानैर्भिन्नालुप्तोपमाष्टधा॥२॥तडिद्गौरींदुतुल्यास्याकर्पूरंतीदृशोर्मम॥ कांतास्मरवधूयंती
तन्वीदृष्टारहोमया॥३॥यत्तयामेलनंतत्रलाभोमेयश्चतद्रतेः॥तदेतत्काकतालीयमवितर्कि
तसंभवम्॥४॥ अनन्वय॥उपमानोपमेयत्वंयदेकस्यैववस्तुनः॥इंदुरिन्दुरिवश्रीमानित्या
दौतदनन्वयः॥५॥पर्यायोपमा॥पर्यायेणद्वयोस्तच्चेदुपमेयोपमानता॥धर्मोऽर्थइवपूर्णश्रीरर्थोधर्मइ
वत्वयि॥६॥ प्रतीप॥प्रतीपमुपमानस्योपमेयत्वप्रकल्पनं॥त्वल्लोचनसमंपद्मंत्वद्वक्त्रसदृशो
विधुः॥७॥ द्वितीय॥अन्योपमेयलाभेनवर्ण्यस्यानादरश्चतत्॥अलंगर्वेणतेवक्त्रकांत्या
चंद्रोपितादृशः॥वर्ण्योपमेयलाभेनतथान्यस्याप्यनादरः॥कःक्रौर्यदर्पस्तेमृत्योत्व
तुल्याःसंतिहिस्त्रियः॥८॥वर्ण्येनान्यस्योपमायाअनिष्पत्तिवचश्चतत्॥मुधापवादो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुग्धासित्वन्मुखाभं किलाम्बुजम्॥९॥प्रतीपमुपमानस्य कैमर्थ्यमपि मन्यते॥ दृष्टं चेद्वदनं तस्याः किं पद्मेन किमि
न्दुना॥१० ॥विषय्यभेदताद्रूप्यरंजनं विषयस्य यत्॥रूपकं तत्त्रिधाधिक्यन्यूनत्वानुभयोक्तिभिः॥११
अयं हि धूर्जटिः साक्षाद्येन दग्धाः पुरः क्षणात्॥अयमास्ते विना शंभुस्तार्तीयकलोचनम्॥१२॥शंभु
र्विश्वमवत्यद्य स्वीकृत्य समदृष्टतां॥अस्या मुखेंदुना लब्धे नेत्रानंदे किमिंदुना॥१३॥साध्वीय
मपरा लक्ष्मीरसुधासागरोदिता॥अयं कलंकिनश्चंद्रान्मुखचन्द्रोतिरिच्यते॥१४॥एकगुण
हानौ अन्यगुणास्तान्यदार्ढ्ये विशेषोक्तिरिति॥ किमलभि[illegible]ल्पितैर्जडमनस्कमेमपिनि
मज्जतु भीमस्तामनः॥ममस्त्विकलमाहत्तरार्थिकानलमुखेंदुपरां विबुधस्मरः॥१५॥प
रिणामः क्रियार्थश्चेद्विषयी विषयात्मना॥प्रसन्नेन दृगब्जेन वीक्षते मदिरेक्षणा॥१६॥बहुभि
र्बहुधोल्लेखादेकस्योल्लेख इष्यते॥स्त्रीभिः कामोर्थिभिः स्वर्द्रुः कालः शत्रुभिरैक्षि सः॥१७
एकेन बहुधोल्लेखेप्यसौ विषयभेदतः॥गुरुर्वचस्यर्जुनोयं कीर्तौ भीष्मः शरासने॥१८

२ 2

स्यात्स्मृतिभ्रांतिसंदेहैस्तदंकालंकृतित्रयं॥ पंकजंपश्यतःकांतामुखंमेगाहतेमनः॥ अयंप्रमत्त

मधुपस्त्वन्मुखंवेत्तिपंकजं॥ पंकजंवासुधांशुर्वेत्यस्माकंतुननिर्णयः॥२०॥ शुद्धापह्नुति

रन्यस्यारोपार्थोधर्मनिह्नवः॥ नायंसुधांशुःकिंतर्हिव्योमगंगासरोरुहं॥२१॥ सएवयुक्तिपूर

वश्चेदुच्यतेहेत्वपह्नुतिः॥ नेंदुस्तीव्रोननिश्यर्कःसिंधोरौर्वोयमुत्थितः॥२२॥ अन्यत्रतस्या

रोपार्थःपर्यस्तापह्नुतिस्तुसः॥ नायंसुधांशुःकिंतर्हिसुधांशुःप्रेयसीमुखं॥२३॥ भ्रांता

पह्नुतिरन्यस्यशंकायांभ्रांतिवारणे॥ तापंकरोतिसोत्कंपंज्वरःकिंनसखिस्मरः॥२४

छेकापह्नुतिरन्यस्यशंकातस्तथ्यनिह्नवे॥ प्रजल्पन्मत्पदेलग्नःकांतःकिंनहिनूपुरः॥२५

कैतवापह्नुतिर्व्यक्तौव्याजाद्यैर्निह्नुतेःपदैः॥ निर्यातिस्मरनाराचाःकांतादृक्पातकैतवात्॥२६

संभावनास्यादुत्प्रेक्षावस्तुहेतुफलात्मना॥ उक्तानुक्तास्पदाद्यात्रसिद्धासिद्धास्पदेपरे॥२७॥

धूमस्तोमंतमःशंकेकोकीविरहशुष्मणां॥ लिंपतीवतमोंगानिवर्षतीवांजनंनभः॥ २८॥ 2

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२क्ष्णौ तवाङ्गी मद्गुल्लो मुविवित्ते पणाद्भुवं ॥ त्वन्मुखाभेन्दुयान्नूनं पद्मैर्वैरायते शशी ॥ २८ ॥ मध्यः
किं कुचयोर्धृत्यै बद्धः कनकदाममि ॥ भ्रान्योक्तं त्वत्पदेनैक्यं प्राप्तुं तोये तपस्यति ॥ इत्युत्प्रेक्षा
व्यंजकत्वेन परिगणितानां शब्दानामप्रयोगे गम्योत्प्रेक्षा ॥ यथा ॥ त्वत्कीर्तिर्भ्रमणश्रा
न्ता विवेश स्वर्गनिम्नगां ॥ ३१ रूपकातिशयोक्तिः स्यान्निगीर्याध्यवसानतः ॥ पश्य नीलो
त्पलद्वंद्वान्निःसरंति सिताः शराः ॥ ३२ यद्यपह्नुतिगर्भत्वं सैव सापह्नवा मता ॥ त्वत्सू
क्तिषु सुधा राजन् भ्रान्ताः पश्यंति तां विधौ ॥ ३३ भेदकातिशयोक्तिस्तु तस्यैवान्यत्ववर्णनं
अन्यदेवास्य गांभीर्यमन्यद्धैर्यं महीपते ॥ ३४ संबंधातिशयोक्तिः स्यादयोगे योगक
ल्पनं ॥ सौधाग्राणि पुरस्यास्य स्पृशंति विधुमंडलं ॥ ३५ योगेप्ययोगसंबंधातिश
योक्तिरितीर्यते ॥ त्वयि दातरि राजेंद्र स्वर्द्रुमान्नाद्रियामहे ॥ ३६ अक्रमातिशयोक्तिः
स्यात्सहत्वे हेतुकार्ययोः ॥ आलिंगति समं देव ज्यां शराश्च परांश्च ते ॥ ३७ चपलातिश

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

3

क्तिस्तुकार्यहेतुप्रशक्तिजे॥ यासामीत्युदितेतन्व्यावलयंभवदूर्मिका॥३८॥ अत्यंतातिशयोक्ति
स्तुपौर्वापर्यव्यतिक्रमे॥ अग्रेमानोगतः पश्चादनुनीताप्रियेणसा॥३९॥ वर्ण्यानामितरेषांवाधर्मैक्यं
तुल्ययोगिता॥ संकुचंतिसरोजाणिस्वैरिणीवदनानिच॥४०॥ हिताहितेवृत्तितौल्यमपरातुल्ययोगिता॥ प्र
दीयतेपराभूतिर्मित्रशात्रवयोस्त्वया॥४१॥ गुणोत्कृष्टैःसमीकृत्यवचोन्यातुल्ययोगिता॥ लोकपालोयमःपा
शीश्रीदःशक्रोभवानपि॥४२॥ वदंतिवर्ण्यावर्ण्यानांधर्मैक्यंदीपकंबुधाः॥ मदेनभातिकलभःप्रतापेनमहीप
तिः॥४३॥ त्रिविधंदीपकावृत्तौभवेदावृत्तदीपकं॥ वर्षत्यंबुदमालेयंवर्षत्येषाचशर्वरी॥४४॥ उन्मीलंतिकदं
बानिस्फुटंतिकुटजोद्गमाः माद्यंतिचातकास्तृप्तामाद्यंतिचशिखावलाः॥४५॥ वाक्ययोरेकसामान्येप्रति
वस्तूपमामता॥ तापेनभ्राजतेसूरःशूरश्चापेनराजते॥४६॥ चेद्बिंबप्रतिबिंबत्वंदृष्टांतस्तदलंकृतिः॥ त्वमेवकीर्ति
मान्राजन्विधुरेवहिकांतिमान्॥४७॥ वाक्यार्थयोःसदृशयोरैक्यारोपोनिदर्शना॥ यद्दातुःसौम्यतासेयंपूर्णेंदोरक
लंकिता॥४८॥ पदार्थेवृत्तिमप्येकेवदंत्यन्यांनिदर्शनां॥ त्वन्नेत्रयुगलंधत्तेलीलांनीलांबुजन्मनोः॥४९॥ अपरां २

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वोधनं प्राहुः क्रियायास्तत्समर्थयोः ॥ नश्यद्राजविरोधीति क्षीणं चंद्रोदयेन मः ॥५०॥ व्यतिरेको विशेष
श्चेदुपमानोपमेययोः ॥ शैला इवोन्नताः संतः किंतु प्रकृतिकोमलाः ॥५१॥ सहोक्तिः सहभावश्चे
द्भासते जनरंजनः ॥ दिगंतमगमत्तस्य कीर्तिः प्रत्यर्थिभिः सह ॥५२॥ विनोक्तिश्चेद्विना किंचि
त्प्रस्तुतं हीनमुच्यते ॥ विद्या हृद्यापि सावद्या विना विनयसंपदं ॥५३॥ तच्चेत्किंचिद्वि
नारम्यं विनोक्तिः सापि कथ्यते ॥ विनाखलैर्विभात्येषा राजेंद्र भवतः सभा ॥५४॥ समासोक्तिः
परिस्फूर्तिः प्रस्तुते प्रस्तुतस्य चेत् ॥ अयमैंद्रीमुखं पश्य रक्तश्चुंबति चंद्रमाः ॥५५॥ अलंका
रः परिकरः साभिप्राये विशेषणे ॥ सुधांशुकलितोत्तंसस्तापं हरतु वः शिवः ॥५६॥ साभि
प्राये विशेष्ये तु भवेत्परिकरांकुरः ॥ चतुर्णां पुरुषार्थानां दाता देवश्चतुर्भुजः ॥५७॥ ना
नार्थसंश्रयः श्लेषो वर्ण्यावर्ण्योभयाश्रिताः ॥ सर्वदो माधवः पायात्स यो गंगां मदीधरत ॥५८
अब्जेन त्वन्मुखं तुल्यं हिरण्याहितशक्तिना ॥ उच्चैरद्रूरकीलालः शुशुभे वाहिनीपतिः ॥५९॥
अप्रस्तुतप्रशंसा स्यात्सा यत्र प्रस्तुताश्रया ॥ एकः कृती शकुंतेषु योन्यं शक्रान्न याचते ॥६०
प्रस्तुतेन प्रस्तुतस्य द्योतने प्रस्तुतांकुरः ॥ किं भृंग सत्यां मालत्यां केतक्या कंटकेद्धया ॥६१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५ पर्यायोक्तंतुगम्यस्यवचोभंग्यंतराश्रयं॥ नमस्तस्मैकृतायेनमुधाराहुवधूकुचौ
[illegible]॥ पर्यायोक्तंतदप्याहुर्यद्व्याजेनेष्टसाधनं॥ यामिचूतलतांद्रष्टुंयुवाभ्यामास्यतामिह
उक्तिर्व्याजस्तुतिर्निंदास्तुतिभ्यांस्तुतिनिंदयोः॥ कःस्वर्धुनिविवेकस्तेपापिनोनयसेदिवं॥
साधुदूतिपुनःसाधुकर्तव्यंकिमतःपरं॥ यन्मदर्थेविलूनासिदंतैरपिनखैरपि॥ ६४
अप्रस्तुतप्रसंसास्यादकांडेतुयास्तुतिः॥ सुखंजीवंतिहरिणावनेष्वपरसेविनः॥ ६५
स्तुत्यास्तुतेश्चगम्यत्वेव्याजस्तुतिरुदाहृता॥ धन्योसिभृंगयत्पश्यंत्सुन्दरवद्युतिं
चुंबसि॥ निंदायानिंदयाव्यक्तिर्व्याजनिंदेतिगीयते॥ विधेस्सनिंद्योयस्तेप्रागेकमेवाहरच्छिरः
६७॥ आक्षेपःस्वयमुक्तस्यप्रतिषेधोविचारणात्॥ चंद्रसंदर्शयात्मानमथवास्तिप्रियामुखं
६८॥ आक्षेपःनिषेधाभासमाक्षेपंबुधःकेचिन्मन्वते। नाहंदूतीस्तनोस्तापस्तस्याःकालानलोपमा
६९॥ आक्षेपोन्योविधौव्यक्तेप्रतिषेधतिरोहिते॥ गच्छगच्छसिचेत्कांततत्रैवास्याज्ज
निर्मम॥ ७०॥ आभासत्वेविरोधस्यविरोधाभासइष्यते॥ विनापितन्विहारेणवक्षोजौतवहारिणौ॥ ७१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विभावनाविनापिस्यात्कारणंकार्यजन्मचेत्॥अप्यलाक्षारसासिक्तंरक्तंतच्चरणद्वयं॥७२
हेतूनामसमग्रत्वेकार्योत्पत्तिश्चसामता॥अस्त्रैस्तीक्ष्णैरकठिनैर्जगज्जयतिमन्मथः ७३
कार्योत्पत्तिस्तृतीयास्यात्सत्यपिप्रतिबंधके॥नरेंद्रानेवतेराजन्दशत्यसिभुजंगमः
अकारणात्कार्यजन्मचतुर्थीस्याद्विभावना॥शंखाद्वीणानिनादोयमुदेतिमहदद्भुतं॥७४॥वि
रुद्धात्कार्यसंपत्तिर्दृष्टाकाचिद्विभावना॥शीतांशुकिरणास्तन्वीं हंतसंतापयंतिमां॥७५
कार्यात्कारणजन्मापिदृष्टाकाचिद्विभावना॥यशःपयोधिरभवत्करकल्पतरोस्तव॥७६॥का
र्याजनिर्विशेषोक्तिःसतिपुष्कलकारणे॥हृदिस्नेहक्षयो[illegible]नाभूत्स्मरदीपेज्वलत्यपि॥७७
असंभवोर्थनिष्पत्तेरसंभाव्यत्ववर्णनं॥कोवेदगोपशिशुकःशैलमुत्पाटयेदिति॥७८॥वि
रुद्धंभिन्नदेशत्वंकार्यहेत्वोरसंगति॥विषंजलधरैःपीतंमूर्छिताःपथिकांगनाः॥७९॥अ
न्यत्रकरणीयस्यततोन्यत्रकृतिश्चसा॥अन्यत्कर्तुंप्रवृत्तस्यतद्विरुद्धकृतिस्तथा॥ ८०॥अ
पारिजातांवसुधांचिकीर्षन्द्यांतथाकृथाः॥गोत्रोद्धारप्रवृत्तोपिगोत्रोद्वेगंपुराकरो॥ ८१॥वि
न षमंवर्ण्यतेयत्रघटनाननुरूपयो॥क्वेयंशिरीषमृद्वंगीक्वतावन्मदनज्वरः॥ ८२॥वि
रूपकार्यस्योत्पत्तिरपरंविषमंमतं॥कीर्तिंप्रसूतेधवलांश्यामातवकृपाणिका॥८३॥अनि
ष्टस्याप्यवाप्तिश्चतदिष्टार्थसमुद्यमात्॥भक्ष्याशयाहिमंजूषांदृष्ट्वाखुस्तेनभक्षितः॥८४॥समंस्या
द्वर्णनंयत्रद्वयोरप्यनुरूपयो॥स्वानुरूपंकृतंसद्महारेणकुचमंडलं॥८५॥सारूप्यमपिकार्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

5 कारणेन समं विदुः॥ नीचप्रवणता लक्ष्मि जललज्जा यास्तवोचिता॥८६॥ विनानिष्टं च तत्सिद्धि
र्यदर्थं कर्तुमुद्यतः॥ युक्तो वारणलाभोयं स्यान्न ते वारणार्थिनः॥८७॥ विचित्रं तत्प्रयत्नश्चे
द्विपरीतफलेच्छया॥ नमन्ति सन्तस्त्रैलोक्यादपि लब्धुं समुन्नतिं॥८८॥ अधिकं पृथुला
धाराद् आधेयाधिक्यवर्णनं॥ ब्रह्माण्डानि जले यत्र तत्र मान्ति न ते गुणाः॥८९॥ पृथ्वाधेयाद्य
दाधाराधिक्यं तदपि तन्मतं॥ कियद्वाग्ब्रह्म यत्रैते विश्राम्यन्ति गुणास्तव॥९०॥ अल्पं तु सूक्ष्मा
दाधेयाद्यदाधारस्य सूक्ष्मता॥ मणिमालोर्मिका तेद्य करे जपवलायते॥९१॥ अन्योन्यं
नाम यत्र स्यादुपकारः परस्परं॥ त्रियामा शशिना भाति शशी भाति त्रियामया॥९२॥
विशेषः ख्यातमाधारं विनाप्याधेयवर्णनं॥ गतेपि सूर्ये दीपस्थास्तमः छिन्दन्ति तत्कराः॥९३
विशेषः सोपि यद्येकं वस्त्वनेकत्र वर्ण्यते॥ अन्तर्बहिः पुरः पश्चात्सर्वदिक्ष्वपि सैव मे॥९४॥ किं
चिदारम्भतोशक्यवस्त्वन्तरकृतिस्तथा त्वां पश्यता मया लब्धं कल्पवृक्षनिरीक्षणं॥९५॥
व्याघातोन्यथाकारि तथाकारि क्रियेत चेत्॥ यैर्जगत्प्रीयते हन्ति तैरेव कुसुमायुधः॥
गुम्फः कारणमाला स्याद्यथाप्राक्प्रान्तकारणैः॥ नयेन श्रीः श्रिया त्यागस्त्यागेन विपुलं यशः॥९७
गृहीतमुक्तरीत्यार्थश्रेणिरेकावलिर्मता॥ नेत्रे कर्णान्तविश्रान्ते कर्णौ दोर्दण्डदोलिनौ॥९८
दीपकैकावलीयोगान्मालादीपकमिष्यते॥ स्मरेण हृदये तस्यास्तेन त्वयि कृता स्थितिः॥
उत्तरोत्तरमुत्कर्षः सार इत्यभिधीयते॥ मधुरं मधु तस्माच्च सुधा तस्याः कवेर्वचः॥ १००॥

५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यथासंख्यं क्रमेणैव क्रमिकाणां समन्वयः॥ शत्रुं मित्रं विपत्तिं च जय रंजय भंजय॥१०१॥ प-
र्यायो यदि पर्यायेणैकस्यानेकसंश्रयः॥ पद्मं मुक्त्वा गता चंद्रं कामिनीवदनप्रभा॥१०२॥ एक-
स्मिन्यद्यनेकं वा पर्यायः सोपि कथ्यते॥ मधुना पुलिनं तत्र यत्र स्रोतः पुराजनि॥१०३॥ परिवृत्तिर्विनिमयो
न्यूनाभ्यधिकयोर्मिथः॥ जग्राहैकं शरं मुक्त्वा कटाक्षात्स रिपुश्रियः॥१०४॥ परिसंख्या निषिध्यैकमे-
कस्मिन्वस्तुयंत्रणं॥ स्नेहक्षयः प्रदीपेषु न स्वांतेषु नतभ्रुवां॥१०५॥ विरोधे तुल्यबलयोर्विकल्पालं-
कृतिर्मता॥ सद्यः शिरांसि चापान्वा नमयंतु महीभुजः॥१०६॥ बहूनां युगपद्भावभाजां गुंफः समुच्चयः॥
नश्यंति पश्चात्पश्यंति त्रस्यंति च भवद्द्विषः॥१०७॥ अहंप्राथमिकाभाजामेककार्यान्वयेपि सः॥ कु-
लं रूपं वयो विद्या धनं च मदयंत्यमुं॥१०८॥ क्रमेणैकगतानां तु गुंफः कारकदीपकं॥ गच्छत्यागच्छति पु-
नः पांथः पश्यति पृच्छति॥१०९॥ समाधिः कार्यसौकर्यं कारणांतरसन्निधेः॥ उत्कंठिता च तरुणी जगामा-
स्तं च भानुमान्॥ प्रत्यनीकं बलवतः शत्रोः पक्षे पराक्रमः॥ जैत्रनेत्रानुगौ कर्णावुत्पलाभ्यामधः कृतौ॥११०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6 कैमुत्येनार्थसंसिद्धिः काव्यार्थापत्तिरिष्यते॥ स जितस्त्वन्मुखेनेंदुः का वार्ता सरसीरुहाम्॥१११
समर्थनीयस्यार्थस्य काव्यलिंगं समर्थनं॥ जितोसि मंद कंदर्प मच्चित्तेस्ति त्रिलोचनः॥११२॥
उक्तिरर्थांतरन्यासः स्यात्सामान्यविशेषयोः। हनूमानब्धिमतरत्दुष्करं किं महात्मनां॥११३॥
प्रौढोक्तिरुत्कर्षाहेतौ तद्धेतुत्वप्रकल्पनं। कचाः कालिंदजातीरतमालस्तोममेचकाः॥११४॥ संभा
वनं यदीत्थं स्यादित्यूहोन्यस्य सिद्धये॥ यदि शेषो भवेद्वक्ता कथिताः स्युर्गुणास्तव॥११५॥ किंचिन्मि
थ्यात्वसिद्ध्यर्थं मिथ्यार्थांतरकल्पनं॥ मिथ्याध्यवसितिर्वेश्यां वशयेत्खस्रजं वहन्॥११६॥ प्रस्तु
ते वर्ण्यवाक्यार्थप्रतिबिंबस्य वर्णनं॥ ललितं निर्गते नीरे सेतुमेषा चिकीर्षति॥११७॥ उत्कंठितार्थ
संसिद्धिर्विना यत्नं प्रहर्षणं॥ तामेव ध्यायते तस्मै निसृष्टा सैव दूतिका॥११८॥ वांछितादधिकार्थस्य
संसिद्धिश्च प्रहर्षणं॥ दीपमुद्योजयेद्यावत्तावदभ्युदितो रविः॥११९॥ यत्नादुपायसिद्ध्यर्थात्साक्षाल्ला
भः फलस्य च॥ निध्यंजनौषधीमूलं खनतासादितो निधिः॥१२०॥ एकस्य गुणदोषाभ्यामुल्ला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तोन्यस्तौयदि॥ अपिमाघवेयेत्साध्वीसाप्वेघरतिजाह्नवी॥२२१॥ काठिन्यंकुचयोःस्रष्टुंवांछत्यापदप
दोर्योः॥ निःक्षतिचविधातारंत्वद्धाटीपरिपोषिता॥२२२॥ तदभाग्यधनस्येवयन्नाश्रयतिसज्जनं॥ लाभो
पमेवभूपालसेवकानांनचेदृष॥२२३॥ ताम्यांतोयदिनस्यांतांअवशालंकृतिस्तया॥ त्वलमेवांबु
लभतेप्रस्थंप्राप्यापिसागरं॥२२४॥ मीलत्तद्यपिपद्मानिकान्तानिरम्लतद्युते॥ रोषस्याम्यर्थनानुज्ञा
तत्रैकगुणदर्शनात्॥ विपदःसंतुनःशश्वद्यासुसंकीर्त्यतेहरिः॥२२५॥ तेषस्मादोषगुणयोर्गुणदोषसत्त्व
कल्पनं॥ अखिलेषुविहंगेषुहंतिस्वच्छंदचारिषु॥२२६॥ शुकपिंजरबद्धस्तेमधुराणांगिराफ
लं॥ स्वच्छार्थस्वच्चनम्रुद्राप्रकाताथपरैःपदैः॥ नितंवगुर्वीतिरसीदुग्धुमविपुलाचसा॥२२७
केभिकंप्रकातार्थानांव्यासंरत्नावलिंविदुः॥ चतुरास्यःपतिर्लक्ष्म्याःसर्वज्ञस्त्वंमहीपते॥२२८
तद्गुणाःस्वगुणास्त्यागादन्यदीयगुणाग्रहः॥ पद्मरागायतेनाशामौक्तिकैकोतेऽधरत्विषा॥२२९
पुनःस्वगुणसंप्राप्तिःपूर्वरूपमुदाहृतं॥ हरिकंठलग्नलिप्तोपिशेषस्त्वयशसासितः॥२३०॥ संगत्ता ९
न्यगुणानंगीकारस्तद्गुणोत्तरं॥ चिरंरागिणिमच्चित्तेनिहितोपिनरज्यति॥२३१॥ प्राकृतिद्वस्वगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णोत्कर्षी तद्गुणः परसंनिधेः। नीलोत्पलानि दधते कटाक्षैरतिनीलतां ॥२३२॥ मीलितं यदि सा
दृश्याद्भेद एव न लक्ष्यते ॥ रसो नालक्षि लाक्षायाश्चरणे सहजारुणे ॥२३३॥ सामान्यं यदि सादृश्याद्विशेषो
नोपलक्ष्यते ॥ पद्माकरप्रविष्टानां मुखं नालक्षि सुभ्रुवां ॥२३४॥ भेदवैशिष्ट्ययोः स्फूर्त्तावुन्मीलितविशेषको ॥
हिमाद्रिं त्वद्यशोमग्नं सुराः शीतेन जानते ॥२३५॥ किंचिदाकूतसहितं स्याद्गूढोत्तरमुत्तरं ॥ यत्रासौ वेतसी
पान्थ तत्रेयं सुतरा सरित् ॥२३६॥ प्रश्नोत्तरान्तराभिन्नमुत्तरं चित्रमुच्यते ॥ केदारपोषणरताः के खे
टाः किं चलनं वयः ॥२३७॥ पिहितं परवृत्तान्तज्ञातुः साकूतचेष्टितं ॥ प्रिये गृहागते प्रातः कान्ता तल्पम
कल्पयत् ॥२३८॥ व्याजोक्तिरन्यहेतूक्त्या यदाकारस्य गोपनं ॥ सखि पश्य गृहारामपरागैरस्मि धूस
रा ॥२३९॥ गूढोक्तिरन्योद्देश्यं चेद्यदन्यं प्रति कथ्यते ॥ वृषापेहि परक्षेत्रादायाति क्षेत्ररक्षकः ॥४०॥
युक्तिः परातिसंधानं क्रियया मर्मगुप्तये ॥ त्वामालिखन्ती दृष्ट्वान्यं धनुः पौष्पं करेऽलिखत् ॥२४१॥
लोकप्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते ॥ सहस्व कतिचिन्मासान्मीलयित्वा विलोचने ॥२४२
छेकोक्तिर्यत्र लोकोक्तेः स्यादर्थान्तरगर्भता ॥ भुजंगा एव जानीते भुजंगचरणं सखे ॥२४३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

7A वक्रोक्तिश्श्लेषकाकुभ्यामपरार्थत्वकल्पनं॥ मुंच मानं दिनं प्राप्तं नेह नंदी हरांतिके॥ १४४॥
स्वभावोक्तिस्स्वभावस्य जात्यादिस्थस्य वर्णनं॥ कुरंगैरुत्तरंगाक्षैः स्तब्धकर्णैरुदीक्ष्यते॥ १४५॥ भा
विकं भूतभाव्यर्थसाक्षात्कारस्य वर्णनं॥ अहं विलोकयेद्यापि युध्यंतेत्र सुरासुराः॥ १४६॥
उदात्तमृद्धिचरितं श्लाघ्यं चानोपलक्षणं॥ सानौ यस्याभवद्युद्धं तद्धूर्जटिकिरीटयो॥ १४७॥
अत्युक्तिरद्भुतातथ्यशौर्यौदार्यादिवर्णनं॥ त्वयि दातरि राजेंद्र याचकाः कल्पशाखिनः॥ १४८॥
निरुक्तिर्योगतो नाम्नामन्यार्थत्वप्रकल्पनं॥ ईदृशैश्चरितैर्जाने सत्यं दोषाकरो भवान॥ १४९॥
प्रतिषेधः प्रसिद्धस्य निषेधस्यानुकीर्त्तनं॥ न द्यूतमेतत्कितव क्रीडनं निशितैः शरैः॥ १५०॥
सिद्धस्यैव विधानं यत्तदाहुर्विध्यलंकृतिं॥ पंचमोदंचने काले कोकिलः कोकिलो भवेत
हेतोर्हेतुमता सार्द्धं वर्णनं हेतुरुच्यते॥ असावुदेति शीतांशुर्मानछेदाय सुभ्रुवां॥ हेतुहेतुमतो
रैक्यं हेतुं केचित्प्रचक्षते॥ लक्ष्मीविलासा विदुषां कटाक्षा वेंकटप्रभो॥ १५२॥ इत्थं शत
मलंकारा लक्षयित्वा निदर्शिता॥ प्राचामाधुनिकानां च मतान्यालोच्य सर्वतः॥ १५३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यत्र नञ्कारत्वं विधीयते तत्रानुवाद्यविधेययोर्वा
पर्य्यापादाने नैव तथा प्रतिपत्तिः तदुक्तं यच्छब्द
योगः प्राथम्यं सिद्धत्वं चाप्यनूद्यता तच्छब्दयो
गश्चान्त्यं साध्यत्वं च विधेयतेति ॥ अनूद्य
विधेयभावः संसर्गविशेषविशेषणभाव
इवा पदार्थोपि वाक्यार्थप्रतीतौ भासते ॥ वयो
च्छनैः किमिति पदद्वयालंबनाद्वाक्यदोषता ॥
तत्राह ॥ नञ्वाक्यार्थविशेषितमिति ॥ यथा अत्रै
वयत्तच्छब्दयोः स्थितिनिरूपणार्थमुदाहरणां
तरमाह यथा वेति ॥ अपांगेति ॥ अत्र यच्छब्दो
नुवाद्यार्थोऽदशब्दो विधेयार्थश्च विवक्षित
स्तदुभयं न सिद्धानि यौं सौ इति शब्दोच्चारणेना
नुवाद्यमात्रप्रतीतेर्जनकत्वाद्विधेयांशप्रतिपा
दकतदादिशब्दानुपादानेन साकांक्षत्वात्
ऽविमृष्टविधेयांशत्वमित्याह ॥ अत्रेति ॥ असोर
ति विधेयं तच्छब्दाद्युपादानेनानुवादको
ऽयमविमृष्टमित्यविमृष्टविधेयदोषः यच्छब्द
समभिव्याहारेण दोषः यदियोसे मांचकं
चुकतनोति ॥ असावागत इत्युक्ते विधेयबु
बुद्धिर्भवति यच्छब्दसमभिव्याहृतोऽसौ श
ब्दः पुनरपि तच्छब्दापेक्षां करोति ॥ इति सा
कांक्षा स्यात् तथा चावय इत्यर्धरीत्यावर्त
त्वः स्यात् यो सौ तव रोमांचकंचुकतनोति स

आगत इत्यवमवयः स्यात् । अथ यच्छब्द समभि
व्याहृतो सौ शब्दस्तच्छब्दोपादानमपेक्षते अन्य
थाऽनेपातो सौ तच्छब्दोपादानं नापेक्षत इति
विवक्षायामाह ॥ तथा च मन्त्रदोर्नित्यसंबंधः ।
कुत्रैति जिज्ञासायामाह ॥ तथाहि ॥ तत्र तच्छ
ब्दस्य यच्छब्दोपेक्षा कुत्र नास्तीति विषयविभा
गेन दर्शयति ॥ प्रक्रान्तेति एकः प्रक्रान्तवाच
कस्तच्छब्द एकः प्रसिद्धार्थवाचकस्तच्छब्द
काऽनुभूतार्थविषयस्तच्छब्दोपादानं नापेक्ष
ते प्रक्रान्तः प्रकरणसमस्योदयात् पूर्वमुपस्थितिः
प्रसिद्धः पारंपर्यक्रमेण प्रसिद्धिमुपगतः ऽनु
भूतः पूर्वमनुभवविषयीभूतः एतेषु सोयोर्थ
तत्प्रतिपादिनोऽर्थस्तथा तच्छब्दो यच्छब्दो
पादानं नापेक्षते ॥ अत्रोपादानमित्युक्तेरिदं
गम्यते यत्तदोर्नित्यसंबन्ध इत्यनेन तच्छब्द
स्य यच्छब्दोपस्थापितार्थविषयकशाब्द
बोधजनकत्वं प्रतीयते ॥ तेनात्रापि यच्छ
ब्दस्याध्याहारः क्रियते परं तु अस्त्यध्याहा
रेणानुपात्तस्यापि यच्छब्दस्य स्वरूपत्वं विला
ड्गातुल्यक्षिपत्वान्नूनपदत्वे न भवति ॥ अनु
पादाने उपादानमायत्वादिति प्रक्रान्तमु
दाहरति कातर्यमिति ॥ =॥ =॥ =॥ =१९॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ओम्

10

निरस्कारः

॥ न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयस्तत्राप्यसौ तापसः
सोऽप्यत्रैव निहन्ति राक्षसकुलं जीवत्यहो रावणः
धिग्धिक् शक्रजितं प्रबोधितवता किं कुम्भ-
कर्णेन वा स्वर्गग्रामटिकाविलुण्ठनवृथोच्छू-
नैः किमेभिर्भुजैः ॥ १ ॥ २ ॥ अत्रायमेव न्यक्का-
र इति वाच्ये उच्छूनता मात्रमनूद्य न वृथात्व विशेष-
ते ॥ अत्र शब्दरचना विपरीता कृता इति वाक्यस्यैव दोषो
न वाक्यार्थस्य ॥

॥ अत्रैदं तत्त्व विशिष्टमुद्दिष्टं सर्वं च मे उद्देश्य न्यक्कारत्वं विधीयते
तत्र प्रयोगप्राधान्याऽप्रामुद्देश्यत्वं प्रतीयते इति अतः प्रयोगे उद्दे-
श्यान्न्यक्कारस्य उद्देश्यत्वं प्रतीयते ॥ वृथोच्छूनैरित्यत्रापि उच्छू-
नत्वस्य वृथात्वमात्रं विधेयम् ॥ किञ्च ॥ वृथोच्छूनैरित्यत्रा-
पि उच्छूनत्वस्य वृथात्वमात्रं विधेयं ॥ वृथोच्छूनः नु मात्रस्य
चैतत्प्रतीयते ॥ न चैतदाऽनूद्यान्यद्विधीयते ॥ येन वृथा-
च्छूनत्वं तथोक्तं स्यात् ॥ इत्यं विमृष्टविधेयांशतेस्यादि-
उच्छूनत्वैरिति ॥ तथा चोच्छूनत्वमनूद्य तथा वृथात्व-
मत्र विधेयं समासेन तु वृथोच्छूनैः न तस्य तत्प्रती-
यते इति भावः ॥ १० ॥ अराति सद्भावमनूद्य स्वस्यान्य-
कारता विधेया अत्र च तद्विपरीतवाक्यवृत्तिरिति ॥ = ॥
अविमृष्टविधेयांशत्वे तथा चोक्तं ॥ अनुवाद्यमनुक्त्वै-
व न विधेयमुदीरयेत् ॥ न ह्यलब्धास्पदं किंचित् ॥ कु-
त्रचित्प्रतितिष्ठतीत्यर्थः ॥ अत्रायमर्थः यद्विधेयमव-
सितं तत्पश्चादुक्तमिति प्रोक्तं विधेयं यत् तत्पूर्वमे-
व यदुच्यते तदाऽविमृष्टविधेयांशदोषः ॥ यथा न्यागे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥

॥ अर्थागमनं विधेयम् ॥ तत्र आद्वक्यं ॥ तथा च देवदत्त आगत इत्युक्ते ॥ यथा विधेयांशे ज्ञाधान्वं भासते तथा वाक्यं अत्रायाति रावणेऽज्ञातो बन्धः स्यात् ॥

उद्देश्यविधेयज्ञानं ॥ यत्र खलु योगः प्राथमिकसिद्धि वाच्यमुच्यते ॥ तत्र खलु योगश्रोत यथा साधर्म्ये

॥ अपांगहत सर्गीतरंगितं दृशो भ्रुवोरंरालान विलासविलितम् ॥ विसारिरोमांचनकंचुकं तनोस्तनोति योसौ सुभगे तवागतः ॥ २ ॥

नान्ध्रीपयोधरभीवा तितरां प्रकाशेनानो उज्जोर स्तनश्री वाति तरां प्रकाशः ॥ अथ धीगिरां भापेक्षनः पिहित अकिञ्चितरो भाग्य पीत मरकत द्रव घट कुचाग्रः

॥

दोहा ॥ श्रुतिकटु कर्कश नकट्ट गयो सत्कार भलो तिय ॥ असमर्थ तौन

हि कहत जु कठिन सों वीजुरी मेह लिय ॥ असमर्थ मैं घरैं हू अर्थ समर्थ चले

जो लिपि व संवर निहतार्थ बोल वे मैं न विदित मल ॥ परि नाम पासकं

तु कि जे नप हुआ अजोग अनुचितार्थ कहि पुनि ल निरर्थक असलील

त्रै लाज जुगुप्सा असुभ वद ॥ १ ॥ दोहा ॥ लाजति हम गव यारं तो म

इन सौं मुहलो जरई मरी कि मर है धिरद नीं ल वे कम जुपती जरे कहे ॥

अर्थ वदनों है अवाचक प्रतित पति रवि ल संदेह संदिग्ध करत

पद तो मसदा कवि सो अमतीत जो सास्त्र मैं है ख्यात वाल अहेतपि

य द्हरि ग्राम्य कहे ग्रामीन नर मुद्द्रा सौं चुक हैं नतिय ॥ २ ॥ = ॥ २ ॥

दोहा ॥ न्रेह प्रयोजन तों है करे लघद नेयार्थ अर्जुन केज विषोतो

करे ने नष्ट तन र पार्थ रद्वानी वक्र मविरुद्ध मति कुलन बुद्धि सत

क्लिष्ट विलंब मती ति समुझि र मुनर सुभमत ॥ अविमृष्ट विधेयव

धो तिक पि जहां विधेय लहीतायक सैन्य इ सरो मदन सों ति

य हू तीय रति सी हुपति ॥ ३ ॥ = ॥ ३ ॥ = ॥ ४ ॥

ओम्

॥ ओं स्वस्ति श्रीमदशेषशेषभाषितभाषाविशेषशेमु
षीनिवेशभोषितमनीसरिमेखलावेष्ठितानुगमानिग
मान्कृताकृता वाणीरणीतनिनिर्विशेषपीयूषप्र
मतोषितावनिनिर्मलस्तुन्मेषप्रवेशान्तरालकर
णभरणास्वीगणोगतुष्टिलखैरेणुकाणाद
कपिलातानपणपणग्मा णशाणती हणीकृत
वाणीकाणीकृतविपक्षपक्षमतस्वलसितमनु
मामितितिनिरूपमितिचरणोपस्मत्या णनाष्पपण्डित
राजेष्वतशिष्यकोविमविष्टरायहद्रामपुष्पजा
मितनतिराशायोवितनायनाम ॥=॥ श्रीम
नमरचन्द्रणामसादतो पुष्पदीपनदिव्यतेजानकी
जानप्रसादतः ॥ भवस्पत्रवालाप्रसञ्चोधितहृन
नकरंदोहद्भिन्नमत्ततरपञ्चमितमवोत ॥ अथोद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ननु चान्यगुणेनान्यत्रगुणोदयानुदयरू
सा पाभ्यां मुल्लासावज्ञालंकाराभ्यां तद्गुणा
तद्गुणयोः को भेदः। उच्यते॥ उल्लासाव
८ ज्ञालक्षणयोर्गुणशब्दो (दोष) प्रतिपक्ष
वाची॥ अन्यगुणेनान्यत्रगुणोदय
तदनुदयौ च न तस्यैव गुणस्य संक्रम
णासंक्रमणे। किं तु स्वगुणोपदेशेन संदर्शि
ष्वयोर्ज्ञानोत्पत्यनुत्पत्तिवत्तद्गुणाजन्य
त्वेन संभावितयोर्गुणयोरेतयोः सत्वासत्वे
स्ती। तद्गुणातद्गुणयोः पुनर्गुणशब्दो
कोऽत्र वर्णाद्यर्थवाची॥ १ ॥ राम
नेत्रान्यदा यद्गुणग्रहणाग्रहणे च
र[illegible]स्फटिके वहो मालिन्यादि त्या
प[illegible]न्यदीप गुणेनैवानुरंजनात
[illegible]नेनिवर्तते॥ तथैव चोदाहरणा
नि [illegible]॥

र्थाद्गुरिति॥ स्वमते तु तथात्वातथात्वाभ्यां भेद इति भावः। अनयो
रद्भुतत्वविशेषणस्य कृत्यं दर्शयति। अनयोरिति॥ रात्रन्यच्चेयो
गेऽप्ययोगेऽसंबंधातिशयोक्तिरित्यत्र प्रागुदाहृतं॥
असदुक्तितारतम्येनेति अनयोरित्यत्रासदुक्तिमात्रं॥
अल्पमिति पश्चेत्वत्यन्तासदुक्तिरिति तारतम्येनेत्यर्थः
तथा चाद्भुतेति विशेषणादत्यन्तासत्यरूपत्वलाभा
दतिशयोक्तावतिव्याप्तिरिति भावः। अतः राकान्ययोरिति
पद्यानन्तरं दंडिनोक्तं॥ इति संभाव्यमेवैतद्विशेषणाख्या
नेऽभ्युक्तमिति॥ एवं लोकातीतरवोत्यर्थः प्रचारोऽप्य
विवक्षितः॥ योऽर्थस्तेनाति [illegible] तथ्यान्नेति दर्शनेनेतदेप
थ्येत्यकात्यल्पनिर्मितमित्याद्युदाहृत्य इदमत्युक्ति
रित्युक्तिमिति चात्युक्ति॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोहन ते नगलव पंजमें
आनंद कौ कंद व्रजआन
फेरत हैं सान आपमें
इस आनंद हल इ कौ हूं है — दोष
[illegible] के अंस में [illegible] — अप्रकर नाक
दोष कारनी करत नन से इस — दोषन स
घ [illegible] वा च कहे
गते हलन्त अस मर्थ
पद कौ सरस सो ता का
तार्थ अनुचितार्थ अवा
[illegible] असमती त

कर्नकटु — कानन कौ जो शब्द न भू
जवतें कंतविदेस कौ जयो — उन्मत
दुरे न निघर घर ल्यो दिये
गतहंस — शब्द जु सुदू न लोय
उभी हर रन का सी
कि ठौ स च नी सधिन — विनाश
लाजन गारी मार कौ — सम क्रिया
राज वे त्रास मनौ चक
फूटयौ हैं त स्वाग के
अपदुष्ट — [illegible] ह्व कै कवि न हि
सों विजुरी ज नुमेह — विप्लुत

वानर से चल चारु विलो — कवि भया
दोय अर्थ को शब्द जे ह — उन्मत्त
हैं ता भो पर दे स कौ सजनी
वे सन यो जो वन न यो
छीन कमर लोयन लालि
सेवा सी तें सो तन सकत — सापेक्ष
नेहा र्थी — दोय अर्थ के शब्द को अ
ति कहत हैं तहं दूखन — स्मय
मालक दीक्ष नलाल लटे
केस ल स्या मदुरे दरसे व र
वन में रमें सिकार न न व
अनुचितार्थ — कहैं अर्थ जे हैं अनुचितार्थ
जोगन कौं जोगी लें कछि
सरन के दल कौं दले कौं
सौं रन में सर कौं सहंत

ताहि हम रहरि मनु सव
दूजे जो मोर च के वाहत 1
साधि का के [illegible] को हम
आत्मा के जो अधिता
रहमें व चमकार एक हि
अनुचितार्थ त्या गो नि हि 2
विनसन त कारी अस यर
काव्य हि में स व होत हैं दोष
कर्नकटु अम पुष्ट निह
तो तीन तह कौं अ श्लील
ने पाप्य एत ने दस दोष क हि
[illegible] होत हैं [illegible]
श्रुति कटुता कौं लक्षन ता है
पीवर कर कै स दाव रड त है
विस सी लाग त हिये द सी हि
गत हं स्थत है सो य॥
सो भाव अदुत पुलन कै लहि
दुरे दुराये [illegible] सत तों कौं
देखो दो ख नमान दुख
राज सजात के पात में
लसै चेतकी चांदनी तोसु
धारे अम पुष्ट तें सो छ बौं
आठो जाम अधिक [illegible]
चन को [illegible] चंद चन कौं
अप्रसिद्ध में कवि धरत हैं
केस कौं दिन वीत हैं अयो
सप रेह रि अनुसर अति
फल तजी नै व द पन रिजल
दूरें सरितान तें पा वे क
प्रसिद्ध लें अर्थ पाइ प्रसिद्ध
निहतार्थ:॥ ॥:॥:॥ 3
ताहि विलोक आरसी लेकर
सुरज मंडल में ससि मंडल
सनग वासों सेरन हन ने की
अनुचितार्थ न हैं सक व स
जो व ह न पर न जात को सो
रन में निहचल धीर हैं हो यक
न हीव अ [illegible] की कि कों

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निरर्थक॰ चरन हरन कामः बिहारी सो विरचि कलाम॰

फूलीफालीफूलसीफिरतजु
होवकाहजतासोंभूलि
४ रसवोलिनचालवितौमिंदसी
मिनहूंउठजेठीवडीनवेजाय
त्रिविचकृति लाजनजुउघाअसभकोंछजम
लज्जाव्यंजक आयोभीतविरहनेसखीसाजो
लगतहभगलीतलविरननिस
ग्लानिव्यंजक उर्जनसोंजीलेहमरपावतहै
वि॰ रहोउहोवेनीलछैगहवेकोसो
रवगरवजुनचतरसठहोंतवैस
अमंगलव्यंजक भरीउरीकिरीविद्याबरीच
तायतचतआवदीरहीआल
अवाचक॰ आइआर्थीमेजोपरआवे ।।
बिहारी वहिकिनरहवहैनापनेज
विरहहकाईदेहनेककिया
प्राचीन जाइननेदेखीहजानअलीख
संदिग्ध॰ सेदिग्धजहैंसदेहः।।रसमेंम
सुखसोंसोयसकोंलनिमननहीं
कैचाहतहैदपेकैमूपनि
अप्रतीत केवलनाथ्रहीपेविख्यात
ज्ञानिनकोहघ्रतफिरेरहैं
मक्रिकाहवेमिलतवेउप
जोगजुगतमिळरामसें
सुनोविभीखनदुखहरन
ग्राम्य जोकहतवचनगकार
तोहीसोंपियवघरलेय
कहनहबीसोघामिमिस
नेयार्थ॰ रहमधोजननारहविन
कहि कवि परकास
५ कहियेकिंगृहनतरस
यनआनदेजाननकान
बिहारी गानहविघतनअघघ
सुखघविसमिपवगध

मैगरहरैयाहोगहैतेचलनतो
जीहैंचंदउदोभएविनदेखे
समचानकमंडनलोगनिद
कहिठोंरुगेखलनजेमे
ततहीलमकहतहैदृगनकहि
विरहहसाकोंहरकरीकीजेजेजेला
मारहसीअमरस्योंरठीवकोरी
लाकजारजोलेनहैसुहनेउहके
लाजेनीरकुचाकजेनीरसकार
मतकरतअतिआलिनहैसमनवसु
रहीकरहकरागेआगेमोउस
फीतमकुलदीपकवुजोविरह
कहैनतिहसअवाचकजाते
वचैनवडीनचीलहूचीलधे
जैसेवरसेंमेहजोरेजवासोंजो
देखैदिनविनलखेनिसनवतैं
लोरहनेह।।नेहतेलविवामी
तोसोंमिलवेकोंमेलिआयसजो
विघघाउतपमैरहेकरसदा
अपतीतयदजानिवान।।
नपहूरतिमानगिविनागति
भक्तिहिठगोंउपजापदे
चाहनपियअदैतताहे
वालिविहारनमोघरेंमक
वैग्राम्यहैतिरधार।०
मुहडाकोपरेकहारविवे
तनमनसोसनलालके
कोरेजहांलहयार्थकोलहै
नेयार्थकाह
अहज्योंगृहपतिमनियघरि
उतउजरपायलगिनहदी
हगपगपोषनकोकीये
हगनदासवारघावकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विरुद्धमति

जो विरुद्धमत कौ उपजावै
तहां नीवल्लभ मन पाप करे
ली नैन संग सषान कौ कीने
तौ रहुरली कूप पर नारी का
पाय परै मनु हां रिझरे पल
सा हसकै सुहसौ सुरष्यै छि
देखत नैनके कोनहि लौ
सुंदर को पान ही सपने जो
है अविमृष्ट विधेयसौ जहां
है रूप रूजो कोम सौ हजीर
सु है है नाल पन पै वान कर
वाहि रहै सुजन नैन को रहै,
आपे आप मती करी मैं रिते
समरेप रहलै विग्गर सलहै
नहि होग अर्थ प्रतीत।
दृष्टि लतन केनी चे रस सोहि
पावस कठिन जु पीर अव
लो मल गे रह रूप के केरी
अपप दसम रूप मैं अति क
नागरि रिव घविला सुत
केलि कुसम से दूध धरकरि
मालिन रैन ट सालसी छिजौ
वै छिगान पापने नमे लषि
अगि कराल है का ल तजे
ते राष्ट्र विकौ देख कै घर नंसकै
रहत तहरवै कर ताल दैन गपा
॥ क्लिष्ट मति अविमृष्ट विधेय
प्रतिकूल वर्णन रन: वर्ण
समास सुनरात अहूं तिरैक
अवमित वाच्य अप रूप दस
भान कम अक्रम सौ अमतप
जिह रसको लायक रएफप
उदूरतर्न वीररहुमैं सोहरसमैं
रुकुचेसरजाआरखहीविघ्न
लातनेंसा सुअंगमैं आनके

सो विरुद्धमति कहत कहावै
सदा तन मैं अंबार मन देउ आव
कर मैं वंसी लै लल नउ भार
पीय पानी गिन ही लिषी गोवी
सोय गई कहि के सब कैं सह
एकउ सासहि केउ ससे सिग
बोलत बोलस कठ सी मैं च
मैं वल घावल घाई सरैव
कहूं उद्देरप हूं पीछे न हो लषि
घटैं वाक से मैं नकें तियके नैन
मनो चंद उरसौं लीये कछु वि
कान चहै लनि यैं लजर रूग
दूरि करौं पद देषि हैं घला कि
औ से दोष न सो नहीं रस को
तहं क्लिष्ट है यह रीत॥
सो मांगत है राधे कान्ह से
ते कूच वत न धीर रकत वी
सो रनवेची वीव ही लोचन
र॥ बिहारी॥ ==॥
सुं डौं मैं मीन कीकिर हह
तौ सी दही जग नमें लोचन
अंनमधा ने जानै वसी कुमी
अजु जो तसु छं जो नसौं हतें
गसे गंज पेत च टेस गीत
मिलनन को मन कहा मन नी जा नै
जने गर्वन न को सवै गस गती
सजहरे छओ रकत है॥
नाध्धि कर दअं तपदपत क
वाच के है अभव सतं जोग नीर
सास सं कीर्ति जांत प्रसिद्ध सन
ता छोए ने वा का दोषन धरत जे
हैं प्रतिकूल सवर्णन तहं देखक
ती अमाससमै शात रसमें वह
ट सिक दागे दरी हु गये दीठ ठि
कोरै कुंसीधौं असकैवरि लज

समास

15

[हतवृत्त॥] ॥जेहाजतिछंदोभंग॥
हरिहरिकेसवमनमोदनग
[च्युतसंस्कृत] जिहिविनभरोअर्थनभासै
कान्हकेसंगहलीनचलीअज
लेकठिरानभईकछुगगचल
लहैसुरासजतियभवनयोगु
[अधिकपद] जान्हिकेरैनविगरैनाही
वाढनतोउरउरजभरुभरतरुना
लपटीपुहुपपराजपरसनीहो
[कथितपद॥] हकशब्दहैहैवार॥
तेरेमुखसोंचंदहाविलाग
[पतत्प्रकर्ष॥] जोरचनाआरंभहीसोनसकै
भीतननीतगलीतहैलैघटी
हरिहरिहरिवरिउठतकरिस्य
[समाप्तपुनरात्त] वागहिजेहरुरनकरैकेरचाहु
तोपियकेमनमेंवसीतोंमीओ
[अर्द्धांतरैकवाचक॥] जोपदजहांसुचाहिएसोवदत
जैहैमोहनमधुपुरीयहलैहु
[अभवन्मतजोग] कविवांछनिकरैनहीऐसे
लाजमरीजोवलहेतोपिय
जहाननछत्रमालालसैअगर
अंगतिहुतनतपनीयसीजेहु
मोहूसोवातनलोलसीजोभ
[अनभिहितवाच्य] आठेजामनिकामतोपीयसैं
कहिकेजोपअर्थनहीकहै
[नाहामुक्त] दोषलेसपियकोनहीतेनाहक
सुघहूपीयकेकहैनेकनमान
[अस्थानस्थपद] जहिंपदहिहिगनहोनहोय
पीतदरसमेपरसमेमदुसुखवें
[अस्थानस्थसमास॥] सुघनकुंजघायाहूठदसीतल
समासजहांचाहिएनहीकरें
उगतिमोहिआजहरमनिमानक
[संकीर्ण॥] छत्रियकुलऔरोकरनमेसोलरे
औरगर्वकोपदजहांऔरवाकमे
[गर्भित॥] मिलेतोजीवनजमुकमानत
अन्यवाक्यमेंवाक्यआवैं
[प्रसिद्धहत॥ ९] दुर्जनउनउमाकीगनत
कविचंदनपंकजवंदनकंचन
आमानतहैअविधिलापवाल

॥अमहाहनवनपलज॥
यौंवनवासीद्वारकानाथरघ
सोपदनहीतहांलसमकासे
जादवकेघकेमंदहुतीअवलो
रावनकेमुखनावनकोउपमा
मानोपरसकपोलकोरदेछद
छेदअधिकपदकवितामांहि
कोकिलसोतिनकेहियेआवतकहि
आवतनारिनकोरलोमुखरत
पुनरुक्तसोउच्चार॥
मुखतेरोसोहैसखीछंदपदद
पतत्प्रकर्षसुदोषतहंकविरच
घाटवरचेजोवचैतोजोरिरचकरै
वाकेप्रथमलिखैदस्योतोरसजा
तहैसमाप्तपुनरात्तपरविचारन
मानतजोतिहरोधुमिलगनकी
औरअद्धमेंदेखियेअर्द्धांतरैकवाच
वातगेदनीनेदरंगसोमोकान
अभवन्मतहैकहनहैवोछ
वेदहैजोलवरूपसोतवतज
जांसोंपीयकोमनवंध्योघान
वहनुमकोंअतिचावसोंमोहन
होईलैउरलाईगललाग
मानतेहीओरहतनविस
अनभिहितवाच्यकोलहै॥
पोरोनहीमानतअलीऐसीहै

अस्थानस्थवताबेलोप॥
लखेसुलेनसखीहेतहैकामहको
मनमेंहैजातवहैवाजमुनाकीतीर
अस्थानस्थदोषउच्चरै॥
कुमुदकोसआलिआवलीअसिस
पहुकीनकुंतारवरधाररामहीहै
संकीर्णनतहदोषकोकविमनदेत
चिनतीतोसोकरतहौंआयौसमे
गर्भितदोषकहनमैआवै॥
हितकरतोसोकहितहोकयैनध
करुपेकिहिकारनकोइनलाइक
तनतेरेठियागजमोतहनीतिह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो प्रावरा षेजहै तहायुग्म तहां प्रसिद्ध है तदोषका भाव
वैजतनु ग्राईदुभावो दह रूमका चलोरस निरष॥
भरीको रूकार सन दुद्ध सउलागत सो नदिद सद
जो सार भाही सोन सके माना तो क्रमकह त है रसे
क तलसदे पतिसागरै जिहूचपको करनी हुदे॥
लग्यलमन हूहै सफल॥ वारीवारी उमाय नीसेवत
सत कामसुदोषजैह क्रम यहुसधी चतदे सुकिवजा
वेंदीभाल तसोलसुष दूगभाजै रजे बड़ी सो
सलुतरसको होतजह समतपदषिदे यको
रायकासगरसो रती लेहूचंदनतन गाइजेव
करतभसलेहू वीर इनकेमिलेसोनिसतसब
भयकरतानसतहै हास्य हास्यसार मूरिशिसोव
राद्रहास्यसिंगार भय सातभयानक लेमिल
हास्य सातसु च वीर वीर हास्यल वरादू भय
रस्यसगारकेमेलें लखिहू सिवादकास

इति श्री ... रतनदासकृत किवरसभूषणे पंदमरस
... चंद ... मगर ... लं ...

अर्थहे ग पुष्टकष्टव्याह फलनिर हेतु प्रतिहृद सद
विरोध सेअव पेशकय सहूचथ्थ तजोजकानत
सस्रतअर्थ नहेन बोधे लग्य पुष्टार्थ जाने दोष
लावे कहमहीदसी तो सजो है कुज मै कवका
अर्थि कष्टकर जानो सो कष्टारथ दोषका
सरतअनिपथसे सो भत है जो लक्ष्मीभा
लुस्तो नदापहले कै वरनीयका या थैतहा
सेयतीसो हलकेक चंद्रमुखी मुष चंदको
वेतचहूपतिकामको मंध्युमे धवसामान
जहूप्रा धो क्रमजाते होउ क्रम कविकील
हूजैसको लाभधन अस्पष्टयोग दूषो तोसो
लोगगवासमथिजो ग्रामनाहांवैसपेराथ

विषमवर्णारित की असित तज पार अगाध
हिय धरत नहीं सदेह रस मैं अलो है नेह
मोय प्रस लोही मोनेह चैन चाहू की चांदनी
कवि कहत जह नह तहां देखै नि मद्धे तु॥
सोभाव द दोत पनगा असो वजत तज के सखी
जहां प्रसिद्ध विरुद्ध है जो असो नहा जो विरुद्ध
कोन स्वर ही गात छि आवत है तिय गहन सो
सो छीत्या सावरे एग लहै न छघा तजघार मैं
फुले नहा कदंब फुले भरे सुर मैं लीजा वोर तरु
चंपक पै गुंजन भई हूर को मोरत वांन सो
अकम रथ सो वरनि अन नवी जात जहू दोष
हरा न फुले तोरथा हिंदानि सग सहै लीज

अथ नियमस्य लक्षणं नियम

जहां नियम की कीजा करै निनियम निकारू
कौनु वगुन गानछिन तु मही मैं देखिसा भैय

अथ अनियम की

होसै नियम

जहां है होत नियमकी जहां वै शोभहा तनिरख
हरही तरोवदनहै जानातेरा रूपाहै फीमन

अथ वेशोषस्य लक्षणं

पहिरैं नील निचोरि प्राय "जात रात मैं वसकर

अथ विशेष सालंम

अवशेष वस्यलमै वेप्राय "नहैं जहां जहां सु पिकी
के लखि पिय हो त का हु को तु च मिव सन
लै मल गे हरि रूप कर हौ रत वे चु वीही लाम्पन
नहीं निहारी कोना तज वो न्याई को हा नतहू
धुली सरद की चार वीर हमि लै तु दल लतो
अकर भरयो घिर हू अस जे उ हे न पर है तुरत नहीं
पान विनजान "म लेवु कें तहूं जे वि न निरज है कर
कासी वनमठ ठग जाती रावै॥ विनाधिनधानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

16

सुमकाहितनुविरह आहतक्रमसोविहसर्थ
जेगनूरत्नाहुनिपत कहूतुचाहतआगवा
आहतेनिरहकेसा लोचनरिचगुलाव
चुद्दिसदमकेदा निपवैठीअकुलानपिय
महावशयनहोत नहेअनुवादअपुना
विषसोदरचपरह मतिसारैअसवलोन
कानतजेवरतेपुज तमजपुनस्त्रीकतमद
परपतिहैरतजगत हयसाचीतोहाकही

[illegible]

नावघररसका [illegible] जोअनुभावविभा
हसैकहूप्रतिकूल आरैदेजोअथनकेसो १२
विघुरमिलपीयके कुजनमाहूप्रगार
मुषचूमतपियके भीनमरहरीतहे
रूचरहाहजुतपिय निरखीचितवनवनत
गनतीगनवेतरह एहुविप्रतिपअप्रौमले
प्रियतेरोवचनती घालरदैनकोजेवन

अवंघकोदोषाकाउ

तहूअकाउअः क्रकथन कहूवैठो। केहोन
अनुचितवरननहै हाचविचारैवकीजरे
हैरहिडोरैगगनत धरीघायविचाही

कवित

सावनतीजसुवनी झारिदुपैजरतरीक
नैहनहीउमहीनिज चेराउहिडोरैकीडार

॥ अथ लंकारदोष ॥

जातिअपारप्रमानते उपमामैहूरीकविहोत
साजचमुचतुरगनी लजनकोसंग्रामभारत
रविअरविजनासाल धरावोधसोलसेकहे
यहूउरमवलवानहैमा परकेप्रथद्रकेहिरवेसि
अहूंअसंभवहूतहे अलिलिगाअरवचनते
वरनतनीरकीधार घटहैलोचनलसततुव
कलपहलोपैअनलिगिगने॥ इहीवरसोनैनहू
मूर्तिमोंअगाजलामें वाककेसे सावतउकपवनते

जैसेचनिदम
इतिहानिलिखः

इति दोष निर्णयः

अथ दोषगुन निरूपन चतुर्थी अध्याय ॥४॥
उदाहरन कहूँ दोष कहूँ है च ठकार   कहूँ दोष बन गुन नहीं मसे
इकोधप कु वकता   प्रगुति कर तद्गुन होत है
प्रकरण तकगु कोधवुध की चाह्यो   कहें सो अरकेक एक को
अनुकरण गुनभेद प्रपक्रूगुन निहता   स्वत सुजै जहँ सात रस पूरी
अथ पुनरुक्ति हता
नताधि गुन तनताधि हरी खंध को जिव केल निकुंज मगापरा
स्त्रीपुंभेदै पत्नीलखान
तीय तो मेहनि हरि कुचन के फारन को रंग है हैं मैं जह
सातरस ग्लानिगु
लोचन किच अलम तरुपन मूमि कै नजि
निरपदोषरि॥
अनु चुताधि पुनरुक्त अरु भावच ककरुक
अथ सिधिकी
है सिधि सो व्याजल दोषत हि समन जनह
जहाँ का कूरच नास लखन मूषन लखन
अथ अप्रतीतगु हो
हम ऊले तज ह प्रथि तादिन सो नुसरो कही
अप्रसमुन॥
अथ कहूँ गुव चतगु वारको   ताग घात सो दूइ जमम
सूपद गुन हरकआरद वह अथ क्रक्रदगु गएगए तजसो अरमसे
विरति दोषो जांगत वेषि राह कित है मा व न जा व न अगज
कहूँ अधिकपदगु
नेह निवाहन करें न रोष निहनिह जान वहैं रहकजान
अथ पुनरुक्तगु
एक आरत गुन गु
कविरहत कथन ने दोर विकरि नतु लालटानु मास
विचपदै कोकाध पूहि दीते ता दय
अर्थान्तर सरि जोरि तो रोच समारगुन माहू॥
हृषि र हतिषि ११ भे ल मो रो अनुतनकहैनाह॥
अथ विहितकर्मोकीकह
उरह मैं अमरन हेम थि वअरसन॥ अगपन्तु त मन्सुप्प
विप्रदिपैऽवि॥
चलन लै लो रोचे रे अधि राा मदवासरसरतर
लालटानु मास मै
पीयन कर जो हनी धाम पीयर है घर जा के धाम

अथ कि | लालच लोके के कलह | आज काल में देख्या उर अं
स्य॥ | सारो फर मारो जु लगाय | न एन एस भकाहा रखो न
क्रोधमै | दूर तें देखन को है है दीन | दि बमिलो मन है हू भली
दैवता | ऐ है मिर बालाघ केके | हु है न वार मुरार के डार
अथ दैन | जाकु घरैं तू तुम पध क | जिया जीवन पाय है दिये
ताम॥ | अथ अथ |
| अथ धीनर से ज्ञ मत भैद | क कल जवै रितु मै करहै
अदभ | प्राची लोगु न जहां | बुरो भलो हू उन ही दाय
रसभूर | रस संचारी थापै जहां | कारन कारज डेरा जह है
कै | देह धरैं रस है पीव तीय | स्वतनत सिगार पीय ती

संचारी को कारन कीजे में दोष नही॥

तीय की उत्सुकता भरी | ता सो लाज भरी हि रैवि

विरस को सुमर दोयत.

जो करसो कुच को गरहत | मो हुगा कुंज को रचै सो रस

कवन की बाहीया तमें

कुरूह हो रसना। किा स।

स्याम कहे पाय ने जन सेहो | को धाम अनुराग हू के रंग को

चन्द्र का पियै चकोर गरनै | चं पावै न मोर नवसत माल

तार के आन के मद के म | थैया मैं तके का म के वान अन्च

फू के काम के वान के च | धो म मैं के जति ला मैं क मृ

दैवता तुलसी

वा लज्जह हूव तीर सांको | हूव रनाहूर भाग सो उमा जि

से लखमा मनेहर चाहत | है नुकू लखि जा न हार रहै क

जै सै तीय विंदु पर सत | गाजा का पाय पुज नासै सो वान

सरहर लो कहू को रो कवि | जम के मस दी करै काग नेकी

कवि की स्थिति

ता वा पार वेदस मे राज | श्री वि पव भरेद सराजत

इति श्री हरचरणदास कृते कविवल्लभ
सूची लक्ष्मी देवी चढ़ते सं० १९
३५७ सं० १९२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशायनमः ॐ श्रीसीतापतिरामचंद्रायनमः

श्रीहनुमतायनमः ॥ अथ अनेकार्थ की लि[ख्यते]

	जो प्रभु मैं नै जगत में	सा० १८६५ पो प्र २	विघनहरन सुम
॥२॥	दोके वसनु अनेक है		
दो० ४	जिम कंचन ते किंकनी	दो० ३	उचर लकनर मं
	सवदराकन नाम है		तिनहृति नेका या
सुरभी	सोजानेकाधिकासु	गो	गोरहीगोवाक
	सुरभी चदन स्वरिम		गोधर गोतरगो
	सुरभचानरकवनसो	मधु	मधुवसंतमध
कलि	कलि कलेस कल		मधुनम मधुपय
	कल कलजुग मैं स्मो	आत्मा	मनवुधिचित्र
धनंजय	अजगनिधिनजयकहत		येकहिये सवआ
	अरजुनवहरधिनंजय	अरजुन	अरजुनद्रुमअरजु
			महसका हअरजु
पत्र	पत्रपरनअो पत्ररथ	पत्री	पत्रीतरुपत्रकम
	पत्रपअविधनिहृदि		पत्री सरकर चत्र
धाम	धामतेजस्मो धाम	काम	काम भाग अव
	धामजोतजोग्रहम		काम काजजिन
वर्हि	वरही द्रुम वरही श्रीजै	वाम	वाम कुटलअो
	वरहीमोरकिहोरक		वाम मनोहर
भव	भवसेकर संसारभव	कंपिद्ध	कंछपकजल
	भवजुजनमु गगसु		कंकाचनराश्मि
खग	खमनख गैखनि	कल्प	कल्पदिवस
	खरहीदुअदयाक		कलपकापर
करपि	करिगजजेपुअकर	दा	दारजुकहनकव
	करिविषसमतज		दरदात राधामे
वर	वरसुंदरवारअरपु	द्विज	द्विजसुरंपतिद्वि
	वरद्रुलैहसेकान		द्विजसुधुरम
पतंग	तरुनेपतगपतगअग	दल	दलकिहयनृप
	सुमनगरेगपतंग		दलवदहीकेवंद
पल ॥	पलआमिषकोकहत	वल ॥	वलवीरजजुव
	पलजोपलकहरिवि		वलसा हलवलद
मल	मलक्रत्यक्षीसमर्थ	मल	मलामलकिरन ३०

दलिनु पर

वयप्र	वय विहग को ।
	वय जु ह तम जात
जीव ॥	जीव आत्मा को
	जीव बृहस्पति को
मारप्र	मार द्वाउ सो मार
	मार सीवनेजव
सारप्र	सार धीरज आसा
	सार बहुत पुनव
कलभ	कलभ कलछ ।
	कलभ कहत ॥
नभप्र	नभ आग हनन भ
	नभ आकास नभ
वसु ॥	आठ अमर वसु
पट ॥	कहु पट जाके सो
	पट तीर्थ जको
	पट प्रवीन जो
तुरग	गरुड तुरग तुरंग
	हरन तुरग कुरग
आत्मज	आत्मज कही
	आत्मज पुत्र सो
अजप्र	अज वकरा अज
	अज जो अवतरन
शिवप्र ।	शिव सुष शिव
	शिव संकर सो शिव
विरोचन,	कह विरोचन सं
	हन विरोचन धन
वलप्र	वल बली वलगु
	वल सेन केजा

द्विकप्र	द्विक पावक को
	द्विक दुनव वल
रजप्र	रज राजस रज बहुत
	रज धुरि ते ओर रज
कुस	कुस सीता सुत दे
	कुस दानव वल
कव	कव सीता सुत दे
	कुभ भवन गगन
कूट	कहत आ भवन
	कूट कपट आ भ
घरप्र	घर राघस घर सो
	घरणि धव सम
हरनी	हरनीज सीजा ह
	हरना जहरी
कुजजम	कुजम ग ल क
ज	जम पुत्र जमराज
धात्री	धात्री कहीयत
	धात्री धरनी
रसना	रसना कची कहत
	रसना जीभ
प्रिया	प्रिया सम की
	प्रिया हरि रपु रो
रभाप्र	रभा है ट कम
	रमा को कलन
रमाप्र	रमा है ३ कम वा
	रमा को गोपाल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

19

कंध	बिनसिर कहत क	बन	बन बागनि को कहै
	रा कहत एक कबंध		बन कानन ते हय
हंसपु	हंस तुरंगमो हंस	घन	घन द्रढ घन बखार
	हंस जीव को कहत		घन सघन बध घन सु
बाणपु	बान कहावे बल	बारण	बारण मृत अघार
पियाधर	मेघ अरु पियधर कु		बारण महा... सितपी
	भट गिरि भदरे	पोत	पोत कहावे निपट
गात्रपु	गात्र नि को कहत		पोत नाव चढ जहू
	गो... बसं सो घन्य	बुध	बुध पंडित को कहै
तुनपु	तुन सरीर बखार		बुध हर को अवतार
	तन बिरलो को	अनन्त	गगन अनन्त कहत
जाल	जाल झरो खा जा		अमित गिन न कूप
	जाल भ... सधि	छाय	छाय नवस को क
काल	काल मसित प्रो		छाय मलो मधु
	काल ब्याल कर	राजव	राजव सु... राजव
ताल	ताल ताल पुरु (हरि ताल)		राजव नाभ गोबद
	ताल बछ फल	लोक	लोक ब्याकरन
जलज	जलज मीन सो...		तीन लोक सुत उ
	जलज कमल कर	सन्त	सन्त बेरज मणा
ब्याल	ब्याल कूर... मो		सन्त ...जग बाव
	ब्याल सर्प सिर बउ	भागपु	भाग रवि भाग स
नमपु	नम ता ...सुन		मंग विहा को ह
	नम ता को हरे...	कलाप	गुन कलाप नर
गुन	गुन रा... गुनरा		...कलाप
	गुन नव ...बाबदके	बसन	बसन... बसन...
सिव	सिव परबत सिवरघर		

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

2 20

उडपु	उडुविहंगउडनछत्र	पिव	पिवनसुष पावै
	उडपचंदनाकोउडु		सुषसंकरजो
मंदपु	मंदपुत नक्षत्र मंदछ	विराध	करन कौराधन
	मंदउदु नरतोनग		देत्यविराधलक्ष
वारन	वारन कहीयवस्त्र	विल	वलवरहोवस
	वारन गजउघरयो		न्हराजाको
संपरन	संपरानजकोकदू	विक	विक पावककोे
	सादनरपजीदू		वृकरानवल
कोसक	कोसककविस्यामित्र	रज	रजराससरजको
[illegible]	कोसककोमदल		रजधूरलीरज
पुषकर	पुषकरजलफुल	कुस	कुलसितापुस
	पुषतीरथपाप		कुस दानवबल
संवर	संवरसकतको	कवं	संपसोकविग
	संवरपितनृसाप		सतनगग न
सेवर	सवरजलसवा	कूट	कूटकपटको
	सवरतादिगाठ		कूटकहतजो
केवल	कवलगुगल	घरपु	घरराससअर
	कवलदानवरा		घरगिरघट
नगपु	नगकहितहमया	हरनी	हरनीप्रितमा
	नगगोजीकाकू		हरनीडाछी
नागपु	नागकहितरम	कुंजरम	कुंजरगलकुंज
	नगविंजपमट		रमपुगजमरा
करन	करनकहावेरक्षि	धात्री	धात्रीकहोघे
	करनतावडीदू		धात्री धरनी
द्विजे	द्विज पंछीकोक	रसना	रसना काचीका
	तीवरनदूजन		रसनाजिह्वाफा
अजपा	अजवद।रामज	प्रिव	प्रिवासमको
	अजजोवनसवा		प्रिवाकहेरस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रमापा	रमा है दकम व म	रवि सशि हैं पगपु	मासा
वारणी	रमा जा कल गत	चातक दा रथ	रर
	वारसी जन वा की	रउ चंद्र दर वेद	
	पक्षम दि पुर वार	कंचन का कतु	रूर
मापाकृ	पापा छ लम माय	पानी पावक पव	
	म पा मो हनला नव	पद्ररने रे मदरक	ध्रुव
रला	रलाम ही वृद्ध देव	ध्रुव न सच ल	
	रला स्वती तो मन		
जोति	जोतिन म तगय जो	अवना राजिम	समन
	जातिव सके मर	समनस सुर साम	
समना	समना कहिये मात	समनस जे जन	विपर
	मना रतिका का	विपर मेगापल	
उडा	उडाकृ हनपुन देव	विपर कहा की	दान
	उडा कंव का माव	दान हूर कोदी	
रस	रस जल रस मध	दान सावरे लो	गोरी
गिसा	रस से गार जो रम	गोरी म सुता सा	
	गिसा जाम ती को	गोरी सीता पति	स्यामा
	दर्जा घग भाया	स्यामा मुव रज	
विधपा	विध वध विध	स्यामा पाद को	कृस
जिद	जि नि पालस कर	कृन नही वन	
	जि कपट तज	कहत दूरस जग	
हरत	हरत कहत गजहु	तस्यानदा के	
	हरत हास	दुन को कवि	सुधा
चिताः	जगसरिता तपु	सुधा दुग्ध वैरी	
	जग चिन्तन ताम	सुधा वसु धात्री	सीता
लिंग	लिंग को कहत के	सीता नदा सीता	
	लिंग मात जग	सीता किसन पुन	

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

2DA

बला	बला सेन बल धा	सितद्यु	सित तीघात सतसो
	बला बदा वेल भी		सित हिमगिर सतसे
हार	हार मुक्ता के फूल	गुरु पु	गुरु नृप गुरु मातापित
	हार बरहि के बेह		गुरु भारी गुरु दम
कृष्ण । कृ	कृष्ण वासुदेव कृ	नंदन पु	नंदन चंदन को कहत
	कृष्ण कालो सर दप		नंदन पुत्र वंश द्रको
कुथ पु	कुथ कुंथा कुथको	केतकी	केतकी नाम केत के
	मात स नाविधि प		केतकी कहतम नो
कुंत	कुंत सल लभोकु	सतनिमय	सतनिमय का कर
	कुंतल कुंतलल्व		सतनमय कयत देव
कुंतल	कुंतल सत्र धार	कुंभज	कुंभज सना काल हीन दी
	षड्ग पानके तल		कुंभज वहर्ध्या हीप
तन्त्र ॥	तन्त्र सौत्र स सतन्त्र	पलाश	हरन वरन सु पलाश
	तन्त्र कहत संतान		हम वहर स पदलाश
पुंडरीक ॥	पुंडरीक सर सद्य	सैंधव	नेल मनार सुरु छलउ
	पुंडरीक पंकजाक		तान ज चरन कातन
चक्र ॥	चक्र चरनर पचक्र		स वदसमुद्र मैं
	चक्र वाक षगचक्र		हर जीपा सस के कत
परघ ॥	परघ पवन जल		सेन का घि का प
	परघ वज्र परवत		ना. अ. अनेकार्थ
कांतर	कांतर कानन कोछ		
	दुर्भिछ जाकांतर		
षजूर	गरभा नर षजूर		
	छ्हा जात षजूर		
द्रोण	द्रोण मधिदना हय		
	द्रोण काक सोहा		
क[illegible]	कटला नाविपेव		
	केटवहर वसधरा		

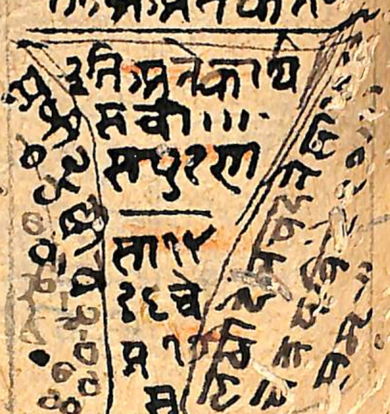

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः अथ सूची नाममाला की लिखे रु॥१४ ३६ मी म १६॥ ८॥ तनाम्नि पर॥॥॥ उर्वशी कृत॥ रा॥ गुणन नान नाकउ

नाम	दोहा	नाम	नाम
इंद्रनाम	वज्री रहै इंद्रमघ	मानस्नान	अहंकार मददर्प
	ताकी संबको		मान राधका
सखीनाम	विस्वासिनी प्रीचि	बुद्धिनाम	बुद्धमनी धी से
	अली कुकरन		मसो मती कर
प्रगथाना	बानी वाव स	शीघ्रनाम	अष्ठ तुरत सहू
	वलीमनानत		घर सत्वर स्व
घीकेनाम	सरन सदमत		वाज वेग जव
	भवन भूपद्व		चपल चली
सोनानाम	कंचन कनकजत		रूप स्वरूप जत
	प्रसिपदहार	रूपानाम	रूपैकी गोसी
	जातरूप कल		भासमा सोत
	रुकम सौ हूरी	सोभाना	दुतनयरतके
उज्जलना	सुकल सुरभ		नीलकंठ के
	नवल धवल	मयूरनाम	प्रिय वस्तवा
कोपनाम	फलगाम सती		
	रत्न पर सुसि		वाजी वाहन तर
सिंधनाम	केहरी रवहरके	अस्वनाम	तरल तुरंगम
	मृगाधिपी		सनाम मरम
हस्तीना	हस्ती दती हुँ	अरसिधन	वसी वस्या
	कुंजर भवें		सुमृत मकत
	सिंधुरसनक	मेघनाम	निसगसनि
	इतरायन दू	इंद्रनाम	तकु नकाकि
नवनयना	माहा पदम मो		कोनकसक
	हे समर प्रापन		जतनपुरदर
राजानाम	स्वामी प्रभुप		सो हैं जे वृषभ
	राज सोहे प	असत्तना	सोम सिधापि
देवताना	देक भकरनजी		असीज हाकि
	वंदा रकत वम		
	दुरविमादहर	दासीना	दासी भ्रया
सेवकना	को देवता र्व		केकरी चरी
	वधकरकोक		राजमे मने
	स्नितपारत जेम		गजरकोरर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मंताकी स्वातहिरदम
मनमहहेसें
हीराना नेहहकपूरक
सकचीतन
मंगल कुजफ़गारव
मगलमैठाउ
रस्यालि धिमनफ़घउ
निंहूफाजुनर
मातना पुर्वमावेत्री
जननीराघ
सिउीना सलेहनासा
मनपेहटी
हरिद्रा कसदतलव
तेदुग्धफेन
फ़राना उपवरनउदान
घरहउससी
केसरना मलकमरो
कटकीलल
नाहूकी ध्रानन्ताफ़को
नाकवासव
मेनीन वद्रसवनीम
केसरसोउल
अधर वानतउसरी
ना जननेलनाल
वक्राम कुटिलवक्रा
रिहरातमछ
सिरता उतमागहि
रारदुधाकि
वदनना मातनतमार
मुखसजजो

अंजनना काजलगजनपा
लोकांजनहिग
मुकताना सहिगातिमोति
मुकतावंदन
सूतना उसताभानिग
गजमोतिजहा
लछमी फ्रीपदमापद
सिंधसुतरमा
नमस्कार वरनामनवदन
मागेचलीमका
पुत्रीना पुत्रीदुहिताक
सुताजहाद्धमा
उरधन उपरउरध्वउ
चंदवमटोसो
कुसमन समनकुसमसो
फूलगंधवर
लिलार सरतकमल
जनुकमागम
नेत्रना लोचननंनज
कुचकरफ़रान
फ़वनर फुलपमवमा
जनशावरस
रहन रदनरसन
नवनीटदा
सिंगारी तद्रुअरुम
जनसिवरस
ठोडीना चवकवर
मनोहरीले
दारना हरनवाले
वेराम वद

22

ग्रीवा ना	गलनलके धर पीकली कजर
रोमावली	राजीम्नवलीम जनुउतते इतम
नृपरंता	नुलाकोरमजी कमकउठतज
गुरु नाम	गुपत तरो हत लोको जेमेल
२ रेपत ना	प्रतिवं वीऊ पियमजीनेवर
नागवलन	कच वाहनता मोह प्रमैठत्त
पालीना	केवकमल वडीवेरलो
भपना	प्राच्छ हेउर उरती उरती
हरदीना	पीरागो रो केचवीरज
कुटलना	वक्रोफा व्रत मरनकमत
नाम ना	श्रीगाम्भाघर ऋमीवसहर तस्ञी रमती नाठमातिव
सुंदर ना	सवाममन रमसोवेह
युधिष्टिर ना	धर्मताहेज नृपतेजो
हरिना	द्रवहमामा हीरघहाअरा
शरीर ना	कायवल्वर हेकरदीका [illegible]

उरोज ना	उरजपयोधर कंचनसंपुटदे
किंकनी ना	रसनाकी चौके कुंद्राव लजम
प्रवरना	होलनचोल दियतनवास
मुकना	रकतवीजहा मेकअकामह
वीनना	तेत्रीवीताव नेत्रविजावत
समाना	सामजदमा वडीवरलो मेघसुभय उदकपात्र
चरन ना	चरन चलन पगवरन
क्रोधना	कामानुज छेवगरि
रेमना	हमकुनाद कनतडोलत
युवती	रसत्री ललना अबलावना
मेघना	जलकमल पेरावतुरा
अरजुना	जिसनविपि गुडाकेगडी
गंगा ना	विहनपादीक्ष वनतदमिकु
केवलना	दुरीककाल
वेश्या	पंकजमारस उडुपधाधर कमलहमीव

23

कामना	मदनमनमथ मीनकेतचेत्रै	कामना	कुहुकोयमद रतीपतिजसै
मेघना	धाराधरजर्थ मंदिवालाहव	भ्रमरना	मधुपचरन कंचरीकरे
दामनि:	घनस्वघर दामनविनाधै		मधुपपमधु
धनुषनं	पितनीधुजनी सेनावनानृप	सेनाना	पटपदरहीं पतनीधुज
लताना	वितनीविरछी अमरवलजेम	प्रधाना	सेनावनानृप रहादिषना प्रिथकातारो
पुष्पमना	आत्मजसून नंदकेनदगा	मित्रना	सहृदेतवल
जोगेस्व	रिषभिक्षता जोगीनृमिल	मानुष	पियपियारेस मानुषमरत
धीमराज	वैवस्तपुन संषधजर अंतकालकृत	वेदना	नरजजाजे आसानय अंमनिगम
सेसनगा	सोर्दतुरधीय सेसमहामहि सहस्रवदन	कुवेरना	पुनजनेस गांकेपत नरकारुन
जनमना	भवउधभव जनमसुफत	वरनना	रूपदपंके वरनप्रचेत
मनाहर	मंजुलमेज लेहतुउधा	धनना	सोपुनतामि रनिधिवसुव
गोपालसएं	लेवेधिरेर	दुर्गाना	उमाउमा मदावरुका
कुरंगे	मूषकवाहन रोणाहरएा	वेचक	वाजीजिहन
पपानएं	भिगाहिलकेरे आवकादव	कापना	कपटकाप एनवजदुह
रुधिरनी	कापरपानी फकाणिमवक लेहूपावन	वेडीना रासक	किलविष उद्धृयोन नचनावका कोतपाम कारचरज

सूत्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धूरना [illegible]	धूरसुसरीसे जा पद्मपंकज	मह्रस्हना	गंगाधरहर त्रुत्यमंगुद्धि
महादेव	त्रिनयनक्रि त्तीपिनाध	सूर्यना	देवदिवाकर मिहरतिमर
सूर्यन	चत्रभानदि मसमान	सर्पना	विषधनविरो अवरमण
सिखा	मोचाघुमा अरेपियसा	वेस्या	दासीपारा रूपजीवा
वेस्या	वारवधूजग ममहवार	निर्भित	नृमितगान नीचेनारनडा
चंदन	गंधसारश्री निवनकी चंद	मीन	सफरीमत मकरउलूपी
समुद्र	सिंधुसुरतप इयावानअर	मरकट	कपसाखाम्र वानरकरवर
बलभद्र	रोधरामबल नीलांबरै	पृथवीन	ध्वीधिन उरमाजगती
२ पुर	अलकापुरी गोत्रीप्रयनी	३ पुर	विसंधराव रत्ननतांभा
बाण	तोमरखग कनमारगनि	वैसंतर	पावककवडा सप्तउदरवद
॥ २ वै ॥	जातवेदजल अनलदहता	मृरस	मृगमदस्जज मूरखजितज
पंडित	क्रितीकुसल परदागधना	पर्धमान	लोहदहार
परवत	अगनगभूध सैलमेरोलोचन	मंजरा	कितउपाला पेनगनागम
३ अः	धेमगनाग अलीद्रषविष	सिउरना	वालापावाहर वाधविध
बनता	चवरकादूपा काननविधार	कपोल	अवग्रनदर गउकपोल
राहू	क्रूरभीमबल सिंहकीउर		स्यामसुकुंडा वदनचवरज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अमहसंन कनकदनमजैत
मयासपीरण
विष गरलहलाहल
रहसैविषजन
रजनी छंदाछपाता
निसासरवरी
नक्षता कजेदुनर
कर्वीकिधोतु
मृक्षम नुधसमलप
कहिवलपते
मातो नरतआधव
मगदमनद्वै
छग रिसकछयके
छगजेजोतेता
नदीता सुताधनी
धोतहवती
पिता तपजनकस
तुरिपहलनर
मदरा मधुमाधवीस
आसमाहके
स्वभाव प्रकृतिनिसर्ग
कवनदेवटेउ
विरत हाथीनरथी
पत्रीदलीफल
पवन स्वसनसदाग
मलतभमत
कंज्या कैमीदहनेन
मांसुहे.भवनु
हस्तह निकयपिका
काहलकला
धराना हरसोतो...
वैनवदेवरहे

॥ संध्या त्रिसंध्यानिसपत
सांउपटीहैछेल
पिपहा कालंकंदात
रससकिसजन
अकास अंबरपुषर
वीमकंनत
संग्राम अरानरनग्रा
सुन्नरायसमर
मकरी लूकामृतामर
जनकहूमकरी
कृपान मयदयाकिपा
करुणानिधका
रिसा कंकाषाकुकव
चतवतहेहै
वाणेभाई अनुजभवर
लघुभाईकी
विवाहना परननिसथ
हातभईनो
सिद्धअसे सिधप्रसुना
सदपिवजाव
अधिका अधनिसर
हातेरेनिखो
पत्रका पत्रपरनदह
तुमप्रौसथवो
पुनना काढनिनदन
वैवधीकहा
अंत क्रिस,प्रेमसत
अतसरवल
हे वक्रामनत
मैनामनैक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घोरान	दरहृताबहम्ध नवपियग्रसेंमु	दुबना	दद्रूनविघर दुषजनदेमव
अर[illegible]	निसनसीकंदे कानचलेवह	वत्रन	अरसनकुसल पारोवुरोंकरु
लजा	हरनजाविडी चलवलपियरें	चर्मघनी	पादत्रानम मतीपनही
अराना	सघाहरम लामनरुष	मकचा दनीन	जेत्रिनामु नी जेनजुघरकंत
कचीना	परमकृताली रक्वीची चल	उपवन	क्रिडकमउदान रहुवृंदावन
वलता	कुमाकररु मालीजमनुव	बगना	जरजसुकुती किप्राजवत्री
पिपला	चतदलप पिपवलयहू	गलूर	पालीपटल संववसामधु
संवता	विकवाहविक यहुस्थालकी	चंपाना	चंपयचपक यहूचपाका
महुआ	साधवमध यहूरसलाका	ददीम	रकतवीज एदारनहत
कंदली	स्मामोवगज कदलनतमें	विलेक	कुरवमुलकी ऐकीनवकुच
तमाल	कालकदताप वटेजहृकावल	कदव	तुलमतिपाप यहूकदवकल
कंदुक	वाथकोपुनम वरहीजनक	वहेड़ा	अमविगीत मुतोमाली
तलरना	वनिरकयरंग्र ऐनारीएताहि	सुपरी	घाहाकमक तारीतारीक
कावना	वोलवुलका कुउकरतयहू	मिरच	तकताउवक
सूदी	वस्थानारमज पलेडीकारगर	पिपली	मरचेलतावर कालाकंना वेदलीमपवर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हस्तकी	अभयापांतियारो कायस्थापुन	प्रवाल	मुंगा नदी ये विद्रुमसा
दाखना	स्वादी मृदका गुडीप्रियागुरु	केसरनां	का सुमिरी कसटन्रामर
लालपुष्प का	हरएगिगुनका यह पुष्पी गुच्छी	राजवली	माविष्टंप्रय राघल सादप
मालती	सुमन जातिमल अविष्टा प्रवाद	कुंदन	माघी कुंदप याको कप
गुंजना	काकचिप ५ क्रिमतकहतप	कोकला	वरमतकल जनपिमारत
बंधुक	बंधुजीवतंधुक येकुलतदुपरी	माधवी	अलउतसव रतवी संती
संजीवनी	जीवजीवन यह संजीवन	लवंगना	देवकुमन रतलवगकी
इलायची	चुहकिन कात इति इला ठाडी	तांबूली	तांबूलीयै मरस मंडि
मकरंद	सारमदनपुन रजिंदतकप्रसीह	वरना	जटीकपर रसवलीवर
सरोवर	पद्माकारहर यह मानसरोजो	कालिंदी	रमाजनामत यह जमनाजो
तरंगना	वैमंतुरगको लहरीहाथयि	नदीतीर	कूलपुतल तीर तीरर
वेतना	वुमलसीतल यह वेतसीकेकु	दैकेना	जुगमजुगल जब गाकिह
इक्षीना	गोरखांखका मिलेसटपिवा	माला	मालाभिज करदै गोतह

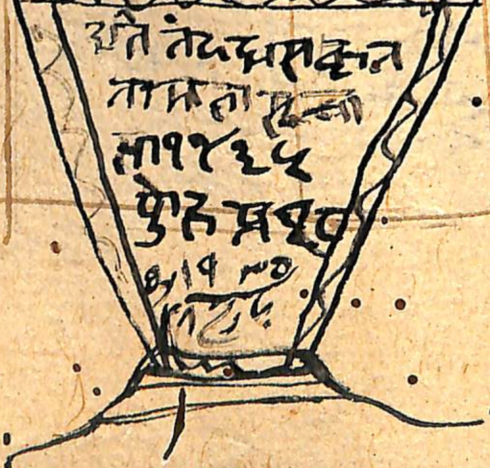

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

25

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दरसस भाउ रामगी मन विचा चितवत कंकाली
कके सकल सभा कै कवन कवन रिषि पंत महापाली
कवन भवन कारपन कवन दल को दल वे पन
रदद दरत सुभ भरत तरन तारन कुलमंदन।
कवन संग्राम सन कोप ती कवन भाप सुरदान देर
मुकट धाज सभ के दुले सकल सभा जै सिर मर

सोम सभा प्रभ वचन तै सभि सुन को भाखो॥
तुम भव वतौ कहीं पत लाज कानन प्रभ संचर राख्यौ
तुम हीं सभा नरनार सुभ वीर कनर नविवि त्यौ॥
सती सु भजन ताई सुते परम सु लिन्यौ॥
तव क्रिसन कर राजा कै डीठ दैठ मोरी वात सुन
जा रान त्याव जगरेव सो ता सो देउ गा मैं दस सुन

सभा मामद रज गहीस ईस जग देउ वाहि उठो
दानेन सम्य लै जमदर यात को डिठौ
तव संचर सभ परौ वदन पो छन कर लिन्यौ॥
ररनैं कै असीरवार तत काल दिन्यौ॥
रघुवंस सो सा तप जग देउ रानरे ने दारिद हरन
सत तम वत सत सो हरा जीपे चे देव रता करन

जिह जीवन कारने सचधचन लछमी लिये
जिह जीवन कारने काल द्वैकाल लैवे चै
जिह जीवन कारने वेद विद्या विचारै॥ जिह जीवन कारने
कमकल मौन सह तरै॥ लछमी करंउ देजे सारसगर
माया कै हेवदन॥ संमोपा कहे राजा न सनर कहि
सुन दिजे आपन॥४॥ रकन जाइव तुमरै रकन सु
मैं पावै॥ केर लै जावै॥ रकन पर चर मरै रकन सा
मैं पावै॥ रकन मारा लागे मरै रकन सो रु खेलन
रकन जो जीवन कारने गरव सब सुबो करै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

26

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

27

गारस्याम ज्यव सर्ग	मोह ज्ञान तुमहीग	प्यारी पिय उचत होर	जोअवताई सो छवि तवै लिखी निधि दे अवजुद
पदमनी लवि	लोचनवि तवगात ताजमद हरिखाता	चत्रनील	चपल नेन कामगेह मतगज चा लोरकीसे
सवनी ल	मोटीजाकी चलनिस वसलरगी नाजनस	हस्त तनी	आगरीअर कामजल मदगतम मीलो चतुन
भद स्वकीया के	स्वकीयापर उनहीमैय	स्वकीयाल उदाहन	स्वामी मेप्र पतिसेवा तालनाक वचवस
स्वकीयाभेद	मुग्धामिध्या तेभेदस	मध्याद्वेभेद अज्ञातज्ञात उ ज्ञात उ	आयाजो आयोजे करारीय कीचरि कंजकली देवस नवकामान लज्जाप्र
नवोरा वमयनवा	पूराधान कहपुरव	उदा नवो विश्रध उ	जघजघेजो कानस तजपिय जानतहु
मध्याततन	पचवानस कविकुल	उदा	देअसकन लाजक
प्रोढालतन	छकीरहे जातपति	नाम उदा	कामाधार दरस
भ्रप्यापारीदीभेद त्रिवदु लगा	मध्याप्रटोव सुधीर	उ	उरसो उर गढीजा
मध्याधाराल	पियसावा साधारास	उदाहन	काहाकही तालीनै
मध्याअधारात	हरुकिरको मध्याधारा	उ	हरि तुवनि हेरतमे
मध्याधारीधारा	धारीधारा गुप्रप्र	उदाहन	जियकोह अरनेन
प्रौढाधीराल	सपराधी साधीरा	उदा	लखजावक जादुहिये
प्रौढा धीराल	गोपतकोप प्रौढाधीरा	उदाह	के ओसेज रुवउस
प्रौढाधाराधारा	परुषवच प्रौढाधारा		फेरनाइहरि करपरस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्येष्ठाकनैष्टाल	अधिकन जेष्ठ अरक	उदाहर्न	परस्वैभर गृहे कुरन
परकीयालक्ष	गुप्तकरेष परकीया	पर·द्विधा·	परकीया ओर द्वे
कन्याल	कन्याकोप नाहमैव	कन्याउदा·	नवभूष कापीस अंग अभय दुर्मुरनि
		प्रौढाउदाह	नरवलता चतरंसखी
परकीयाभेद	गुप्तविग्धा ,प्रतास्या	गुप्तक्रियाविधूल	भयाभिवी गुप्तकरे
भूतसवीष्यतउ	कोरकहै काटैलगे	वरतमानउ	आलिंगन माखनसी
विदग्धाल	वचनक्रिया ताहविद	वाकउदा क्रियाउदा	उते हेरहि लेनजान हरितत्त्वा प्रातचत
कुलटाल	जोरसिका चाहतजग	उदाह	यावनस नोविधवि
^२ अनस्नानार्तीवध	अनस्वनामा नासहोते	प्रथम उदा	मारैउबउ सोचसर
हतीलाअन	ओचतैसके ताहदुसरी	उदा·२	मियविमा हैहेदवी
तीअनस्थ	पियप्राया लखनति	उदा·३	मियेदख आलनर
सामान्याल	निसदिन सामान्या· गुनीपुरुष धनीपुरख सबसूधा साजिनजा	उदा·	जाकीवा तीजैना मानप्राद लाजनहीं
सामान्याभेद	अनसभोग माखुतीना	वक्रोकता	वक्रोकता प्रेमरूप
प्रेमरूपल	गर्वकरेप आरूपको	उदा प्रेम रूप·३·	प्रीतमकी गगकाल मोहमजा· मोहला
मानवतील	पियनजम मानकहत	मानभेद	लघुमध्य ताकेभेद
लघुमानल·	परतीदेख प्रगटहो·	उदा·	चितैमा वुजसरा
मध्यमानल·	बातकहत उपजतम·		कहतकछु भ्रमभान
गुरुमानल	अनतकछु कहततह	३·	रसाभाम सखीसल
प्रचंडमानल	केरकला· हरिकवि	३·	जावकलो गहिमा
			भाउसात लीनीप्र
संभोगसचारीभा·	भागसचा अनयपवे	प्रोम	केवेलाल केजनमे देदीफरउ स्वामहर
		३·	मनकोबर जोसखी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐम

ॐ स्वस्ति श्री गणेशायनमः अथ उमर के ग्रह का फल लिखते

पंडत बघुनाथ दास पंडे जगननाथपुरी के लालबाय हैं लागै हूं रमे

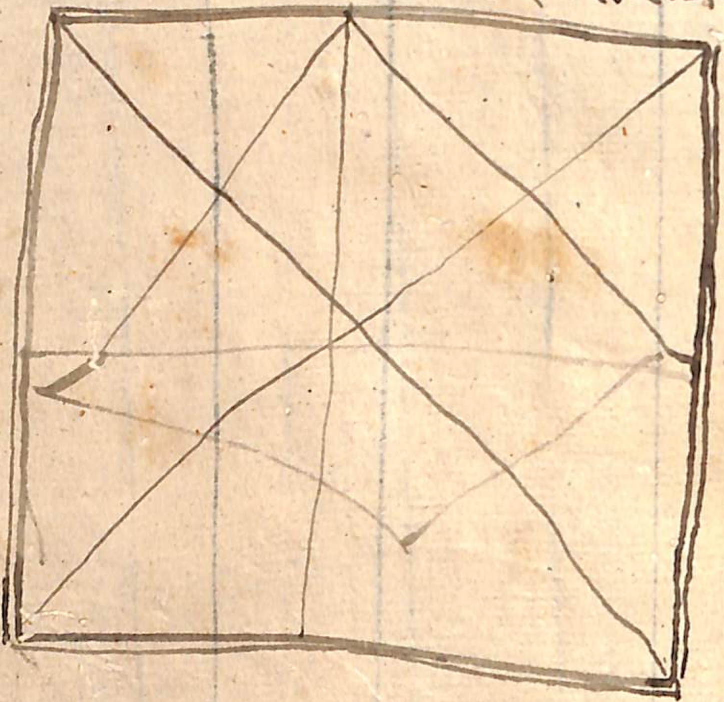

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative